ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्



स्मारिका

आर्य समाज नागोरी गेट, हिसार

वार्षिक महोत्सव

3,4 व 5 नवम्बर, 1989

□ अविद्या का [नाश] और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए ।

6643

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज के पा[वन] वार्षिकोत्सव तथा स्मारिका प्रकाशन के शुभावसर [प]र शुभकामनाएं प्रदान करते हैं ।

१५
३२५

दूरभाष : 4818

[...]या इस्पात उद्योग प्रा. लि.

[...] डब्ल्यू०, एम० एस० पाईप एण्ड ट्यूब्ज्

[...] रोड़, हिसार ।

[...]फोन : 5100

र

ATION

कालेज, हिसार

समाज, हिसार

प्रकाशक :
आर्य समाज, नागोरी गेट,
हिसार

विक्रमी संवत् 2046
दयानन्दाब्द 165
ईस्वी सन् 1989

आर्य समाज, नागोरी गेट, हिसार

❀ स्थापना सन् 1886 ❀

संस्थापक शेरे पंजाब लाला लाजपतराय

★ स्मारिका ★

ओ३म्

भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्

स्मारिका प्रकाशन समिति अध्यक्ष : डॉ. सर्वदानन्द आर्य, प्राचार्य दयानन्द कालेज, हिसार

सम्पादकवृन्द : डॉ. रविदत्त शास्त्री, एम.ए., पी-एच.डी.
पत्रकार प्रतापसिंह शास्त्री, मन्त्री आर्य समाज, हिसार

विक्रमी संवत् 2046
दयानन्दाब्द 165
ईस्वी सन् 1989

प्रकाशक :
आर्य समाज, नागोरी गेट,
हिसार

सम्पादकीय

प्रतापसिंह शास्त्री
पत्रकार
मंत्री, आर्य समाज, हिसार।

जिस समय शेरे पंजाब लाला लाजपतराय ने हिसार में कार्य आरम्भ किया और अपने विचारों एवं उद्देश्यों के प्रचार व प्रसार के लिये अपने आपको महर्षि दयानन्द का सच्चा शिष्य, अनुयायी घोषित किया तब यहाँ के कुछ प्रबुद्ध नागरिकों ने उनसे "आर्य समाज" नामक संगठन की स्थापना की मांग की। पंजाब केसरी ने सन् 1886 में समय की पुकार को देखते हुए आर्य समाज (नागोरी गेट) हिसार को स्थापना की। इस क्षेत्र में सर्वत्र घोर अन्धकार एवं अवसाद का युग था। सामाजिक ढांचा सर्वथा विश्रृंखलित और छिन्न-भिन्न हो चला था। जाति-पांति, ऊंच-नीच, छुआ-छूत ने उसे बिल्कुल खोखला और निष्प्राण बना दिया था। भयानक अन्ध विश्वासों एवं रूढ़ियों के जबड़े में फंसा भारतीय समाज छटपटा रहा था। इस इलाके में सर्वत्र अशिक्षा एवं अज्ञान का बोल-बाला था। धर्म शास्त्रों की दुहाई देकर न केवल अछूतों को ही, अपितु स्त्रियों को भी पढ़ाना पाप कोटि में गिना जाता था। जन्म के आधार पर थोड़े से लोगों को छोड़कर शेष सारा मानव समुदाय अनपढ़ ही रह गया था।

ऐसे मानव समाज में सामाजिक न्याय सद्भावना समान अवसर, तथा प्रगति आदि की चर्चा या सम्भावना क्या हो सकती थी। एक ओर इस क्षेत्र के लोग इन आन्तरिक व्याधियों से पीड़ित थे, तो दूसरी ओर विदेशी शासक बड़ी निर्ममता से कुचल रहे थे। ऐसे वातावरण में आर्य समाज हिसार के माध्यम से जन-जागरण का अभियान चलाया गया। इस जन-जागरण में जिन महान पुरुषों ने वैदिक सिद्धान्तों का बखान करके सक्रिय भूमिका निभाई वह सारा श्रेय आर्य समाज हिसार को जाता है। आज लगभग 103 वर्ष बाद स्मारिका-प्रकाशन के माध्यम से मैं इस क्षेत्र के मानव समुदाय को आत्म निरीक्षण का संकेत कर रहा हूं। भले हो यह स्मारिका आज ज्वलन्त समस्याओं को हल करने के लिये रामबाण औषध सिद्ध न हो किन्तु इसे कृतज्ञता प्रकाशन समझने में कोई अत्युक्ति नहीं होनी चाहिए।

निःसन्देह राष्ट्रीय जन जागरण में महर्षि दयानन्द और आर्य समाज की भूमिका का गौरवमय स्थान है।

आर्य समाज के कारण मानव समुदाय की राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक, संस्कृतिक परिस्थितियों का परिदृश्य आज बिल्कुल बदल चुका है। आज हम स्वतन्त्र हैं हमारा जीवन स्तर ऊंचा उठा है हम शिक्षित हो रहे हैं हमें मौलिक अधिकार प्राप्त हैं भौतिक साधनों की आज कोई कमी नहीं किन्तु युवा शक्ति अपने वास्तविक स्वरूप को न पहचान कर पतन के मार्ग की ओर बढ़ रही है लगता है वह दिशाहीन होकर कहीं भटक न जाए। आज नैतिकता की आवश्यकता है। आर्य समाज के इस वार्षिक महोत्सव के पुनीत अवसर पर मैं प्रार्थना करूंगा कि आज देश को फिर सरदार भगतसिंह, रामप्रसाद "बिस्मिल", चन्द्रशेखर आजाद, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, लाल बहादुर शास्त्री, श्यामजी कृष्ण वर्मा, लाला लाजपतराय, महात्मा हंसराज, पं० गुरुदत्त विद्यार्थी, पं० लेखराम आर्य मुसाफिर, स्वामी श्रद्धानन्द, भाई परमानन्द जैसे नवयुवकों की बड़ी आवश्यकता है जो देश में बढ़ रही नशाबन्दी, दहेज प्रथा जैसी बुराईयों को उखाड़ फैंके। युवा शक्ति यदि इस प्रकार के राष्ट्र निर्माण के काम में जुट जाए तो देश से गरीबी, असमानता, अज्ञान, अन्याय, अभाव, शोषण, अन्ध विश्वास, पाखण्ड जैसी बीमारी दूर हो सकेंगी।

आर्य समाज के शीर्षस्थ नेताओं से भी मेरी प्रार्थना है कि वे भी नवयुवकों को विश्वास में लें और उन्हें दिशा निर्देश करें। यहाँ पर मैं यह कहना आवश्यक मानता हूं कि इस "आर्य समाज" रूपी संगठन को बनाए रखने के लिए बड़ों का युवकों के प्रति प्यार और युवकों को बड़ों के प्रति आदर नितान्त आवश्यक है। उन दोनों के आपसी मेल से ऋषि का स्वप्न पूरा हो सकेगा। और नई चुनौतियों का सामना किया जा सकेगा। हम केवल सत्संगों तक सीमित न रहें। इसके साथ-साथ विश्व वन्दनीय ऋषि दयानन्द की गरिमा को आर्य समाज के माध्यम से बनाए रखना भी हमारा कर्त्तव्य है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के तीन सूत्री कार्यक्रम (शराब बन्दी आन्दोलन, गोरक्षा आन्दोलन. हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा है इसे गौरवपूर्ण स्थान मिलें) के लिए हिसार आर्य समाज हमेशा अग्रणी रहेगा।

आर्य समाज की पवित्र वेदी से मैं हरियाणा के कोने-कोने से आए सभी आर्यजनों के विकास और समृद्धि की मंगल कामना करता हूं। और इस वार्षिक समारोह पर कहना चाहता हूं कि संसार से आडम्बर, शोषण, अन्याय और युद्ध समाप्त हो तथा शान्ति और सहयोग का विकास हमेशा ही होता रहे।

□□

आभार तथा धन्यवाद

आर्य समाज नागोरी गेट, हिसार के वार्षिक महोत्सव पर पधारने वाले सन्यासियों, विद्वानों, भजनोपदेशकों, गुरुकुलों के ब्रह्मचारियों आर्य सज्जनों और महिलाओं का धन्यवाद करना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूं जो अपने-अपने आवश्यक कार्यो में इस वार्षिकोत्सव में सम्मिलित होना भी एक आवश्यक कार्य समझते हुए यहां पधारे हैं इस समारोह को सफल बनाने हेतु उन्होंने आर्य समाज के पदाधिकारियों को सर्व प्रकारेण योगदान दिया।

इस स्मारिका में जिन आर्य विद्वानों के लेख छपे हैं उनका भी मैं बहुत आभारी हूं। उन्होंने अपना बहुमूल्य समय लगाकर इन्हें लिखा और हमें विश्व के सामने आर्य जगत के विचारों को रखने में आपार सहयोग दिया।

हिसार नगर के जिन निवासियों ने इस यज्ञ को सफल बनाने के लिए बड़ी तत्परता और तन्मयता से सेवा करके हमें आर्थिक सहयोग (दान) विज्ञापन के रूप में दिया है उनके प्रति भी मैं श्रद्धा व्यक्त किये बिना नहीं रह सकता।

स्मारिका प्रकाशन समिति के अध्यक्ष डा. सर्वदानन्द आर्य, प्राचार्य दयानन्द कालेज, हिसार, श्री राजकुमार आर्य, मैनेजर जगन्नाथ आर्य कन्या उच्च विद्यालय, हिसार, श्री रामधारी जी आर्य, प्रधान आर्य समाज, हिसार, श्री प्रतापसिंह शास्त्री, मन्त्री आर्य समाज, हिसार का मैं विशेष रूप से आभारी हूं। जिनके सतत प्रयत्नों से यह स्मारिका प्रकाशित हुई है।

जिन दानी महानुभावों ने इस वार्षिक उत्सव को तथा स्मारिका प्रकाशन को सफल बनाने के लिए हमें बड़ी उदारतापूर्वक धन प्रदान किया है उनका भी मैं कृतज्ञ हूं।

सम्पादक :
डॉ. रविदत्त शास्त्री
एम.ए., पी-एच.डी.

॥ ओ३म् ॥

विषय-सूची

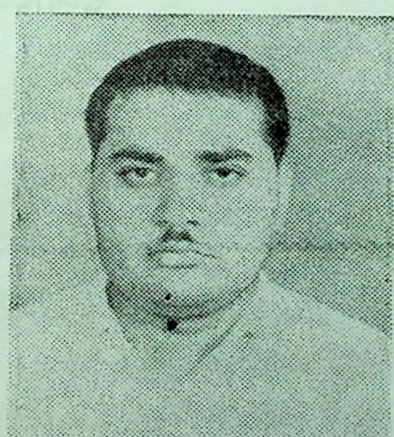
□



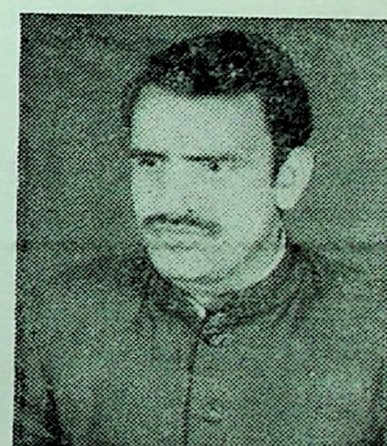
स्मारिका
सम्पादक मण्डल



डा० सर्वदानन्द आर्य
प्राचार्य, दयानन्द कालेज, हिसार
स्मारिका प्रकाशन समिति अध्यक्ष



डा० रविदत्त शास्त्री
एम.ए. पी-एच.डी.
सम्पादक



पत्रकार प्रतापसिंह शास्त्री
मंत्री, आर्य समाज, हिसार
सम्पादक

□

स्मारिका के प्रकाशन में
जिन विज्ञापनदाताओं ने अपने-अपने विज्ञापन दिये हैं
हम उनका हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं ।

सम्पादकवृन्द

□



महर्षि दयानन्द जी सरस्वती

□

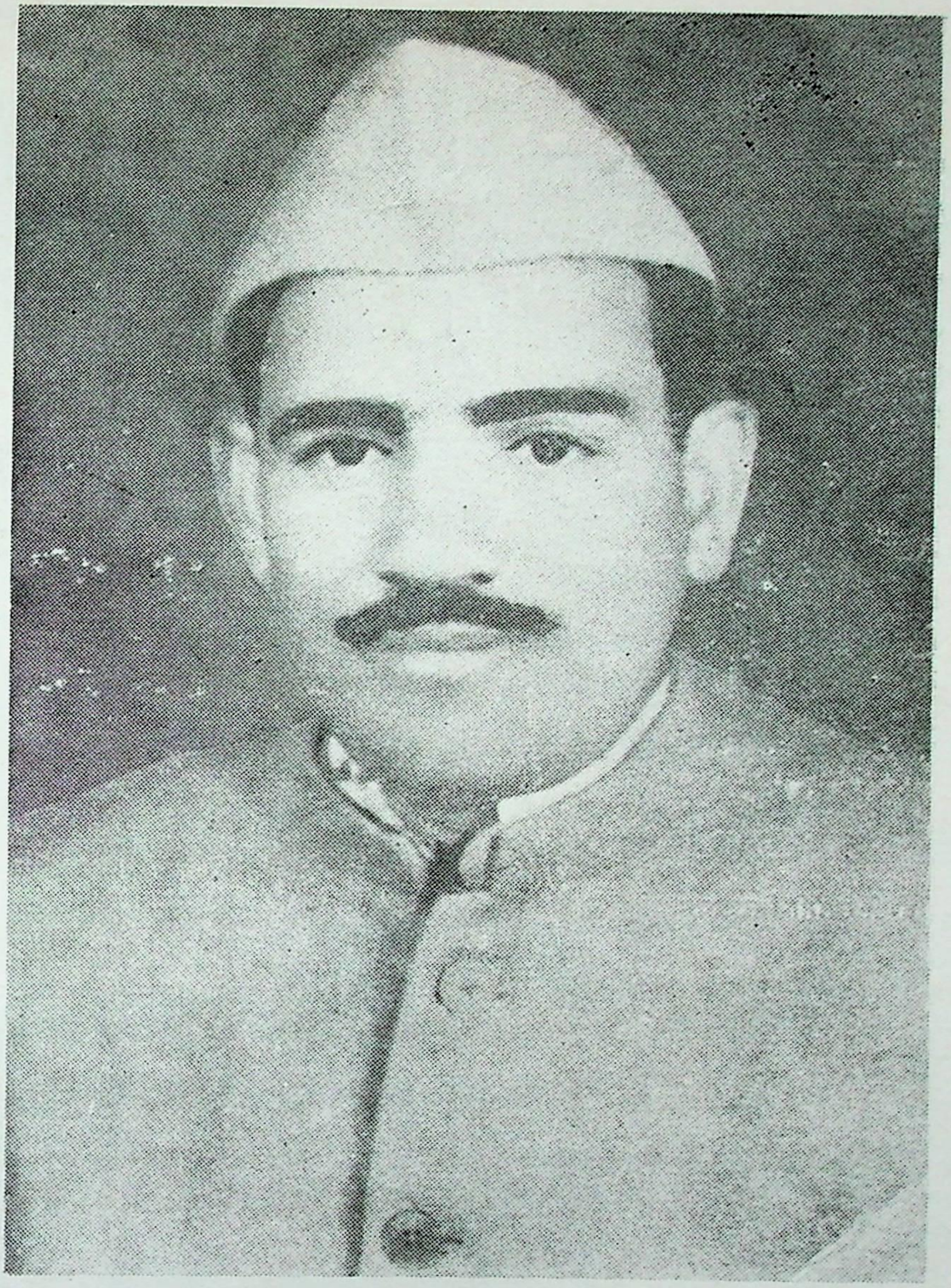
स्मारिका के प्रकाशन में
जिन विज्ञापनदाताओं ने अपने-अपने विज्ञापन दिये हैं
हम उनका हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं।

सम्पादकवृन्द

□



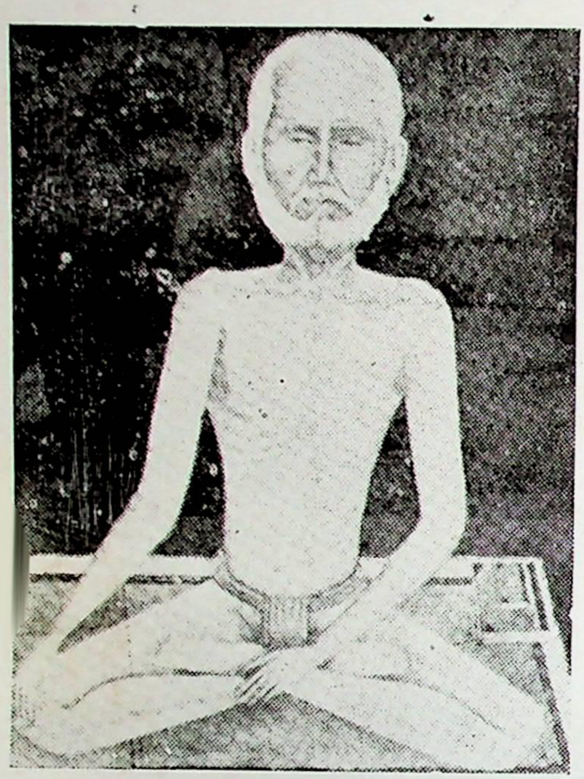
महर्षि दयानन्द जी सरस्वती



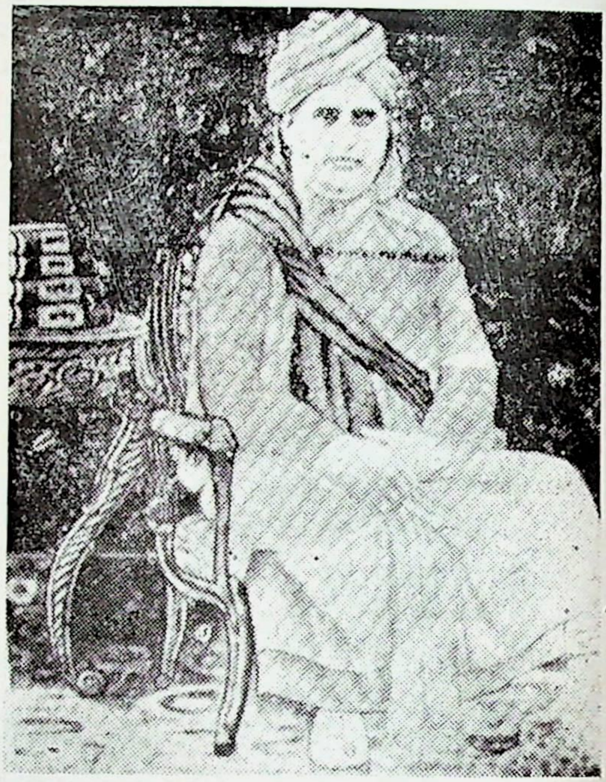
रामधारी आर्य, प्रधान, आर्य समाज, हिसार

ओ३म्

जिनसे यह ज्योति जगी :-



दण्डी स्वामी विरजानन्द जी



ऋषि दयानन्द सरस्वती



महात्मा हंसराज जी

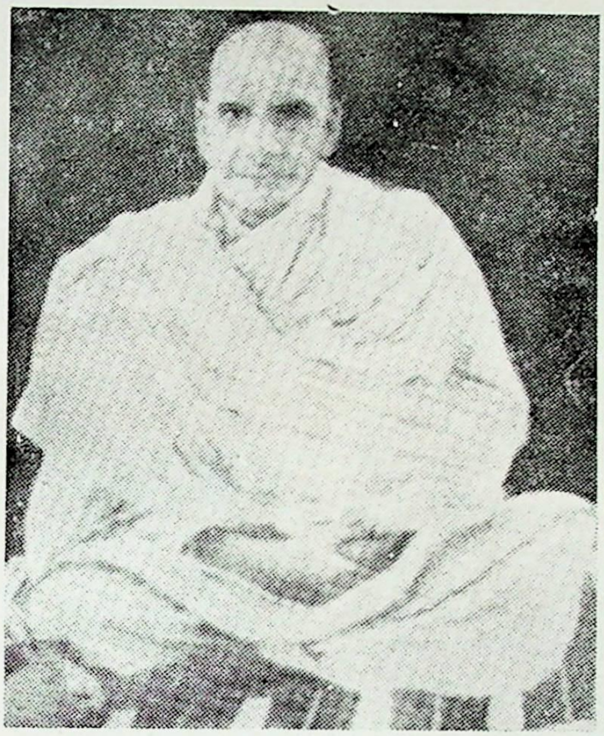


पं० लेखराम जी



पं० गुरुदत्त विद्यार्थी

आर्यजगत् के कुछ महान् व्यक्तित्व



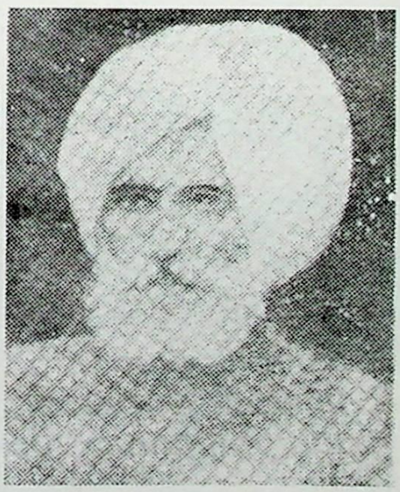
स्वामी श्रद्धानन्द जी



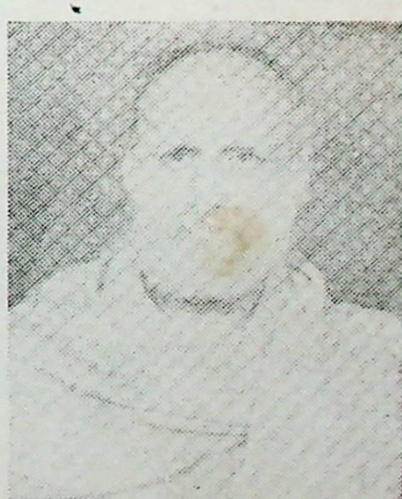
लाला लाजपतराय जी



सेठ चन्दूलाल जी तायल

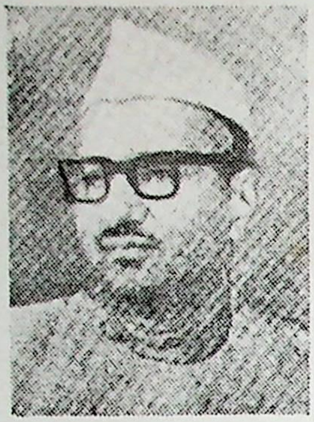


पं० लखपतराय जी

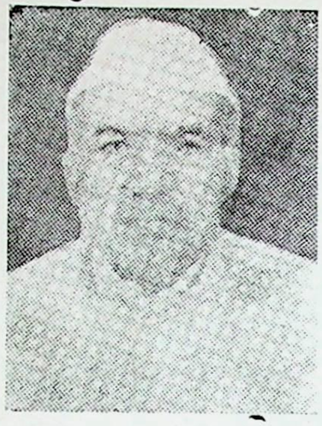


स्वामी ओमानन्द जी

आर्यजगत् के कुछ महान् व्यक्तित्व



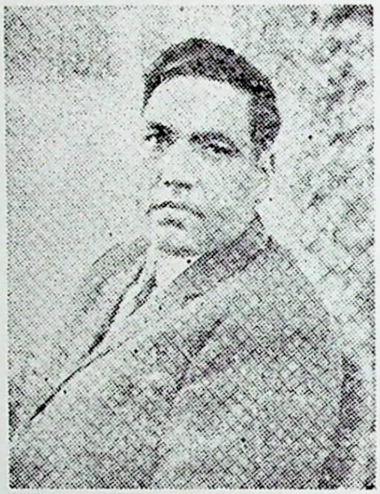
स्व० लालमणि जी आर्य



श्री घनश्यामदास जी गोयल



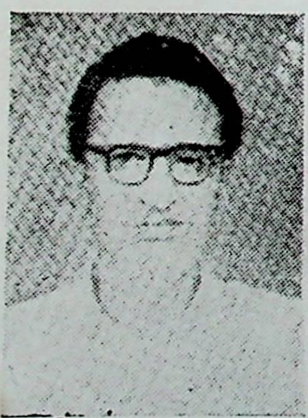
श्री चन्दुलाल जी आर्य



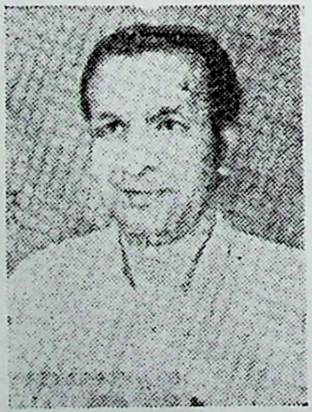
श्री ओमप्रकाश जी गोयल



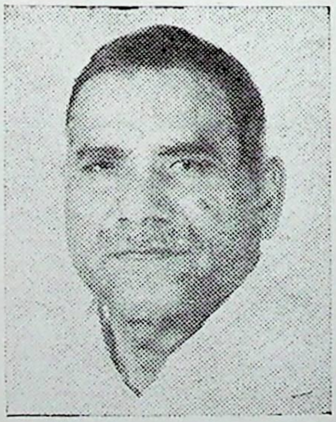
श्री गजानन्द जी आर्य



श्री फूलचन्द जी आर्य

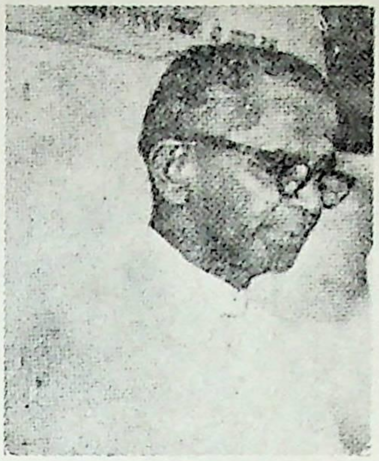


श्री रामरिछपाल जी आर्य



श्री हरीसिंह सैनी

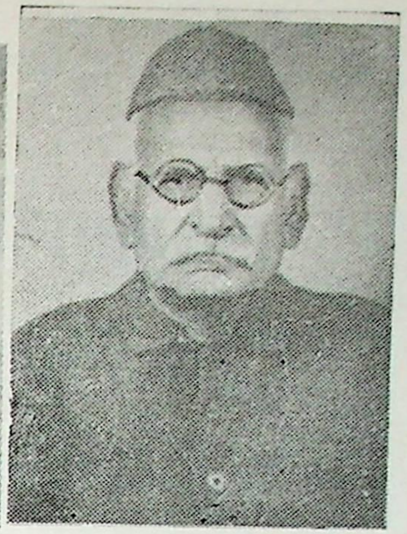
आर्यजगत् के कुछ महान् व्यक्तित्व



पं० मुरारीलाल जी शास्त्री



सेठ फतेहचन्द जी



बाबू प्यारेलाल जी



प्रिंसिपल ज्ञानचन्द जी



पं० जगन्नाथ शर्मा



बक्शी रामकिशन जी एडवोकेट

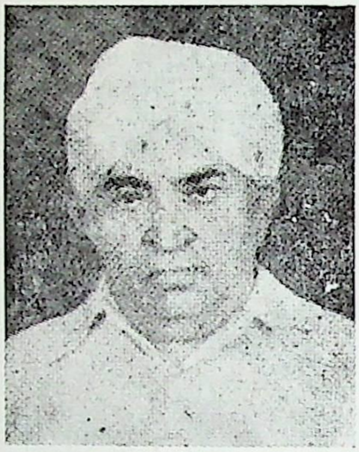


बाबू प्रकाशचन्द्र जी एडवोकेट

आर्य समाज के कुछ कार्यकर्ता



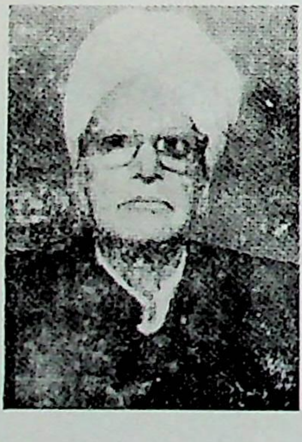
श्री रामधारी जी आर्य
प्रधान, आर्यसमाज, हिसार



पं० देवराज संधीर एड्वोकेट



श्री श्यामलाल बिन्दल



श्री फूलचन्द भारवासिया

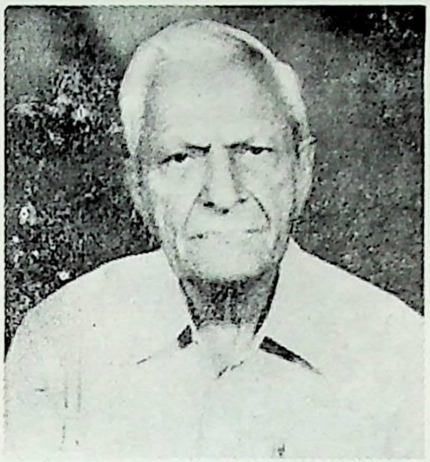


प्रो० रामविचार जी

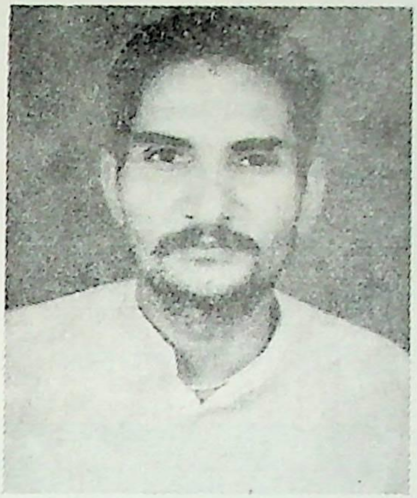


पं० रामस्वरूप जी शास्त्री

आर्य समाज के कुछ कार्यकर्ता



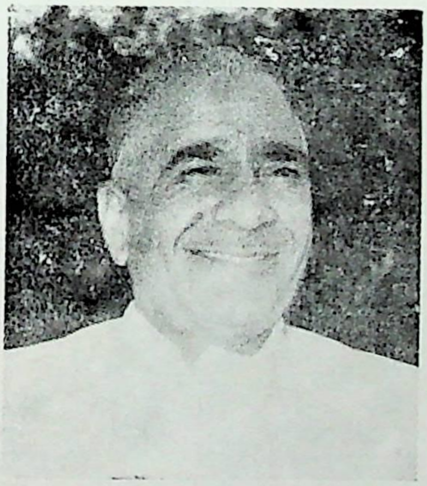
पं० मदनमोहन जी



श्री दीपकुमार आर्य



श्री बनीसिंह आर्य



श्री हंसराज भिगलनी



श्री मानसिंह ढांढा

आर्य समाज, हिसार के अन्तरंग सदस्य



श्री सूर्यकुमार जी



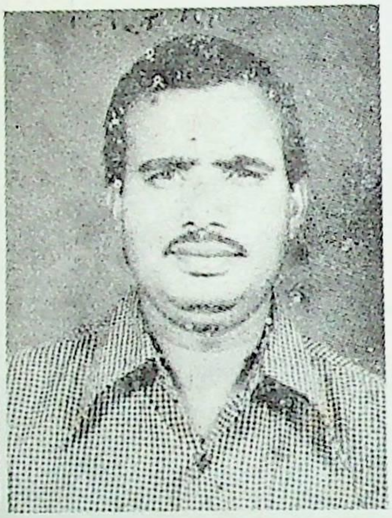
श्री सहदेव जी एड्वोकेट



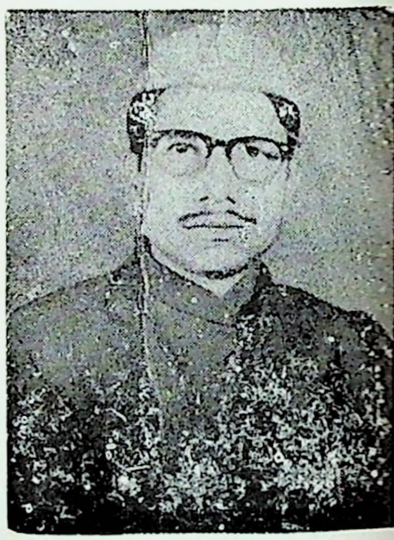
श्री प्रहलादराय जी



श्री चेतनप्रकाश जी

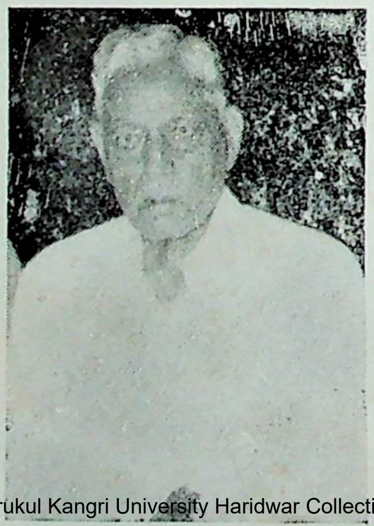


श्री जिलेसिंह जी



श्री सुरेन्द्र जी गुप्ता

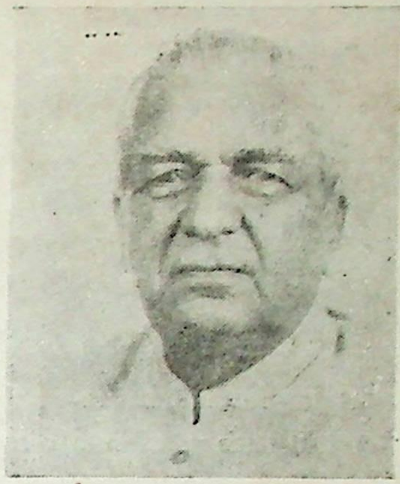
डॉ० आर० टी० गुलाटी





अत्तरसिंह आर्य(ढांढा)

मुख्यमन्त्री, हरियाणा
चण्डीगढ़



सन्देश

मुझे यह जानकर बड़ी खुशी है कि आर्य समाज, हिसार का वार्षिक उत्सव नवम्बर मास में मनाया जा रहा है और इस अवसर पर एक स्मारिका प्रकाशित करने का भी निर्णय लिया गया है ।

आर्य समाज, हिसार की स्थापना आज से लगभग 103 वर्ष पूर्व हुई थी । इसकी स्थापना से इलाके में नई जागृति पैदा हुई और वेदों के ज्ञान के प्रकाश में मदद मिली ।

मैं आर्य समाज, हिसार के वार्षिक उत्सव के लिए बधाई भेजता हूँ और आशा करता हूँ कि इस अवसर पर प्रकाशित की जा रही स्मारिका में आर्य समाज की गत एक शताब्दी की उपलब्धियों का विशद वर्णन किया जायेगा ।

शुभकामनाओं सहित ।

—देवीलाल

ओ३म्

न्यायमूर्ति जितेन्द्रवीर गुप्त
277, सैक्टर 16-ए
चण्डीगढ़-160016

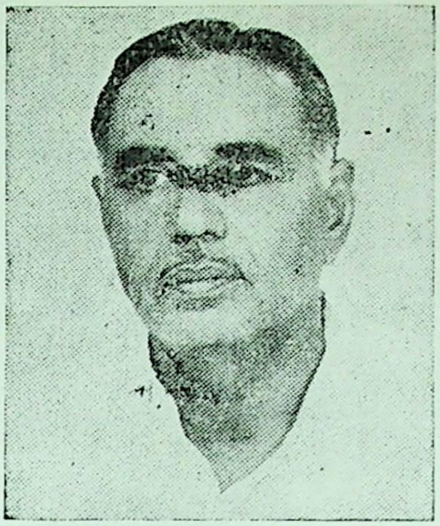
सन्देश

श्री मन्त्री महोदय,
आर्य समाज, हिसार ।

यह शुभ समाचार प्राप्त कर आनन्द हुआ कि आर्य समाज नागोरी गेट, हिसार का वार्षिक उत्सव 3, 4, 5 नवम्बर को होने जा रहा है। और आप इस शुभ अवसर पर स्मारिका का प्रकाशन भी कर रहे हैं । आपका यह प्रयास सफल एवं सुसम्पन्न हो यही शुभ कामना एवं प्रार्थना है।

इस आर्य समाज की स्थापना पंजाब केसरी लाला लाजपतराय जी के कर-कमलों से हुई है। उनकी वह प्रेरणा आज भी उतनी ही आवश्यक है जितनी 100 वर्ष पूर्व थी।

—जितेन्द्रवीर गुप्त



सिंचाई एवं बिजली मन्त्री
हरियाणा सरकार
चण्डीगढ़

सन्देश

हर्ष का विषय है कि आर्यसमाज हिसार अपना वार्षिक उत्सव 3 से 5 नवम्बर, 1989 को आयोजित कर रहा है और इस शुभावसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन किया जाएगा।

आर्य समाज की स्थापना महर्षि दयानन्द ने समाज से अन्ध विश्वास, छूआछूत तथा सामाजिक बुराईयों को समाप्त करने के लिए की थी। उन्होंने संसार को वेदों की सही जानकारी दी। लगभग एक शताब्दी से आर्यसमाज देश में सामाजिक आन्दोलन के माध्यम से एक नई जागृति लाया है। शिक्षा प्रसार, स्त्रियों की स्थिति में सुधार तथा मानव सेवा में इसका बहुत बड़ा योगदान है। मुझे आशा है कि इस स्मारिका द्वारा आर्य समाज के बारे में विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराई जाएगी।

मैं इस अवसर पर अपनी शुभकामनाएं भेजता हूं।

वीरेन्द्रसिंह



संगठन सचिव
डी०ए०वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी
नई दिल्ली

सन्देश

आदरणीय श्री प्रतापसिंह जी,

आपका कृपा पत्र दिनांक 2-10-89 को प्राप्त हुआ। यह जानकर अत्यन्त हर्ष हुआ कि आप आर्य समाज के वार्षिक उत्सव पर स्मारिका का प्रकाशन कर रहे हैं। आपकी आर्य समाज एक उच्चस्तरीय संस्था है और महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों के प्रचार एवं प्रसार हेतु सब सदस्य अग्रसर हैं। आपके आर्यसमाज की गतिविधियों की प्रायः सूचना मिलती रहती है। परमात्मा करे कि आप सब सदस्यगण इस पुण्य कार्य में सदैव तन-मन-धन से सेवा करते रहें।

दरबारीलाल

राज्यमन्त्री, हरियाणा सरकार
चण्डीगढ़

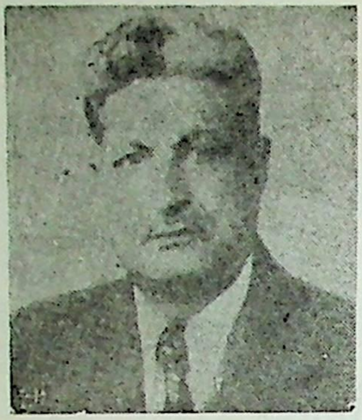
सन्देश

प्रिय शास्त्री जी,

आर्य समाज नागोरी गेट हिसार वार्षिक उत्सव पर स्मारिका प्रकाशित करके प्रशंसनीय कार्य कर रहा है। मुझे बड़ी खुशी है इस स्मारिका में आर्य समाज हिसार के सौ वर्षों का संक्षिप्त इतिहास भी दिया जा रहा है। मैं उत्सव की सफलता के लिए तथा स्मारिका प्रकाशन के लिए अपनी मंगल कामना भेज रहा हूँ। इस प्रकार का कृतज्ञता प्रकाशन होना ही चाहिए।

धन्यवाद सहित।

—हरिसिंह सैनी



मन्त्री
आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा
मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली

सन्देश

आदरणीय प्रतापसिंह शास्त्री जी,

आर्य समाज, नागोरी गेट, हिसार के वार्षिकोत्सव पर एक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आर्य समाज, हिसार का 100 वर्ष का इतिहास सैद्धान्तिक रुप में एक स्मारिका प्रकाशित करने जा रहे हैं। इस आर्य समाज की स्थापना शेरे पंजाब केसरी लाला लाजपत राय जी ने अपने कर कमलों से स्थापित की थी। तदनुरुप ही स्मारिका का प्रकाशन तथा महोत्सव का आयोजन करें।

मेरी इच्छा है कि आर्य समाज अपने नियम व उद्देश्य को ध्यान में रखकर भारत में ही नहीं अपितु समस्त विश्व में पृथक सम्प्रदायों के मानने वाले लोगों को समीप लाने और उनमें वैदिक धर्म एवं सौहार्द बढ़ाने का प्रयास करें। तभी धर्म के नाम पर समाज में समाविष्ट रुढ़ियां और भेदभाव की प्रवृत्तियों का उन्मूलन होना संभव है।

मैं इस स्मारिका एवं वार्षिकोत्सव की सफलता के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनायें भेजता हूँ।

—रामनाथ सहगल

कुलपति,
हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार।

सन्देश

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि आर्य समाज, नागोरी गेट, हिसार का वार्षिक उत्सव 3 नवम्बर से शुरू हो रहा है।

हरियाणा में सामाजिक व सांस्कृतिक परिवर्तन लाने में आर्य समाज का बहुत बड़ा योगदान रहा है। आर्य समाज ने जनता को न सिर्फ सामाजिक बुराईयों से लड़ना सिखाया बल्कि एक ऐसा वैज्ञानिक रवैया अपनाने हेतु प्रेरित किया जो बुद्धि और सूझबूझ की कसौटी पर खरा उतरा है। देश की आजादी के लिए लड़ने वाले अधिकांश नेतागण आर्य समाज से ही प्रभावित थे। ऐसे नेताओं में शेरे पंजाब लाला लाजपतराय का नाम सर्वोपरि है। यह लाला लाजपतराय की दूरदर्शिता का परिणाम ही था कि उन्होंने 1886 में हिसार में आर्य समाज की स्थापना की जिसके कारण समाज में सभी तरह की चेतना आई। आज विज्ञान की तरक्की के कारण समाज ने जो प्रगति की है वह निःसन्देह सराहनीय है परन्तु इस प्रगति के साथ-साथ समाज पर जो बुरे प्रभाव पड़े हैं वो किसी से छिपे नहीं हैं। अतः आर्य समाज के सिद्धान्तों का आज भी उतना ही महत्व है जितना कि 100 वर्ष पूर्व था। एक स्वस्थ आधुनिक समाज के निर्माण में आर्य समाज आज भी वही भूमिका निभा सकता है जैसी उसने पहले भी निभाई है।

मेरी कामना है कि आर्य समाज, हिसार इस उद्देश्य पूर्ति हेतु ऐसे ही प्रगतिशील रहे। मैं इस उत्सव पर आयोजकों को बधाई देता हूँ तथा समारोह के सफल समापन की कामना करता हूँ।

—डा० हरस्वरूप सिंह

प्रधान,
नगरपालिका, हिसार

सन्देश

यह शुभ समाचार प्राप्त कर आनन्द हुआ कि आर्य समाज नागोरी गेट, हिसार का वार्षिक उत्सव 3, 4, 5 नवम्बर को होने जा रहा है। और आप इस शुभ अवसर पर स्मारिका का प्रकाशन भी कर रहे हैं। आपका यह प्रयास सफल एवं सुसम्पन्न हो यही शुभ कामना एवं प्रार्थना है।

इस आर्य समाज की स्थापना पंजाब केसरी लाला लाजपतराय जी के कर-कमलों से हुई है। उनकी वह प्रेरणा आज भी उतनी ही आवश्यक है जितनी 100 वर्ष पूर्व थी।

—रामभगत गुप्ता

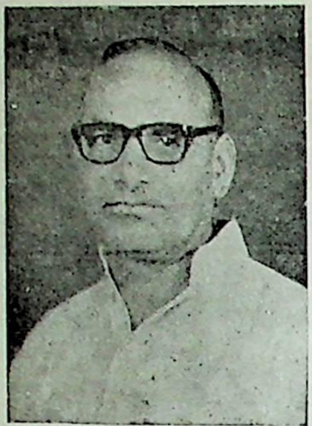
प्रधान
हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द मठ, रोहतक

सन्देश

हर्ष का विषय है आर्य समाज नागोरी गेट, हिसार अपने वार्षिक महोत्सव पर 'स्मारिका' का प्रकाशन कर रहा है। आर्य समाज हिसार ने अपने सौ वर्ष के कार्यकाल में बड़ा भारी कार्य किया है। पंजाब केसरी लाला लाजपतराय द्वारा सन् 1886 में स्थापित की गई यह आर्य समाज, हिसार के क्षेत्र में अग्रणी आर्य समाजों में अपना अस्तित्व बनाए हुए है जिसके अन्तर्गत कई शिक्षण संस्थाएं कार्यरत हैं। मुझे आशा है स्मारिका आर्य समाज हिसार की गतिविधियों का दर्पण तो होगी ही, साथ ही विद्वानों के मौलिक विचार भी पाठकों को स्वाध्याय के लिए मिलेंगे।

मैं स्मारिका के सफल प्रकाशन के लिए शुभ कामनाएं भेजता हूँ।

—प्रो. शेरसिंह



प्राचार्य
दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय
हिसार ।

सन्देश

मान्य मन्त्री जी,

सादर नमस्ते । आपके पत्र से ज्ञात हुआ कि आप अपने 3, 4, 5 नवम्बर, 89 को होने वाले वार्षिक उत्सव पर स्मारिका प्रकाशित करने जा रहे हैं । आर्य समाज नागोरी गेट हिसार एक ऐतिहासिक आर्य समाज है । जिसकी स्थापना लाला लाजपतराय के कर-कमलों से हुई । कभी यहां पर 26, 27 भजन मण्डलियां रहती थी । वह स्वर्णीय युग था । लाला चन्दुलाल तायल, हरिलाल तायल, लाखपतराय एडवोकेट, प्रकाशचन्द एडवोकेट, बक्शी राम कृष्ण एडवोकेट आदि का योगदान इतिहास की थाति है । वह लोगों के सामने आना चाहिये । मैं इस स्मारिका के लिए अपनी शुभ-कामनाएं तथा शुभ-सन्देश प्रेषित कर रहा हूँ ।

—सत्यप्रिय शास्त्री

भूतपूर्व मन्त्री
हरियाणा सरकार

सन्देश

आर्य समाज नागोरी गेट, हिसार अपने वार्षिक उत्सव पर आर्य समाज हिसार के 100 वर्षों के परिप्रेक्ष्य में आत्म निरीक्षण के लिए एक स्मारिका का प्रकाशन कर रहा है। इस कृतज्ञतापूर्ण प्रकाशन के अवसर पर मैं अपनी शुभकामनाएं भेज रहा हूँ।

—बलवन्तराय तायल

☐ वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज के पावन वार्षिकोत्सव तथा स्मारिका प्रकाशन के शुभावसर पर शुभकामनाएं प्रदान करते हैं।



आर्य समाज नागोरी गेट के 100 वर्ष इतिहास के परिप्रेक्ष्य में कुछ आर्य समाजी कार्यकर्ता

लेखक : प्रतापसिंह शास्त्री
पत्रकार, मंत्री, आर्य समाज, हिसार

पंजाब केसरी लाला लाजपतराय

मैं लाला लाजपतराय के विषय में अलग से कुछ नहीं लिख रहा क्योंकि इस स्मारिका में उनके विषय में बहुत कुछ लिखा जा चुका है। लाला जी ने सन् 1886 में इस आर्य समाज, हिसार की स्थापना की वे मन्त्री पद पर भी रहे और जीवन पर्यन्त इस आर्य समाज से जुड़े रहे ।

आर्य श्रेष्ठ चन्दुलाल तायल

सन् 1886 में आर्य समाज के प्रधान बने तथा मृत्यु पर्यन्त सन् 1909 तक प्रधान पद को सुशोभित किया तथा आर्य समाज को स्थापित करने में नींव पत्थर के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की।

पं. लखपतराय दादा

हिसार आर्य समाज के प्राण थे लाला लाजपतराय के बाद मंत्री पद को सुशोभित किया। इनके जीवन के विषय में अंग्रेजी भाषा में इस स्मारिका में विस्तृत लेख दिया गया है।

लाला हरिलाल तायल

सन् 1886 से सन् 1920 तक (जीवन पर्यन्त) आर्य समाज हिसार की अन्तरंग सभा के सदस्य एवं पदाधिकारी रहे। आर्य समाज की स्थापना के लिए अपना अस्तबल (घोड़े बांधने का स्थान)भूमि दान में दी जहां आज भव्य आर्य समाज मन्दिर है। 30-10-1920 को डा. रामजी लाल ने लाला हरिलाल के देहावसान पर अपनी डायरी में लिखा—लाला हरिलाल श्रेष्ठ पुरुष थे आर्य समाज के लिए वे तन-मन-धन न्योछावर करने में कभी भी आनाकानी नहीं करते थे।

डा. रामजीलाल

डा. रामजीलाल सन् 1892 से लेकर 1943 तक जीवन पर्यन्त आर्य समाज हिसार की अन्तरंग सभा के सदस्य रहे और आर्य समाज की संस्थाओं से जुड़े रहे। सन् 1905 में आर्य समाज

के मन्त्री रहे। इसके बाद कई बार प्रधान व मंत्री के पदों को सुशोभित किया। लाला लाजपतराय ने डा. रामजी लाल के विषय में बहुत लिखा है हमने इस स्मारिका में पंजाब केसरी की आत्म कथा से वह पृष्ठ उद्घृत कर दिये हैं जिनमें डा. साहब के विषय में यशो गान किया गया है।

बंस गोपाल एडवोकेट

चौ. बंस गोपाल एडवोकेट सन् 1905 में युवा एडवोकेट थे डा. रामजी लाल की लड़की मैट्रिक पास स्त्री आर्य समाज हिसार की (मंत्री, संस्थापक) थी जिसका शुभ विवाह श्री बंसगोपाल जी से हुआ था जिसका नाम चन्द्रमुखी था जो सन् 1910 तक जीवित रही। श्री बंसगोपाल जी लम्बे समय तक हिसार आर्य समाज से जुड़े रहे तथा वे आर्य समाज के पुस्तकालयाध्यक्ष लम्बे समय तक रहे। मंत्री पद को भी उन्होंने सुशोभित किया। पश्चात वे करनाल चले गये जिनका परिवार मान परिवार के नाम से विख्यात हुआ। सन् 1910 के बाद दौलतपुर (हिसार) गांव में रिश्ते नाते के सम्बन्ध बने।

श्री चूड़ामणि एडवोकेट

बाबू चूड़ामणि एडवोकेट लाला लाजपतराय से भी आयु में बड़े थे। हिसार आर्य समाज की स्थापना से पूर्व ही वे वैदिक विचारधारा से प्रभावित थे। क्योंकि उन्होंने स्वयं महर्षि दयानन्द के दर्शन एक बार किये थे तथा प्रवचन सुना था। आर्य समाज हिसार से लम्बे समय तक वे जुड़े रहे। पदाधिकारी कई बार बने। अन्तरंग सभा के सदस्य भी रहे। आर्य समाज ने उनकी स्मृति में हिसार नगर में उन दिनों चूड़ामणि अस्पताल स्थापित करवाया बाद में जो विशाल रुप में विस्तृत हुआ और उनके सुपुत्र सेठ जसवन्तराय जो लाला लाजपतराय के साथ मिलकर व्यापार करते थे के दान से चूड़ामणि धर्मार्थ ट्रस्ट के रुप में आज भी इस इलाके में सेवारत है।

डा. धनीराम

डा. रामजीलाल के जमाने में डा. धनीराम जी आर्य समाज में सक्रिय हुए। दोनों ने सांझे का औषधालय चलाया। आर्य समाज के प्रधान भी बने। मंत्री भी बने। लम्बे समय तक आर्य समाज तथा आर्य संस्थाओं की सेवा की।

श्री प्रकाशचन्द्र एडवोकेट

सन् 1920 के बाद श्री प्रकाशचन्द्र एडवोकेट जैसे युवा समाजी धीरे-धीरे आर्य समाज में सक्रिय हुए। वेदप्रचार मण्डल का कार्य आर्य समाज की अन्तरंग सभा ने इन्हें सौंपा। अनेक भजन मण्डलियां इनकी देख-रेख में इस इलाके में कार्यरत थी श्री प्रकाशचन्द्र जी लम्बे समय तक

जीवन पर्यन्त आर्य समाज के प्रधान, मन्त्री, प्रचार मन्त्री अन्तरंग सदस्य तथा आर्य संस्थाओं के पदाधिकारी के रुप में आर्य समाज की सेवा करते रहे।

श्री वजीरचन्द जी व श्री बसन्तलाल जी

सन् 1922-23 के आस-पास आर्य समाज के कार्यों में सक्रिय हुए। समाज के प्रधान भी बने। तथा श्री बसन्तलाल जी मन्त्री बने।

पं मुरारीलाल जी शास्त्री

संस्कृत के बड़े प्रकांड पण्डित थे। देश की स्वतन्त्रता से पूर्व ही सन् 1938-39 के हैदराबाद सत्याग्रह के आस-पास आर्य समाज हिसार के बड़े तेजस्वी नेता के रुप में विख्यात हो चुके थे। आर्य समाज के प्रधान, मन्त्री, जैसे पदों को सुशोभित किया। इनके समय में पं. देवराज संधीर एडवोकेट, पं. दीनदयाल जी, लाला बैजनाथ, चौ. नत्थनलाल, श्री बसन्तलाल भटनागर, बख्शी रामकिशन एडवोकेट, श्री मदनमोहन जी श्री प्यारेलाल गुप्ता, श्री विष्णु प्रभाकर (हिन्दी लेखक प्रसिद्ध साहित्यकार), श्री सज्जनकुमार, श्री फतेहचन्द जी, श्री विजयचन्द्र शास्त्री, सेठ छबीलदास, घनश्यामदास, (बालसमन्द', सेठ लालमन आर्य, सेठ फूलचन्द भारवासिया पं. जगन्नाथ आर्य, मा. चिरंजीलाल, आत्माराम एडवोकेट, नानकचन्द अर्जीनवीस, अर्जुनदेव आर्य, श्री जयदेव आर्य, आर्य युवक आर्य समाज हिसार को एक प्रकार की पूंजी के रुप में मिले। जो आजादी के बाद उस आर्य समाज के प्रधान, मंत्री प्रचार मंत्री तथा अन्तरंग सदस्य रहे।

श्री रामकिशन बख्शी एडवोकेट

सन् 1955 से 1975 तक आर्य समाज हिसार के तथा दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय. सी. ए. वी. हाई स्कूल जैसी आर्य संस्थाओं के पदाधिकारी भी रहे।

डा. आर. टी. गुलाटी

सन् 1974 से 1984 तक आर्य समाज के प्रधान रहे। इसके साथ 10 वर्ष तक मन्त्री पद को सुशोभित किया डा. रविदत्त शास्त्री, एम.ए., पी-एच.डी ने इस पत्रिका (स्मारिका) में अपने कार्यकाल का विस्तृत विवरण दिया है अतः मैं यहां अधिक चर्चा नहीं कर रहा।

पं. श्री देवराज संधीर एडवोकेट

हैदराबाद सत्याग्रह तथा सन् 1947 के भारत विभाजन के समय आर्य समाज के माध्यम से इन्होंने बड़ा प्रशंसनीय कार्य किया है। आर्य समाज हिसार के अन्तरंग सदस्य तथा दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय जैसी आर्य संस्थाओं के पदाधिकारी भी रहे।

श्री रामधारी आर्य

श्री रामधारी जी आर्य लग्नशील, दृढ़ आर्य समाजी हैं, दानवीर हैं आर्य समाज हिसार तथा आर्य संस्थाओं से लम्बे समय से जुड़े हुए हैं सन् 1982-83 में प्रधान रहे। तथा श्री सीताराम आर्य मन्त्री रहे। सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी शानदार ढंग से मनाई गई। आजकल भी श्री रामधारी जी आर्य सन् 1987-88, 1988-1989 में प्रधान हैं और मन्त्री प्रतापसिंह शास्त्री (लेखक) हैं। इनकी प्रेरणा से श्री मेघराज ठेकेदार एक भव्य गेट का निर्माण कर रहे हैं और स्वयं प्रधान श्री रामधारी जी भी अपने दान से आर्य समाज की कुछ दुकानें बना रहे हैं जिनका निर्माण कार्य चल रहा है।

चौ. धर्मसिंह जी रिटायर्ड तहसीलदार

बड़े लग्नशील आर्य समाजी हैं। सन् 1983-84 में आर्य समाज के प्रधान रहे। तथा इनके साथ मन्त्री के रुप में कार्य किया प्रतापसिंह शास्त्री (लेखक) ने।

श्री बलदेव जी तायल

सन् 1984 के बाद दो वर्ष आर्य समाज के प्रधान रहे तथा इनके साथ मन्त्री रहे श्री राजकुमार जी मल्होत्रा एडवोकेट।

श्री सीताराम आर्य

यह अपने आप में एक संस्था है स्वामी देवानन्द से प्रेरणा पाकर आर्य समाजी बने। सेठ रामधारी आर्य जी के साथ यह मन्त्री पद को सुशोभित कर चुके हैं।

श्री नन्दलाल जी

श्री नन्दलाल जी दयानन्द कालेज, हिसार में क्लर्क थे साथ ही 10-15 वर्ष तक आर्य समाज के मन्त्री रहे।

श्री हरिसिंह सैनी,

श्री हरिसिंह सैनी जो आजकल राज्य मंत्री हरियाणा सरकार हैं इनका योगदान भी आर्य समाज के इतिहास में उल्लेखनीय है क्योंकि लगभग गत् 20-25 वर्षों से ये आर्य समाज से जुड़े हुए हैं और कई वर्ष से आर्य समाज के उप-प्रधान हैं। श्री नानकचन्द अर्जीनवीस व श्री कुलबीरसिंह एडवोकेट भी उप-प्रधान के पद को सुशोभित करते रहे हैं।

मैंने संक्षिप्त रुप में प्रयास किया है कि मैं उन महानुभावों का जिक्र करूं जो यहां मंत्री व प्रधान रहे हैं जिससे एक शताब्दी के इतिहास की कुछ जानकारी पाठकों तक पहुँचे। □

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज, नागोरी गेट हिसार की वर्तमान अन्तरंग सभा के पदाधिकारी एवं सदस्यों की सूची

श्री रामधारी आर्य, प्रधान
रामधारीमल राजकुमार, काठ मण्डी, हिसार
दूरभाष : 6528, 3248

श्री हरिसिंह सैनी, उप-प्रधान
(राज्यमन्त्री हरियाणा)
मौहल्ला सैनियान हिसार,
दूरभाष : 2168, 2177

श्री सखीरचन्द कपूर, उप-प्रधान
ठन्डो सड़क, कपूर भवन, हिसार

श्री प्रतापसिंह शास्त्री, मन्त्री
(प्रैस रिपोर्टर दैनिक वीर प्रताप जालन्धर)
पत्रकार, 452 ढाणी जयदेव, हिसार ।

डा. रविदत्त शास्त्री, एम.ए.पी-एच.डी., उपमन्त्री
अध्यापक जगन्नाथ आर्य कन्या उच्च विद्यालय, हिसार

डा. आर. टी. गुलाटी, वेद प्रचार अधिष्ठाता
गुलाटी क्लीनिक विजय नगर, हिसार
दूरभाष : 2532

श्री हुक्मचन्द गाबा, कोषाध्यक्ष
मौहल्ला डोगरान, हिसार

श्री जिलेसिंह, पुस्तकालयाध्यक्ष
प्राचार्य, मार्डन पब्लिक स्कूल
सुभाष नगर, हिसार

श्री सुरेन्द्रनाथ गुप्ता, प्रचार मन्त्री
गुप्ता भवन, विजय नगर, हिसार

श्री सीताराम आर्य, अन्तरंग सदस्य
आर्य लोहा उद्योग, बालसमन्द रोड़
दूरभाष : 5403

श्री बलदेव तायल, अन्तरंग सदस्य
(भू.पू. मन्त्री हरियाणा)
तायल एण्ड सन्ज, हिसार
दूरभाष : 2358, 2830

डा. सर्वदानन्द आर्य, प्राचार्य, दयानन्द कालेज, हिसार
दूरभाष : 5342, 2320

श्री सत्यप्रिय शास्त्री, एम. ए., प्राचार्य दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार
दूरभाष : 2220

श्री सूर्यकुमार आर्य, प्राचार्य, सी. ए. वी. हाई स्कूल, हिसार
दूरभाष : 5337

श्री हरबंसलाल कपूर, प्रधान, जगन्नाथ आर्य कन्या उच्च विद्यालय, हिसार
(रिटायर्ड पुलिस विभाग)
सुभाष नगर, हिसार
दूरभाष : 5222

श्री सहदेव आर्य एडवोकेट, मोहना मण्डी, हिसार

श्री राजकुमार आर्य, मैनेजर (प्रबन्धक) जगन्नाथ आर्य कन्या उच्च विद्यालय, हिसार एवं
मण्डलपति आर्य वीरदल,
काठ मण्डी, हिसार दूरभाष : 6528, 3248

श्री धर्नसिंह, (रिटायर्ड तहसीलदार)
प्रेम नगर हिसार

श्री प्रहलादराय, ठेकेदार, राय एण्ड सन्स
सुशीला भवन, हिसार

श्री अत्तारसिंह आर्य (ढांडा)
वरिष्ठ ड्राफ्स मैन, पी.डब्ल्यू.डी., हिसार

प्रो. गोपीचन्द, प्राध्यापक, राजकीय कालेज, हिसार

प्रो. बीरसिंह, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

श्री महेन्द्रसिंह आर्य, (ब्रांच मैनेजर)
सहकारी बैंक, भट्टू कलां, (हिसार)

श्री चेतन प्रकाश, प्रोफसर कालोनी, हिसार

श्री जयसिंह 'योगी', मोहल्ला रामपुरा, हिसार

॥ ओ३म् ॥

ऐतिहासिक दस्तावेज-इतिहास के परिप्रेक्ष्य में हिसार में

पंजाब केसरी

लाला लाजपतराय

[**सम्पादक**—यह लेख पञ्जाब केसरी ला० लाजपतराय जी की आत्मकथा हिन्दी अनुवाद प्रथम भाग से (पृष्ठ 60 से 82 तक) उद्धृत किया है। यह आत्मकथा नवयुग ग्रन्थमाला मोहनलाल रोड लाहौर से प्रकाशित है। इस लेख को पढ़ने से पाठकों को विदित हो जायेगा कि हिसार नागोरी गेट आर्य समाज के साथ देश-भक्त ला० लाजपतराय जी का कैसा सम्बन्ध था? और भारतीय स्वाधीनता संग्राम में अपनी आत्मा की आहुति करने के लिए लाला जी के तप, त्याग की क्या पृष्ठभूमि थी? पाठकगण! यह सब उन्हीं के शब्दों को पढ़कर धार्मिक, सामाजिक एवं विशुद्ध राजनैतिक क्षेत्र में स्व जीवन को उन्नतशील बनाने के लिए सद्प्रेरणा प्राप्त करेंगे, धन्यवाद।]

(1886 ई० से 1892 ई० तक)

1886 ई० से अप्रेल 1892 तक मैं हिसार में वकालत करने के साथ-साथ काम करता रहा। मेरे जाने के बाद और मेरे सामने वहाँ पर आर्य समाज की नींव पड़ी। इन पाँच सालों में मैंने हिसार के वकील पण्डित लखपतराय और हिसार के साहूकार लाला चन्दूलाल और हरिलाल की सहायता से एक बहुत अच्छी रकम रुपये की जमा करके कालेज के चन्दे के रूप में भेजी और दूसरी तरह से भी समाज को दृढ़ किया। यहां तक कि यह समाज इस समय सूवा की सुदृढ़ और अच्छे समाजों में गिनी जाती है। जिला की जनता में विशेषकर हिसार, रोहतक और देहली के जिलों में आर्य समाज के विचार का और साधारण जाति हित का विचार पैदा करने में जो सफलता आर्य समाज को हुई है वह सूबा भर में अपनी समता नहीं रखती। हिसार आर्य समाज उन समाजों में से है।

जिन्होंने इस बात का अनुभव किया है कि जब तक शिक्षित और अशिक्षित समुदायों में हृदय की सहानुभूति और गहरा सम्बन्ध न हो सुधार का काम नहीं हो सकता, और उससे काफी अच्छे नतीजे नहीं निकल सकते। आर्य समाज की सफलता का एक मन्त्र यह है कि वह सुधार और उन्नति के काम को केवल शिक्षित समुदाय तक परिमित नहीं रखना चाहती और ऐसे उपायों द्वारा काम करती है जो सर्व साधारण और अशिक्षित हिन्दुओं को हृदय ग्राही होते हैं। हिसार आर्य समाज ने इस विषय में बहुत अमली और बहुत फैला हुआ काम किया है। इस बात का श्रेय जिन आदमियों को है उनकी इस अवसर पर संक्षेप से चर्चा करना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूँ।

सबसे पहले मैं परलोक वासी लाला चन्दूलाल आर्य समाज के प्रधान का उल्लेख करता हूँ। लाला चन्दूलाल जी हिसार के बहुत आदरणीय घराने के रत्न थे। जाति के अग्रवाल बनिये थे। उनके लाला रामजीदास बिल्कुल असाधारण प्रकृति के आदमी थे। ब्रिटिश गवर्नमेण्ट ने जब पहली बार काबुल पर चढ़ाई की थी उस समय लाला रामजीदास और उनके भाई इत्यादि कमिसरियट विभाग में गुमाश्ता और खजांची थे और उन्होंने उस समय बहुमूल्य सेवाएं की थी। उसके बाद वह जिला हिसार के बहुत दिनों तक खजांची रहे परन्तु एक बार उनके नौकर की असावधानी से खजाने में कुछ हानि हुई और लाला रामजीदास को कुछ कष्ट उठाना पड़ा। उस दिन से उन्होंने निश्चय कर लिया और मरते दम तक इस निश्चय पर दृढ़ रहे कि सामयिक सरकार के साथ किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं रखना। लाला रामजीदास धार्मिक और सामाजिक विचार में बहुत ही उदार थे। पौराणिक धर्म को वह मानते न थे और मूर्ति पूजा के पक्ष में न थे। सामाजिक विचारों में तो बहुत ही उदार और साहसी थे। बिरादरी और नगर के लोगों की स्थिति तथा विचार धारा से ऊंचे होकर उन्होंने अपने कुल में ऐसे सामाजिक सुधार किए जो उस समय उस हैसियत के आदमी से होने असम्भव थे। लाला रामजीदास में कुछ गुण वीरता के थे। दूसरों की सम्पत्तियों को वह तुच्छ समझते थे। जिसको वह दुरुस्त समझते थे उसको करने में उनको कभी रुकावट नहीं हुई। अपने हठ और अपनी धुन के पक्के थे। अपनी बात के मर्द थे, उदार थे, साहसी थे। वह सरकार के बड़े दरबारी थे। मगर कभी दरबार में न जाते थे। एक दफा जब दरबार के लिये बुलावा कुछ विशेष चेतावनी के साथ आया तो उन्होंने दरबारी पन से त्याग पत्र लिखकर भेज दिया। उनके पोते और उनके भतीजे ने कई दफा उनसे कहा कि वह अपने स्थान पर उनको दरबारी बनवा दें परन्तु उन्होंने स्वीकार नहीं किया और अपने बच्चों को यही सलाह देते रहे कि

अफसरों से अलग रहना ही अच्छा है, और पास जाना अनुचित और आत्म सम्मान के विरुद्ध है। मेरे हिसार में आने के बड़े कारण लाला रामजीदास थे। उन दिनों उनका एक मुकद्दमा गवर्नमेण्ट से चल रहा था। उसके लिए उन्होंने रोहतक से मुझे बुलाया। मैं भी उन दिनों वकालत के लिए उपयुक्त स्थान की खोज में था। जब मैं हिसार आया तो मैंने अपने काम के लिए वहाँ अच्छा क्षेत्र पाया और इसलिए वहाँ ही वकालत करने लगा। लाला रामजीदास प्रायः मेरे पास आया करते थे और मुझसे कहा करते थे कि मेरे दिल में नए शिक्षित समुदाय के लिए आदर और विश्वास नहीं। उन लोगों का चरित्र बहुत नरम और कमजोर है। मगर इतना होने पर भी उनको मुझ पर अत्यधिक विश्वास था। मेरे हिसार आने से पहले हीं उनके कुल में आर्य विचारों का प्रवेश हो चुका था। आर्य सिद्धान्तों को तो वह मानते न थे किन्तु उदार विचारों के कारण आर्य प्रसिद्ध थे।

हिसार में समाज का कार्य

जब मैं हिसार पहुंचा तो वहां पर संस्कृत के एक विद्वान् पण्डित गंगा सहाय थे। यह पण्डित जी वेदान्ती विचारों का प्रचार किया करते। उन्होंने एक सभा भी बना रखी थी। कुछ समय तक तो मैं और मेरे दोस्त पं० लखपतराय और बाबू चूड़ामणि इस सभा में जाते रहे। अन्त में हमने निश्चय किया कि नियमित रीति से आर्य समाज स्थापित की जाए। फिर ऐसा ही किया गया। लाला रामजीदास के पौत्र लाला चन्दूलाल को जो शहर में अपनी बुद्धिमानी, सार्वजनिक कामों में प्रेम और सहानुभूति के विचारों से प्रसिद्ध आदमी थे। इस समाज का प्रधान बनाया गया और मुझे उसका मन्त्री, लाला चन्दूलाल अपनी मृत्यु तक उस समाज के प्रधान रहे और 1886 ई० से लेकर 1909 ई० तक, जब उनका देहान्त हुआ, मेरे मित्र रहे। लाला चन्दूलाल का आचरण बहुत ऊंचा और दृढ़ था वह भी अपने दादा के समान बात के पक्के थे और बहुत उत्साही और साहसी पुरुष थे। लोगों के झगड़े अपने सिर लेते थे। मुझे कभी ऐसा अवसर देखने या सुनने में नहीं आया कि किसी मनुष्य ने अपनी किसी मुसीबत में लाला चन्दूलाल से सहायता मांगी हो और उन्होंने इन्कार किया हो। वह अपने शहर और अपने जिला में प्रत्येक आदमी के सलाहकार थे। उनकी शिक्षा बिलकुल मामूली थी थोड़ी सी संस्कृत, अच्छी हिन्दी और मामूली उर्दू जानते थे, हिन्दी गणित में बहुत चतुर थे, व्यापार चलाने और हुण्डी चिट्ठी के मामलों में उनकी राय माननीय समझी जाती थी। जायदाद और खेती के प्रबन्ध में प्रसिद्ध थे। अपने कुटुम्ब में तीन परिवारों के मुखिया थे। स्वाभाविक बुद्धि का अच्छा

भांग उनको मिला था। हर की तह को बहुत जल्द ही पहुँच जाते थे और हर मामले में उनकी रुचि बुद्धिमानी की होती थी; दोस्त बड़े पक्के थे। धनाढ्य के पुत्र थे। रहन-सहन और खर्चे में अमीर थे जिस पर उनका सामाजिक चरित्र बहुत ऊंचे दर्जे का था। किसी समय में थोड़ी बहुत ऐश भी कर चुके थे। मगर जब से मुझसे दोस्ती हुई ऊंचे दर्जे के सदाचारी रहे। अमीर होते हुये भी लोगों के काम आना और उनके दुःखों में शामिल होना उनका स्वभाव था। लोगों को न केवल औषधियें जो कभी-कभी बहुमूल्य होती थी, बिना मूल्य देते थे बल्कि मैंने कई दफा देखा कि रात को लोगों ने उनको सोते हुए जगाया और वह उठकर बीमारों को देखने के लिए उनके साथ हो लये। दिन-रात में हर समय में मुस्तैद रहते थे। परमात्मा ने उस व्यक्ति को विचित्र गुणों का समूह बनाया था। मेरा विश्वास है कि अगर वह अच्छी शिक्षा पाते तो मुल्क के प्रसिद्ध नेताओं में उनकी गणना होती फिर भी अपने परिचित क्षेत्र में वह सबसे प्रभावशाली और लोकप्रिय नेता थे। एक दफा जब एक मुसलमान डिप्टी कमिश्नर से उनकी तकरार हो गई तब जो कमिश्नर साहब तहकीकात के लिए आए उन्होंने उनसे कहा कि "तुम जिला के राजा हो"। इसमें एक तरह का ताना था। मगर साथ ही उनका शक्ति उनके बल और उनकी लोकप्रियता का सर्टीफिकेट भी था। वर्ष से अधिक उन्होंने आर्य समाज की सेवा की और अपना तन, मन, धन उन पर न्यौछावर किया। जिसका एक परिणाम यह हुआ कि हिसार आर्य समाज अपने कार्य क्षेत्र में एक बड़ी शक्ति हो गई।

लाला चन्दूलाल राजनीति में भाग नहीं लेते थे। किन्तु वह राजनीति की चाल समझते थे और जब कभी उनके सामने कोई राजनीतिक चर्चा होती थी तो वह उसको अच्छी तरह समझते थे। वह अपने जिला के हाकिमों से अच्छो बनाए रखते थे। मगर जब से वह आर्य समाज के नेता बने जिला के हाकिमों के दिल में उनकी तरफ से खटका रहा। 1907 ई० में गवर्नमेंट ने मुझे देश से निकाला तब वह परीक्षा में पूरे उतरे। जिला के हुक्काम को मालूम था कि वह मेरे दोस्त हैं। उन्होंने कभो मेरी दोस्ती से इन्कार नहीं किया और दो साल तक मेरे कुल कागज पत्र उसके मकान में पड़े रहे। हाकिमों से वह यदि यह कहते रहे कि मैं लाजपतराय का दोस्त हूँ और मैं उनको निर्दोष समझता हूँ। ऐसे समय में जब कि मेरे अगणित मित्रों ने मेरा साथ छोड़ दिया, लाला चन्दूलाल मेरे साथ रहे। देश निर्वासन से लौटने के बाद कई बार मैं उनके पास जाकर ठहरा। वह मेरे साथ यात्रा करते थे। मैं देहरादून में उनके साथ तीन सप्ताह तक रहा। जिन दिनों मैं माण्डले में बन्दी था। उन दिनों में भी उन्होंने मुझ से पत्र व्यवहार रखा। यह वह समय

था जबकि मेरे कुछ गहरे मित्र मुझ से तटस्थ हो गये थे और मेरा साथ छोड़ दिया था। अमीर, रईस सरकारी नौकर और उपाधिकारी तो मुझ से कोसों दूर भागते थे। किन्तु लाला चन्दूलाल साहस से खुले तौर पर मेरी दोस्ती का दम भरते रहे। हिसार समाज की उन्नति और लोकप्रियता में इस व्यक्ति के आचरण बुद्धिमानी और उदारता का बहुत बड़ा भाग है। हिन्दुओं की आने वाली पीढ़ियां, जो जातीय मन्दिर इन महापुरुषों के लिए बनावेगी, जिन्होंने उन्नीसवीं और बीसवीं सदी में हिन्दू जाति की रक्षा की और अपनी श्रद्धा और त्याग से अपने पूर्व पुरुषों के धर्म और कीर्ति की, न केवल रक्षा की, किन्तु उनका मान बढ़ाया और जिन्होंने देश और जाति को अपने हृदय सिंहासन पर बैठाया, उनमें स्वर्गीय लाला चन्दूलाल आदर का स्थान पावेंगे। लाला चन्दूलाल जन्म से बनिये थे परन्तु आचरण और स्वभाव ने उनमें कुछ गुण ब्राह्मण के थे और उत्साह तथा वीरता में वह पूरे क्षत्रिय थे। हिन्दूओं के तीनों उच्च वर्णों के गुणों के वह समूह थे। मेरे हृदय में उनके लिये बड़ा आदर है। अपने जीवन में मुझे जितना शोक उनकी मृत्यु पर हुआ थोड़े ही अन्य लोगों की मौत पर हुआ। देवता समान स्वर्गीय बालमुकुन्द जिन्होंने कई वर्ष बिना वेतन लिए अपने खर्च पर दयानन्द कालेज की सेवा की, लाला चन्दूलाल के छोटे भाई थे। उनके दूसरे भाई लाला हरिलाल हिसार के आर्य समाज के प्रधान हैं। जब लाला चन्दूलाल का देहान्त हुआ तब जिला के अगणित हिन्दु-मुसलमान शोक करने आए। तब मैंने बीसियों की जुबान से सुना कि हरियाणा का सरदार चल बसा। हिसार, हाँसी और भिवानी के विभाग को हरियाणा कहा करते थे। उस प्रदेश का यह ऐतिहासिक नाम है।

हिसार आर्य समाज के सौभाग्य से उसको एक और नेता वैसा ही ऊंचा मिला जैसे कि लाला चन्दूलाल थे बल्कि कुछ अंशों में तो यह नेता पंजाब में अपना जोड़ नहीं रखता। लोगों के दुःख में, उनके कष्टों और मुसीबतों में सम्मिलित होने का गुण जो लाला चन्दूलाल में था। उससे कई गुणा अधिक पं० लखपतराय में था। पं० लखपतराय अद्वितीय मनुष्य है। इस व्यक्ति की दृढ़ता, इसका प्रेम, इसकी मित्रता, इसको देवताओं के दरजे तक पहुंचा देती है। मैंने अपने जीवन में बीसियों मित्र बनाए। उनमें से कुछ की मित्रता का मुझे अभिमान है। अपने परिचितों की संख्या तो कदाचित हजारों तक पहुंचती है किन्तु अपने जीवन में मुझे आज तक ऐसा आदमी मुझे नहीं मिला जिसको स्वार्थ रहित प्रेम, निस्पृहता आत्म संयम और त्याग में मैं पंडित लखपतराय के साथ एक ही तकड़ी में तोल सकूं। मेरे पास पर्याप्त शब्द नहीं जिनमें मैं इस व्यक्ति की प्रशंसा कर

॥ ओ३म् ॥

☎ : { 6235 7811

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

Gurukula Kangri, Vishwavidyalaya

डाक व तारघर : गुरुकुल कांगड़ी–२४६४०४ (हरिद्वार) उ०प्र०

P. & T. Office : Gurukula Kangri-249404 (Hardwar)

पत्रांक/Ref. No. शो०/91

दिनांक/Date 2-5-91

श्रीमती वन्दना शर्मा

द्वारा डा० निरूपम शर्मा

G.K.U.

आपके प्रार्थना पत्र के संदर्भ में शोध प्रबन्ध की एक प्रति परीक्षकों के प्रतिवेदन सहित आपको प्रेषित की जा रही है । शोध नियमावली की धारा 15 के अनुसार शोध प्रबन्ध प्रकाशन से पूर्व कुलपति जी की स्वीकृति प्राप्त करना आवश्यक है ।

संलग्न:-उपरोक्त

(डा० एस०एन० सिंह)

उप कुलसचिव

सकूं। मेरे जीवन की अन्धेरी से अन्धेरी घड़ियां मेरे जीवन के उदास से उदास अवसर इस व्यक्ति के प्रेम से प्रकाशित और दीप्त रहे उसने मुझे कभी जवाब नहीं दिया। इस समय दुनियां में कोई ऐसा व्यक्ति नहीं दिखता जिसके साथ मुझे इतना प्रेम है और जिसके लिए मेरे हृदय में ऐसा आदर है जैसा कि पंडित लखपतराय के लिए। पंडित लखपतराय मेरे राजनैतिक विचारों से सहमत नहीं हैं। वह स्वभाव से कुछ डरपोक हैं। मैं उनको कायर नहीं कहना चाहता और न वह कायर हैं परन्तु उनका सब डर और भय अपने लिए नहीं किन्तु आन्दोलन (Movement) के लिए है जिसकी सेवा में उन्होंने अपने जीवन का सबसे अच्छा भाग लगाया है। उनकी सेवा से उनके अपने पास और दूर के सम्बन्धियों ने भी लाभ उठाया। ठीक शाब्दिक अर्थों में वह परिवार पोषक रहे। किन्तु उनकी सेवा का क्षेत्र उनके अपने सम्बन्धियों तक भी सीमित नहीं रहा। उन्होंने अपने मित्रों और परिचितों की भी सेवा की परन्तु सबसे अधिक सेवा आर्य समाज की की। आर्य समाज के इतिहास में उनका नाम सदा चमकता रहेगा। यह काम ऐसे ऊंचे भाव से किया गया और इस तरह से निभाया गया कि मेरे विचार में प्रत्येक आर्य युवक को उनका चित्र अपने गले में लटका लेना चाहिए। जिसमें प्रत्येक परीक्षा के समय वह उसके काम आये और कार्यकर्ता युवक उनके चित्र को देखकर स्वार्थपरता, जातिद्रोह, असत्य व्यवहार और मिथ्या अभिमान के महापापों से बचा रहे। मैं मूर्ति पूजक नहीं और न मूर्तिपूजक का पक्षपाती हूँ। किन्तु आर्य समाज के क्षेत्र में जिन व्यक्तियों ने आदर पाया है कि आगे आने वाली सन्तति उनकी मूर्ति पूजा करें, इनमें पं० लखपतराय सबसे ऊंची श्रेणी में हैं। पं० लखपतराय आर्य समाज के सबसे अच्छे और प्रसिद्ध सेवकों में से हैं। इनका जीवन बहुत सादा और इनका चरित्र बहुत ऊंचा था। आर्य समाज के नेताओं में यदि कोई व्यक्ति है जिसने नाम और प्रसिद्धि की कभी परवाह नहीं की और जिसने औरों को अपने काम का श्रेय लेने दिया वह पं० लखपतराय और मेरे विचार में इससे अच्छी प्रसंशा मैं नहीं कर सकता।

हिसार आर्य समाज के काम में पं० लखपतराय के छोटे भाई डाक्टर धनीराम जी ने भी अच्छा भाग लिया। उनकी बुद्धिमानी उनकी गम्भीरता उनकी जानकारी तथा संस्कृत पण्डित ने समाज के आन्दोलन को बहुत लाभ पहुंचाया। मगर हिसार, रोहतक और दिल्ली के प्रान्त में आर्य समाज के काम और इसके सिद्धान्तों को फ़ैलाने तथा लोकप्रिय बनाने में जिस व्यक्ति ने पवित्र आत्मा का काम किया वह डाक्टर रामजीलाल साहब हैं। सन् 1874 ई० से, जबकि वह रोहतक के डिस्ट्रिक्ट स्कूल में मेरे पिता के शिष्य

थे—मुझे उनकी मित्रता का अभिमान है। यह साहब जाट हैं। परमात्मा ने उनको ऐसा स्वभाव दिया है कि जहाँ जाते हैं लोकप्रिय हो जाते हैं। अपनी बिरादरी और जाति में तो वह अद्वितीय हैं। मैंने आज तक कोई अंग्रेजी पढ़ा लिखा हुआ आदमी ऐसा नहीं देखा जो अपने अशिक्षित भाइयों से ऐसी स्वतन्त्रता और प्रीति से मिलता हो जैसे कि डाक्टर रामजीलाल। प्रायः देखने में आता है कि एक सभ्य शिक्षित सम्पन्न आदमी को असभ्य और अशिक्षित मैली आदत वाले जमींदार से सामाजिक सम्बन्ध पैदा करने में बड़ी कठिनाई होती है। मेरे देशवासी खूब जानते है कि "दुकानदारों और जमींदारों में हुक्का पानी" के क्या अर्थ हैं। सामाजिक सम्बन्ध में हुक्के का अच्छा ऊंचा भाग है। मुसलमान तो साधारणतया सब में एक दूसरे का हुक्का पी लेते हैं किन्तु हिन्दु अपनी बिरादरी और कभी-कभी अपने कुटुम्ब की सीमा से बाहर वाले का हुक्का नहीं पी सकते। शिक्षित अच्छी हैसियत के बाबुओं के लिये, साधारण दुकानदारों और जमींदारों का हुक्का पीना कठिन हैं। बाबू लोग बिरादरी वालों को अपना हुक्का पीना पसन्द नहीं करते व डाक्टर रामजीलाल को इस बारे में अपवाद रूप में पाया है।

मैंने कई बार उनको जाटों के घेरे में उनका मैला कुचैला हुक्का पीते देखा है। हिसार में इनका घर उस प्रदेश भर के जाटों का केन्द्र था। लोग दूर-दूर से उनसे चिकित्सा कराने और आंखें बनवाने तथा चीर-फाड़ का काम कराने आते थे। बहुतों को वह खाना भी अपने घर पर से खिलाते थे। अपनी योग्यता चिकित्सा जर्राही और आतिथ्य सत्कार से उन्होंने हजारों जाटों में अपने धर्म का प्रचार किया और अपनी बिरादरी वालों के हृदयों में जाति हित और देश भक्ति का दीपक जलाया और उनके मनों में देश के प्रान्तों के सम्बन्ध में दिलचस्पी पैदा कर दी।

हिसार आर्य समाज के सेवकों में कुछ और नाम है जिनकी मैं संक्षेप से चर्चा करना चाहता हूँ। इनमें सबसे ऊंचा दर्जा मैं पण्डित अमीचन्द को देता हूँ। हिसार के जाटों में प्रचार के काम के लिए इस वृद्ध का अस्तित्व मानों ईश्वरी देन थी। अमीचन्द के भाव सच्चे ब्राह्मण के हैं और हिसार तथा रोहतक के जिलों में आर्य विचारों को लोकप्रिय कराने का काम जिस सुन्दरता से पण्डित जी ने किया इसको प्रकट करने में मेरी लेखनी असमर्थ है। इसको प्रकट करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं।

इसके अतिरिक्त चूड़ामणि साहेब ने अनाथ बच्चों की रक्षा में जो यत्न किया वह भी प्रशंसनीय है। हिसार में आर्य समाज स्थापित करने में और पहले पाँच साल

उसको पानी देने में जो हिस्सा मैंने लिया उसे अभिमान से याद रखूंगा। वह समय विरोध परीक्षा और धीरज तथा पोषण का था। सर्दी गर्मी में उसकी रक्षा की आवश्यकता थी। वर्षों तक समाज का साप्ताहिक अधिवेशन मेरे मकान में होता रहा। कई वर्ष ऐसे बीत गए कि सिवाय मेरे मुंशी के और कोई समाज में नहीं आया किन्तु मैंने समाज में कभी नागा नहीं किया। कई सप्ताहों तक स्वयं ही उपासना करता रहा और आप ही उपदेश या लैक्चर देता रहा। नियमित मन्त्री हिसार समाज का मैं केवल एक साल तक रहा परन्तु जब तक मैं हिसार में रहा आर्य समाज का अधिक बोझ मेरे ऊपर रहा। हिसार आर्य समाज के वकील, सभासद अपनी आय का एक प्रतिशत (शतांश) भाग प्रतिवर्ष गिनकर देते थे। अन्त में पाँच साल के बाद लाला चन्दुलाल के भाई लाला हरिलाल के हृदय में समाज मन्दिर बनाने के लिए उत्साह पैदा हुआ। उन्होंने अपने भाई को समाज मन्दिर के लिए एक मकान दान करने की प्रेरणा की। इसके लिए मैंने भी अपनी एक महीने की आय 1500 से अधिक भेंट की। औरों ने भी एक-2 महीने की आय इसके लिए दान की। इस समय हिसार आर्य समाज के सदस्य थोड़े ही थे। हिसार आर्य समाज का सुन्दर मन्दिर लाला चन्दुलाल और उनके भाइयों की उदारता का फल है। महीनों वह स्वयं मकान बनाने में देखभाल करते रहे और अपने पास से इसके लिए रुपया लगाते रहे। उस मन्दिर के बनाने से उनका आर्य समाज के साथ इतना सम्बन्ध हो गया कि अन्त समय तक समाज उनकी आत्मा से दूर नहीं हुआ।

राजनैतिक धुन

मैं हिसार में छः वर्ष रहा। उस समय से मैंने अपनी शिक्षा की कमी को पूरा करने का उद्योग किया। सामाजिक और राजनैतिक विषयों पर तथा धर्म सम्बन्धी और साधारण साहित्य की बहुत सी पुस्तकें मैंने पढ़ीं। इस बीच मैंने कई बार संस्कृत पढ़ने का यत्न किया। पर इसमें मुझको सफलता नहीं हुई। कारण यह था कि वकालत का धन्धा इतना थका देता था कि दिन भर काम करने के बाद उतना ध्यान और लगाव नहीं हो पाता था जितना संस्कृत जैसी कठिन भाषा को सीखने के लिए आवश्यक है। अपने पेशे के काम और आमदनी दोनों ही के विचार से मैं प्रथम गिना जाता था हिसार में मेरी आमदनी 17 हजार हर वार्षिक के लगभग पहुंच गई और कभी किसी वर्ष में भी जहां तक मुझे स्मरण है दस हजार से कम नहीं हुई। मैंने छः वर्ष में कम से कम 70 या 80 हजार रुपया पैदा किया होगा। सबसे पहला काम तो मैंने यह किया कि अपने पिता को उनकी नौकरी से स्वतन्त्र करा दिया। उन्होंने मेरी वकालत के पहले ही साल में

पेन्शन ले ली और मैंने इतना धन उनको भेंट कर दिया कि जिसके ब्याज से वह उमर भर आराम से जीवन व्यतीत करें और अपने बाल बच्चों का पालन कर सकें। यह धन केवल दूरदर्शिता और पूंजी रखने के विचार से उनको दे दिया गया था। वैसे तो सारे कुटुम्ब का व्यय (ब्याह शादी और मेरे भाइयों की शिक्षा के व्यय सहित) मेरे सिर पर रहा। अर्थात साधारण दैनिक व्यय के लिए उनको अपनी पूंजी का ब्याज भी खर्च न करना पड़ता था। इसके अतिरिक्त मैने अपनी आमदनी का 10 प्रतिशत तक नियम पूर्वक अपनी जाति की सेवा के लिए व्यय किया। इस समय मैं समाज के लिए प्रायः बाहर जाता था, व्याख्यान देता था। चन्दा जमा करता था और वे अन्य सेवायें भी करता था जो समाज के नेता मेरे सुपुर्द करते थे। समाचार पत्रों में लिखता भी था, राजनैतिक विषयों में भी रुचि रखता था। पढ़ने के रोचक काम में जिले के एक मुसलमान अंग्रेजी क्लर्क मीर महम्मद हसन मेरे साथी थे। मैं उनकी मित्रता को सदा प्रेम से स्मरण करता हूँ। जब तक मैं हिसार रहा मेरा उनसे गहरा सम्बन्ध रहा। यहाँ तक कि कई बार मैंने उनके यहाँ खाना खाया और वह मेरे यहां प्रायः खाया करते थे और मेरी किताबें पढ़ा करते थे। अन्तिम तीन वर्षों में मैं हिसार की म्युनिसिपल कमेटी का निर्वाचित मेम्बर और अवैतनिक मंत्री रहा। जिस वार्ड की ओर से मैं मेम्बर था उसके निवासियों में मुसलमानों की संख्या अधिक थी। जब वे मेरे नाम का प्रस्ताव लेकर जिले के साहब डिप्टी कमिश्नर की कचहरी में गये तो उक्त साहब ने उनको अपने विचार से हटाने का उद्योग किया पर वे हटे नहीं। मेरे विरोध में कोई दूसरा व्यक्ति निर्वाचन के लिए खड़ा न हुआ और मैं बिना विरोध के ही कमेटी का मैम्बर हो गया।

कमेटी का सभापति डाक सैनिक कमसरियट का यूरोपियन अफसर था। यह बहुत कुटिल और अत्याचारी था। शहर के लोग उससे तंग थे मैं जनता के हकों की रक्षा करता था और उनके विचारों का पक्ष लेता था इसलिए वह और जिले का डिप्टी कमिश्नर सदा मेरे कामों पर दृष्टि रखते थे। इस कमेटी में 12 मैम्बर देसी और तीन यूरोपियन अफसर थे। कई बार ऐसा अवसर आया कि 12 देसी मैम्बर एक ओर तीन यूरोपियन अफसर दूसरी ओर। मैंने तीन वर्षों में हिसार के कस्बे में शिक्षा और स्वास्थ की उन्नति के करने में बहुत कुछ सफलता प्राप्त की। सभापति साहब के उभारने पर एक हैडमास्टर ने मेरे साथ झगड़ा पैदा किया परन्तु इसको बहुत कुछ नीचा देखना पड़ा, शिक्षा विभाग ने मेरी कारवाई में कोई आपत्ति योग्य बात न पाई और हैडमास्टर को लज्जित होकर वहां से जाना पड़ा। इसी प्रकार एक दफा प्रान्त के छोटेलाल के आगमन

पर सभापति और डिप्टी कमिश्नर के साथ स्वागत पत्र के सम्बन्ध में हमारा भारी विरोध हो गया। वह चाहते थे कि स्वागत पत्र में जनता के कष्टों और विवादास्पद सार्वजनिक विषयों का कोई चर्चा न की जाय, मैं चाहता था कि स्वागत पत्र में इन विषयों की अवश्य चर्चा की जाए। देसी मम्बर मुझ से सहमत हुए, अतः सभापति साहब और डिप्टी कमिश्नर को इस बात से नोचा देखना पड़ा। स्वागत-पत्र उर्दू में तैयार किया गया और कमेटी की ओर से मैंने पढ़ा। इस सैनिक अफसर के कुछ काल के लिये छुट्टी चले जाने पर, हमने एक हिन्दुस्तानी अफसर को अपना सभापति चुन लिया। मैम्बरों में इतना साहस न था कि वे किसी गैर सरकारी सज्जन को सभापति निर्वाचित करते। सभापति का चुनाव कमिश्नर साहब द्वारा स्वीकृत होने पर ही मान्य होता था और मम्बर जानते थे कि डिप्टी कमिश्नर और कमिश्नर किसी गैर सरकारी सभ्य के चुनाव के घोर विरोधी हैं। इन तीन वर्षों में हिसार की जनता में म्युनिसिपल विषयों में बहुत रुचि पैदा हो गई। मैं समझता हूँ कि हिसार म्युनिसिपल कमेटी में मेरा एक मार्ग शोधक का काम था।

हिसार में मेरे रहने के समय में हिसार के लोग म्युनिसिपल कमेटी के काम के अतिरिक्त अन्य जन साधारण सम्बन्धी विषयों में भी अच्छी रुचि रखने लगे। अतएव नैशनल कांग्रेस राष्ट्रीय महासभा के समर्थन और सहायता के लिए कई सभाएं हिसार में हुई। जिनमें बाहर से आए हुए व्याख्यान दाताओं के व्याख्यान हुए थे। लोग सैकड़ों की संख्या में सुनने के लिए आते रहे। हिसार एक छोटा सा कस्बा था। जिसकी जनसंख्या आस-पास के (Subrbs) भागों को मिलाकर पन्द्रह हजार से अधिक नहीं है। सन् 1918 की काँग्रेस में जो प्रयाग में हुई हिसार की ओर से पांच या छः व्यक्ति शामिल हुए जिनमें तीन-चार हिसार के रईस भी थे। इस तरह सन् 1886 में भी हिसार के कई प्रतिनिधि बम्बई कांग्रेस में सम्मिलित हुए थे। डिप्टी कमिश्नर को मेरी यह राजनैतिक प्रवृत्तियाँ बहुत बुरी लगी थी। पर उनके कानून की सीमा के भीतर होने से वह कुछ कर नहीं सकते थे। जिले के अफसर यद्यपि मेरे राजनैतिक जीवन को पसन्द न करते थे और जन साधारण को जगाने के लिये मैं जो कुछ करता था उससे वह तंग थे पर उनका ऊपरी बर्ताव मेरे साथ अच्छा था। सामाजिक विषयों में सिवाय कुछ कार्रवाइयों के जो उनकी इच्छा के विरुद्ध हुई मेरे चलन से वे प्रसन्न थे। म्युनिसिपल प्रबन्ध और शासन में जो ईमानदारी, काम की समझदारी और सार्वजनिक हित के भाव आ गये थे, उसका वह आदर करते थे। जिला के न्याय विभाग के अफसर भी हर प्रकार से मेरा आदर और सत्कार करते थे। उन्हीं दिनों एक दफा यहाँ के डिप्टी कमिश्नर ने मेरे सामने यह बात चलाई

कि वह एकस्ट्रा असिस्टैण्टी के लिए मेरी सिफारिश कर सकते हैं। मेरे माता-पिता भी चाहते थे कि मैं इस पद को स्वीकार कर लूं किन्तु मैं अपनी स्वतन्त्रता को गवाना नहीं चाहता था। इसलिए मैंने साहब जिला के इस पद प्रदान को धन्यवाद सहित अस्वीकार कर दिया और जब इसके बाद को जी न की घटनाओं पर दृष्टि डालता हूँ, तो बहुत प्रसन्न होता हूँ कि मैं जाल से बचा रहा। संक्षेप में कह देने का तात्पर्य यह है कि हिसार में मेरा जीवन एक सफल जीवन था। मेरी आय मेरी आशाओं से अधिक थी। लोग मेरा आदर करते थे। सार्वजनिक काम के लिए क्षेत्र विस्तृत था।

जिले के आफिसर प्रसन्न थे और अगर मैं चाहता तो उनको अधिक प्रसन्न करके, वे सारी वस्तुएं प्राप्त करता जिनके पाने के लिए बहुतेरे शिक्षा पाए हुए आदमियों ने अपना धर्म बेचा। मेरे लिये यह सब वस्तुएं सरल थी और थोड़े से प्रयत्न से मुझे बिना किसी धर्म बेचे हुए हो मिल स ती थी। किन्तु मेरे जीवन का उद्देश्य दूसरा था। मैं जब तक हिसार में रहा बहुत अशाँत रहा। क्योंकि मेरे भीतर से आवाज आती थी कि मैं वास्तविक लक्ष्य के काम में प्रमाद कर रहा हूं और अपने जीवन को व्यर्थ व्यतीत कर रहा हूं। मेरी आत्मा उड़ना चाहती थी उसको हिसार जैसे छोटे नगर के सीमित क्षेत्र में बन्द रहना अच्छा न लगता था। वह अपनी शक्तियों के विकास और अपने कर्त्तव्य को पूर्ति के लिये विस्तृत क्षेत्र ढूंढ़ती थी। इस साँसारिक सफलता के प्राप्त होने पर भी मेरे हृदय में सोते जागते उठते बैठते यह भावना बनी रहती थी कि मैं अपने जीवन के असली उद्देश्य से दूर जा रहा हूँ अर्थात् जीवन में असफल हो रहा हूं। धन, जमा करना, मेरे जीवन का उद्देश्य तथा भोग भोगना मेरे जीवन का अभिप्राय न था। अपने सरकार के दरबार में आदर पाना भी मुझे स्वीकार न था। मेरी आत्मा की धुन किसी और ओर ही थी। वह अपनी जाति और देश की सेवा में पतंगे के समान जलाना चाहती थी और इसके लिये हिसार में अवसर न थे। इसलिये मैं हिसार में जितने दिन रहा यात्री को तरह रहा। मेरे सामने कई अवसर नफे से जायदाद पैदा करने के आए किन्तु मैंने कभी उनका बिचार न किया क्योंकि मैं जानता था कि मैं जायदाद पैदा कर लूंगा तो वह मेरे लिये अधिक बंधन हो जायेगी। अस्थायी रूप से कुछ धन मैंने हिसार में अवश्य व्यवहार में लगाया परन्तु अपने पिता, माता और मित्रों की इच्छा के विरुद्ध जायदाद पैदा करने से बिल्कुल अलहदा रहा। जो जायदाद मुझे मिलती थी यदि मैं उसको प्राप्त कर लेता तो आज उनका मूल्य 100 प्रतिशतक से अधिक होता और मैं केवल अपनी जायदाद से मालामाल हो जाता। जिन लोगों ने उस समय जायदाद पैदा की वह उसकी बदौलत मालामाल हो गए। पर मुझे उसका विचार न था। चीफकोर्ट

का वकील बनने के लिये नीचे की कचहरियों में 5 वर्ष वकालत करना आवश्यक था। अतएव 5 वर्ष समाप्त होते ही मैंने हिसार छोड़ने की तैयारी आरम्भ कर दी। डिविजनल जज डिस्ट्रिक्ट जज और डिस्ट्रिक्ट मजिस्टेट ने बहुत अच्छे प्रमाण पत्र दिये। इनके कारण मुझे चीफकोर्ट में वकालत की आज्ञा मिलने के चार महीने के भीतर मैंने हिसार छोड़ दिया अर्थात हिसार में जो छः वर्ष मैंने व्यतीत किये वे मेरे आगामी जीवन के लिये तैयारी के वर्ष थे। □

आर्य की वास्तविक पहचान

सच्चा आर्य कौन है ? उसकी पहचान सन्ध्या, हवन तथा यज्ञों के करने से, मूर्तिपूजा और श्राद्ध न करने से, सब के साथ खा लेने से, जात-पात तोड़कर विवाह करने से, वेदों के पढ़ते रहने से, नित्य प्रचारार्थ व्याख्यान देने, लेखों के लिखते रहने और दान देते रहने से नहीं हो सकती। ये तो बाह्य चिन्ह हैं और सरल काम हैं। वास्तविक पहचान तो उसके आर्योचित व्यवहार से ही हो सकती है।

\+ + + + + +

आर्यसमाज की स्थापना का उद्देश्य

संगठित रूप से वेदों के प्रचार और विश्व को आर्य बनाने के महान उद्देश्य को लक्ष्य में रखकर ही आर्य-समाज की स्थापना हुई थी। आर्य-समाज के प्रत्येक सदस्य के लिए आवश्यक है कि अपने को आर्य शब्द के ठीक-ठीक भाव में आर्य बनाने का यत्न करे और सदैव आत्म निरीक्षण के द्वारा देखता रहे कि मैं अपने यत्न में कहां तक सफल व असफल हो रहा हूं। अपने अन्दर जो अनार्यत्व हो उसे शीघ्र दूर करके प्रत्येक आर्य को आर्य शब्द की संज्ञा को सार्थक करना चाहिए। उसकी मनोवृत्ति ऐसी बन जानी चाहिए कि उसके जीवन के व्यवहार में आर्य शब्द का गौरव कभी कम न होने पाए।

□□

ऋषि दयानन्द की आत्मकथा : ऐतिहासिक विवरण

□ डॉ भवानीलाल भारतीय

भारतीय धार्मिक एवं साँस्कृतिक पुनर्जागरण के सूत्रधार स्वामी दयानन्द सरस्वती अपने युग के अद्वितीय महापुरुष थे। उनके विचारों का प्रभाव उनके जीवन काल में केवल स्वदेश तक ही सीमित नहीं रहा, अपितु इंगलैण्ड, जर्मनी तथा अमेरिका तक उनकी ख्याति का प्रसार हुआ। ऐसे युग-प्रवर्तक महापुरुष का जीवन निश्चय ही समग्र मानव जाति के लिये प्रेरणादायी सिद्ध हो सकता है, यह अनुभव कर स्वामी जी के जीवन-काल में ही उनके जीवन वृत्त को लेखबद्ध करने का प्रयास किया गया था। स्वामीजी ने स्वयं भी अपने एक व्याख्यान में आत्मकथन के रूप में स्व-जीवन-वृत्त की कुछ चर्चा की थी। चैत्र शुक्ला पंचमी 1932 वि० तदनुसार 10 अप्रैल 1857 ई० को बम्बई में आर्य समाज की स्थापना, करने के पश्चात् वे पूना गये। यहाँ न्यायमूर्ति महादेव गोविन्द रानडे तथा अन्य महाराष्ट्रीय भक्तों के आग्रह पर उन्होंने बुधवार पैठ के भिड़े के बाड़े में एक व्याख्यान-माला प्रस्तुत की। इस व्याख्यान-क्रम की अन्तिम वक्तृता 4 अगस्त 1975 को हुई जिसमें श्री महाराज ने अपने जीवन की कुछ प्रमुख घटनाओं का उल्लेख किया। कालान्तर में उपदेशमञ्जरी या पूना प्रवचन के नाम से जब स्वामी जी के ये 15 भाषण मराठी से हिन्दी भाषा में अनुदित होकर प्रकाशित हुये[2] तो काशी शास्त्रार्थ (16 नवम्बर 1869 ई०) तक का प्रामाणिक जीवन-वृत्त स्वयं स्वामी जी के श्रीमुख से कथन किया हुआ ही, संसार को उपलब्ध हो गया।

आत्म-कथन प्रस्तुत करने का एक अन्य अवसर उन्हें तब मिला जब थियोसोफिकल सोसाइटी के प्रवर्तकों में से एक कर्नल एच० एस० आलकाट ने अप्रैल 1879 ई० में स्वामी जी से अपना आत्मकथन लेख-बद्ध कर थियोसोफिस्ट पत्र में प्रकाशनार्थ भेजने का आग्रह किया। कर्नल के इस अनुरोध को स्वीकार कर स्वामी जी ने अपने नर्मदा-तट भ्रमण तक का वृतान्त तीन किस्तों में लिख कर थियोसोफिस्ट में प्रकाशनार्थ भेजा। मैडम एच० पी० ब्लैवेट्स्की इस पत्र की सम्पादिका थीं। अतः उन्हीं के द्वारा सम्पादित होकर यह आत्मकथन अंग्रेजी अनुवाद के रूप में थियोसो फस्ट के तीन अंकों में प्रकाशित हुआ। पण्डित लेखरामजी के अनुसार यह सामग्री उक्त

---

1. प्राचीन उपलब्ध प्रमाणों से आर्यसमाज की स्थापना तिथि पञ्चमी ही सिद्ध होती है।
2. हिन्दी अनुवाद पं० गणेश रामचन्द्र तथा महाशय श्री निवासराव ने पं० लेखराम की प्रेरणा से किया।

पत्र के नवम्बर व दिसम्बर 1880 के अंकों में छपी थी, परन्तु पण्डित भगवद्दत्त जी ने थियोसोफ़िस्ट के मूल अंकों को देखकर यह निश्चय किया कि यह आत्म-वृतान्त अक्टूबर 1879, दिसम्बर 1879 तथा नवम्बर 1880 के अंकों में प्रकाशित हुआ है।[1] इन अंकों में स्वामी जी का यह आत्मकथन निम्न प्रकार से छपा--अक्टूबर 1879 जन्म से लेकर ऋषिकेश यात्रा पर्यन्त (1911 वि०) पृ० 9 से 12, दिसम्बर 1879 टिहरी से लेकर जोशी मठ यात्रा पर्यन्त (1912 वि०) पृ० 66, से 68, नवम्बर 1880 बद्रीनारायण से नर्मदा-तट पर्यन्त (1916 वि०) पृ० 24 से 26।

जिस समय स्वामीजी ने आत्म-वृतान्त को प्रकाशन के लिये थियोसोफिस्ट में भेजा उसी समय उसकी दो प्रतिलिपियां दो आर्य पुरुषों ने करली थीं। एक प्रतिलिपि श्री मथुराप्रसाद जी मन्त्री आर्यसमाज अजमेर[3] तथा दूसरी पंडित छगनलाल श्रीमाली भूतपूर्व कामदार मसूदा (जिला अजमेर) के पास थी। जब श्री महाराज की जीवनी के तथ्यों का संग्रह करते हुए पंडित लेखराम अजमेर आये थे तब उन्होंने उक्त दोनों प्रतियों को देखा था तथा उन्हीं के आधार पर स्वसंगृहीत महर्षि दयानन्द के उर्दू जीवन-चरित में इस सामग्री को स्थान दिया था।[4] थियोसोफिस्ट के इन लेखों को विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं ने उद्धृत किया।[4] फर्रुखाबाद से प्रकाशित होने वाले भारत-सुदशाप्रवर्तक (अंक संख्या 6, 7, 8) आर्य समाचार मेरठ, आर्य अखबार बम्बई, रीजेनेरेटर दि आर्यावर्त लाहौर, पताका अखबार कलकत्ता आदि ने इस सामग्री को प्रकाशित

---

1. पंडित महेशप्रसाद मौलवी आलिम फाजिल ने भी इस तथ्य की पुष्टि की है। द्रष्टव्य-महर्षि जीवन दर्शक पृ० 3।

2. थियोसोफिस्ट के ये अंक काशी हिन्दू-विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में हैं।

3. श्री मथुराप्रसाद भहड़ (माहेश्वरी) अजमेर की धर्मशाला आर्य महिला श्रीमती गुलाबदेवी (चाचीजी, के पति थे।

4. यह उर्दू जीवन-चरित 1897 ई० में मुन्शी गुलाबसिंह के प्रेस में लाहौर में छपा।

5. श्री रतनचन्द बेरी द्वारा सम्पादित तथा लाहौर से प्रकाशित 'दि आर्य' नामक मासिक पत्र के जुलाई 1882 के अंक में The Autobiography of Swami Dayanand शीर्षक से थियोसोफिस्ट में प्रकाशित इतिवृत का प्रारम्भिक भाग (विवाह की तैयारियां) उद्धृत किया गया है।

किया। भारत-सुदशाप्रवर्तक में प्रकाशित यह आत्म-वृतान्त 'श्रीयुत स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज की कुछ दिन-चर्या' के शीर्षक से पुस्तकाकार भी छपा। इसका सम्पादन पं० गणेशप्रसाद शर्मा ने किया था।

थियोसोफिस्ट की सामग्री को मास्टर दुर्गाप्रसाद ने अपने सत्यार्थप्रकाश के अंग्रेजी अनुवाद के प्रारम्भ में भी प्रकाशित किया। सत्यार्थ-प्रकाश का यह आँग्लभाषानुवाद 1908 ई० में प्रकाशित हुआ था तथा इस आत्मवृतान्त को मास्टर जी ने The Autobiography and Travels of Swami Dayanand Saraswati शीर्षक से उद्धृत किया। थिसोसोफिकल प्रकाशन गृह अड्यार मद्रास ने Autobiography of Pandit Dayanand Sarasvati शीर्षक से इस आत्मकथा को 1952 में प्रकाशित किया। इसके प्रकाशकीय वक्तव्य में लिखा गया है कि पण्डित दयानन्द सरस्वती की यह आत्मकथा एक मात्र थियोसोफिस्ट पत्र के लिये ही उनके द्वारा लिखी गई थी जिसका सम्पादन उस समय एच० पी० ब्लैवेट्स्की करती थी तथा यह आत्मवृतान्त हिन्दी से अनूदित किया गया है।"[1] इस पुस्तक में श्री महाराज का जो इतिवृत दिया गया है वह जोशी मठ भ्रमण पर्यन्त ही है, इससे यह विदित होता है कि मद्रास संस्करण में मूल थियोसोफिस्ट में प्रकाशित इतिवृत्त की दो किस्तें ही समाविष्ट हो सकीं और नर्मदा तटवर्ती प्राँत भ्रमण तक का वृत्तान्य जो नवम्बर 1880 के अंक में छपा था इसमें समाविष्ट नहीं हो सका। परन्तु इस ग्रन्थ में स्वामी जी से सम्बन्धित कुछ अन्य सामग्री प्रकाशित हुई जिसका जीवनीकारों के लिये विशिष्ट उपयोग है।[2]

पंडित भगवद्दत्त जी ने स्वामी जी के स्वकथित (पूना प्रवचन में) तथा स्वलिखित (थियोसोफिस्ट में) आत्म-वृत्तान्त का एक स्वसम्पादित सुन्दर संशोधित संस्करण श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट से प्रकाशित किया। अब तक इसके सात संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। प्रथम

1. "The autobiography of Pandit Dayanand Saraswati was written by him expressly for the Theosopoist, then by H. P. Blavatsky, translated from Hindi."

2. आत्म-कथन के अतिरिक्त इस पुस्तक में (1) The Pupil of Swami Dayanand at the Congress of Orientalists (2) An "Honest" Enquiry into the aims of our Society. (3) Gleanings from the works of Svami Dayanand Sarasvati. BY IL PENSEROSO. (4) Swami Dayanand Sarasvati and the Pandits of Lahore. (5) Is idolatry taught in the Yajurveda ? शीर्षक 5 अन्य परिशिष्ट सामग्री छपी है। विशेष जानकारी के लिये द्रष्टव्य—वेद वाणी में प्रकाशित मेरा लेख ऋषि दयानन्द की आत्मकथा—एक ऐतिहासिक विश्लेषण' मई 1969 ई०।

संस्करण कब छपा यह ज्ञात नहीं होता क्योंकि इस संस्करण की भूमिका के अन्त में सम्पादक ने तिथि का उल्लेख तो 15 चैत्र दयानन्दाब्द लिख कर किया परन्तु वर्ष का उल्लेख नहीं है। द्वितीय संस्करण 20 आषाढ़ दयानन्दाब्द 34 (1917 ई०) को प्रकाशित हुआ। तृतीय संस्करण की भूमिका में पण्डित भगवद्दत्तजी ने आत्मकथन के एक अन्य हस्तलेख का उल्लेख किया है। पण्डितजी के अनुसार स्वामी श्रद्धानन्द जी के पास आत्मकथन की मूल प्रतिलिपि थी। सन्यास-ग्रहण के समय स्वामी जी ने इसे प्रो० रामदेवजी को सौंप दिया। 1974 वि० के गुरुकुल कांगड़ी के उत्सव पर प्रो० रामदेवजी के सौजन्य से यह हस्तलेख पण्डित भगवद्दत्तजी को प्राप्त हुआ। इसमें हाथी छाप के 6 पृष्ठ थे। प्रथम पांच पृष्ठों में प्रत्येक पर सत्ताइस पंक्तियाँ थी। अन्तिम पृष्ठ पर चौदह पंक्तियां थीं। पण्डित भगवद्दत्त जी इस बात का निर्धारण नहीं कर सके कि हस्तलेख का लेखक कौन है ? उनके अनुसार "लेख बड़ा स्पष्ट है और प्राय: अक्षर श्री स्वामी जी के अक्षरों से मिलते हैं। यद्यपि लेख उनका नहीं है, पर पूर्ण निश्चय नहीं हो सका कि लेखक कौन है ? कारण कि ऋषि के दो लेखकों के प्राय: अक्षर उनके अक्षरों से मिलते हैं।"

प्रस्तुत संस्करण—परोपकारिणी के पुराने कागजों में वैदिकयन्त्रालय के (स्वामी जी समकालीन) प्रबन्धकर्ता मुन्शी समर्थदान के बस्तों में स्वामीजी के आत्मवृतान्त की मूल पाण्डुलिपि दो किस्तों के प्राप्त हुई यह वही पाण्डुलिपि है जो श्री महाराज ने थियोसोफिस्ट में प्रकाशनार्थ भेजी थी। तीसरी किस्त अनुपलब्ध है, परन्तु प्रस्तुत संस्करण में उसे पण्डित भगवद्दत्त जी के संस्करण के आधार पर उद्धृत किया जा रहा है। इसी पाण्डुलिपि के 6 पृष्ठ पण्डित भगवद्दत्त जी ने देखे होंगे क्योंकि यह हाथी छाप कागज पर लिखी गई है तथा प्रथम पाँच पृष्ठों में प्रत्येक पर 27 पंक्तियां हैं। हमें प्राप्त पाण्डुलिपि के अन्तिम पृष्ठ पर 17 पंक्तियाँ हैं जब कि पंडित भगवद्दत्त जी द्वारा दृष्ट पाण्डुलिपि के अन्तिम पृष्ठ पर 14 पंक्तियाँ थीं। दोनों किस्तों पर श्री महाराज के हस्ताक्षर हैं तथा प्रथम पर यत्र तत्र द्वारा किया हुआ संशोधन भी है। पाण्डुलिपि की दूसरी किस्त सम्पूर्णतया श्री महाराज की ही लिखी हुई है।

प्रस्तुत संस्करण का महत्त्व इस दृष्टि से और भी बढ़ जाता है जब हम देखते हैं कि अब तक स्वामी जी की आत्मकथा के जो संस्करण प्रकाशित हुये हैं वे या तो पंडित लेखराम द्वारा लिखित उर्दू जीवन-चरित से अनूदित होकर प्रकाशित हुये अथवा थियोसोफिस्ट के अंग्रेजी में अनूदित आत्म-वृतान्त का पुनः अनुवाद होकर हिन्दी में आये। हमारे इस संस्करण में जोशी मठ तक का वृतान्त उस मौलिक सामग्री का अंश है जो स्वयं श्री महाराज के हस्ताक्षरों से प्रमाणित होकर थियोसोफिस्ट में प्रकाशनार्थ भेजी गई थी। अंग्रेजी अनुवाद मद्रास संस्करण

(जोशी मठ तक का वृत्त) तथा पण्डित दुर्गाप्रसाद द्वारा उद्धत सत्यार्थप्रकाश के अनुवाद की भूमिका में प्रकाशित (नर्मदा तट भ्रमण का वृत्त) सामग्री से लिया गया है।

अब हम पाठकों के ज्ञान के लिये स्वामी जी की आत्मकथा के विभिन्न संस्करणों का विवरण प्रस्तुत करते हैं—

हस्तलेखों का विवरण—

(1) मुन्शी समर्थदान के बस्ते में प्राप्त जीवनवृत्त की दो किस्तें। इन्हीं के आधार पर यह संस्करण तैयार किया गया है।

(2) श्री मथुराप्रसाद, मंत्री आर्यसमाज अजमेर की प्रति। इस संस्करण के सम्पादक को श्री मथुराप्रसाद की प्रतिलिपि भी प्राप्त हो गई है। यह प्रति श्री मथुराप्रसाद जी की पत्नी एवं गुलाबदेवी के भतीजे स्वर्गीय केशवदेश कपूरिया के कागजों में उपलब्ध हुई।

(3) पण्डित छगनलाल श्रीमाली की प्रति।

(4) प्रो० रामदेवजी की प्रति (इसकी वर्तमान स्थिति अज्ञात है)

प्रकाशित हिन्दी संस्करण—

(1) श्रीयुत स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज की कुछ दिनचर्या—जिसको पण्डित गणेशप्रसाद लेखाध्यक्ष आर्यसमाज फर्रुखाबाद ने प्रेमी जनों के आनन्द विनोदार्थ भारतसुदशा-प्रवर्त्तक से उद्धृत की। कम्प फतेगढ़ मुन्शीचुन्नीलाल यन्त्रालय में पंडित जगन्नाथप्रसाद के पबन्ध से छापी गई। (इसका द्वितीय संस्करण 1887 ई० में प्रकाशित हुआ।) एक दुर्लभ प्रति सम्पादक के पुस्तकालय में।

(2) मुन्शी दयाराम तहसीलदार ने पंडित लेखराम रचित स्वामी जी के उर्दू जीवन-चरित में उद्धृत आत्म-वृत्तान्त का हिन्दी में अनुवाद कर सर्वप्रथम 1904 ई० में बजोरचन्द्र शर्मा के आर्य पुस्तकालय लाहौर से प्रकाशित कराया। इसका तृतीय संस्करण 1979 वि० (जनवरी 1923 ई० 40 दयानन्दाब्द) में प्रकाशित हुआ।

(3) श्री देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय रचित 'दयानन्द चरित' की अवतरणिका में थियोसोफिस्ट से अनूदित आत्मवृत्त का हिन्दी अनुवाद पंडित घासीरामजी ने किया। भास्कर प्रेस मेरठ से 1812 ई० में प्रकाशित दयानन्द चरित।

(4) ऋषि दयानन्द सरस्वती स्वरचित (लिखित वा कथित) जन्म-चरित्र—पंडित भगवद्दत्त द्वारा सम्पादित। (श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट से प्रकाशित)

(5) ऋषि दयानन्द सरस्वती की आत्मकथा—पंडित जगत् कुमार शास्त्री द्वारा सम्पादित। गोबिन्दराम हासानन्द दिल्ली द्वारा प्रकाशित, दयानन्द ग्रन्थ संग्रह के अन्तर्गत तथा पृथक रूप से प्रकाशित। (सं० 2010 वि०) इसमें भी पूना के व्याख्यान तथा थियोसोफिस्ट में प्रकाशित लेखों का अनुवाद (पंडित देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय लिखित दयानन्द चरित की अवतरणिका का अनुवाद जो पंडित घासीराम द्वारा किया गया) संकलित है। दयानन्द चरित का प्रकाशन गोविन्दराम हाशानन्द कलकत्ता ने भी किया था। तृतीय संस्करण 1946 ई०)।

(6) महर्षि दयानन्द लिखित आत्मकथा (थियोसोफिस्ट से अनूदित) आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश द्वारा 2010 वि० में प्रकाशित।

प्रकाशित अंग्रेजी संस्करण—

(1) मास्टर दुर्गाप्रसाद ने थियोसोफिस्ट में प्रकाशित सामग्री को A Triumph of Truth or a Short autobiography of the great Rishee Swami Dayanand Saraswati शीर्षक से पृथक् पुस्तक रूप में प्रकाशित किया तथा अपने सत्यार्थप्रकाश के अंग्रेजी में अनुवाद की भूमिका में भी उद्धृत किया।

(2) Autobiography of Pandit Dayanand Sarasvati थियोसोफिकल पब्लिशिंग हाउस अड्यार मद्रास से 1952 ई० में प्रकाशित।

प्रकाशित उर्दू अनुवाद—

(1) पंडित लेखराम रचित (संकलित) 'महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन-चरित' में संगृहीत प्रथम संस्करण 1897 ई० (हिन्दी अनुवाद पंडित रघुनन्दनसिंह निर्मल कृत तथा आर्यसमाज नयाबांस दिल्ली से 2028 वि० में प्रकाशित)।

(2) उर्दू अनुवाद श्री दलपतराय विद्यार्थी एम-ए० कृत 'खुद नविशत स्वानेह उमरी' 1945 वि० में लाहौर से प्रकाशित।

(3) उर्दू अनुवाद भाई जवाहरसिंह कृत 'स्वानेही उमरी दयानन्द'

अन्य भाषाओं में अनुवाद—

(1) पंडित देवेन्द्रनाथ कृत बंगानुवाद—यह 1894 ई० में प्रकाशित दयानन्द चरित की अवतरणिका में छपा। इसमें पूना प्रवचन तथा थियोसोफिस्ट की पूर्ण सामग्री बंगला में अनूदित की गई।

(2) पंडित देवेन्द्रनाथ लिखित तथा वैदिक मैगजीन के फरवरी 1916 के अंक में प्रकाशित The birthplace and parentage of Swami Dayanand शीर्षक लेख से विदित होता है कि आत्मवृतान्त के बंगानुवाद के आधार पर उसका गुजराती भाषा में भी अनुवाद हुआ था।

(3) स्वर्गीय पंडित कालीचरण शर्मा मौलवी आलिम फाजिल ने 'स्वानेह उमरी आरिफ दयानन्द' शीर्षक से इसका फारसी भाषा में अनुवाद किया।

पुनश्च-मुन्शी इन्द्रमणि के शिष्य जगन्नाथदास ने 'दयानन्द जीवन चरित और समालोचना', शीर्षक पुस्तक में इस सामग्री को समग्रतः उद्धृत कर उस पर अपनी आलोचना लिखी है। प्रकाशन 1972 वि०। □

श्रीकृष्ण जी के विषय में महर्षि दयानन्द जी के विचार

देखो! श्री कृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अति उत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों का सदृश है. जिसमें कोई अधर्म का आचारण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम किया हो, ऐसा नहीं लिखा—और इस भागवत् वाले ने अनुचित मन माने दोष लगाए हैं। दूध दही, मक्खन आदि की चोरी लगाई, और कुब्जा दासी से समागम, परस्त्रियों से रास मण्डल क्रीड़ा आदि मिथ्या दोष श्रीकृष्ण जी में लगाये हैं। उनको पढ़ पढ़ा, सुन-सुना के अन्य मत वाले श्री कृष्ण जी की बहुत निन्दा करते हैं। जो यह भागवत् न होता तो श्री कृष्ण जी के सदृश महात्माओं की झूठी निन्दा क्योंकर होती।

सत्यार्थप्रकाश—समुल्लास 11

मैं स्वामी दयानन्द सरस्वती संक्षेप से अपना जन्म चरित्र लिखता हूं ।

संवत् 1881 के वर्ष में मेरा जन्म दक्षिण गुजरात प्रान्त देश काठियावाड़ का मजोकठा देश मोर्वी का राज्य औदिच्य ब्राह्मण के घर में हुआ था, यहाँ अपने पिता का निज निवास स्थान के प्रसिद्ध नाम इसलिये मैं नहीं लिखता कि जो माता–पिता आदि जोते हों मेरे पास आवें तो इस सुधार के काम में बिघ्न हों क्योंकि मुझको उनकी सेवा करना उनके साथ घूमने में श्रम और धन आदि का व्यय कराना नहीं चाहता ।[1] मैंने पांचवें वर्ष में देवनगरी अक्षर पढ़ने का आरम्भ किया था । और मुझको कुल की रीति की शिक्षा भी माता-पिता आदि किया करते थे, वहुत से धर्मशास्त्रादि के श्लोक और सूत्रादि भी कण्ठस्थ कराया करते थे । फिर आठवें वर्ष में मेरा यज्ञोपवीत कराके गायत्री संध्या और उसकी क्रिया भी सिखा दी गई थी । और मुझको यजुर्वेद की संहिता का आरम्भ कराके उसमें से प्रथम रुद्राध्याय पढ़ाया गया था, और मेरे कुल में शैव मत था उसी की शिक्षा भी किया करते थे और पिता आदि लोग यह भी कहा करते थे कि पार्थिव पूजन अर्थात मट्टी का लिङ्ग बनाके तू पूजा कर । और माता मने किया करती थी कि यह प्रातःकाल भोजन कर लेता है इससे पूजा नहीं हो सकेगी । पिताजी हठ किया करते थे कि पूजा अवश्य करनी चाहिए क्योंकि कुल की रीति है । तथा कुछ-कुछ व्याकरण का विषय और वेदों का पाठ मात्र भी मुझको पढ़ाया करते थे । पिताजी अपने साथ मुझको जहां तहाँ मन्दिर और मेल मिलापों में ले जाया करते और यह भी कहा करते थे कि शिव की उपासना सबसे श्रेष्ठ है । इस प्रकार 14 चौदहवें वर्ष की अवस्था के आरम्भ तक यजुर्वेद की संहिता सम्पूर्ण और कुछ अन्य वेदों का भी पाठ पूरा हो गया था । और शब्द रूपावली आदि छोटे-छोटे व्याकरण के ग्रन्थ भी पूरे हो गये थे । पिताजी जहां-तहाँ शिव पुराण आदि की कथा होती थी वहां मुझको पास बैठा कर सुनाया करते थे । और घर में भिक्षा की जीविका नहीं थी । किन्तु जिमीदार और लेन देन से जीविका के प्रबन्ध करके सब काम चलाते थे । और मेरे पिता ने माता के मने करने पर भी पार्थिव पूजन का आरम्भ करा दिया था । जब शिवरात्रि आई तब 13 त्रयोदशी के दिन कथा का महात्म्य सुनाके शिवरात्रि के व्रत कराने का निश्चय करा दिया । परन्तु माता ने मने भी

1. यह संशोधन श्री महाराज ने स्वहस्त से हाशिये पर किया है ।

किया कि इससे व्रती नहीं रहा जाएगा तथापि पिताजी ने व्रत का आरम्भ करा दिया। और जब 14 चतुर्दशी की शाम हुई तब बड़े-बड़े वस्ती के रईस अपने पुत्रों के सहित मन्दिरों में जागरण करने को गये वहाँ मैं भी अपने पिता के साथ गया और प्रथम पहर की पूजा भी करी दूसरे प्रहर की पूजा करके पुजारि[1] लोग बाहर निकल के सो गये। मैंने प्रथम से सुन रखा था कि सोने से शिवरात्रि का फल नहीं होता है। इसलिए अपनी आँखों में जल के छींटे मार के जागता रहा और पिताजी भी सो गये तब मुझको शंका हुई कि जिसको मैंने कथा सुनी थी वही यह महादेव है वा अन्य कोई। क्योंकि वह तो मनुष्य के माफक एक देवता हैं। वह बैल पर चढ़ता, चलता फिरता, खाता पीता, त्रिशूल हाथ में रखता, डमरू बजाता, वर और शाप देता और कैलाश का मालिक है। इत्यादि प्रकार का महादेव कथा में सुना था। तब पिताजी को जगा के मैंने पूछा कि यह कथा का महादेव है वा कोई दूसरा? तब पिता ने कहा कि क्यों पूछता है? तब मैंने कहा कि कथा का महादेव तो चेतन है। वह अपने ऊपर चूहों को क्यों चढ़ने देगा। और इसके ऊपर तो चूहे फिरते हैं। तब पिताजी ने कहा कि कैलाश पर जो महादेव रहते हैं उनकी मूर्ति बना और आवाहन करके पूजा किया करते हैं। अब कलियुग में उस शिव का साक्षात दर्शन नहीं होता। इसलिए पाषाणादि की मूर्ति बना के उन महादेव की भावना रख कर पूजन करने से कैलाश का महादेव प्रसन्न हो जाता है। ऐसा सुनकर मेरे मन में भ्रम हो गया कि इसमें कुछ गड़बड़ अवश्य है। और भूख भी बहुत लग रही थी। पिता से पूछा कि मैं घर को जाता हूँ। तब उन्होंने कहा कि सिपाही को साथ लेके चला जा परन्तु भोजन कदाचित मत करना। मैंने घर पर जाकर माता से कहा कि मुझको भूख लगी है। माता ने कुछ मिठाई आदि दी उसको खाकर 1 एक बजे सो गया। पिताजी प्रातःकाल रात्रि के भोजन को सुनके बहुत गुस्से हुए कि तूने बहुत बुरा किया। तब मैंने पिता से कहा कि यह कथा का महादेव नहीं है इसकी पूजा मैं क्यों करूं। मन में तो श्रद्धा नहीं रही परन्तु ऊपर के मन पिताजी से कहा कि मुझको पढ़ने से अवकाश नहीं मिलता कि मैं पूजा कर सकूं। तथा माता और चाचा आदि ने भी पिता को समझाया इस कारण पिता भी शान्त हो गये कि अच्छी बात है पढ़ने दो। फिर निघण्टु निरुक्त और पूर्व मीमांसा आदि शास्त्रों के पढ़ने की इच्छा करके आरम्भ करके पढ़ता रहा और कर्मकाण्ड विषय भी पढ़ता रहा। मुझसे छोटी 1 बहन फिर उससे छोटा एक भाई फिर भी एक बहन और

1. स्वामी जी मन्दिर के पुजारी को विनोद में पुजारि—पूजा + अरि पूजा का शत्रु कहा करते थे।

एक भाई अर्थात् दो बहन और दो भाई और हुए थे तब तक मेरी 16 वर्ष की अवस्था हुई थी। पीछे मुझसे छोटी 14 वर्ष की जो बहन थी उसको हैजा हुआ एक रात्रि में कि जिस समय नाच हो रहा था। नौकर ने खबर दी कि उसको हैजा हुआ है। तब सब जने वहां से तत्काल आए और वैद्य आदि बुलाये औषधि भी की तथापि चार घन्टे में उस बहन का शरीर छूट गया सब लोग रोने लगे। परन्तु मेरे हृदय में ऐसा धक्का लगा और भय हुआ कि ऐसे मैं भी मर जाऊंगा सोच-विचार में पड़ गया। जितमें जीव संसार में हैं उनमें से एक भी न बचेगा। इससे कुछ ऐसा उपाय करना चाहिए कि जिससे यह दुःख छूटे और मुक्ति हो अर्थात् इसी समय से मेरे चित्त में वैराग्य की जड़ पड़ गई। परन्तु यह विचार अपने मन ही रखा किसी से कुछ भी न कहा। इतने में 19 वर्ष की जब अवस्था हुई तब जो मुझ से अति प्रेम करने वाले धर्मात्मा विद्वान् मेरे चाचा थे उनकी मृत्यु होने से अत्यन्त वैराग्य हुआ कि संसार में कुछ भी नहीं परन्तु यह बात माता-पिता से तो नहीं कही किन्तु अपने मित्रों से कहा कि मेरा मन गृहाश्रम करना नहीं चाहता। उन्होंने माता-पिता से कहा, माता-पिता ने विचारा कि इसका विवाह शीघ्र कर देना चाहिये। जब मुझ को मालूम पड़ा कि ये 20 बीसवें वर्ष में ही विवाह कर देंगे तब मित्रों से कहा कि मेरे माता-पिता को समझा दो अभी विवाह न करें। तब उन्होंने एक वर्ष जैसे-तैसे विवाह रोका तब तक 20 बीसवाँ वर्ष पूरा हो गया। तब मैंने पिताजी से कहा कि मुझे काशी में भेज दीजिये कि मैं व्याकरण ज्योतिष और वैद्यक आदि ग्रन्थ पढ़ आऊँ। तब माता-पिता और कुटुम्ब के लोगों ने कहा कि हम काशी को कभी न भेजेंगे जो कुछ पढ़ना हो सो यहीं पढ़ो। और अगली साल में तेरा विवाह भी होगा क्योंकि लड़की वाले नहीं मानते। और हमको अधिक पढ़ा कर क्या करना है जितना पढ़ा है वही बहुत है। फिर मैंने पिता आदि से कहा कि मैं पढ़ कर आऊं तब विवाह होना ठीक है तब माता भी विपरीत हो गई कि हम कहीं नहीं भेजते और अभी विवाह करेंगे। तब मैंने चाहा कि अब सामने रहना अच्छा नहीं। फिर 3 कोश ग्राम में अपनी जिमीदारी थी वहां एक अच्छा पण्डित था माता-पिता की आज्ञा लेकर वहां जाकर उस पण्डित के पास मैं पढ़ने लगा। और वहाँ के लोगों से भी कहा कि गृहाश्रम करना नहीं चाहता। फिर माता-पिता ने मुझे बुलाकर के विवाह की तैयारी कर दी तब तक 21 इक्कीसवाँ वर्ष भी पूरा हो गया। जब मैंने निश्चित जाना कि अब विवाह किए बिना कदाचित् न छोड़ेंगे। फिर गुपचुप संवत् 1903 के वर्ष घर छोड़कर संध्या के समय भाग उठा चार कोश पर एक ग्राम था वहां जाकर रात्रि को ठहर कर दूसरे दिन प्रहर रात्रि से उठ के 15 कोश चला परन्तु प्रसिद्ध ग्राम सड़क और जानकारों के ग्रामों को छोड़ के बीच-बीच में नित्य चलने का प्रारम्भ किया।

तीसरे दिन मैंने किसी राज पुरुष से सुना कि फलांने का लड़का घर छोड़ कर चला गया उसको खोजने के लिए सवार और पैदल आदमी यहां तक आये थे। जो मेरे पास थोड़े से रुपये और अंगूठी आदि आभूषण था वह सब पोपो ने ठग लिया। मुझसे कहा कि तुम वैराग्यवान् तब होंगे कि जब पास की चीज सब पुण्य कर दो फिर उन लोगों के कहने से मैंने जो कुछ था सब दे दिया। फिर लाला भगत की जगह जो कि सायले शहर में है वहां बहुत साधुओं को सुनकर चला गया वहां एक ब्रह्मचारी मिला उसने मुझसे कहा कि तुम नैष्ठिक ब्रह्मचारी हो जाओ उसने मुझको ब्रह्मचारी की दीक्षा दी और शुद्ध चैतन्य मेरा नाम रखा तथा काषाय वस्त्र भी करा दिये। जब मैं वहाँ से अहमदाबाद के पास कोठ गांगड़ जो कि छोटा सा राज्य है वहां आया तब मेरे गाँव के पास का जान-पहचान वाला एक वैरागी मिला उसने पूछा कि तुम कहाँ से आये और कहां जाना चाहते हो। तब मैंने उससे कहा कि घर से आया और कुछ देश भ्रमण करना चाहता हूँ। उसने कहा कि तुमने काषाय वस्त्र धारण करके क्या घर छोड़ दिया। मैंने घर छोड़ और कार्तिकी के मेले पर सिद्धपुर को जाऊंगा। फिर मैं वहाँ से चल कर सिद्धपुर में आकर नीलकण्ठ महादेव की जगह में ठहरा कि जहां दण्डी स्वामी और ब्रह्मचारी ठहर रहे थे। उनका सत्संग और जो-जो कोई महात्मा या पण्डित मेले में सुन पड़ा उन सबके पास गया और उनसे सत्संग किया। जो मुझको कोठ गांगड़ में वैरागी मिला था उसने फिर मेरे पिता के पास पत्र भेजा कि तुम्हारा पुत्र ब्रह्मचारी हुआ काषाय वस्त्र धारण किये मुझको मिला और कार्तिकी के मेले में सिद्धपुर को गया। ऐसा सुन के सिपाहियों के सहित पिताजी सिद्धपुर में आकर मेले में खोज कर पता लगाकर जहाँ पंडितों के बीच में मैं बैठा वहां पहुंच कर मुझ से बोले कि तू हमारे कुल में कलंक लगाने वाला पैदा हुआ। जब मैंने पिताजी की ओर देख कर उठकर चरण स्पर्श किया नमस्कार करके बोला कि आप क्रोधित मत होइये मैं किसी आदमी के बहकाने में चला आया और मैंने बहुत सा दुःख पाया। अब मैं घर को आने वाला था। परन्तु अब आप आए यह बहुत अच्छा हुआ कि अब मैं साथ-साथ घर को चलूंगा। तो भी क्रोध के मारे मेरे गेरु के रंगे वस्त्र और एक तूंबे को तोड़-फोड़ के फेंक दिये और वहां भी बहुत कठिन-कठिन बातें कह कर बोले कि तू अपनी माता की हत्या करना चाहता है। मैंने कहा कि मैं अब घर को चलूंगा तो भी मेरे साथ-साथ सिपाही कर दिये कि क्षण भर भी इसको अकेला मत छोड़ो और इस पर रात्रि को भी पहरा रखो। परन्तु मैं भागने का उपाय देख रहा था। सो जब तीसरी रात के तीन बजे के पीछे पहरे वाला बैठा-बैठा सो गया उसी समय मैं लघु शंका का बहाना करके भागा। आधा कोश पर एक मन्दिर के शिखर में एक वृक्ष के सहारे से चढ़ और जल का लोटा

भरकर छिपकर बैठा रहा जब चार बजे का अमल हुआ तब मैंने उन्हीं सिपाहियों में से एक सिपाही मालियों से मुझ को पूछता सुना तब मैं और भी छिप गया ऊपर बैठा सुनता रहा वे लोग ढूंढ कर चले गये में उसी मन्दिर की शिखर में दिन भर रहा। जब अन्धेरा हुआ तब उस पर से उतर सड़क को छोड़कर किसी से पूछा कि दो कोश पर गाँव था उसमें ठहर के अहमदाबाद होता हुआ बड़ोदरे शहर में आकर ठहरा वहां चेतन मठ में ब्रह्मानन्द आदि ब्रह्मचारी और संन्यासियों से वेदान्त विषय की बहुत बातें की और ब्रह्म हूँ अर्थात् जीव ब्रह्म एक है ऐसा निश्चय उन ब्रह्मानन्दादि ने मुझको करा दिया प्रथम वेदान्त पढ़ते समय भी कुछ-कुछ निश्चय हो गया था परन्तु ठोक दृढ़ हो गया कि मैं ब्रह्म हूं। फिर वहीं बड़ोदे में एक बनारसी बाई वैरागी का स्थान सुनकर उसमे जाकर एक सच्चिदानन्द परमहस से भेंट करके अनेक प्रकार की शास्त्र विषयक बातें हुई फिर वहां सुना कि आजकल चाणोद कन्य लीं में बड़े-बड़ संन्यासी ब्रह्मचारी और विद्वान् बाह्मण रहते हैं। वहाँ जाकर दीक्षित और चिदाश्रमादि स्वामी ब्रह्मचारो और पण्डितों से अनेक विषयों का परस्पर संभाषण हुआ। फिर एक परमानन्द परमहंस से वेदान्तसार आर्या हरिमीड़े तोटक वेदान्त परिभाषा आदि प्रकरणों का थोड़े महिनों में विचार कर लिया। उस समय ब्रह्मचर्यावस्था में कभी-कभी अपने हाथ से रसोई बनानो पड़ती थी इस कारण पढ़ने में विघ्न विचार के चाहा कि अब संन्यास लेना अच्छा है। फिर एक दक्षिणी पंण्डित के द्वारा वहाँ जो दीक्षित स्वामी विद्वान् थे उनको कहलाया कि आप इस ब्रह्मचारी को संन्यास की दीक्षा दे दीजिये। क्योंकि मैं अपना बह्मचारो का नाम भी बहुत प्रसिद्ध करना नहीं चाहता था क्योंकि घर का भय बड़ा था जोकि अब तक बना है। तब उन्होंने कहा कि उसकी अवस्था कम है इसलिए हम नहीं देते। इसके अनन्तर दो महिने के पीछे दक्षिण से एक दण्डी स्वामी और एक ब्रहमचारो आके चाणोद से कुछ कम कोश भर मकान जो कि जंगल में था उसमें ठहरे उनको सुनकर एक दक्षिणी वेदान्ति पण्डित और मैं दोनों उनके पास जाके शास्त्र विषयक संभाषण करने से मालूम हुआ कि अच्छे विद्वान हैं। और वे श्रृंगीरी मठ की ओर से आके द्वारिका की ओर जाते थे उनका नाम पूर्णानन्द सरस्वती था। उनसे उस वेदान्ति के द्वारा कहलाया कि ये ब्रह्मचारी विद्या पढ़ना चाहते हैं। यह मैं ठीक जानता हूँ कि किसी प्रकार का अपगुण इनमें नहीं है इनको आप सन्यास दे दीजिये संयास लेने का इनका प्रयोजन यही है कि निर्विघ्न विद्या का अभ्यास कर सकें। तब उन्होंने कहा कि किसी गुजराती स्वामी से कहो क्योंकि हम तो माराष्ट्र हैं। तब उससे कहा कि दक्षिणी स्वामी गौडों को भी सन्यास देते हैं तो यह ब्रह्मचारी

तो पंच द्राविड़ है इसमें क्या चिन्ता है। तब उन्होंने मान लिया और उसी ठिकाने तीसरे दिन संन्यास की दीक्षा दण्ड ग्रहण कराया और दयानन्द सरस्वती नाम रखा। परन्तु मैंने दण्ड का विसर्जन भी उन्हीं स्वामी जी के साम्हने कर दिया क्योंकि दण्ड की भी बहुत सी क्रिया है कि जिससे पढ़ने में विघ्न हो सकता था। फिर वे स्वामी जी द्वारिका की ओर चले गये। मैं कुछ दिन चाणोद कन्याली में रहके व्यासाश्रम में एक योगानन्द स्वामी को सुना कि वे योगाभ्यास में अच्छे हैं उनके पास जाके योगाभ्यास की क्रिया सीख के एक कृष्ण शास्त्री छिनौर शहर के बाहर रहते थे उनको सुनके व्याकरण पढ़ने के लिये उनके पास गया और कुछ व्याकरण का अभ्यास करके फिर चाणोद में आकर ठहरा वहां दो योगी मिले कि जिनका नाम ज्वालानन्दपुरी और शिवानन्द गिरी था। उनसे भी योगाभ्यास की बातें हुई और उन्होंने कहा कि तुम अहमदाबाद में जाओ वहां हम नदी के ऊपर दूधेश्वर महादेव में ठहरेंगे। वहाँ आवोगे तो योगाभ्यास की रीति सिखलावेंगे। वहाँ से वे अहमदाबाद को चले गये फिर एक महिने के पीछे मैं भी अहमदाबाद में जाके उनसे मिला और योगाभ्यास की रीति सीखी। फिर आबूराज पर्वत में योगियों को सुनके वहां जाके अर्बदा भवानी आदि स्थानों में भवानीगिरि आदि योगियों से मिल के कुछ और योगाभ्यास की रीति सीख के सवत् 1911 के वर्ष के अन्त में हरद्वार के कुम्भ के मेले में आके बहुत साधु सन्यासियों से मिला और जब तक मेला रहा तब तक चण्डी के पहाड़ के जगल में योगाभ्यास करता रहा। जब मेला हो चुका तब हृषीकेश में जाके संन्यासियों और योगियों से योग की रीति सीखता और सत्संग करता रहा।।

इसके आगे फिर लिखेंगे।

—दयानन्द सरस्वती

फिर वहां से एक ब्रह्मचारी और दो पहाड़ी साधु मेरे साथ आये हम सब जने टिहरी में आए वहाँ बहुत साधु और राजपंडितों से समागम हुआ। वहाँ एक पण्डित ने एक दिन मुझे और ब्रह्मचारी को अपने घर में भोजन करने के लिये निमन्त्रण दिया। समय पर उसका एक मनुष्य बुलाने को आया। तब मैं और ब्रह्मचारी उसके घर भोजन करने को गये। जब उसके घर के द्वार में घुस करके देखा तो एक ब्राह्मण मांस को काटता था। उसको देखकर जब भीतर गये तब बहुत से पण्डितों को एक सिमियाने के भीतर बैठे देखे और वहां बकरे का मांस, चमड़ा और शिर देख के पीछे लौटे। पण्डित देख के बोला कि आइये। तब मैंने उत्तर दिया कि आप अपना काम

कीजिये। हम बाहर जाते हैं। ऐसा कह कर अपने स्थान चले आये। तब पण्डित भी हमको बुलाने आया। उनसे मैंने कहा कि तुम सूखा अन्न भेज दो। हमारा ब्रह्मचारी बना लेगा। पण्डित बोले कि आपके लिए तो सब पदार्थ बनाये हैं। मैंने उनसे कहा कि आपके घर में मुझ से भोजन कदापि न किया जावेगा। क्योंकि आप लोग मांसाहारी हैं। और मुझको देखने से घृणा आती है। फिर पण्डित ने अन्न भेज दिया। पीछे वहाँ कुछ दिन ठहर कर पण्डितों से पूछा कि इस पहाड़ देश में कौन-कौन शास्त्र के ग्रन्थ देखने को मिलते हैं। मैं देखना चाहता हूं। तब उन्होंने कहा कि व्याकरण, काव्य, कोष, ज्योतिष, और तन्त्र ग्रन्थ बहुत मिलते हैं। तब मैंने कहा कि और ग्रन्थ तो मैंने देखे हैं परन्तु तन्त्र ग्रन्थ देखना चाहता हूं। तब उन्होंने छोटे बड़े ग्रन्थ मुझको दिये। मैंने देखे तो बहुत भ्रष्टाचार की बातें उनमें देखीं कि माता, कन्या भगिनी, चमारी, चांडाली, आदि से संगम करना, नग्न करके पूजना। मद्य, माँस, मच्छी, मुद्रा अर्थात् ब्राह्मण से लेके चाँडाल पर्यन्त एकत्र भोजन करना और उक्त स्त्रियों से मैथुन करना इन पांच मकरों से मुक्ति का होना आदि लेख उनमें देख के चित्त को खेद हुआ कि जिसने ये ग्रन्थ बनाये हैं वे कैसे नष्टबुद्धि थे। फिर वहाँ से श्रीनगर को जाके केदार घाट पर मन्दिर में ठहरे और वहाँ भी यन्त्र ग्रन्थों को देखना और पण्डितों से इस विषय में संवाद होता रहा। इतने में एक गंगागिरि साधु जो कि पहाड़ में ही रहता था। उससे भेंट हुई और योग विषय में कुछ बातचीत होने से विदित हुआ कि यह साधु अच्छा है। कई बार उससे बातें हुईं। मैंने उससे पूछा उसने उत्तर दिया उसने मुझसे पूछा उसका उत्तर मैंने दिया। दोनों प्रसन्न होकर दो महिने तक वहाँ रहे। जब वर्षा ऋतु आई तब आगे रुद्र प्रयागादि देखता हुआ अगस्त मुनि के स्थान पर पहुंच कर उसके उत्तर पहाड़ पर एक शिवपुरी स्थान है वहां जाकर चार महिने निवास करके पीछे उन साधु और ब्रहमचारी को वहां छोड़ के अकेला केदार की ओर चलता हुआ गुप्त काशी में पहुंचा। वहाँ कुछ दिन रह कर वहाँ से आगे चल के त्रियुगीनारायण का स्थान और गौरीकुण्ड देखता हुआ भीम गुफा देखकर थोड़े ही दिनों में केदार में पहुंच कर निवास किया। वहाँ कई एक साधु पण्डे और केदार के पुजारी जङ्गम मत के थे उनमें समागम हुआ तब तक पांच छः दिन के पीछे वे साधु और ब्रहमचारी भी वहां आ गये। वहां का सब चरित्र देखा। फिर इच्छा हुई कि इन बर्फ के पहाड़ों में भी कुछ घूम के देखें कि कोई साधु महात्मा रहता है या नहीं परन्तु मार्ग कठिन और उन पहाड़ों में अतिशीत भी है। वहां के निवासियों से भी पूछा कि इन पहाड़ों में कोई साधु महात्मा रहता है या नहीं। उन्होंने कहा कि कोई नहीं। वहां 20 (बीस) दिन

रहकर पीछे को अकेला ही लौटा क्योंकि वह ब्रह्मचारी और साधु दो दिन रह कर शीत से घबरा के प्रथम ही चले गये थे। फिर मैं वहां से चल के तुङ्गनाथ के पहाड़ पर चढ़ गया। उसका मन्दिर पूजारी बहुत सी मूर्ति आदि की सब लीला को देख कर तीसरे पहर वहां नीचे को उतरा। बीच में से दो मार्ग थे एक पश्चिम को और एक पश्चिम और दक्षिण के बीच को जाता था। जो जंगली मार्ग था मैं उसमें चढ़ गया। आगे दूर जाकर देखा तो जंगल पहाड़ और बहत गहरा सूखा नाला है उसमें मार्ग बन्द हो रहा है। विचारा कि जो पहाड़ पर चढ़े तो रात हो जावेगा पहाड़ का मार्ग कठिन है वहाँ पहुँच नहीं सकता। ऐसा विचार उस नाले में बड़ी कठिनता से घास और वृक्षों को पकड़-पकड़ नीचे उतर कर नाले के किनारे पर चढ़ कर देखा तो पहाड़ ग्रौर जंगल है कहीं भी मार्ग नहीं। तब तक सूर्य अस्त होने को आया विचारा कि जो रात हो जावेगी तो यहां जल अग्नि कुछ भी नहीं है। फिर क्या करेंगे ऐसा विचार कर आगे को बढ़ा जंगल में चलते अनेक ठोकर और कांटे लगे शरीर के वस्त्र भी फट गये। बड़ी कठिनता से पहाड़ के पार उतरा तब सड़क मिला। और अंधेरा भी हो गया। फिर सड़क सड़क चल के एक स्थान मिला वहीं के लोगों से पूछा कि यह कहाँ की सड़क है कहा कि ओखी मठ का। फिर वहां रात्रि को रहकर क्रम से गुप्त काशी आया वहां थोड़ा ठहर कर ओखी मठ में जाकर उसमें ठहर के देखा तो बड़ी भारी पोप लीला बड़े भारी कारखाने। वहां के महान्त ने कहा कि तुम हमारे चेले हो जाग्रो यहां रहो, लाखों के कारखाने तुम्हारे हाथ हो जावेंगे मेरे पीछे तुम्ही महन्त होंगे। मैंने उनको उत्तर दिया कि सुनो ऐसी मेरी इच्छा होती तो अपने माता, पिता, बन्धु, कुटुम्ब, और घर ग्रादि ही क्यों छोड़ता क्या तुम्हारा स्थान और तुम उनसे भी अधिक हो सकते हो। मैंने जिस लिये सब छोड़े हैं वह तुम्हारे पास किंचिन्मात्र भी नहीं है उनने पूछा कि कह क्या बात है। मैंने उत्तर दिया कि सत्य विद्या, योग, मुक्ति और अपने आत्मा की पवित्रता आदि गुणों से धर्म्मात्मता पूर्वक उन्नति करना है। तब महान्त ने कहा कि अच्छा तुम कुछ दिन यहां रहो। मैंने उनको कुछ उत्तर न दिया और प्रातःकाल उठके मार्ग में चल के जोशी मठ को पहुंच के वहां के दक्षिणी शास्त्री और संन्यासी थे उनसे मिल कर वहां ठहरा ॥

—दयानन्द सरस्वती

और बहुत से योगियों और विद्वान् महन्तों और साधुओं से भेंट हुई और उनसे वार्तालाप में मुझको योग विद्या सम्बन्धी और बहुत नई बातें ज्ञात हुई।

उनसे पृथक् होकर पुनः मैं बद्रीनारायण को गया। विद्वान रावल जी उस समय उस मन्दिर का मुख्य महन्त था। और मैं उसके साथ कई दिन तक रहा। हम दोनों का परस्पर वेदों और दर्शनों पर बहुत वाद विवाद रहा। जब उनसे मैंने पूछा कि इस परिस्थिति में कोई विद्वान् और सच्चा योगी भी है या नहीं, तो उसने यह जताने में बड़ा शोक प्रकट किया कि इस समय इस परिस्थिति में कोई ऐसा योगी नहीं है। परन्तु उसने बताया कि मैंने सुना है कि प्रायः ऐसे योगी इसी मन्दिर के देखने के लिये आया करते हैं। उस समय मैंने यह दृढ़ संकल्प कर लिया, कि समस्त देशों में और विशेषतः पर्वतीय स्थलों में अवश्य ऐसे पुरुषों का अन्वेषण करूंगा एक दिन सूर्योदय होते ही मैं यात्रा पर चल पड़ा और पर्वत की उपत्यका में होता हुआ अलखनन्दा नदी के तट पर जा पहुंचा। मेरे मन में उस नदी को पार करने की किंचित इच्छा न थी। क्योंकि मैंने उस नदी के दूसरी ओर एक बड़ा ग्राम माना नामक देखा, अतः अभी उस पर्वत की उपत्यका में ही अपनी गति रख कर नदी के वेग के साथ-साथ मैं जंगल की ओर हो लिया। पर्वत, मार्ग और टीले सब हिम के वस्त्र पहने हुये थे। और बहुत घनी हिम उनके ऊपर थी। अतः अलखनन्दा नदी के श्रोत तक पहुंचने में मुझको अत्यन्त कष्ट उठाने पड़े। परन्तु जब मैं वहां गया तो अपने आपको सर्वथा अपरिचित और अजान जाना। और अपने चारों ओर ऊंची-ऊंची पहाड़ियां देखी तो मुझे आगे का मार्ग बन्द दिखाई दिया। कुछ ही काल पश्चात् पथ सर्वथा लुप्त हो गया और उस मार्ग का मुझको कोई पता न मिला। उस समय मैं सोच व चिन्ता में था कि क्या करना चाहिये। अन्ततः अपना मार्ग अन्वेषण करने के अर्थ मैंने नदी को पार करने का दृढ़ निश्चय कर लिया। मेरे पहने हुए वस्त्र हलके और थोड़े थे और शीत अत्यधिक था। कुछ ही काल पश्चात् शीत ऐसा अधिक हुआ कि उसका सहन करना असम्भव था। क्षुधा और पिपासा ने जब मुझे अत्यन्त बाधित किया तो मैं एक हिम का टुकड़ा खाकर उसको बुझाने का विचार किया, परन्तु उससे किंचित आराम वा सन्तुष्टि प्रतीत न हुई। पुनः मैं नदी में उतर उसे पार करने लगा।

कतिपय स्थानों पर नदी बहुत गम्भीर थी और कहीं पानी बहुत कम था। परन्तु एक हाथ या आध गज से कम गहरा कहीं न था। किन्तु विस्तार अर्थात् पार में दस हाथ तक था अर्थात् कहीं से चार गज और कहीं से पांच गज। नदी हिम के छोटे और तिरछे टुकड़ों से भरी हुई थी। उन्होंने मेरे पांव को अति घावयुक्त कर दिया सो मेरे नग्न पाँव से रक्त बहने लगा। मेरे पांव शीत के कारण नितान्त सन्न हो गये थे।

जिस कारण मैं बड़े-बड़े घावों से भी कुछ काल तक अचेत रहा। इस स्थान पर अतिशीत के कारण मुझ पर अचेतनता सी छाने लगी। यहाँ तक कि मैं अचेतन अवस्था में होकर हिम पर गिरने को था जब मुझे विदित हुआ कि यदि मैं यहां पर इसी प्रकार गिर गया तो पुनः यहां से उठना मेरे लिये अत्यन्त असम्भव और कठिन होगा। एवं दौड़ धूप करके जैसे हुआ मैं प्रबल प्रयत्न करके वहां से कुशल मंगल पूर्वक निकला और नदी के दूसरी ओर जा पहुंचा। वहाँ जाकर यद्यपि कुछ काल तक मेरी अवस्था ऐसी रही जो जीवित की अपेक्षा मृतवत् थी तथापि मैंने अपने शरीर के उपरिभाग को सर्वथा नंगा कर लिया और अपने समस्त वस्त्रों से जो मैंने पहने हुये थे जानु वा पांव तक जंघा को लपेट लिया। और वहां पर मैं सर्वथा शक्तिहीन और घबराया हुआ आगे को हिल सकने और चल सकने में असक्त खड़ा हो गया। इस प्रकार प्रतीक्षा में था कि कोई सहायता मिले जिससे मैं आगे को चलूं। परन्तु इस बात की कोई आशा न थी कि वह आवेगी कहां से ? सहायता की आशा में था, परन्तु सर्वथा विवश था और जानता था कि कोई सहायता का स्थान दिखाई नहीं देता। अन्त को पुनः एक बार मैंने अपने चारों ओर दृष्टि की और अपने सम्मुख दो पहाड़ी पुरुषों को आते देखा जो मेरे समीप आये अपने काश सम्भ से (?) मुझ को प्रणाम करके उन्होंने अपने साथ घर जाने के लिये मुझे बुलाया और कहा, "आओ, हम तुमको वहां खाने को भी देवेंगे।" जब उन्होंने मेरे क्लेशों को सुना और मेरे वृत्त को श्रवण किया तो कहने लगे "हम तुमको सिद्धपत पर भी जो एक तीर्थस्थान है, पहुंचा देवेंगे। परन्तु उनका मुझको यह सच कहना अच्छा प्रतीत न हुआ। मैंने अस्वीकार किया और कहा "महाराज, शोक! मैं आपकी यह सब कृपा स्वीकार नहीं कर सकता क्योंकि मुझ में चलने की किंचित शक्ति नहीं है।" यद्यपि उन्होंने मुझको बहुत आग्रह पूर्वक बुलाया और आने के लिये अत्यधिक अनुरोध किया, तथापि मैं वहीं पांव अपने पांव जमाये खड़ा रहा और उनकी आज्ञा वा इच्छानुकूल मैं उनके पीछे चलने का साहस न कर सका। मैंने उनसे कह दिया कि यहां से हिलने का प्रयत्न करने की अपेक्षा मैं मर जाना उत्तम समझता हूँ। ऐसा कह कर मैंने उनकी बातों की ओर ध्यान करना भी बन्द कर दिया अर्थात् पुनः उन्हें न सुना। उस समय मेरे मन में विचार आता था कि उत्तम होता यदि मैं लौट जाता और अपने पाठ को स्थिर रखता इतने में वह दोनों सज्जन वहाँ से चले गये और कुछ ही काल में पर्वतों में लुप्त हो गये।

वहां जब मुझे शांति प्राप्त हुई तो मैं भी आगे को चला और कुछ काल बसुधारा (प्रसिद्ध तीर्थ व यात्रा स्थान) पर विश्राम करके माना ग्राम के निकटवर्ती

प्रदेश में होता हुआ उसी सायं लगभग आठ बजे बद्रीनारायण जा पहुंचा। मुझे देख कर रावल-जी और उनके साथी जो घबराये हुए थे, विस्मय प्रकाश पूर्वक पूछने लगे—"आज सारा दिन तुम कहां रहे ?" तब मैंने सब वृतान्त क्रमबद्ध सुनाता उस रात्रि कुछ आहार करके जिससे मेरी शक्ति लौटती हुई जान पड़ी, मैं सो गया। दूसरे दिन प्रातः शीघ्र ही उठा और रावलजी से आगे जाने की आज्ञा मांगी। और अपनी यात्रा से लौटता हुआ रामपुर की ओर चल पड़ा। उस सायं चलता-चलता एक योगी के घर पहुंचा। वह बड़ा तपस्वी था। रात्रि उसी के घर काटी। वह पुरुष जीवित ऋषि और साधुओं में उच्च कोटि के ऋषि होने का गौरव रखता था। धार्मिक विषयों पर बहुत काल तक उसका मेरा वार्तालाप हुआ। अपने संकल्पों को पहले से अधिक दृढ़ करके मैं आगामी दिन प्रातः उठते ही आगे को चल दिया। कई वनों और पर्वतों से होता हुआ चिलका घाटी से उतर कर मैं अन्ततः रामपुर पहुँच गया। वहां पहुंच कर मैंने प्रसिद्ध रामगिरि के स्थान पर निवास किया। यह पुरुष पवित्राचार और आध्यात्मिक जीवन के कारण अतिप्रसिद्ध था। मैंने उसको विचित्र प्रकृति का पुरुष पाया। अर्थात् वह सोता नहीं था, वरन् सारी-सारी रातें उच्चस्वर से बातें करने में व्यतीत करता। वह बातें प्रकट में अपने साथ करता हुआ प्रतीत होता था। प्रायः हमने उच्च स्वर से चीख मारते हुये उसे सुना। पुनः कई वार रोते हुये और चीख मारते हुये सुना। पर वस्तुतः जब उठ कर देखा तो उसके कमरे में उसके अतिरिक्त और कोई पुरुष दिखाई न दिया। मैं ऐसी वार्ता से अत्यन्त विस्मित हुआ। जब मैंने उसके चेलों और शिष्यों से पूछा तो उन विचारों ने केवल यही उत्तर दिया कि ऐसी इनकी प्रकृति ही है।" पर मुझे यह कोई न बता सका कि इसका क्या रहस्य है। अन्त को स्वयं जब मैंने उस साधु से कई बार एकान्त में चर्चा की तो मुझे ज्ञात हो गया कि वह क्या बात थी। इस प्रकार मैं इस निश्चय करने के योग्य हो गया कि अभी वह जो कुछ करता है वह पूरी-पूरी योग विद्या का फल नहीं है, प्रत्युत पूरी में अभी उसे न्यूनता है और यह वह वस्तु नहीं कि जिसकी मुझे जिज्ञासा है। यह पूरा योगी नहीं यद्यपि योग में कुछ गति रखता है।

उससे चलकर मैं काशीपुर गया। वहां से द्रोणसागर जा पहुंचा। वहीं मैंने सारा शरद् ऋतु काटा। हिमालय पर्वत पर पहुंच कर देह त्याग करना चाहिये, ऐसी इच्छा हुई। परन्तु मन में विचार आ गया कि ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् देह छोड़ना चाहिये। अतः वहां से मुरादाबाद होता हुआ सम्भल आ पहुंचा। वहां से गढ़मुक्तेश्वर से होते हुये पुनः मैं गंगा तट पर आ निकला। उस समय अन्य धार्मिक पुस्तकों के

अतिरिक्त मेरे पास निम्न लिखित पुस्तकें भी थीं। शिव संध्या, हठ योग प्रदीपिका, केशाराणि संगोत ?) प्राय मैं इन्हीं पुस्तकों को यात्रा में पढ़ा करता था। उनमें से कई पुस्तकों का विषय नाड़ी चक्र था। पर उनमें इस विषय का ऐसा लम्बा चौड़ा विवरण था कि पुरा पढ़ता-पढ़ता थक जाता। मैं उन्हें कभी भो पूर्णतया अपनी बुद्धि में न ला सका और न हो समझकर स्मरण कर सका। अतः मुझे विचार हुआ कि न जाने ये सत्य भो हैं वा नहीं। ऐसा संदेह होता ही गया, यद्यपि मैं अपने संशय मिटाने का यत्न करता रहा। परन्तु वह संदेह दूर न हुये और न ही उनके दूर करने का कोई अवसर प्राप्त हुआ।

एक दिन दैव संयोग से एक शव मुझे नदो में बहता हुआ मिला। तब समुचित अवसर प्राप्त हुआ कि मै उसकी परीक्षा करता और अपने मन में उन पुस्तकों के सम्बन्ध में जो विचार उत्पन्न हो चुके थे उनका निर्णय करता। सो उन पुस्तकों को जो मेरे पास थीं, समीप हो एक ओर रख, वस्त्रों को ऊपर उठा मै नदी के भीतर गया और शीघ्र वहां जा शव को पकड़ तट पर आया। मैने तीक्ष्ण चाकू से जैसा हो सका उसे यथायोग्य काटना आरम्भ किया और हृदय को उसमें से निकाल लिया और ध्यानपूर्वक देख परीक्षा की। अब पुस्तकोल्लिखित वर्णन को उससे तुलना करने लगा। ऐसे ही शिर और ग्रीवा के अंगों को काट कर सामने रक्खा। यह निश्चय करके कि दोनों अर्थात् पुस्तक और शव लेश मात्र भो परस्पर नहीं मिलते, मैंने पुस्तकों को फाड़ कर उनके टुकड़े कर डाले और शव के साथ ही पुस्तकों के टुकड़ों को भी नदी में फेंक दिया। उसी समय से शनैः-शनैः मैं यह परिणाम निकालता गया, कि वेदों, उपनिषदों, पातञ्जल और साँख्यशास्त्र के अतिरिक्त अन्य समस्त पुस्तकें जो विज्ञान और विद्यापर लिखी गयीं मिथ्या और अशुद्ध हैं। ऐसे ही कुछ दिन और गंगा तीर पर विचरते हुये फर्रुखाबाद पहुंचा। और शृंगीराम पुर से होकर छावनी की पूर्व दिशा वाली सड़क से कानपुर जाने वाला था, जब संवत् 1912 विक्रम समाप्त हुआ।

1913 वि० अगले पाँच मास में कानपुर वा प्रयाग के मध्यवर्ती अनेक प्रसिद्ध स्थान मैंने देखे। भाद्रपद के प्रारम्भ में मिर्जापुर पहुंचा। वहां एक मास से अधिक विंध्याचल अशोलजी के मन्दिर में निवास किया। असूज़ के आरम्भ में काशी पहुंचा। वहां जाके मैं गुफा में ठहरा जो वरणा और गंगा के संगम पर है। और जो उस समय भवानन्द सरस्वती के अधिकार में थी। वहां पर कई शास्त्रियों अर्थात् काकाराम, राजाराम आदि से मेरा परिचय हुआ परन्तु वहाँ केवल 12 दिन ही रहा।

तत्पश्चात् जिस वस्तु की खोज में था उसके अर्थ आगे को चल दिया। और असूज सुदि 2 सं० 1913 को दुर्गाकुण्ड के मन्दिर पर जो चंण्डालगढ़ में है, पहुंचा। वहां दस दिन व्यतोत किये। यहां मैंने चावल खाने सर्वथा छोड़ दिये और केवल दूध पर अपना निर्वाह करके दिन-रात योग विद्या के अध्ययन और अभ्यास पर तत्पर रहा। दौर्भाग्यवश वहां मुझे एक बड़ा दोष लग गया, अर्थात् भाँग पोने का स्वभाव हो गया। सो कई बार उसके प्रभाव से में सर्वथा बेसुध हो जाया करता। एक दिन मन्दिर से निकल कर चण्डालगढ़ के निकटस्थ जो ग्राम आता था तो एक पुराना साथी मिला। ग्राम के दूसरी ओर कुछ ही दूर एक शिवालय था। वहां जाकर मैंने रात काटी। रात्रि के समय भांग से उत्पन्न हुई मादकता के कारण जब मैं अचेत सोता था तो मैंने एक स्वप्न देखा। वह ऐसे था। मुझे विचार हुआ कि मैंने महादेव और उनकी स्त्री पार्वती को देखा। वे परस्पर वार्त्तालाप कर रहे थे और उनकी बातों का पात्र मैं था, अर्थात् मेरे ही सम्बन्ध में वे कह रहे थे। पार्वती महादेव जी से कहती थी "उत्तम हो यदि दयानन्द सरस्वती का विवाह हो जावे" परन्तु देवता इससे भेद प्रकट कर रहे थे और उनका संकेत भांग की ओर था। मैं जागा और स्वप्न पर विचार करने लगा। तब मुझे बड़ा दुःख और क्लेश हुआ। उस समय धारासार वर्षा हो रही थी। मैंने उस बरामदे में जो मन्दिर के मुख्य द्वार के सन्मुख थे विश्राम किया। वहां नन्दी वृष-देवता की एक विशाल मूर्ति खड़ी थी। अपने वस्त्र पुस्तकादि उसकी पृष्ठ पर रखकर मैं उसके पीछे बैठ गया और निज विचार में निमग्न हुआ। सहसा नन्दी मूर्ति के भोतर दृष्टिपात करने पर मुझे विदित हुआ कि एक मनुष्य उसमें छिपा हुआ है। मैंने अपना हाथ उसकी ओर फैलाया। इससे वह अति भयभीत हुआ, क्योंकि मैंने देखा कि उसने तत्काल छलांग मारी और छलांग मारते हो वेग से ग्राम की ओर भागा। तब उसके जाने पर मैं उस ही मूर्ति के भोतर बंठ गया और अवशिष्ट रात्रि भर वहां सोता रहा। प्रातःकाल एक वृद्धा वहाँ आई। उसने वृष देवता की पूजा की, जिस अवस्था में कि मैं भी उसके अन्दर ही बैठा हुआ था। कुछ पोछे वह गुड़ और दही लेकर लौटी। मेरी पूजा करके और भ्रान्ति से मुझे ही देवता समझकर उसने कहा "आप इसे ग्रहण कीजिये और इसमें से कुछ खाइये।" मैंने क्षुधार्त्त होने के कारण वह सब खा लिया। दही क्योंकि बहुत खट्टा था, अतः भांग की मादकता के दूर करने में एक अच्छा निदान हो गया। उससे मादकता जातो रही और मुझे बहुत आराम प्रतीत हुआ।

चैत्र 1914—वहां से आगे चला और वह मार्ग पकड़ा कि जिस ओर पर्वत थे और जहां से नर्मदा निकलती है, अर्थात् नर्मदा के स्रोत की ओर यात्रा आरम्भ की।

मैंने कभी एक बार भी किसी से मार्ग नहीं पूछा प्रत्युत दक्षिण की ओर यात्रा करता हुआ चला गया। शीघ्र ही मैं एक ऐसे, उजाड़, निर्जन स्थान में पहुंच गया जहां चारों ओर बहुत घने वन और जंगल थे। वहां जंगल में अनियमित दूरी पर बिना क्रम झाड़ियों के मध्य में कई स्थानों पर मलिन और उजाड़ झोपड़ियां थी। कहीं-कहीं पृथक्-पृथक् ठीक झोपड़ियां भी दृष्टिगोचर होती थीं। उन झोपड़ियों में से एक पर मैंने किञ्चित दुग्धपान किया और पुनः आगे की ओर चल दिया। परन्तु इसके आगे लगभग पौन कोस चलकर मैं पुनः एक ऐसे ही स्थान पर पहुंचा जहां कोई प्रसिद्ध मार्ग आदि दिखाई न देता था। अब मेरे लिये यही उचित प्रतीत होता था कि उन छोटे-छोटे मार्गों में से (जिन्हें मैं जानता न था कि कहां जाते हैं) कोई एक चुनूं और उस ओर चल दूं। सुतरां मैं शीघ्र ही एक निर्जन वन में प्रविष्ट हुआ। उस जंगल में बेरियों के बहुत वृक्ष थे। परन्तु घास इतना घना और लम्बा था कि मार्ग सर्वथा दृष्टिगोचर न होता था। वहाँ मेरा सामना एक बड़े काले रीछ से हुआ। वह पशु बड़े वेग और उच्च स्वर में चीखा। चिंघाड़ कर अपनी पिछली टांगों पर खड़ा हो मुझे खाने के निमित्त उसने अपना मुख खोला। कुछ काल तक मैं निष्क्रय स्तब्धवत् खड़ा रहा। पश्चात् शनैः शनैः मने अपने सोटे को उसकी ओर उठाया। उससे भयभीय हो वह ऊल्टे पाँव लौट गया। उसकी चिंघाड़ वा गर्ज ऐसी बलपूर्ण थी कि ग्राम वाले जो अभी मुझे मिले थे, दूर से उसका शब्द सुन कर लठ ले शिकारी कुत्तों सहित मेरी रक्षार्थ वहां आये। उन्होंने मुझे यह समझाने का परिश्रम किया कि मैं उनके साथ चलूं। वे बोले "इस जंगल में यदि तुम कुछ भी आगे बढ़ोगे तो तुम्हें संकटों का सामना करना पड़ेगा। पर्वत या वन में बहुत से भयानक क्रूर और हिंसक जंगली पशु अर्थात् रीछ, हाथी, शेर आदि तुमको मिलेंगे।" मैंने उनसे निवेदन किया कि आप मेरे कुशल मंगल का कुछ भय न करें क्योंकि मैं कुशल मँगल, और रक्षित हूँ। मेरे मन में तो यही सोच थी कि किसी प्रकार नर्मदा का स्रोत देखूं। अतः समस्त भय और कष्ट मुझे अपने संकल्प से न रोक सकते थे। जब उन्होंने देखा कि उनकी भयानक बातें मेरे लिये कोई भय उत्पन्न नहीं करतीं और मैं अपने संकल्प में पक्का हूँ तो उन्होंने मुझे एक दण्ड दिया जो मेरे सोटे से बड़ा था और जिससे मैं अपनी रक्षा करूं। परन्तु मैंने उस दण्ड को तुरन्त अपने हाथ से फेंक दिया।

उस दिन जब तक कि संसार में चारों ओर अन्धकार न छाया मैं बराबर यात्रा करता हुआ चला गया। कई घण्टों तक मानव बस्ती का मुझे कोई चिन्ह न मिला।

दूर-दूर तक कोई ग्राम दिखाई न दिया। कोई झौपड़ी भी तो दृष्टिगोचर न होती थी और न ही कोई मनुष्य जाति मेरी आंखों के सामने आई पर वह वस्तुएं जो प्रायः मेरे मार्ग में आई, वृक्ष थे। उनमें से अनेक टूटे पड़े थे कि जिनकी जड़ों को मस्त हस्तियों ने तोड़ और उखेड़ कर फेंक दिया था। इससे कुछ दूर आगे मुझे एक विशाल विकट वन दिखाई दिया। उसमें प्रवेश करना कठिन था अर्थात् बेर आदि कांटे वाले वृक्ष इतने घने लगे हुए थे कि उनके भीतर से निकल कर वन में पहुंचना अति दुस्तर प्रत्युत असम्भव प्रतीत होता था। प्रथम तो मुझे उसके भीतर से निकलना असम्भव दिखाई दिया, परन्तु पीछे पेट के बल और जानू के सहारे मैं शनैः-शनैः सर्पवत् उन वृक्षों में से निकला। और इस प्रकार उस बाधा और कठिनाई पर विजय प्राप्त की। इस द्विग्विजय के प्राप्त करने में मुझ को अपने शरीर के माँस को भी भेंट करना पड़ा। मैं इसमें से घायल और अधमरा होकर निकला। उस समय सर्वत्र अन्धकार छाया हुआ था। तम के अतिरिक्त कुछ दृष्टिगोचर न होता था। यद्यपि मार्ग रुका हुआ था और दिखाई न देता था तो भी मैं आगे बढ़ने के विचार को तोड़ न सकता था। मैं इस आशा में था कि कोई मार्ग निकल ही आवेगा। अतएव निरन्तर आगे को चलता गया और बढ़ता रहा। अन्त को मैं एक ऐसे भयानक स्थान में पहुंचा कि जहाँ चारों ओर उच्च शैल और पर्वत थे कि जिन पर घनी औषधियां और वनस्पतियाँ उगी हुई थीं। पर इतना अवश्य था कि मनुष्यबास के वहां कुछ-कुछ चिन्ह और संकेत पाये जाते थे। अस्तु। शीघ्र ही मुझे कई झोपड़ियाँ और कुटियायें दिखाई पड़ीं। उनके चारों ओर गोबर के ढेर लगे हुये थे। निकट ही स्वच्छ जल की एक छोटी सी नदी थी। उसके तीर पर बहुत सी बकरियां चर रही थीं। झोपड़ियों और टूटे-फूटे घरों के द्वारों और छिद्रों में से टिमटिमाता हुआ प्रकाश दिखाई देता था जो जाते हुये पथिक को स्वागत और बधाई के शब्द सुनाता हुआ प्रतीत होता था। मैंने वहां एक विशाल वृक्ष के नीचे जो एक झोपड़ी के ऊपर फैला हुआ था रात्रि व्यतीत की। प्रातः उठकर मैं अपने क्षत पाँव, हाथ, और दण्ड को नदी जल से धोकर संध्या या प्रार्थना के लिये बैठने को ही था कि किसी जंगली पशु की गर्ज मेरे कर्णगोचर हुई। वह ध्वनि 'टमटम' का उच्च स्वर था। कुछ काल पश्चात् मैंने एक बड़ी सवारी या जन समूह को आते हुए देखा। उसमें बहुत से स्त्री-पुरुष और बालक थे। उनके पीछे बहुत सी गौएं और बकरियां थीं। वे एक झोंपड़ी या घर से निकले। अनुमान है कि वे किसी धार्मिक त्यौहार की रस्में

पूरी करने के लिये जो रात्रि को हुआ, आये थे। जब उन्होंने मेरी ओर देखा और मुझे उस स्थान में एक अजान पुरुष जाना तो बहुत से मेरे चारों ओर एकत्र हुये। अन्ततः एक वृद्ध पुरुष ने आगे बढ़कर मुझ से पूछा तुम कहाँ से आये हो ? मैंने उन सबसे कहा कि मैं काशी से आया हूं और अब नर्मदा नदी के श्रोत की ओर यात्रा के लिये जा रहा हूं। इतना पूछ कर वे सब मुझे अपनी उपासना करने में निमग्न छोड़ कर चले गये। उनके जाने के आधा घण्टा पश्चात् उनका एक अध्यक्ष दो पर्वतीय पुरुषों सहित मेरे पास आया ओर एक दिशा में बैठ गया। वह वस्तुतः उन सबकी ओर से प्रतिनिधि बन कर मुझे अपनी झोंपड़ियों में बुलाने को आया था। परन्तु पूर्ववत् मैंने अब भी उनका निमन्त्रण अस्वीकार किया क्योंकि वे सब मूर्तिपूजक थे। तब उसने अपने साथ वालों को मेरे समीप अग्नि प्रज्वलित करने का आदेश किया। और दो पुरुषों को स्थापित किया कि रात्रि भर मेरी रक्षा करते हुये जागते रहें। जब उसने मुझ से मेरे भोजन के सम्बन्ध में पूछा और मैंने उसे बताया कि मैं केवल दूध पीकर निर्वाह करता हूं तो उस दयावान् अध्यक्ष व नेता ने मुझ से मेरा तूम्बा माँगा। उसे लेकर वह अपनी कुटी को गया और बहां से उसे दूध से भर कर मेरे पास भेज दिया मैंने उस रात्रि उसमें से थोड़ा सा दूध पिया। वह फिर मुझे उन दोनों पहरा देने वालों के ध्यान में छोड़ कर लौट गया। उस रात्रि मैं घोर निद्रा में सोया और सूर्योदय तक सोया रहा। तत्पश्चात् अपने संध्या आदि से अवकाश प्राप्त करके मैं उठा और यात्रा के लिये चला। □□

—दयानन्द सरस्वती

आर्य समाज की मान्यतायें

1. ईश्वर, जीव तथा प्रकृति तीनों अनादि हैं। ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, जीव मरण रहित, चेतन तथा प्रकृति के अवयव सदैव रहने वाले हैं।

2. वेद ईश्वर का ज्ञान तथा अपौरुषेय है अर्थात् मानव रचना नहीं है। ईश्वर ज्ञान होने के कारण वेद स्वतः (अपने आप में) प्रमाण तथा वेदानुकूल अन्य आर्य ग्रन्थ परतः प्रमाण हैं।

3. ईश्वर की आज्ञा का यथावत् पालन और सबके हित में पक्षपात रहित न्याय करना तथा कर्मों का उत्साह के साथ करना ही धर्म है।

॥ ओ३म् ॥

इतिहास के परिप्रेक्ष्य में:-

पंजाब-हरियाणा के भूले बिसरे आर्य समाजी नेता

[सम्पादक-यह लेख परोपकारिणी सभा अजमेर का मुख पत्र "परोपकारी मासिक" पत्रिका जून 1984 के अंक से साभार है।]

पं० लखपतराय (दादा)
हिसार के प्रसिद्ध वकील व आर्य समाज के प्राण

Pandit Lakhpat Rai

An Extract from the autobiography of Lala Lajpat Rai published by Pandit Bhim Sen Vidyalankar, Sanchalak Navyug Granthmala, Arya Press, Nicholson Road, Ambala Cantt.

Hissar Arya Samaj had the good fortune of having another leader of the same high type as was Lala Chandulal. Indeed in some ways, this leader had no rival of his in the Punjab, Lala Chandulal had the great quality of sharing people's difficulties and miseries. This quality existed in a far higher degree in Pandit Lakhpat Rai. Pandit Lakhpat Rai stands unrivalled as a man. His firmness, his love and his capacity for friendship place him amongst the best.

In my life time, I made several friends and I am very proud of the friendship of several of them. So far as my acqaintances are concerned, their number goes up to thousands, but in all these years I have not come across a man, who possesses so much selfless love for service, desirelessness, adherence to noble ideals and the ideal of self-sacrifice, as Pandit Lakhpat Rai possesses. As a matter of fact, there is no person whom I can place on equality with him. I cannot find sufficient words to express my appreciation of his good qualities. In the darkest hour and the saddest moments of my life, the friendship of Pandit Lakhpat Rai has been a beacon light to me. He

never failed me at any crucial moment. I do not find any person in this world for whom I have so much love and respect as for Pandit Lakhpat Rai.

Pandit Lakhpat Rai does not share my political views. From temperament, he appears to me to be too cautious. I do not think that I can call him a coward. Indeed, he is not a coward. But his fear for sharing my political views is due to the fact that he does not wish the Arya Samaj to be injured in my way. In the service of this movement, he has spent the best part of his life.

Near and distant relations have been benefitted by Pandit Lakhpat Rai's help. He is undoubtedly one who serves the large circle of his family, But the field of his service is not merely limited to members of his family. He has served his friends and his acquaintances as well But the greatest service which he has rendered is to Arya Samaj. His work will always shine amongst the workers of Arya Samaj. He has served the Arya Samaj with the highest motives and in my estimation every Arya youngman should have Pandit Lakhpat Rai's photo hung round his neck so that at every trying moment by looking at Panditji's photo, he should seek inspiration and thus be saved from such great sins as selfishness, betrayal of one s country and from ignorable actions and false pride.

I am not an idolator, nor I support idol worship. But in the field of Arya Samaj work, if there are any persons who are fit to be worshipped by the coming generations, I would place the name of Pandit Lakhpat Rai in the foremost rank. Pandit Lakhpat Rai is one of the best workers of Arya Samaj. He leads a simple life. If there is any person amongst the leaders of the Arya Samaj who has never cared for name or fame and who has given credit of his own work to

others, it is Pandit Lakhpat Rai. I cannot give higher words of praise than these to Pandit Lakhpat Rai. □

पं० नानकचन्द (पिता)
लाहौर के प्रसिद्ध बैरिस्टर व
पंजाब के आर्य नेता

Born in 1886, was educated in the M.B. High School Hissar, and Dayanand-Anglo Vedic College, Lahore where he read History under Mahatma Hans Raj. Graduated from the Punjab University in 1906 and from the Oxford University in 1910. He was guided in his work at Oxford by his tutor Sir John A. R. Marriott, the famous Historian and author. Called to the Bar in 1911 at Hissar. Shifted to the Lahore High Court in 1915. Was a Member of the Punjab Legislative Council from 1926–36, and a fellow of the Punjab University from 1926-36. He was closely associated with Mahatma Hans Raj in the management of several educational institutions and took a leading part in founding several schools and colleges. He was selected by the leading Hindus of the Punjab to lead their deputation before the Simon Commission of which Mr. Attlee, later Prime Minister of U. K. was a member. He represented the Hindus in the Third Round Table Conference in 1932 and gave evidence before Joint Parliamentary Committee in 1933. He very strongly condemned the system of separate religious electorates and predicted the horrors of 1947 in his speech published along with the proceedings of the Third Round Table Conference. He is the author of a standard work on the Law of Elections in India and another book entitled "Wisdom of India." After his death in 1966, his papers have been taken over by the authorities of Pandit Jawahar Lal Nehru Museum in New Delhi and are kept there. □

जस्टिस प्रेमचन्द पंडिप (पौत्र)
पंजाब-हरियाणा हाईकोर्ट के जज
आपने 1974 में हाईकोर्ट का चीफ
जस्टिस नहीं बनाने के विरोध में
त्याग-पत्र दिया।

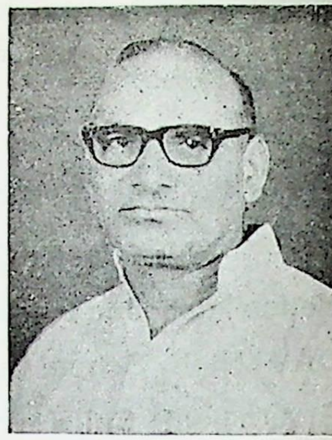
Mr. Justice P. C. Pandit is a man apart, one in thousands. He too descends from a distinguished family. He was educated at DAV High School and College, Lahore. From there he went over to Government College Lahore and again to Law College, Lahore. He has been a brilliant student with distinctions and medals trailing him every where. He passed his LL B. way back in 1933 and worked in chambers of his father, Pandit Nanak Chanda, leading advocate of the High Court at Lahore and also a member of the provincial Legislative Assembly. His grandfather Pandit Lakhpat Rai was also a leading advocate at Hissar and one of the founders of the Arya Samaj in Punjab.

Justice P. C. Pandit was the Secretary of DAV College Managing Committee, Lahore. He was elevated to the Bench in 1960 after a very distinguished innings at the Bar. He is one of those judges who grace the Bench with their ability and intigrity. Nothing is more dear to his heart than dignity and self-respect. His decision to resign in 1974 in the wake of his supersession was an assertion of his self-respect. It is, therefore, only appropriate that he has not served on any commission ever since his retirement. □

स्वामी दयानन्द सरस्वती उन महापुरुषों में से थे जिन्होंने आधुनिक भारत का निर्माण किया। हिन्दु समाज का उद्धार करने में आर्य समाज का बहुत बड़ा है। यह कहना अतिशयोक्ति पूर्ण न होगा कि पंजाब का प्रत्येक नेता आर्य समाजी है। स्वामी है। स्वामी दयानन्द को मैं एक धार्मिक और सामाजिक सुधारक कर्मयोगी मानता हूं।

—नेताजी श्री सुभाषचन्द्र बोस

ओ३म्



आर्य समाज की दृष्टि से एक सर्वेक्षण, हिसार

सत्यप्रिय शास्त्री एम. ए. साहित्याचार्य
प्राचार्य, दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार।

हिसार हरयाणा का प्रसिद्ध जिला है, जो कदाचित भारत में क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा जिला था, परन्तु उसमें से सिरसा और भिवानी दो जिले और बना दिये गये, जो कि इसकी तहसीलें थीं। यह हरयाणा के दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। जिसका एक किनारा राजस्थान और दूसरा छोर पञ्जाब से मिलता है। शक्तिशाली बैलों के लिए यह जिला प्रसिद्ध है। हरयाणा कृषि विश्वविद्यालय के कारण भारत के प्रसिद्ध नगरों में है। स्वाधीनता से पूर्व यह पिछड़ा हुआ क्षेत्र था, पानी की इतनी अधिक कमी थी कि ग्रामीण जन विवाहादि समय पर पड़ौसियों से पानी भी उधार लेते थे। यदि किसी सरकारी कर्मचारी का स्थानान्तरण यहां हो जाता था तो उनके शब्दों में वह 'काला पानी भेज दिया जाता था। यातायात के साधनों के नाम पर एक दो ट्रेन तथा चन्द बसों का आवागमन होता था। ग्रामीण क्षेत्रों में यातायात का अधिक साधन ऊंट थे। बोली में राजस्थानी तथा पंजाबी का मिश्रण है, वैसे सम्पूर्ण जिले में कई बोलियाँ बोली जाती हैं। यहां के निवासी अधिकतर खेतीहर हैं। उनमें भी जाट, अहीर, गुजर, विश्नोई राजपूत, काम्बोज आदि अधिक संख्या में हैं। हरयाणा प्रान्त के निवासी वीर, सीधे सादे तथा भोले भाले हैं। खान पान शुद्ध वेशभूषा स्वदेशी है। यहाँ पर अब सब समयानुसार बदल रहा है। परन्तु स्वभाव से अब भी यहां के लोग सीधे सादे छल कपट रहित है। बुद्धि से तोलकर किसी बात को स्वीकार करते हैं, बुद्धि में जंचने वाली बात को तुरन्त स्वींकार कर लेते हैं। इसी आधार पर आर्य समाज का सबसे अधिक प्रभाव हरयाणा में हुआ है। हिसार तथा रोहतक हरयाणा के दिल तथा दिमाग है, हिसार में पहलें पहल आर्य समाज ने कब प्रवेश किया ? यह तो ज्ञात नहीं, परन्तु पंजाब केसरी ला० लाजपत-राय ने जब हिसार में वकालत की तब से आर्य समाज यहां दृढ़ मूल हुआ। शमां जलती

रहो तो मर मिटने वाले पतंगों की कमी नहीं, इसी दृष्टि से यहाँ आर्य समाज, शिक्षा संस्थाएं सक्रिय हैं।

आर्य समाज नागोरी गेट

इसकी स्थापना ला० लाजपतराय ने की थी। उन्हीं के घर पर इसके आरम्भिक सत्संग होते थे। कार्य का विस्तार होने पर अपने स्वतन्त्र मन्दिर की आवश्यकता अनुभव की गई। स्वर्गीय लाला हरिराम जी का अस्तबल था। उन्होंने इस कार्य के लिए अपना अस्तबल दान कर दिया था। आज जहाँ आर्य समाज मन्दिर है यह वही स्थान है। 1947 से पहले इस समाज के माध्यम से बड़ा प्रचार हुआ। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा लाहौर के अन्तर्गत इस समाज में हरयाणा वेद प्रचार मण्डल होता था, जिसके अन्तर्गत 26 भजन मण्डलियाँ काम करती थीं। जिनमें श्री पं० भूराराम जी, श्री नानूराम ठा० रिछपालसिंह जी, श्री हनुमन्तराम जी की मण्डलियाँ थीं तथा श्री पं० दीनानाथ जी, श्री पं० अमीचन्द जी, श्री पं० पतराम जी इत्यादि उपदेशक काम करते थे। स्व० बाबू प्रकाशचन्द जी एडवोकेट इन सब के कण्ट्रोलर थे। प्रकाशचन्द जी ने सारे हिसार के ग्रामीण क्षेत्रों में बड़ा काम किया। 1939 के हैदराबाद सत्याग्रह के समय इस समाज ने 500 के लगभग सत्याग्रही भेजे तथा प्रत्येक जत्थे का शानदार जुलूस से स्वागत किया गया। इसमें मुस्लिम बहुत इलाके में लाठी भालों के साथ जलूस निकालते थे। इस कार्य में अग्रणी पं० देवराज सन्धीर एडवोकेट होते थे। 1946 में इसी समाज को सहायता से सरकार ने सी० ए० वी० स्कूल मे शरणार्थी भाइयों का कैम्प लगाया। उस समय पुरुषार्थी बन्धुओं को इस समाज ने बड़ी सहायता की इसी समाज के नेतृत्व में अनेक शास्त्रार्थ हुवे।

सी० ए० वी० हाई स्कूल के हाल में प्रसिद्ध शास्त्रार्थ महारथी पं० मन्साराम वैदिक तोप का प्रसिद्ध स्थानीय विद्वान् पं० दुनीचन्द के साथ शास्त्रार्थ हुआ। यद्यपि पं० दुनींचन्द मनसाराम जी के गुरु थे। मनसाराम जी ने आरम्भ में पं० दुनीचन्द जी के चरण स्पर्श किए और कहा कि आप मेरे गुरु हैं। परन्तु मेरे विचारों में क्रान्ति आई है। मैंने जिसे सत्य समझा उसी का निर्णय करने को आपके सम्मुख आने का दुःसाहस कर रहा हूं। शास्त्रार्थ हुआ बाद में लोग कहते सुने गये कि प० दुनीचन्द जी हैं तो विद्वान पर आर्य समाजीं पण्डित के सवालों का जवाब नहीं दे सके। वह जमाना था जब आर्य समाज की धाक थी। हाँ, अब सम्पत्ति की दृष्टि से हम आगे बड़े हैं, परन्तु जनता में प्रचार की दृष्टि से पिछड़े हैं, इसमें कोई दो राय नहीं हो सकती।

दयानन्द भवन स्त्री समाज डोगरान मोहल्ला

1947 में जब मुसलमान चले गये, ऐसी जन श्रुति है कि यह स्थान उनकी मस्जिद या कब्रगाह थी। कुछ आर्य वीरों ने जिनमें प० दीनदयाल जी, प० मदनमोहन जी तथा प० देवराज जी सन्धीर मुख्य थे, कड़ा संघर्ष करके इस स्थान को कब्जे में लिया, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ वाले भी इस पर कब्जे की ताक में थे, तब से यहाँ विधिवत् समाज लगने लगी है, जो आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत भी और बड़ा अच्छा काम चलता था, श्री झण्डाराम जी बड़े पुरुषार्थी थे, परन्तु कुछ असामाजिक तत्वों के उकसाने पर स्त्री-पुरुषों का झगड़ा हुआ और विवाद बढ़ा परन्तु आजकल वह लगभग शान्त हो चुका है। इसी समाज की मन्त्राणी बहिन राजरानी बहुत विदुषी महिला हैं। ये व्याख्यान के लिए लगभग सारे प्रान्त में जाती हैं। आर्य जगत् के शताब्दी समारोहों तथा विभिन्न महिला सम्मेलनों में इनकी वक्तृता प्रभावशाली होती है तथा जन सामान्य बड़े ही ध्यान से सुनते हैं।

आर्य समाज माडल टाऊन

यह 1960 के लगभग प्रि० ज्ञानचन्द जी के पुरुषार्थ से स्थापित हुआ है, मन्दिर भी उन्हीं की कृपा का परिणाम है। स्व० हरिकृष्ण आर्य तथा ला० फूलचन्द आर्य भारी-लास वालों ने इसकी उन्नति में विशेष योगदान किया है। सुना जाता है कि वे आजकल इसके वैधानिक प्रधान हैं।

शिक्षण संस्थाएं **सी० ए० वी० हाई स्कूल**

शिक्षण संस्थाओं की दृष्टि से हिसार आर्य समाज का गढ़ है। 1947 से पहले उच्चतम शिक्षा के लिए बच्चों को लाहौर जाना पड़ता था, 1950 से पूर्व जालन्धर जाना पड़ता था, इस दृष्टि से आर्य समाज ने इसे पिछड़े क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया है। 1918 में सी० ए० वी० स्कूल की स्थापना हुई, जितनी भी आस-पास की पुरानी पीढ़ी है, उसमें अधिकांश को शिक्षित करने का श्रेय इसी संस्था को है, इसकी स्थापना प्रसिद्ध समाजसेवी श्री चन्दूलाल जी के नाम पर की गई थी जिसके लिए श्री साहबराम जी ने पचास हजार रुपये दिये थे, सेठ श्री छज्जूराम ने 67,000 छात्रावास के लिए दिए थे। इसके अतिरिक्त बा० चूड़ामणि ने भी सहयोग किया था। इसके मुख्याध्यापकों में श्री मुस्ताकराम जी तथा ला० देवीसिंह जी, श्री पं० जगन्नाथ जी कु० रघुनाथ जी सहाय बहुत कर्मठ लग्नशील एवं सज्जन थे, अध्यापकों में पं० रामचन्द जी, पं० गोपाल शास्त्री,

जिन्होंने आर्यं वीर संघ चलाया था। पं० मूलराज जी तथा पं० मुरारीलाल जी शास्त्री थे। जिन्होंने बच्चों को चरित्रवान् बनाने में बड़ा योगदान किया। आजकल इसके मुख्याध्यापक श्री सूर्य कुमार जी आर्य हैं। आजकल इसी के अन्तर्गत दयानन्द माडल स्कूल है।

दयानन्द कालेज

1946 में स्थानीय आर्य समाज नागोरी गेट में कार्यकर्त्ताओं का एक शिविर लगा। जिसमें स्व० प्रि० ज्ञानचन्द जी आये। उसी समय उत्साही आर्य वीरों के मन में कालेज की स्थापना का विचार उपजा जिनमें देवराज सन्धीर, सज्जन कुमार, ला० फतेहचन्द आदि प्रमुख थे, उसी वर्ष सरकार भी राजकीय कालेज चालु कर रही थी, स्व० बख्शी-रामकृष्ण एडवोकेट के सामने जब यह स्थिति आई तब उन्होंने कहा कि क्या आर्य समाज की भद पीटना चाहते हो ? गवर्नमेन्ट कालेज के सामने हमारा कालेज कैसे चल सकता है ? उस समय के शिक्षा मन्त्री नरोत्तम सिंह बख्शी जी के शिष्य थे, इन लोगों ने कहा कि क्यों नहीं आप शिक्षा मन्त्री से कहते थे कि अगले वर्ष गवर्नमेन्ट कालेज खोल लें परन्तु बख्शी जी मना कर गये, आखिर बा० प्रकाशचन्द जी के नेतृत्व में उत्साही युवा वर्ग उठ खड़ा हुआ, जनता के आगे झोली पसारी गई। प्रि० ज्ञानचन्द जी के रूप में एक साधना-शील सन्त धुनी रमाकर बैठ गया और कालेज 1 जून 1950 में चालु हो गया, उन्हीं की सतत साधना तथा तप का परिणाम है कि हरियाणा में आज यह सस्था मूर्धन्य स्थान पर है। 1960 में प्रिं० ज्ञानचन्द जी के कार्य निवृत्त होने पर प्रिं० डी० एन० शर्मा प्राचार्य बने वे एक सज्जन पुरुष थे। 1964 में देवराज जी गुप्त प्रिंसीपल बनकर आये, उनके काल में कालेज ने बहुत उन्नति की, एक नये छात्रावास का निर्माण हुआ। वे उच्चकोटि के प्रबन्धक थे। 1973 में श्री एन० डी० ग्रोवर बने, उन्होंने दान रुप में रुपये पैसे माँगकर जनसम्पर्क उत्पन्न किया, वे एक अच्छे इन्सान थे। 1982 में उनका स्थानान्तरण होने से श्री पी० एन० कौल प्रिंसिपल बन कर आये, वे संस्कृत के अच्छे विद्वान् थ, नेक तथा सदाचारी थे, 1985 में डॉ० सर्वदानन्द जी आर्य इसके प्राचायं बनकर आये हैं जो जहां कुल परम्परा में प्रखर आर्यं हैं, नेक व सदाचारी, युवक तथा उत्साही हैं, साथ ही बहुत अच्छे प्रशासक हैं, इस संस्था का सौभाग्य है कि ऐसे नेक इन्सान इसके प्राचार्य बनते रहे हैं।

सी० ए० वी० प्राईमरी स्कूल

यह स्कूल पहले समाज मन्दिर में लगता था। 1947 में मुस्लिम स्कूल की समाप्ति के प्रारम्भसाथ उस स्थान पर सी०ए०वी० प्राईमरी स्कूल चलाने के लिए श्री पं० देवराज सधीर ने प्रार्थना पत्र दे दिया, परिणाम स्वरूप जगह मिल गयी। इसमें सबसे महत्वपूर्ण योगदान बहिन दुर्गा देवी जी मुख्याध्यापिका का है। शिक्षा क्षेत्र में इनको 'नेशनल एवार्ड' मिला है। इस देवी ने शिक्षा यज्ञ के लिये अपना तन-मन-धन स्वाहा कर दिया। आने वाली पीढ़ियां इस देवी को उत्तम शिक्षक के रूप में कभी भूला न पायेगी। न जाने कितने अबोध शिशुओं के जीवन का निर्माण इस देवी ने किया है।

जगन्नाथ आर्य कन्या महाविद्यालय

इसका पहले नाम आर्य कन्या विद्यालय था। यह विद्यालय 1920 में 17 छात्राओं से हुआ था, प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री स्व० पं० जगन्नाथ जी जिन्होंने अपना जीवन शिक्षा क्षेत्र में अर्पित कर दिया था। जो एक देवता पुरुष थे, सी० ए० वी० हाई स्कूल के प्रधानाध्यापक पद से निवृत्त होने पर इस विद्यालय के आचार्य बने। बड़ा भारी काम उस व्यक्ति ने किया, आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बी बनाने का भरसक प्रयास किया। उनके देहान्त के बाद उनके नाम पर जगन्नाथ शब्द जोड़ दिया गया। उनसे पूर्व बहिन शान्ति देवी ने आचार्य पद पर कार्य करके इसको सुचारू रूप से चलाया। इसके लिए कैटल फार्म से भूमि दिलाने में श्री प्यारेलाल गुप्ता ने प्रशंसनीय योगदान किया था, आजकल श्रीमती कृष्णा आहुजा इसकी प्राचार्या हैं, स्थानीय देवियों में शिक्षा के प्रचार में इस संस्था का महत्वपूर्ण योगदान है। इसी के अन्तर्गत दयानन्द माडल स्कूल चलता है।

हिसार के दिवंगत नेतागण तथा कार्यकर्ता

ला० लाजपतराय के समय में हिसार में आर्य समाज ने अपनी जड़ जमायी थी। उस काल के नेताओं में पण्डित लखपतराय वकील बहुत सज्जन तथा कर्मठ कार्यकर्त्ता थे, ला० लाजपतराय ने लिखा कि मैं मूर्ति पूजा में विश्वास नहीं करता, यदि मेरा विश्वास होता तो मैं प्रत्येक युवक से कहता कि लखपतराय का चित्र अपने गले में धारण करो। पाठक उस महापुरुष के जीवन का अनुमान कर सकते हैं। किसी काम के लिए पैसे की जरुरत पड़ती है तो लखपतराय जी ने अपनी चैक बुक पर हस्ताक्षर करके लोगों के सामने रख दी कि भर लो, जितनी राशी चाहो भरो। उनके तप त्याग का क्या अन्दाजा लगाया जा सकता है? दूसरे महापुरुष चुड़ामणि थे, जो वकील थे

आर्य अनाथालय के लिए बड़ा सहयोग किया, पैसों की बड़ी सहायता आर्य समाज को दी, ला० चन्दुलाल जी थे जो वैद्य थे, जनता पर इतना प्रभाव था कि जब हिन्दू मुसलमान एक दूसरे के खून के प्यासे थे। तब एक मुसलमान कसाई के बिमार लड़के को देखने गये, बहुत समय तक वहां बैठे रहे, परन्तु वे मुसलमान उन्हें कुछ न कह सके। डा० रामजोलाल उसी प्रकार सरकारी सेवा में थे, कुछ पेशा भी ऐसा था। उन्होंने स्थान-2 पर ऋषि दयानन्द के सन्देश की अलख जगाई। रोगियों का निःशुल्क उपचार करते थे। बा० वजीर चन्द जी जो कई वर्षों आर्य समाज के प्रधान रहे नियमित सत्संग में आते थे, वह जमाना था जब प्रधान मन्त्री पद थोपा जाता था, अब की तो बात ही कुछ और है। इन्ही सज्जनों में भाई रामशरणदास जी बहुत स्वाध्यायशील थे, जो सौभाग्य से आज भी जीवित हैं। कार्यकर्त्ता की दृष्टि से बा० प्रकाशचन्द एडवोकेट का सा कोई न होगा। आस-पास के जितने गांव थे, उनमें रहने वाले किसानों के मुकद्में बिना फीस के लड़ते थे, उनसे आर्य समाज के लिये दान लेते थे, हिसार के किसानों में आर्य समाज का जो प्रचार है, वह उन्हीं की बदौलत है। वह भजन मण्डलियों का नियन्त्रण भी करते थे। मुकद्में के लिए आने वाले किसानों से प्रोग्राम तय करके भजन मण्डलियों को ग्रामों में भेजते थे, अब कहां मिलती हैं वो हस्तियां ? स्व० बख्शी रामकृष्ण एडवोकेट जो वर्षो समाज के तथा अनेक संस्थाओं के प्रधान रहे की सेवाएं प्रशंसनीय हैं। यद्यपि खान पान को दृष्टि से शिथिलता होने पर भी उनके कार्य का अवमूलन नहीं हो जाता, इन्हीं लोगों में बा० प्यारे लाल जो हिसार के बड़े ईमानदार तथा संस्थाओं का हिसाब रखने में योगदान किया करते थे। कन्या महाविद्यालय के प्रति उनकी सेवा चिर स्मरणीय रहेगी, बड़े अक्खड़ परन्तु स्पष्ट वक्ता थे। आर्य समाज की [हानि बर्दाश्त नहीं कर सकते थे, ला० फतेहचन्द जी समाज के स्तम्भ थे, समाज के प्रधान रहे. दयानन्द कालेज के निर्माण में उनका योगदान स्मरणीय है। यहां के वह प्रचार अधिष्ठाता भी रहे। तन-मन-धन से समाज के सहायक रहे। श्री लालमणि जी आर्य बड़े सात्विक, सौम्य तथा सादे थे। प्रत्येक संस्था की धन से बहुत सहायता करते थे कभी किसी पद को स्वीकार नहीं किया लेकिन आर्य समाज के स्तम्भ थे। उनमें लक्ष्मी और सादगी का अद्भुत मेल था।

इन्हीं महापुरुषों में पं० गोपाल शास्त्री थे, जिन्होंने युवकों में प्रचार किया, आर्य वीर संघ चलाया बड़े ही सरगर्म कार्यकर्त्ता थे। सौभाग्य से आज भी जीवित हैं। इसी प्रकार पं० मूलचन्द जी शास्त्री ने जागृति का बड़ा काम किया, पं० मुरारीलाल

शास्त्री वर्षों समाज के प्रधान रहे, सभी आन्दोलनों में अग्रणी रहे । हिन्दी रक्षा आन्दोलन में नगर कांग्रेस के प्रधान पद से त्याग पत्र देकर सम्मिलित हुए थे, सी० ए० वी० स्कूल में संस्कृताध्यापक थे, आर्य समाज मन्दिर की रजिस्ट्री का प्रश्न आया, एक धनपति जो समाज तथा स्कूल के प्रधान थे, उन्होंने कहा कि तुम समाज की रजिस्ट्री कराने आये या पढ़ाने ? शास्त्री जी ने तुरन्त त्याग पत्र दिया और कहा कि मैं रजिस्ट्री कराने आया हूँ। यह उस सच्चे ब्राह्मण का सच्चा इतिहास है। जिसके पास खाने को दूसरे समय का भोजन नहीं होता था, अन्तिम समय पं० देवराज जी ने पूछा कि उषा (उनकी अविवाहित छोटी पुत्री) का क्या बनेगा ? तब उन्होंने कहा तुम मर गये हो क्या ? प्रेम और विश्वास के ऐसे आज दृश्य कहां है ? स्व० प० जगन्नाथ एक देवता पुरुष थे, पैसा-2 करके स्कूल की दुकाने बनाई तथा आर्थिक दृष्टि से आत्म निर्भर किया। तत्पश्चात् कन्या विद्यालय की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ किया, वास्तव में वे सफेद वस्त्रों में एक सन्त थे। लाला बद्रीप्रसाद जी जिन्हें लोग प्यार से 'नाई' कहा करते थे, क्योंकि प्रति रविवार प्रत्येक सदस्य के घर जाकर सत्संग में पहुँचने का निमन्त्रण देते थे। फिर जो न आता था उसको सुध लेने को उसके घर जाते थे, इसलिए आर्य समाज प्यार से उन्हें 'नाई' कहा करते थे। उनके बाद इस काम को कुछ देर तक प्रो० रामविचार जी ने किया परन्तु अब तो उनका खुदा ही हाफिज है। स्व० कवि बनवारी लाल "आजाद" एक प्रतिभाशाली एवं ओजस्वी कवि थे, जलूसों में उनका जोश देखने योग्य होता था। "शहीदाने हैदराबाद" उनकी रचना थी, जो जब्त हुई थी। लोहारु काण्ड में उन पर लाठियां बरसी थी इन्हीं लोगों में स्वामी बेधड़क जी थे, खड़ताल बजाकर बड़ा प्रचार किया, 1921 में यहां सबसे पहले आजादी के लिये जेल जाने वाले थे, अंग्रेजी काल में जेलों में बडे कष्ट भोगे, पाठक अन्दाजा लगा सकते हैं कि उस समय लालूराम थानेदार ने इनको जीप से बांधकर घसीटा था। उसमें गजब का जोश था अनपढ़ होते हुए भी बड़ा ऐतिहासिक कार्य किया, सिद्धान्तों का इतना ज्ञान था कि बड़े-2 पण्डितों को चक्कर में डाल देते थे। माधवाचार्य जैसों के छक्के छुड़ा देते थे। उस कोटि में चौ० नन्थनलाल जो वर्षों समाज के प्रधान रहे बहुत स्वाध्यायशील थे, स्वाध्याय की बड़ी प्रेरणा किया करते थे, सम्पूर्ण गीता कण्ठस्थ थी, श्री नन्दलाल जो वर्षों तक मन्त्री रहे, बहुत सौम्य, सज्जन तथा सात्विक थे। उनके समय में आर्य समाज का कार्य विस्तृत था, बड़ी लगन थी। दोनों समय मन्त्री होने के नाते समाज में जाकर देखना उनका दैनिक काम था। सौभाग्य से आज भी जीवित हैं। उन्हीं में बा० आत्माराम जो एडवोकेट जिन्होंने बड़ी

सेवायें की हैं चटर्जी पुस्तकालय को स्थापित कर महत्वपूर्ण कार्य किया है उनकी सेवायें सदा स्मरणीय रहेंगी। सौभाग्य से आज भी जीवित हैं। श्री धर्मयश जी शारीरिक दृष्टि से आर्य समाज के बड़े सेवादार रहे हैं। इन्हीं सज्जनों में श्री सज्जन कुमार आर्य, श्री अमृत भान त्यागी तथा श्री दीनदयाल एवं मदन मोहन जी के द्वारा की गई सेवायें स्तुत्य हैं। सेठ महेश जी आर्य समाज के स्तम्भ थे, "हरयाणा सन्देश" पत्रिका को चलाते थे बड़े स्पष्ट वक्ता तथा निर्भीक थे, उनके परिवार द्वारा की गई हिसार की सेवाएं कभी नहीं भुलाई जा सकती।

स्व० चौ० छाजूराम जी जो अलखपुरा के निवासी थे। बड़ी निम्न अवस्था में थे परन्तु अपनी औद्योगिक प्रतिभा से देश के प्रसिद्ध धनपतियों में मूर्धन्य स्थान प्राप्त किया। उन्होंने दिल लगाकर कमाया और खुले दिल से दान लुटाया। स्थानीय आर्य समाज तथा शिक्षा संस्थाओं में उनका बड़ा भारी एवं प्रशंसनीय योगदान रहा है।

तायल परिवार में से चन्दुलाल जी तायल जयदेव तायल तथा महादेव तायल आर्य समाज के कार्यों में अग्रण रहे हैं। इन्होंने आर्य समाज की प्रशंसनीय सेवाएं की हैं। स्व० बाबू सुखदेव वकील ने मैनेजर तथा प्रबन्धक पद से शिक्षा संस्थाओं की जो सेवायें की वह स्मरणीय रहेगी, वे बड़े कुशल प्रबन्धक थे स्व० प्रि० ज्ञानचन्द जी कई शिक्षा संस्थाओं तथा आर्य स्मारकों के संस्थापक थे। शिक्षा क्षेत्र में उनके योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता, मधुर कथाओं द्वारा श्रोताओं पर जादू का सा असर कर देते थे। □

सत्यार्थ प्रकाश सत्य-सनातन धर्म का उपदेश देते हुए अन्धश्रद्धा और पाखण्ड को दूर करता है। तर्क शक्ति का विकास करता है। मनुष्य मात्र के कल्याण की भावना से यह ग्रन्थ लिखा गया है। किसी के प्रति उनके भीतर द्वेष नहीं है। ईसाई और मुसलमान भी 13वें तथा 14वें समुल्लासों को द्वेषरहित होकर पढ़ेंगे तो वे धर्म के तत्त्व को समझने में समर्थ होंगे। सत्यार्थ प्रकाश की रक्षा में समस्त हिन्दु आर्यसमाजियों का साथ देंगे इसका मुझे विश्वास है।

—सेठ जुगलकिशोर बिड़ला



D.A.V.s in service of Haryana

—Dr. S. Arya

Established at Lahore in 1885 and shifted to Jullundur due to the partition of Punjab in 1947 the D.A.V. College Trust and Managing Society, to propagate the light of Vedic Culture as rejuvinated by Maharshi Dayanand, not only served Punjab but also Haryana. When the headquarters of the body were shifted from Jullundur to New Delhi the D.A.V. movement assumed a nation-wide importance.

When we look to the role of the D.A.V. movement in Haryana alone one is simply over-whelmed by its massive work in the field of the general, vocational, technical and managerial education in the State. The number of D.A.V. institutions run and managed by the D.A.V. society is increasing rapidly to 228 by 1987. These include 35 degree colleges, 21 vocational and technical institutions 166 schools and other institutions of carft, adult education, Bal Bhawans and Public School. etc.and 6 colleges of Management studies. Out of these institutions 10 are in Haryana alone including 8 Degree Colleges, College of Education, 12 Hr. Secondary and High Schools, 15 Model Schools and Public Schools, 1 Sanskrit Mahavidyalaya and 3 colleges.

The D.A.V. Colleges in the rural areas are providing education to the students of the surrending villages and backward areas, so that the children of the soil can get the opportunities of higher learning at their doors.

Various Higher Secondary and High Schools at Hisar, Hansi, Yamuna Nagar, Ambala, Jagadhari, Pundri, Panipat, Sadhaura, etc. provide education to thousands of boys and girls of Haryana with the best of results in comparison to other institutions.

The D.A.V. Management has started to establish Public Schools at various places with a view to meet the rising need of the time by creating a sense of responsibility and inculcating fundamental moral and social values of lifes in the forthcoming computerised culture of the 21st century. Some such schools are set in Haryana also at Panchkula, Ambala, Hisar, Fatehabad, Panipat, Yamuna Nagar. □

□ सब मनुष्यों को सामाजिक, सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें ।

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज के पावन वार्षिकोत्सव तथा स्मारिका प्रकाशन के शुभावसर पर शुभकामनाएं प्रदान करते हैं ।

□

मैसर्ज गुप्ता टिम्बर स्टोर

लोनी रोड़, शाहदरा, दिल्ली ।

★

मैसर्ज कैपीटल टिम्बर

लोनी रोड़, शाहदरा, दिल्ली ।

★

मैसर्ज भगवानदास श्यामलाल

नई मण्डी, हिसार ।

☐ वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज के पावन वार्षिकोत्सव तथा स्मारिका प्रकाशन के शुभावसर पर शुभकामनाएं प्रदान करते हैं।

★

★

आरा यूनियन टिम्बर एसोसियेशन

नजदीक सोहन सिनेमा हिसार।

□ वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज के पावन वार्षिकोत्सव तथा स्मारिका प्रकाशन के शुभावसर पर शुभकामनाएं प्रदान करते हैं।

★

मैसर्ज बांसल देसी घी स्टोर

पड़ाव बाजार, हिसार।

★

मैसर्ज मुन्शीराम करताराम

नई मन्डी, हिसार।

□

मैसर्ज रामकिशन राजेन्द्रप्रसाद

नई मन्डी, हिसार।

हरयाणा प्रदेश में महर्षि दयानन्द सरस्वती

(ले० स्वामी ओ३मानन्द जी सरस्वती)

महर्षि दयानन्द जी महाराज के हरयाणा के रेवाड़ी क्षेत्र में पधारने के वृत्तान्त को भली-भांति जानने के लिए में 15 अगस्त 1939 ई० को प्रात:काल (रात्रि के 1 बजे की गाड़ी से कोसली आते हुए) रेवाड़ी पहुँचा। पौष शुक्ला प्रतिपदा सम्वत् 1935 में महर्षि दयानन्द जी रेवाड़ी पधारे थे।

आर्यसमाज मन्दिर में जाकर, नित्य कर्मों से निवृत्त होकर, महाशय कन्हैयालाल जी के साथ कांग्रेस कार्यालय में पहुंचा। वहां सामान रखकर महाशय भगवानदास जी आर्य और पं० सोमदत्त जी वैद्य से मिला। उनको दयानन्द सन्देश की प्रतियां दी तथा महाशय भगवानदास जी के घर भोजन किया।

1- मा० हरसहाय

भोजनोपरान्त उक्त सज्जन के साथ मा. हरसहाय जी से मिलने गया। उस समय महाशय जी की आयु लगभग 75 वर्ष की थी। उन्होंने अपने पितामह के साथ रामघाट (बुलन्दशहर) में संवत् 1932 विक्रमी में महर्षि दयानन्द जी के दर्शन किये थे। उन्होंने बतलाया कि महर्षि दयानन्द जी का शरीर सुन्दर, दिव्य विशाल और दृढ़ था। पेट भी छोटा था। वे बैठे हुए सबसे ऊंचे दीखते थे। वन खण्डेश्वर मन्दिर में कौपीन बांधे उपदेश देते थे। स्वामी जी ऐसे विद्वान् तथा भव्य थे कि उनके सम्मुख कोई बोल नहीं सकता था।

2- निक्काबाई

इसके पश्चात् निक्काबाई से मिला। जो कि घड़ीसाजी का काम करता था और 80 वर्ष का था। उसने बतलाया कि स्वामी जी रेवाड़ी में छोटे तालाब स्टेशन के निकट दोनों छतरियों के बीच में चौकी पर बैठकर व्याख्यान देते थे! जनता बहुत आती थी। कई पण्डित शास्त्रार्थ के लिए भी आये थे। जिनमें पं० रामसहाय जी तथा पं० भागीरथ जी भी सम्मिलित थे। स्वामी जी मृतक श्राद्ध, मूर्तिपूजा का खण्डन और पुनर्विवाह (नियोग) का मण्डन करते थे। स्वामी जी बड़े प्रेम से एकता का प्रचार करते थे। यदि वे जीवित रहते तो देश का बेड़ा पार हो जाता। देश का सुधार हो जाता।

3- देवीसहाय महाजन

आपकी आयु लगभग 80 वर्ष की थी। अपने छोटे तालाब पर ब्रह्म के मध्य में व्याख्यान सुने थे। स्वामी जी मनुस्मृति तथा भागवत के श्लोक सुनाकर एकादश पति पर्यन्त की आज्ञा देते थे।

अन्य पण्डित एक पति तथा अन्य 10 बाल-बच्चे स्त्री आदि गिनकर एकादश पति से ग्यारवां पति गिनते थे।*

उनकी मति के अनुसार यहां से स्वामी जी जयपुर चले गये और मतिवा बाग में ठहरे।

4- स्वामी मुक्तानन्द

आप उस समय गुड़गाँवा छावनी में रहते थे मुझे रेवाड़ी में मिल गये। आपने बतलाया कि यहां पण्डित लेखराम जी भी आये थे और स्वामी जी के रेवाड़ी पधारने का वृत्तान्त लिखकर ले गये थे।

आपने बतलाया कि स्वामी जी से राव युधिष्ठिर जी ने देहली दरबार में आने के लिए प्रार्थना की थी। स्वामी जी राजपूताना अजमेर की ओर से आते हुए रेवाड़ी आये थे। ग्यारह दिन तक उनके व्याख्यान हुए। वे नलेपुर वालों के बाग में (दिल्ली दरवाजा के पास, दिल्ली सड़क पर) ठहरे थे।

व्याख्यान छोटे तालाब के पास राव साहब की छतरियों पर माल गोदाम के निकट होते थे। जहां अब पास ही स्टेशन है।

5- स्वामी आत्मानन्द

इसके पश्चात् स्वामी आत्मानन्द जी से मिले। आपने बतलाया कि बड़े ब्रह्म तालाब पर व्याख्यान हुए।

6- श्री नानकचन्द जी भार्गव

उस समय (सन् 1936 ई० में) नानकचन्द जी की आयु 70 वर्ष के लगभग थी। आपसे 11, 12 वर्ष की आयु में (तीसरी वा चौथी श्रेणी में पढ़ते हुए) छोटे तालाब पर स्वामी जी के दर्शन किये थे। स्वामी जी को राव युधिष्ठिर जी ने बुलाया था। उन दिनों स्वामी जी वस्त्र धारण करते थे चौकी पर बैठकर व्याख्यान देते थे। व्याख्यानों में जनता बहुत आती थी। म० पारब्रह्म रेवाड़ी उपदेशक के दादा श्री ठाकर जी ने भी स्वामी जी के दर्शन किये थे। व्याख्यान में रामसहाय पाण्डे, पं० भागीरथ, पं० मथुराप्रसाद और उनके पुत्र विरोधी थे। शास्त्रार्थ नहीं हुआ। केवल विरोध था ऐसा प्रतीत होता है।

---

*इमा त्वमिन्द्र मीढ्वः सुपुत्रां सुभगां कृणु।
दशास्यां पुत्रानाधेहि पतिमेंकादशं कृधि।।

"विवाहित स्त्री में दश पुत्र उत्पन्न कर और ग्यारहवी स्त्री मान। तू भी विवाहित पुरुष वा नियुक्त पुरुषों से दश सन्तान उत्पन्न कर और ग्यारहवें पति को समझ।"

(सत्यार्थ प्रकाश चतुर्थ समुल्लास)

स्वामी जी ने नानकचन्द के भ्राता श्री गंगाप्रसाद को गायत्री मन्त्र सिखाया था । पण्डितों ने कहा कि इस मंत्र भूठा है । तब स्वामी जी ने उन सबको चेतावनी दी कि कोई भी व्यक्ति ग्राकर इस गायत्री मन्त्र को मिथ्या सिद्ध करे ।

7- श्री स्वामी राधा वल्लभ जी

उस समय ग्रापकी ग्रायु 75 वर्ष की थी । ग्रापने 12 व 13 वर्ष की ग्रायु में छतरियों के बीच छोटे तालाब पर स्वामी जी के व्याख्यान सुने थे । स्वामी जी ने व्याख्यान में कहा कि—

(क) 'मेरे व्याख्यान में छोटे विद्यार्थियों की समाधि लग जाती है । ये मेरी सब सहायता करेंगे । ये बूढ़े मेरा विरोध करते हैं । ये पीछे पछतावेगे ।'

(ख) 'वीर ग्रर्जुन ने ग्रमेरिका देश के नाग राजा की कन्या उपोली से विवाह किया था । नाग कोई सर्प नहीं था ।'

पादरी विण्टर साहव व्याख्यान में पतलून पहनकर ग्राये थे । ग्रत: वे भूमि पर नहीं बैठ सके । स्वामी जी ने उनके लिए कुर्सी मंगवाई । उनके निषिद्ध करने पर स्वामी जी ने कहा कि यदि पादरी साहब ! भूमि पर बैठकर व्याख्यान सुनना था तो धोती या पायजामा पहनकर ग्राना चाहिए था ।

व्याख्यान के पश्चात् स्वामी जी शङ्का समाधान के लिए सब को समय देते थे । पादरी साहब को भी छुट्टी दी । उन्होंने विशेष रूप से कहने पर भी शंका नहीं की ।

स्वामी राधा वल्लभ जी ने मेरे बिना पूछे ही बताया कि जितने फोटो स्वामी जी के देखने में ग्राते हैं । वे स्वामी जी के विशाल तेजस्वी ललाट, तगड़ा चौड़ा सीना ग्रौर सुन्दर शरीर का लोहा नहीं लेते । उनकी ग्राकृति भव्य, मुख देदीप्यमान, तेजस्वी चेहरा, सबको (विरोधियों को भी) मोह लेता था । ये फोटो तो उनके मुकाबले में खराब लगते हैं उनका कद 7 फुट से ग्रधिक था । पेट बढ़ा हुग्रा नहीं था । सिर पर दुशाले का साफा बांधते थे, वस्त्र पहनते थे ग्रौर चौकी पर बैठकर व्याख्यान देते थे । स्वामी राधा वल्लभ ने एक वैदिक सिद्धान्त नाम की पुस्तक लिखी, जिसकी प्रशंसा स्वामी श्रद्धानन्द ने भी की है ।

एक वेदान्ती ग्राकर कहने लगा "जीवब्रह्मणोरेकत्वं चेतनत्वात्" ग्रथात् जीव ग्रौर ब्रह्म चेतन होने से एक हैं । स्वामी जी ने उत्तर दिया "धूरीबूरैकत्वंज डत्वात्" ग्रर्थात् घूलि ग्रौर दूरा जड होने से एक हैं । ग्रत. दूध में बूरा के स्थान पर थोड़ी घूलि डालकर पी लिया करो । यह रूडमल वेदान्ती था ।

स्वामी जी 18 व 20 दिन तक रेवाड़ी में रहे । उनके दस-पन्द्रह ग्रादमी थे । राव युधिष्ठिर जी रसोई का सारा व्यय देना चाहते थे । युधिष्ठिर जी पर कर्ज था, स्वामी जी ने कहा ग्राप मकरूजा (ऋणी) हैं ग्रतः ग्रापसे व्यय लेना उचित नहीं । स्वामी जी ने लाला बिहारीलाल ढूंसर

को बुलाया जिन्होंने 36 जातियों को काज में भोजन खिलाया था। स्वामी जी के कहने पर उसने अपनी रसोई का सम्पूर्ण व्यय दे दिया।

इनके पुरोहित (पौराणिक) पं. घासीराम जी ने स्वामी जी से जो अत्यन्त प्रेम करते थे, स्वामी जी से प्रार्थना की कि 'जब तक ठहरें दूध हमारे यहाँ का स्वीकार करें। स्वामी जी के पूछने पर बताया कि हमारे एक गाय है, जिसकी एक बछिया है। गाय ८ सेर दूध देती है। घर पर एक स्त्री दो लड़की और एक मैं, सब चार प्राणी हैं। दो सेर दूध बछिया को देता हूँ और दो सेर हम चार प्राणी पी लेते हैं। स्वामी जी ने कहा फिर मैं कैसे अन्याय करके दूध ले सकता हूँ। बार-बार प्रार्थना करने पर केवल एक दिन एक वा डेढ़ पाव दही ली किन्तु दूध स्वीकार नहीं किया।

संस्कृत का महत्त्व दिखलाने के लिए गंगालहरी महिमा के श्लोकों का गान किया। स्वामी जी इतने मधुर स्वर से गाते थे कि सब लोग सुनकर गद्गद् हो जाते थे। समाधि-सी लग जाती थी। स्वामी जी राम, कृष्ण को श्रेष्ठ पुरुष मानते थे। उनको अवतार मानकर परमात्मा का स्थान देकर सब महत्त्व नष्ट कर दिया। कृष्ण ने गीता और राम ने समुद्र पर पुल बनाया। यह ईश्वर के लिए साधारण सी बात है किन्तु उनको मनुष्य मानें तब ही इनका महत्व है।

8- राव मार्नासह रईस

राव साहब ने तिल्लापुर के बाग में जो शहर से आध मील पूर्व में है, स्वामी जी के ठहरने की व्यवस्था की। अत्यन्त सम्मान पूर्वक स्वामी जी को लाये। चार मनुष्य स्वामी जी के साथ थे।

राव मार्नासह रईस रेवाड़ी ने बतलाया कि शहर और रेलवे स्टेशन के मार्ग में जो हमारे पूर्वजों की छतरियां और तालाब हैं। इनमें स्वामी जी के व्याख्यान होते रहे। जिसके पास अब गिरजाघर बन रहा है।

मूर्तिपूजा खण्डन, मृतकश्राद्ध खण्डन, गाय की रक्षा और वेद पढ़ने का अधिकार सबको है। महीधर भाष्य का खण्डन, 'ब्रह्म का अपनी कन्या से व्यभिचार' इस कथा का सत्य अर्थ बतलाया। पादरी और मुसलमानों के बहिश्त का खण्डन करके, वैदिक मुक्ति को सिद्ध किया और कहा कि पौराणिक लोग हुण्डी लिखा करते हैं, वैसे ही पादरी भी हुण्डी लिखा करते हैं।

गायत्री के व्याख्यान के विषय में बतलाया कि ब्राह्मण हम पर नाराज होंगे और दिल में कुढ़ते होंगे कि यह सबके सामने गायत्री पढ़ता है। परन्तु मैं उनकी भलाई के लिए सुनाता हूँ कि सबके सामने गायत्री मन्त्र पढ़ा और उस व्याख्यान के प्रारम्भ में मलका के राज्य को धन्यवाद दिया कि हम उसकी बदौलत धर्म का उपदेश करते हैं। अन्यथा यह सम्भव नहीं था कि हम इस प्रकार उपदेश कर सकते।

मृतक श्राद्ध खण्डन में उदाहरण दिया कि यदि वास्तव में मृतक को श्राद्ध पहुँचता है और वही वस्तु श्राद्ध में दिखाई जाती है तो लोग मांस भक्षण के अभ्यासी है, उनके लिए श्राद्ध में ब्राह्मणों को मांस खिलाना चाहिए। यदि वे नहीं खाते तो इससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि अपने काम से स्वर्ग, नरक मिलता है मृतक श्राद्ध से नहीं।

गोरक्षा पर व्यख्यान दिया था जिसमें विशेषतया उसके लाभों का वर्णन किया था। नियोग और पुनर्विवाह पर भी ध्यान दिलाया था कि इसके होने से अपराधों की अधिकता हो रही है।

फरवरी 1889 ई, में राव युधिष्ठिर का देहान्त हुआ।

अम्बाला में महर्षि दयानन्द

अमृतसर से जालन्धर, लुधियाना होते हुए महर्षि दयानन्द जुलाई के तृतीय सप्ताह में सन् 1865 ई. में अम्बाला में पधारे और कुछ दिन अम्बाला ठहरकर वहां से रुड़की (सहारनपुर) गये।

★

'महर्षि दयानन्द के कांशी पहुंचने पर'



भजन

कांशी के मै रुक्का पड़ग्या ये कोन स्वामी आग्या ।
अठारह पुराणो में काढणियां खामी आग्या ।। टेक

1. चार वेद छः शास्त्र स्मृति साधू के याद बतावें ।
ईश्वर और वेद मार्ग पर इसका ऐतकाद बताबें ।
वर्णी गरुड़ श्राद्ध बतावें बन्द करण तेहरामी आग्या ।।1

2. सीता-राम और राधा-कृष्ण शिवजी और गंगेमाई ।
तीर्थ यात्रा ब्रत बैतरणी ये सबकी करै बुराई ।
कर्मकाण्ड की करी सफाई कोई धर्म हरामी आग्या ।।2

3. पैर खड़ाऊं भगवां बाणा कर मण्डल और लंगोटी ।
पहलवान कैसी आकृति किसी रान भूजा है मोटी ।
गले जनेऊं ना सिर पै चोटी कोई दीन ईस्लामी आग्या ।।3

4. कुरान शरीफ खुदा मोहम्मद की मैंने करता सुना बुराई ।
काजी मुल्ला कई पछाड़े कर तोबा पिण्ड छूड़ाई ।
ये है कोई जासूस इसाई बिन पैन्ट पजामी आग्या ।।4

5. इसु मरियम बाईबल का ये खण्डन करता बाद्धू ।
ये है कोई सेवड़ा श्याणा या फिरै चलाता जादू ।
या है कोई जैन का साधू या तूड़ा लगामी आग्या ।।5

6. तीर्थकंर और जड़ पूजा का ये करता नहीं मुलाजा ।
युक्ति और प्रमाण अजब के जो सुनै वही घबराज्या ।
ये है कोई खुफिया महाराजा जो बिना सलामी आग्या ।।6

7. रजो तमो गुण हो राजा में चाहे ल्यो सन्यास हारकै ।
ये भरी जवानी के मै आग्या मन इन्द्री क्रोध मारकै ।
या विष्णु अवतार धारकै माहरी खोण गुलामी आग्या ।।7

8. विष्णु के संग हो सै लक्ष्मी ये पक्की सनन्द की ।
ये कोसों दूर रहै औरत से ना परवाह कष्ट आनन्द की ।
विश्वामित्र हरिशचन्द्र की यहां करण निलामी आग्या ।।8

9. ये है आर्य पूराण मजहब की बुनियाद हिला कै जागा ।
बल विद्या से दूध छट्टी का थारे याद दिलाकै जागा ।
वैदिक धर्म फैलाकै जागा ये दयानन्द नामी आग्या ।।9

मंगल वैद्य का गाना सुनके रोजाना जिक्र करां थे ।
कदे दयानन्द कांशी आज्या हम यु हे जिक्र करां थे ।
जिस डर से हम डरा करे थे वो हे डर श्यामी आग्या ।।

प्रकाशक :
रामनिवास आर्य
भजनोपदेशक
आर्य समाज, हिसार

कव्वाली

प्रकाशक :
रामनिवास आर्य
भजनोपदेशक
आर्य समाज, हिसार

अतीत हिन्द का इन गुब्बारों से पूछो ।
वो क्या दबदबा था सितारों से पूछो ।। टेक

□□

यहीं ज्ञान ईसा ने पाया था आकर ।
ये गंगा के पावन किनारों से पूछो ।। 1

□□

ना ताकत का था कोई सानी जहां में ।
ये राणा शिवा की कटारों से पूछो ।। 2

□□

कहां जल उठी थी हजारों चितायें ।
ये चित्तोड़ के उन अंगारों से पूछो ।। 3

□□

धर्म की महोब्बत में मिलता मजा क्या ।
ये सरहिन्द की उन दिवारों से पूछो ।। 4

□□

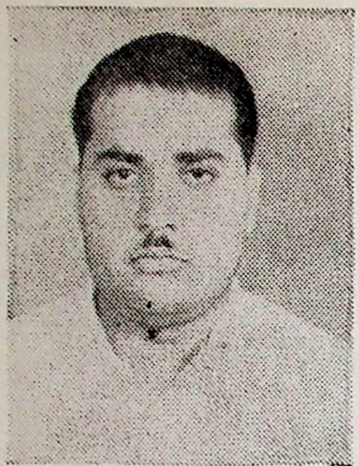
मिटाने जो आये वहीं मिट गये खुद ।
अभी तक है उनकी मजारों से पूछो ।। 5

□□

गिरावट की कवि इन्द्र फिर क्या वजह थी ।
ये जयचन्द से कोमी गद्दारों से पूछो ।। 6
ये बात जगन्नाथ से कोमी गद्दारों से पूछो ।

□□

।। ओ३म् ।।



मेरा मन्त्री-पद के रूप में आर्य समाज (कालेज सैक्शन), हिसार का एक दशक

लेखक : डा० रविदत्त शास्त्री
द्वय-एम.ए., पी-एच.डी

प्रभु की असीम अनुकम्पा से उन्नीसवीं शती के मध्य में विलक्षण प्रतिमा सम्पन्न, महान् अध्ययनशील, आदित्य ब्रह्मचारी जगद् गुरु महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कार्य-क्षेत्र में पदार्पण कर सम्पूर्ण देश का भ्रमण किया और मरणोन्मुख आर्य जाति की नाड़ी गति को पहिचान कर सफल चिकित्सक की तरह निदान निश्चित किया और उपयुक्त औषधि उपचार कर मानव मस्तिष्क को स्वस्थ किया तथा सत्य एवं कल्याण-कारी मार्ग पर चलने योग्य बनाया। तदन्तर उन्होंने सन् 1875 में आर्य समाज की स्थापना कर इस कार्य संचालन का भार आर्य समाज पर व्यस्त किया।

आर्य समाज की स्थापना का कार्य द्रुतगति से देश के कोने-कोने में होने लगा। विवेकी जनता-जनार्दन का उत्साह सफल एवं साकार होने लगा। परिणाम स्वरुप हिसार के ऐतिहासिक नगर में आर्य समाज की नींव सन् 1886 में सेठ चन्दुलाल तायल के द्वारा दान स्वरूप प्रदत्त एक भवन में शेरे पंजाब लाला लाजपतराय ने रखी, जिसके प्रथम प्रधान स्वर्गीय दानवीर सेठ चन्दुलाल जी तायल बने और मन्त्री पद स्वयं लाला लाजपतराय जी ने सम्भाला। स्थानीय जनता का हार्दिक तथा आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ। गत 103 वर्षों की लम्बी अवधि में हमारे पूर्वजों तथा आर्य समाज के निष्ठावान कार्यकर्त्ताओं ने आर्य समाज के मन्तव्यों के अनुसार वैदिक धर्म का प्रचार किया और समय-समय पर प्रत्येक क्षेत्र में जनता की निष्काम सेवा एवं सहायता की। हिसार आर्य समाज हरियाणा प्रान्त की उद्बुद्ध समाजों में अग्रणी रही है। इस समाज के द्वारा अपनी गत शताब्दी में प्रत्येक सत्याग्रह तथा हर आन्दोलन में भाग लिया है। आर्य समाज के तत्त्वावधान में जगन्नाथ आर्य कन्या उच्च विद्यालय, हिसार एवं आर्य

पब्लिक स्कूल, हिसार चल रहे हैं जिसमें सैंकड़ों बालक एवं बालिकाएं शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। इन शिक्षण संस्थाओं का उद्देश्य छात्र-छात्राओं की चारित्रिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक भावनाओं का विकास तथा व्यापक आर्यत्व का निर्माण करना है। जिससे वे योग्य धर्मनिष्ठ नागरिक एवं आर्य सन्देशों के प्रचारक बन सकें।

बच्चों में धार्मिक प्रवृत्ति पैदा करने एवं वैदिक संस्कार डालने के लिए "कुमार सभा" का गठन हुआ, जिसका संचालन श्री सुरेन्द्रनाथ जी गुप्त प्रचार मन्त्री आर्य समाज द्वारा किया गया। प्रति वर्ष वार्षिकोत्सव के समय बच्चों ने विशिष्ट सेवा कार्यों में योगदान किया। आर्य वीर दल के संगठन के रुप में श्री सुरेन्द्रनाथ जी गुप्त तथा श्री चेतन प्रकाश जी आर्य को क्रमशः मण्डलपति और नगरनायक के रुप में प्रशंसनीय योगदान रहा।

आर्य समाज, हिसार के समाज मन्दिर में एक सुव्यवस्थित पुस्तकालय है। देश में विभिन्न भागों से प्रकाशित होने वाली धार्मिक, साँस्कृतिक, सर्वजनोपयोगी, दैनिक, साप्ताहिक, वार्षिक एवं मासिक तथा पाक्षिक पत्र-पत्रिकाएं मंगवाई जाती है। इसमें दुर्लभ धार्मिक एवं वैदिक ग्रन्थों का संग्रह है। पुस्तकों की बिक्री के लिए भी व्यवस्था है।

वार्षिकोत्सव हमारे समाज का विशेष आकर्षण प्रचार का स्रोत तथा महान् आयोजन रहा है। यह प्रायः नवम्बर मास के प्रथम सप्ताह में होता रहा है। इस शुभावसर पर स्थानीय तथा बाहरी प्रख्यात् सन्यासी, अद्वितीय विद्वान् एवं भजनोपदेशक पधार कर अपनी अमूल्य सेवाएं अर्पित करते हैं। उत्सव में वेद रक्षा सम्मेलन, राष्ट्ररक्षा सम्मेलन, गौ रक्षा सम्मेलन, हिन्दी रक्षा सम्मेलन एवं स्त्री शिक्षा सम्मेलन आदि महत्त्वपूर्ण प्रोगाम होते हैं।

शुद्धि-संस्कार का कार्य आर्य समाज, हिसार द्वारा आर्य समाज मन्दिर में किया जाता है। मेरे दशक में आर्य समाज के तात्कालिक प्रधान श्री डा० आर० टी० गुलाटी जी के अध्यक्षता में कुछ शुद्धियाँ की गई जिसके फलस्वरूप अन्तर्जातीय विवाह संस्कार भी पं० रामदेव जी विद्यावाचस्पति के पौरोहित्य में करवाये गये।

श्रावणी उपाकर्म आर्य समाज का महत्वपूर्ण पर्व है। प्रति वर्ष एक सप्ताह भारत के वेदज्ञ विद्वानों को बुलाकर यह पर्व सम्पन्न किया गया जिसमें गुरूकुल काँगड़ी

विश्वविद्यालय, हरिद्वार के वेदज्ञ विद्वान डॉ० सत्यव्रत जी 'राजेश' एम०ए० पी-एच०डी०, डॉ० निगम शर्मा एम० ए० पी-एच०डी०, श्री पं० पृथ्वीराज जी शास्त्री, दिल्ली, स्वामी ध्यानानन्द जी सरस्वती आचार्य सत्यप्रिय जी शास्त्री एम० ए० आदि नाम उल्लेखनीय हैं।

आर्य समाज मन्दिर में ऋषिबोधोत्सव, ऋषिनिर्वाण उत्सव, श्री कृष्ण जन्माष्टमी, आर्य समाज स्थापना दिवस, महात्मा हंसराज जयन्ति, लाला लाजपतराय बलिदान दिवस आदि पर्व प्रति वर्ष सुव्यवस्थित विधि से मनाये गये। इन पर्वों पर स्थानीय तथा अन्य प्रतिष्ठित महानुभावों द्वारा अध्यक्षता भी करवाई गई जिससे आर्य समाज में सहयोग भी भावना अभिवृद्ध हुई। मैंने 9 मार्च 1973 को मन्त्री पद का कार्यभार सम्भाला। इससे पूर्व आर्य समाज के उत्सवों में निष्ठावान कार्यकर्ताओं तथा विद्वानों के अभिनन्दन करने की पवित्र परम्परा आर्य वीर दल के माध्यम से तात्कालिक मण्डल पति श्री सुरेन्द्रनाथ जी गुप्त ने डाल दी थी जिसके फलस्वरुप हमारी प्रबन्धकर्त्री सभा ने भी यह परम्परा बनाये रखी और प्रति वर्ष विभिन्न कार्यकर्ताओं तथा विद्वानों का अभिनन्दन किया जिसमें विशेष रुप से श्री पं० प्रभुदयाल जी प्रभाकर, महोपदेशक आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप-सभा, हरियाणा, आचार्य सत्यप्रिय जी शास्त्री एम. ए. प्राचार्य-दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार, आचार्य रामस्वरुप जी शास्त्री एम. ए. प्राचार्य गुरुकुल आर्य नगर, हिसार, श्री प्रो० रामविचार जी एम. ए. दयानन्द कालेज हिसार, श्री डॉ० आर० टी० गुलाटी भूतपूर्व प्रधान आर्य समाज, हिसार, श्री सतवीर चन्द जी कपूर उप-प्रधान आर्य समाज, हिसार, श्री सुरेन्द्रनाथ जी गुप्त पूर्व प्रचार मन्त्री आर्य समाज, हिसार आदि नाम उल्लेखनीय हैं।

आर्य समाज मन्दिर के मुख्य द्वार तथा दुकानों की अवस्था बड़ी विचारणीय हो चुकी थी और न ही शौचालयों तथा स्नानगृहों की व्यवस्था थी, परन्तु निर्माण की शीघ्र ही आवश्यकता थी जिसे तात्कालिक प्रबन्धकर्तृ सभा ने श्री डॉ० आर० टी० गुलाटी जी के जिम्मे सौंपा। आपने बड़ी श्रद्धा और निष्ठा से अतिथि गृह उपरिमन्जिल पर बनवा कर निर्माण कार्य अभूत पूर्व ढंग से करवाया। इस निर्माण कार्य में श्री पं० मदन मोहन तथा श्री हुकम चन्द गाबा कोषाध्यक्ष का सहयोग प्रशंसनीय रहा है। आर्य समाज के लिए अतिथि भवन डॉ० आर० टी० गुलाटी जी ने 6000/– रुपये, एक कमरा चौ० प्रताप सिंह कातियाल ने 5100/- रुपये, एक कमरा श्री प्रभुदयाल जी अग्रवाल ने 5100/- रुपये, एक कमरा श्रीमती सुगुणी देवी जी ने 3100/- रुपये, एक कमरा श्री

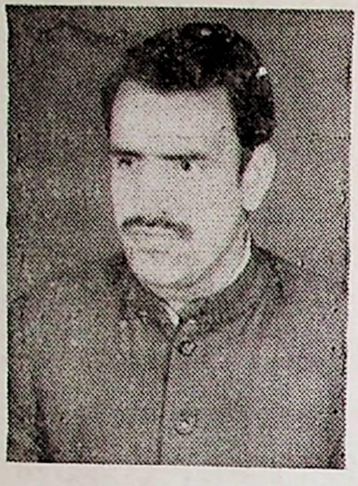
जयदेव जी मिण्डा ने 3100/- रुपये, एक कमरा श्री फूलचन्द जी गुरेरा ने 5100/- रुपये की लागत से दान में बनवाये ।

आर्य समाज, हिसार के सम्बन्ध में लाला लाजपत राय के शब्द हैं कि "सन् 1886 से अप्रेल 1892 तक मैं हिसार में वकालत करने के साथ-साथ काम करता रहा मेरे जाने के बाद और मेरे सामने वहाँ पर आर्य समाज की नींव पड़ी । इन पाँच सालों में मैंने हिसार के वकील पं० लखपतराय और हिसार के साहुकार सेठ चन्दुलाल तायल और ला० हरिलाल जी की सहायता से एक बहुत अच्छी रकम रुपये की जमा करके कालेज के चन्दे में भेजी और दूसरी तरह से भी समाज को दृढ़ किया । यहां तक की यह समाज सुबा की सुदृढ़ और अच्छी समाजों में गिनी जाती है ।" इन शब्दों को साकार रखने के लिए तात्कालिक प्रधान श्री डा० आर० टी० गुलाटी और उनके सहयोगी आर्य बहिन एवं भाईयों ने पूर्ण सहयोग प्रदान किया । डाक्टर साहब को धूप में निर्माण कार्य के अन्तर्गत लगातार निरीक्षण रुप में खड़ा रहने के कारण कानों से सुनना कम हो गया परन्तु उन्होंने इस पवित्र कार्य को बड़ी तत्परता से पूर्ण किया ।

अन्त में मैं अपने तात्कालिक सभी सहयोगी आर्य बन्धुओं का आभार प्रकट करता हुआ इस समाज के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि हम सभी मिलकर इस समाज की ख्याति को पूर्वजों के मार्ग दर्शन के अन्तर्गत स्थायी रखने और अभिवृद्ध करने में प्रयत्नशील रहेंगे । □

स्वामी दयानन्द मेरे गुरु हैं, मैंने संसार में केवल उन्हीं को गुरु माना है । वह मेरे धर्म के पिता हैं और आर्य समाज मेरी धर्म की माता है । इन दोनों की गोद में मैं पला हूँ । मुझे इस बात का गर्व है कि मेरे गुरु ने मुझे स्वतन्त्रता पूर्वक विचार करना, बोलना और कर्त्तव्य का पालन करना सिखाया तथा मेरी माता ने मुझे एक संस्था में बद्ध होकर नियमानुवर्तिता का पाठ दिया ।

—पंजाब केसरी लाला लाजपतराय



आर्य समाज हिसार के सौ वर्ष और हरियाणा में आर्य समाज का प्रभाव

लेखक : प्रतापसिंह शास्त्री, पत्रकार
मन्त्री, आर्य समाज नागोरी गेट, हिसार

ऋषि दयानन्द ने भारतवर्ष को जो क्रांतिकारी दृष्टिकोण दिया उसका सबसे अधिक प्रभाव हरियाणा राज्य पर हुआ। ऋषि दयानन्द हरियाणा में केवल मात्र दो स्थानों (रिवाडी, अम्बाला) पर आये, परन्तु हजारों वर्ष से हरियाणा में अपनी जो विशेषताएं रही हैं वे सब वैदिक मान्यताओं के निकट हैं। इसीलिए इस राज्य के निवासियों ने उन मान्यताओं को खुले हृदय से स्वीकार किया।

ऋषि दयानन्द ने बम्बई में सन् 1875 में आर्य समाज की और सन् 1883 में ऋषि दयानन्द का निर्वाण हुआ। ऋषि के जीवनकाल में ही सन् 1877 में लाहौर (पंजाब) में आर्य समाज की स्थापना हो चुकी थी। आर्य समाज के जो 28 नियम बम्बई में घोषित हुए थे उन्हें ऋषि ने स्वयं 10 नियमों में बाँधकर संशोधित कर दिया था। लाहौर, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल के नागरिकों की गतिविधियों का केन्द्र था। लाहौर आर्य समाज के प्रभाव से महात्मा हंसराज, स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय, पं. लखपतराय एडवोकेट, डा० रामजीलाल, पं. गुरूदत्त विद्यार्थी, चूड़ामणी एडवोकेट, आर्य मुसाफिर पं० लेखराम, भाई परमानन्द आदि सैकड़ों युवकों की वैदिक विचारधारा सुदृड़ हुई और इन सबने तत्पश्चात अपने कार्य क्षेत्रों में आर्य समाज के के प्रसार-प्रचार के माध्यम से बड़ा भारी यश प्राप्त किया। वस्तुतः ये आर्य समाज की पहली सीढ़ी के महापुरुष थे। ऋषि दयानन्द के निर्वाण के पश्चात् विरोधी सम्प्रदाय वाले, विविध मतमतान्तर वाले सोचते थे अब सेनापति नहीं रहा, सेनापति के अभाव में सैनिकों के पांव उखड़ जायेंगे। किन्तु आर्य समाज की इस असहाय अवस्था ने आर्य समाज को और अधिक शक्तिशाली व सबल बना दिया। आर्य समाज अपने कार्यक्रम को लेकर बड़ी

शीघ्रता से आगे बढ़ा। ऋषि के निर्वाण के तीन वर्ष बाद ही लाहौर आर्य समाज के प्रयत्नों से डी०ए०वी संस्थाओं की स्थापना के उद्देश्य से डी०ए०वी० आन्दोलन का सूत्र-पात हुआ। इस यज्ञ में दृढ़ संकल्प लेकर सबसे पहली आहुति महात्मा हंसराज ने डाली। तत्पश्चात् महात्माजी के शिष्यों ने पंजाब, हरियाणा, हिमाचल, उत्तर प्रदेश, राजस्थान आदि क्षेत्रों में आर्य समाज को फैलाने में सक्रिय भूमिका निभाई। महात्मा हंसराज व पं. गुरुदत्त विद्यार्थी के सहपाठी लाला लाजपतराय ने अपना कार्य क्षेत्र हिसार (हरियाणा) को चुना। सन् 1886 में हिसार में आर्य समाज की स्थापना लाला लाजपतराय ने की। हिसार के श्रेष्ठ व्यक्तियों में चन्दूलाल तायल, हरिलाल तायल, डा० धनीराम, चूड़ामणि एडवोकेट (जिन्होंने स्वयं ऋषि के दर्शन किये थे पं. लखपतराय एडवोकेट आदि के नाम उल्लेखनीय हैं इन्होंने लाला लाजपतराय को आर्य समाज की स्थापना में पूर्ण सहयोग दिया। लाला लाजपतराय को आर्य समाज यद्यपि वकालत की इच्छा से इस क्षेत्र में एक मुकदमें के सिलसिले में फरवरी मार्च 1886 में आये थे किन्तु संस्कृत विद्वान् पं. गँगासहाय जैसे व्यक्ति से तथा उक्त सज्जन पुरुषों के पूर्ण सहयोग के विश्वास पर अप्रेल 1886 में आर्य समाज के प्रचार कार्य में लग गये। लगभग 1 वर्ष तक लाला लाजपतराय के निवास स्थान पर ही आर्य समाज के सत्संग होते थे। लाला लाजपतराय ने सबकी सम्मति से सेठ चन्दुलाल तायल को आर्य समाज का प्रधान मनोनीत किया तथा स्वयं आर्य समाज के मन्त्री बने। प्रारम्भ में आर्य समाज में सम्मिलित होने वाले मित्र व सदस्यगण वेदान्त की विचारधारा से प्रभावित थे। ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों को पढ़कर तथा आर्य समाज के सत्संगों को सुनकर वैदिक धर्म के दीवाने बन गये। सेठ चन्दूलाल तायल, लाला हरिलाल तायल ने अपनी जमीन व आर्थिक सहयोग देकर नागोरी गेट आर्य समाज मन्दिर के निर्माण की योजना बनाई। सन् 1890 से 1892 तक सत्संग हाल का निर्माण हो गया। लाला लाजपतराय ने अपने एक महीने की सम्पूर्ण आय 1500 रुपये दान में दी। इसी प्रकार अन्य सदस्यों ने भी भरपूर सहायता दी। सबसे अधिक सहायता तायल ब्रादर्स ने की। हिसार आर्य समाज के प्रचार कार्य में तेजी आने का कार्यकाल सन् 1892 से ही प्रारम्भ हो गया था। बचपन के सहपाठी तथा अपने पिता राधाकिशन के शिष्य डॉ० रामजीलाल साँघी (रोहतक) का लाहौर से स्थानान्तरण हिसार में हुआ सुनकर लाजपतराय को प्रसन्नता हुई थी। सिविल अस्पताल में सन् 1891 में डॉ० रामजीलाल जैसे आर्य समाजी सज्जन व्यक्ति को पाकर आर्यों की खुशी का ठिकाना न रहा। डॉ० रामजीलाल लाला हरिलाल तायल के घनिष्ठ मित्र थे। जिस कोठी में आजकल श्री बलदेव जी तायल रहते हैं इसी कोठी में डॉ० रामजीलाल लम्बे अरसे तक

रहे । डॉ० साहब ने सन् 1892 में आते ही अपने आपको आर्य समाज लिए समर्पित कर दिया था। लाला लाजपतराय केवल 6 वर्ष यहाँ रहे। नगरपालिका के चुनाव में वे पालिका के सचिव भी बने। उन्होंने हिसार के नागरिकों पर अपने सद्व्यवहार व नेतृत्व की अमिट छाप छोड़ी। उन दिनों जिलाधीश के बाद, सिविल अस्पताल के इन्चार्ज डॉ० रामजोलाल भी सरकारी तौर पर प्रशासनिक मामलों में सरकारो पावर रखते थे। अतः आर्य समाज का धार्मिक प्रचार बिना किसी बाधा के निर्वाध गति से चलता रहा। लाला लाजपतराय ने अपनी आत्मकथा में लिखा है—सेठ चन्दूलाल तायल के निधन के उपरान्त हिसार आर्य समाज को अद्वितीय पुरुष पं० लखपतराय मिले। पं० लखपतराय का नाम आर्य समाज के वृतान्तों में लिया जाना चाहिए। इनके नाम का पट्टा प्रत्येक आर्य समाजी को अपने गले में बांधना चाहिए। यद्यपि मैं मूर्तिपूजक नहीं हूँ तथापि यह कहना चाहता हूँ कि यदि भविष्य में कभी आर्य समाज पूजा के लिए किसी की मूर्ति का चयन करें तो वह मूर्ति पं० लखपतराय की होनी चाहिए।

सन् 1886 से सन् 1916 तक जीवन पर्यन्त सेठ चन्दूलाल आर्य समाज के प्रधान रहे। उनके बाद उन्हीं के दूसरे भाई लाला हरिलाल प्रधान बने। और 30-10-1920 तक जीवन पर्यन्त आर्य समाज का कार्य किया। इसका सक्रिय सहयोग पं० लखपतराय ने किया पं० लखपतराय आर्य समाज हिसार के मन्त्री थे।

लाला लाजपतराय ने अपनी आत्मकथा में सेठ चन्दूलाल के दादा रामजीदास के बड़े भाई बालमुकन्द गुप्त हिसार आर्य समाज के तत्कालीन भजनोपदेशक पं० दुनीचन्द, अमीचन्द, हनुवन्ता, चूड़ामणि एडवोकेट दानवीर सेठ छाजूराम, हरिलाल आदि आर्य समाज हिसार के आधार स्तम्भ महान पुरुषों का जहां वर्णन किया हैं वहां उन्होंने एक ऐसे व्यक्ति का भी गुणगान किया है जो आर्य समाज की विचारधारा को ग्रामीण मसीहा बनकर हरियाणा के गांव-गांव पहुंचाने में कामयाब हुए। लाला लाजपतराय लिखते हैं—

"हिसार में यदि सबसे अधिक जिसने आर्य समाज का विस्तार किया और उसे लोकप्रिय बनाया तो वे थे डॉ० रामजीलाल। डॉ० रामजीलाल जाटों में अद्वितीय थे"। लाला लाजपतराय कहते हैं—"मैंने अपने जीवन में इंगलिश जानने वाला ऐसा भारतीय नहीं देखा जैसे डॉ० रामजीलाल थे जो कि अपनी अशिक्षित जाति के लोगों से बिना किसी भेदभाव के मिलते थे। उनका घर हिसार में "जाट धर्मशाला" के रूप में था। उनका प्रभाव हरियाणा में सर्वत्र था"।

डॉ० रामजीलाल यद्यपि सरकारी अफसर थे किन्तु आर्य समाज के नेता लाला लाजपतराय की अधिकाँश राजनैतिक योजनाएं डॉ० साहब के सहयोग व परामर्श से बनती थी जब भी सन् 1907 में या इसके बाद साईमन कमीशन के आगमान का बहिष्कार करके शहीद होने पर्यन्त शेरे पंजाब लाला लाजपतराय को गौरी सरकार ने देश से निर्वासित करने व जेल भेजने जैसी सजाएं दी तब डॉ० रामजीलाल को भी अंग्रेजों ने परेशान रखा। यही कारण था डॉ० रामजीलाल सन् 1905 में हिसार से राजनपुर (पाकिस्तान) में बदल दिए गए और इसके बाद डा० रामजीलाल ने सरकारी सेवा से त्याग पत्र देकर अपनी स्वतन्त्र प्रैक्टीस सेठ धनीराम के साथ मिलकर आरम्भ की और आर्य समाज के प्रचार की जिम्मेवारी संभाली। भिवानी अनाथालय जो सन् 1889 में प्रारम्भ किया गया था जिसका संचालन आर्य समाज हिसार ने किया। डा० रामजीलाल ने अपनी दैनिक डायरियों में उसका वर्णन निम्न प्रकार किया है—

स्थानान्तरण तथा नौकरी से त्याग पत्र

7–9-1905 को आर्य समाज हिसार का कर्मठ कार्यकर्ता, नेता हिसार से रेल द्वारा राजनपुर के लिए रवाना हुआ। डा० साहब के साथ पत्नी सहित बच्चे भी थे इन्हें विदा करने के लिए आस–पास के गाँवों तथा हिसार शहर से एक अपार जनसमूह हाथों में फूल मालाएं लेकर उमड़ पड़ा। राजनपुर में इस आर्य समाजी डा० ने जो कार्य किया उसका पता वरिष्ठ अंग्रेज अधिकारी मि० डार्लिंग की टिप्पणी से मिलता है—जो इस स्मारिका में इस लेख के साथ ही "आर्य समाज नागोरी गेट हिसार के सौ-सौ वर्ष के परिप्रेक्ष्य में डा० की डायरियाँ" के अन्तर्गत दिया जाता है।

गाँव-गाँव में आर्य समाज को फैलाया। इस बात का प्रमाण उनकी दैनिक डायरियाँ हैं। भिवानी अनाथालय, सी० ए० वी० हाई स्कूल, जाट एंग्लो वैदिक हाईस्कूल रोहतक तथा हिसार व संगरिया की स्थापना व संचालन में वे स्वयं अग्रणी रहे। आर्य समाज हिसार के भी वर्षों तक पदाधिकारी रहे। उन्होंने जिन युवकों को आर्य समाज में दीक्षित किया अथवा जिन मित्रों को प्रभावित किया उनमें सेठ छाजूराम अलखपुरा, बंसगोपाल एडवोकेट करनाल (मान परिवार के बुजुर्ग), मामनसिंह डिप्टो) खांडा के चौ० स्वरूपसिंह के परदादा, चौ० दीवानसिंह नारनौंद (कृषि अधिकारी) चौ० बीरेन्द्रसिंह मन्त्री जी के पिताजी थे, सर छोटूराम रहबरे आजम छाजूराम जज सांघी (श्री डा० स्वरुप सिंह वाईस चांसलर दिल्ली विश्वविद्यालय के पिता), चौ० सूरजमल खाण्डा (मन्त्री

तत्कालीन पंजाब), अमीरसिंह एडवोकेट, (बाँन) चौ० भरतसिंह जैलदार बाँस, सदानन्द एडवोकेट अम्बाला, जैलदार राजमल खाण्डा, जुगलाल अर्जीनवीस (साँघी), चौ० रणवीर सिंह पूर्व मंत्री स्वतन्त्रता सेनानी (सांघी), स्वामी केशवानन्द संगरिया देवीसिंह वोहर, चौ० बलदेवसिंह रोहतक आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। उक्त सभी सज्जन आर्य समाज हिसार के सम्पर्क में रहे हैं, लाहौर आर्य समाज से तथा डी० ए० वी० कालेज के संचालक महात्मा हंसराज से तो हरियाणा के सैकड़ों छात्र उस जमाने में शिक्षा प्राप्त कर अपने-अपने कार्य क्षेत्रों में स्थापित आर्य समाजों के प्रचार से अपनी विचारधारा को सुदृढ़ बनाने में सफल हुए। आर्य समाज हिसार के माध्यम से सन् 1947 से पूर्व बड़ा भारी वेद प्रचार हुआ। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा लाहौर के अन्तर्गत इस समाज में हरियाणा वेद प्रचार मण्डल होता था जिसके अन्तर्गत 26 भजन मण्डलियां काम करती थी। जिनमें पं० दुनीचन्द भजनोपदेशक की मण्डली तो डा० रामजीलाल के साथ सन् 1892 से लेकर लम्बे समय तक प्रचार कार्य करती रही। पं० मनसाराम वैदिक तोप, पं० भूराराम, श्री नानूराम, ठाकुर रिछपालसिंह, श्री हनुमन्तराम आदि की भजन मण्डलियाँ थी। पं० दीनानाथ, पं० अमीचन्द, पं० पतराम (गायक), चौ० इन्द्रसिंह, चौ० श्रीचन्द, चौ० जयलाल भजनोपदेशक थे। बाबू प्रकाशचन्द एडवोकेट इन सबके कन्ट्रोलर थे। इनके अतिरिक्त चौ० ईश्वरसिंह गहलोट, स्वामी नित्यानन्द, दादा बस्तीराम, स्वामी भीष्म जी घरौण्डा तथा उनके सैकड़ों शिष्य पृथ्वीसिंह बेधड़क, कंवर सुखलाल आर्य, मुसाफिर श्री रामपत वानप्रस्थी, स्वामी बेधड़क महाशय बेगराज, चौ० नत्थासिंह, हरलाल जी, शेरसिंह जी, चिरंजीलाल, ओमप्रकाश जी, दयाचन्द, ब्रह्मानन्द, स्वामी रुद्रवेश, रामनिवास, मामचन्द पथिक, विद्याभूषण मंधार, बनारसीलाल बूनका, महेन्द्रपाल रादौर, प्यारेलाल भापड़ौद, जगतराम जी, पं० भगतराम, चन्द्रभान, पं० चुन्नीलाल, बस्तीराम जी अलहार, सेवकानन्द हरियाणानन्द (बलवीर झाबर), नारायणानन्द रोहतक, ठाकुर दुर्गासिंह जी तूफान, शोभाराम प्रेमी, सुरजा, ताराचन्द नारनौल, अमरसिंह अम्बाला, हरिशचन्द्र रादौर, सुलतानसिंह, खुशीराम, कंवलसिंह, सुरेन्द्रपाल, सीताराम बिहार, प्रभुदयाल जी पौली, सहदेव बेधड़क, ईश्वरसिंह तूफान, राममुनि वानप्रस्थी, आदि कितने ही नाम भजनोपदेशकों की शृंखला में लिये जा सकते हैं जो आज कार्यरत हैं तथा कुछ भौतिक देह से नष्ट अवश्य हो गये किन्तु उनका नाम आर्य समाज के इतिहास में अमर हैं।

हिसार आर्य समाज में सन् 1947 से कुछ वर्ष पूर्व ही सैकड़ों नवयुवक वैदिक विचारों से ओत-प्रोत हुए जो आज वृद्ध हैं जिन्होंने हिसार आर्य समाज में सक्रिय योगदान

किया । स्व० पं० दीनदयाल जी, प्रो० रामविचार जी, पं० मदनमोहन जी, पं० देवराज संधीर,प्रिंसिपल नारायणदास जी ग्रोवर, प्रिंसिपल डी० एन० शर्मा, स्वर्गीय प्रि० ज्ञानचन्द जयदेव आर्य स्व० बाबू प्यारेलाल, सेठ फतेहचन्द, श्री फूलचन्द जी आर्य, श्री नन्दलाल जी आर्य, डा० आर० टी० गुलाटी, श्री झण्डाराम जी, स्व० नानकचन्द अर्जीनवीस, श्री रामधारी जी आर्य, स्व० बख्शी रामकिशन जी, स्व० पं० जगन्नाथ जी, स्व० पं० मुरारीलाल जी शास्त्री, श्री कोकचन्द जी शास्त्री, बलदेव जी तायल, श्री हरिसिंह सैनी, श्यामलाल जी बिन्दल, श्री सुरेन्द्रनाथ गुप्ता, सीताराम आर्य, बहिन राजरानी, स्वामी भीष्म जी। चौ० नत्थनलाल, बाबू आतमाराम एडवोकेट श्री विष्णु 'प्रभाकर" जी, स्व० सुखदेव एडवोकेट, स्वामी दीक्षानन्द जी, प्रेमजी भिक्षु, पं० चन्द्रसेन जी (सोनीपत), स्व० लालमन जी आर्य, स्व० सुरजभान गुप्ता, स्व० अर्जुनदेव जी आर्य, आचार्य सत्यप्रिय जी, आचार्य विश्वबन्धु जी, श्री सुखदेव जी शास्त्री (पुरोहित) मौरीशस, पं० शिवानन्द शास्त्री, पं० भागीरथलाल शास्त्री, पं० विनयसिंह शास्त्री, स्व० ठाकुर अमरसिंह, दर्शनाचार्य जगदीशचन्द्र जी आदि कितने नाम ही लिये जा सकते हैं जो आर्य समाज से प्रभावित होकर अपने मिशन के लिए कार्यरत हैं। श्री मदनमोहन जी व स्व० दीनदयाल जी प्रधान व मन्त्री भी रहे। श्री देवराज संधीर तथा प्रो० रामविचार भी आर्य समाज के प्रधान तथा मन्त्री रहे। श्री नन्दलाल लगभग 17 वर्ष तक मन्त्री रहे। डा० गुलाटी प्रधान और डा० रविदत शास्त्री 10 वर्ष तक मन्त्री रहे। श्री रामकिशन जी बख्शी (स्वर्गीय) भी कई वर्ष प्रधान रहे। श्री बलदेव जी तायल प्रधान तथा श्री राजकुमार मल्होत्रा तीन वर्ष मन्त्री रहे। श्री धनसिंह जी 1 वर्ष प्रधान रहे तथा प्रतापसिंह शास्त्री मन्त्री, सेठ रामधारी आर्य दो वर्ष पहले प्रधान रहे और अब भी प्रधान हैं।

सन् 1949 आर्य समाज नागोरी गेट हिसार में कार्यकर्ताओं का एक कैम्प लगा जिसमें स्व० प्रि० ज्ञानचन्द जी पधारे। और यहां दयानन्द कालेज की स्थापना का मन बनाया। बाबू प्रकाशचन्द जी एडवोकेट, चौ० नत्थनलाल एडवोकेट, वजीरचन्द एडवोकेट, आत्माराम एडवोकेट, रामकृष्ण एडवोकेट, श्री सुखदेव एडवोकेट, श्री देवराज संधीर एडवोकेट, सज्जन कुमार, लाला फतेहचन्द आदि कितने ही आर्यजनों के प्रि० ज्ञानचन्दजी से विचार विमर्श किया और 1 अप्रैल सन् 1950 से दयानन्द कालेज हिसार की स्थापना कर प्रारम्भ कर दिया गया। दयानन्द ब्रह्मा महाविद्यालय साधु आश्रम होशियारपुर से सन् 1956 में हिसार में स्थानान्तरित हुआ और दयानन्द कालेज से सेवा मुक्त होकर प्रि० ज्ञानचन्द ने इसे सम्भाला ही नहीं बल्कि इसके भवनों का निर्माण भी कराया। आज

भी ये दोनों शिक्षण संस्थाएं इस हरियाणा इलाके में ही नहीं बल्कि अपने स्नातकों को प्रशिक्षित करके देश अन्य प्रांतों में कौने-कौने भेजे रहे हैं आजकल दयानन्द कालेज के प्राचार्य एक सुयोग्य नवयुवक डा. सर्वदानन्द आर्य हैं और दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय के प्राचार्य और आचार्य सत्यप्रिय जी शास्त्री, साहित्याचार्य एम. ए. हैं।

आज इस इलाके में आर्य समाज हिसार को कार्य करते-करते एक शताब्दी बीत गई, 103 वर्ष पहले इस इलाके में जब लाला लाजपतराय आर्य समाज की स्थापना का संकल्प लेकर पधारे तब हिसार नगर की जनसंख्या केवल मात्र 15 हजार के आस-पास थी। किन्तु क्षेत्रफल की दृष्टि से यह जिला वहुत बड़ा था। यहां चारों ओर तरफ़ अज्ञान, अन्याय, अभाव, अव्यवस्था का अपना साम्राज्य था। अंग्रेज सरकार अपने सरकारी कर्मचारी को यदि सजा देना चाहती तो हिसार, भिवानी, सिरसा के क्षेत्रों में बदली कर देती थी। इस इलाके में बीस-बोस तीस-तीस कोस तक कोई चिट्ठी पत्री पढ़ने वाला व्यक्ति भी नहीं मिलता था। इस इलाके में पीने के पानी की बड़ी भारी किल्लत थी। यातायात के साधनों का अभाव था केवल कहीं-कहीं नाम मात्र का ही प्रबन्ध था। आर्य समाज हिसार के नेतागण व प्रचारक रेलगाड़ी द्वारा जहां तक वह जाती थी जाते थे शेष यात्रा पैदल तय करते थे। ऊंट गाड़ी, घोड़ा गाड़ी का प्रयोग करके भी आर्य समाज ने वेद प्रचार मण्डल जिसके इन्चार्ज बाबू प्रकाशचन्द एडवोकेट थे के माध्यम से किया। हिसार आर्य समाज के प्रभाव से इन 100 वर्षों के कार्यकाल में सैंकड़ों परिवार इस नगर हिसार के आर्य समाज की विचारधारा से दीक्षित होकर उच्च पदों तक पहुंचे जिनमें पं० लखपतराय के परिवार का वर्णन तो स्वयं आर्य समाज के अनेक लेखकों ने किया है। पं० लखपतराय जी ने आर्य समाज के लिये जहां स्वयं को समर्पित किया वहां अपने पुत्र नानकचन्द बार-एट-ला एडवोकेट लाहौर को तथा पौत्र पी० सी० पण्डित एडवोकेट (जज) को भी वैदिक विचारधारा से दीक्षित कर आर्य समाज हिसार को तीन पीढ़ी का सक्रिय योगदान दिया। यही नहीं अपने रिश्तेदार, मित्र, प्यार जिनमें पं० लछमनदास, पं० मेलाराम तथा पं० देवराज संधीर एडवोकेट जैसे व्यक्तित्व भी आर्य समाज को प्रदान किये। जो समय-समय पर आर्य समाज हिसार का तथा समाज की शिक्षण संस्थाओं का सम्यक्तया संचालन करके यश प्राप्त करते रहे।

आर्य समाज हिसार के संस्थापक ने हिसार के नागरिकों को 100 वर्ष पहले नगर पालिका हिसार का सदस्य निर्वाचित होकर, राष्ट्रीय (नेशनल) कांग्रेस पार्टी की महासभा करके लोगों में वैदिक विचारधारा के साथ-साथ राजनैतिक जागृति भी पैदा

की। आज से 100 वर्ष पहले नगरपालिका के माध्यम से तत्कालीन 15 हजार की जनसंख्या वाले नगर हिसार में अनेक नगर सुधार तथा शिक्षा की योजनाएं प्रदान की। यही कारण था सन् 1918 में कांग्रेस सम्मेलन (प्रयाग) में हिसार से भी 8-10 आर्य सामजी सम्मिलित हुये। आर्य समाजी नेता चूड़ामणि एडवोकेट के पुत्र सेठ जयवन्तराय (उद्योगपति) ने पंजाबी, हिन्दी, अंग्रेजी में अंग्रेज सरकार के विरुद्ध अखबारों में लेख भी लिखे और गिरफ्तार होकर देश भक्ति का परिचय दिया।

सन् 1938-39 के हैदराबाद सत्याग्रह में हिसार आर्य समाज ने 500 व्यक्तियों का जत्था भेजा। जिसका नेतृत्व आर्य समाज हिसार के नेता पं० मुरारीलाल शास्त्री, पं० देवराज संधीर आदि ने किया। जिसमें सक्रिय हिस्सा लेने वाले 15-20 स्वतन्त्रता सेनानी आज भी जीवित हैं और जीवन के अन्तिम पड़ाव पर आर्य समाज व राष्ट्र को एक दिशा निर्देश देने के संकल्पों की ऐतिहासिक सामग्री तथा अनुभव, तप, त्याग, संघर्ष को लिए हुए हैं। आर्य समाज हिसार के 100 वर्ष के कार्यकाल में हिसार आर्य समाज के नेताओं में डा० आर० टी० गुलाटी ने गांव मिर्जापुर तहसील हांसी में वर्षों पहले आर्य समाज की स्थापना की थी। उकलाना मण्डी में आर्य समाज स्थापित करने का श्रेय डा० आर० टी० गुलाटी को है। पाबड़ा, नारनौंद, सिसाय, कापड़ों खाण्डा जैसे बड़े गांवों सन् 1947 से पूर्व आर्य समाजी नेता भाई परमानन्द लाहौर आर्य समाज हिसार के कार्यकर्ताओं को साथ लेकर आर्य समाज की स्थापना करने में सफल रहे। हाँसी, सिरसा, भिवानी के नगरों तथा सैकड़ों गांवों में आर्य समाज की जड़ मजबूत हुई। आर्य समाज हिसार ने 100 वर्ष के अपने कार्यकाल में विद्वानों, भजनोपदेशकों के माध्यम से सनातन सम्प्रदाय वालों से पौराणिक पण्डितों से अनेक शास्त्रार्थ करने पड़े। बड़े सख्त मुकाबले होते थे। शास्त्रार्थ कई-कई दिन तक चलते थे। दयानन्द कालेज तथा दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय की स्थापना के बाद अधिक कार्य इन सस्थाओं में कार्यरत तपस्वी महापुरुष प्रि० ज्ञानचन्द जी, वैदिक विद्वान् आचार्य सत्यप्रिय जी तथा प्रि० डी० एन० शर्मा, प्रो० रामविचार, श्री नन्दलाल क्लर्क, प्रि० देवराज गुप्ता आदि के द्वारा हुआ। 17 वर्ष तक आर्य समाज का नेतृत्व दयानन्द कालेज के शिक्षकों के हाथ में रहा। आर्य समाज हिसार के कर्मठ कार्यकर्ता लाला सीताराम आर्य स्वतन्त्रता के बाद अपने आप में एक संस्था के रूप में विख्यात हैं लम्बे समय से वेद प्रचार के द्वारा सैकड़ों व्यक्तियों को उन्होंने आर्य समाजी बनाया। मैं यद्यपि गुरुकुल का स्नातक हू किन्तु इस आर्य समाज का सदस्य बनाने वाले तथा मुझे कुछ करने की प्रेरणा देने वाले श्री सीताराम जी आर्य

हैं। आर्य समाज के प्रधान श्री रामधारी आर्य ने दयानन्द कालेज के पूर्व प्राचार्य ग्रोवर साहब को जो सहयोग दिया उसे ग्रोवर साहब बड़े सुन्दर शब्दों में व्यक्त किया करते हैं। रामधारी आर्य ने अपने परिश्रम व व्यापार से जो करोड़ों की सम्पत्ति अर्जित की है उसमें से हिसार की अनेक संस्थाओं में वे आर्थिक सहयोग करते हैं आर्य नगर गुरूकुल हिसार, गुरूकुल धीरणवास में उन्होंने सहायता दी है। दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय तथा दयानन्द कालेज में भी उन्होंने आर्थिक सहयोग दिया है। गुरूकुलों की स्थापना का इतिहास पढ़ने से ज्ञात होता है आर्य समाज हिसार के कर्मठ कार्यकर्ताओं के सहयोग से तथा प्रभाव से ही ये स्थापित हुए। आज हिसार के इलाके में कई गुरूकुल और असेक कन्या पाठशालाएं तथा अन्य गुरूकुल हैं और हरियाणा के अन्य जिलों में भी इसी प्रकार सैंकड़ों संस्थाएं आज हैं जिनमें कन्या गुरूकुल खानपुर, कन्या गुरूकुल खरल, कन्या गुरूकुल गनियार, गुरूकुल कुम्भा खेड़ा, गदपुरी, भैंसवाल, झज्जर, कुरुक्षेत्र, मटिण्डू जैसी संस्थाओं को कौन भूला सकता है इन सब का इतिहास एक अलग लेख का विषय है ये आर्य समाज हिसार के 100 वर्षों की उपलब्धि में स्पर्श करते हैं तथा गुरूकुल शिक्षा प्रणाली के सूत्रधार स्वामी श्रद्धानन्द के गौरव में वृद्धि करते हैं।

हिसार आर्य समाज में आजादी के बाद बहुत कुछ खोया और बहुत कुछ पाया है। आर्य समाज के तत्कालीन पदाधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों के मतभेदों, स्वार्थों, पदों की लड़ाई ने आर्य समाज को करोड़ों की सम्पत्ति दूसरों को हड़पने के अवसर प्रदान करके गंवा दी। कहां-कहां कैसे-कैसे किस-किस में इसमें क्या-क्या भूमिका निभाई यदि इसका जिक्र करूं तो मेरा लेख और यह स्मारिका विवाद का विषय हो जाएगी केवल संकेत मात्र मैंने इसलिए किया हैं कि हम सब आत्म निरीक्षण करें।

आर्य समाज हिसार ने राष्ट्र को 100 वर्षों में अनेक धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक नेता भी प्रदान किये। आज भी बलदेव जी तायल पूर्व मन्त्री, श्री हरिसिंह सैनी राज्यमन्त्री, श्री हीरानन्द आर्य विधायक, चौ० बीरेन्द्रसिंह बिजली एवं सिंचाई मन्त्री आदि अनेक राजनैतिक व्यक्तित्व आर्य समाज की देन हैं।

आर्य समाज ने जहां अन्य क्षेत्रों में सफलता-असफलता की लम्बी मजिलें तय की है वहां दानी महानुभावों के आर्थिक सहयोग के बलबूते पर अपने विशाल भव्य भवनों का पुनः निर्माण भी किया है और किया जा रहा है। हिसार आर्य समाज के कर्णधार श्री मेवराज ठेकेदार ने लगभग ढाई लाख रुपये लगाकर भव्य गेट का निर्माण किया है,

आर्य समाज के प्रधान सेठ रामधारी आर्य ने भी दो-ढाई लाख रुपये दान में देकर दुकानों का निर्माण किया है जो निर्माण कार्य चल रहा है। वरिष्ठ उप-प्रधान श्री हरिसिंह जो सैनी राज्यमन्त्री ने अपने राजनैतिक प्रभाव से आर्य समाज की भूमि जिस पर असामाजिक तत्व अवैध कब्जा करना चाहते थे उनकी योजनाएं व प्रयासों को असफल करके पुण्य का कार्य किया है।

आर्य समाज के कार्यकर्ता केवल मन्दिर की गतिविधियों तक सीमित न होकर सामाजिक कुरीतियों के विरूद्ध संघर्ष करते रहे हैं। आर्य युवा दल, युवती दल, सार्वदेशिक आर्य वीरदल हरियाणा हिसार जिसके वर्षो तक श्री सुरेन्द्र गुप्ता व सीताराम आर्य संचालक रहे जो संस्थाएं आज भी कार्यरत हैं। वैदिक पारिवारिक सत्संग सभा की स्थापना में भी स्व० श्री अर्जुनदेव जी आर्य ने की थी जो हिसार आर्य समाज के ही सरगर्म कर्मठ कार्यकर्ता होते थे। श्री अतरसिंह आर्य समय-समय पर अनशन करके युवकों को प्रेरणा देने में आज भी आर्यों को कर्त्तव्य की याद कभी-कभी दिला ही देते है आर्य समाज हिसार ने सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी समारोह का सफल आयोजन गत वर्षों में करके अपनी शक्ति परिचय एवं प्रदर्शन किर्या था जो काफी प्रशंसनोय था यह कार्यकाल श्री सीताराम व रामधारी जी का ही रहा। इन 100 वर्षों में हरियाणा में शिक्षा का प्रसार कैसे व कब हुआ ? यह अलग लेग के रूप में इसी स्मारिका में दिया गया है जो आर्य सम'ज हिसार के सौ वर्षों की उपलब्धि को स्पर्श व स्पष्ट करता है।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मन्दिर मार्ग नई दिल्ली तथा आर्य प्रादेशिक उप सभा हरियाणा (हिसार) जिनके अन्तर्गत आर्य समाज हिसार कार्यरत है के नेताओं की एक लम्बी श्रृंखला है उनका अपना साप्ताहिक आर्य जगत समाचार पत्र है जो आर्य समाज की गतिविधियों को उजागर करता है। उक्त दोनों सभाओं का जो योगदान है वह एक इतिहास बन चुका है। इन सभाओं द्वारा संचालित डी० ए० वी० संस्थाएं आज एक शानदार सामानान्तर सरकारी शिक्षा विभाग से भी अधिक प्रभावशाली देश सेवा कर रही हैं। प्रो० वेद व्यास जी, बाबू दरबारी लाल जी, श्री रामनाथ सहगल जी आदि आर्यनेताओं की ऐसी सुन्दर टीम आर्य समाज के पास है जिनके मुकाबले में अन्य लोग बोने दिखाई देते हैं। जिन प्रान्तों में हिन्दुओं को लोभ-लालच देकर ईसाई, मुसलमान बनाया जाता है जहां अकाल केवल शिक्षा के क्षेत्र में ही आर्य समाज ने अपना प्रभाव डाला हो ऐसा बात नहीं, आर्य समाज ने इसके अतिरिक्त सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक तथा

सांस्कृतिक क्षेत्र में भी अपने प्रभाव की अमिट छाप छोड़ी। आर्य समाज हिसार के संस्थापक लाला लाजपतराय ने अपने राजनैतिक क्षेत्र में अपने बलिष्ठ हाथों से हमारी राष्ट्रवेदी की नींव की आरम्भिक शिलाएं रोपकर इस देश के आधुनिक राजनैतिक उत्थान का मार्ग प्रशस्त करने वाले गिने चुने दिग्गजों में "लाला बाल पाल" की इतिहास प्रसिद्ध त्रिपुटी के अमर रत्न लाला लाजपतराय का स्थान निःसन्देह सबसे अग्रिम पंक्ति में है। वह उन असामान्य देश सेवकों में से थे जिन्होंने कांग्रेस के उन बचपन के दिनों में जबकि सुरेन्द्रनाथ, मालवीय, फिरोजशाह और गोखले जैसे हमारे आरम्भिक कर्णधार पग-पग पर ब्रिटिश सत्ता के प्रति अपनी अटल राजभक्ति की दुहाई देते नहीं थकते थे, राष्ट्र की निगूढतम आकाँक्षाओं की बेधक आवाज बुलन्द कर हमारी राजनीति के ठंडे चोले में पहले पहले एक वास्तविक सरगर्मी पैदा करने का साहस दिखाया था। वह थे नरम नेताओं के बजाय उग्र पक्ष के सिरताज लोकमान्य तिलक के सम्प्रदाय के एक पके हुए "गरम" राजनेता। उनकी दहाड़ में वह बल था कि किसी जमाने में इस देश के लोकनायकों में तिलक के बाद यदि ब्रिटिश सत्ता किसी से सबसे अधिक भय खाती थी तो केवल उन्हीं से। तभी तो बंगभंग के उन तूफानी दिनों, जबकि हमारी राष्ट्रीयता पहले-पहल सैनिक बाना पहनकर सामने आई थी। इस देश की भूमि पर उनकी विद्यमानता में भयंकर खतरे की बू पाकर अंग्रेजी सरकार ने सुदूर बर्मा के माँडले किले में पहुँचाकर नजरबन्द कर रखने में ही अपना कल्याण समझा था। जीवन के अनेक मूल्यवान वर्ष विदेशों में निर्वासन की दशा में व्यतीत कर तथा बार-बार जेल की यातनाएं भोगकर अन्त में सन् 1928 में साईमन कमीशन का लाहौर में विरोध करते समय एक दुष्ट गोरे सार्जन्ट की लाठी के घातक प्रहार से यह महान आर्य नेता जीवन का तारतम्य एकाएक तोड़कर 17 नवम्बर 1928 के दिन राष्ट्र यज्ञ के भावी अनुष्ठान में अपने महान नेतृत्व और सहयोग से आर्य समाज को सदा के लिए वंचित कर असमय ही परलोक के लिए प्रयाण कर गया। यदि यह आर्य नेता जीवित रहता तो पंजाब हरियाणा की राजनीति का परिदृश्य अवश्य कुछ और होता।

दानवीर सेठ छाजूराम अलखपुरा हिसार, भगाण निवासी चौ० लहरीसिंह (तत्कालीन पंजाब के मन्त्री) के पिता चौ० रामनारायण, लाठौत के पं० हरफूलसिंह, सालवान के ठाकुर भगवतसिंह, भवाना सिघाया के जैमलसिंह आदि को आर्य समाजी होने के कारण समाज से बहिष्कृत होना पड़ा था। सेठ छाजूराम को कलकत्ते के होटल पर पौराणिक ब्राह्मणों ने भोजन करने से रोक दिया था। सन् 1906 में हिसार जिले में

खाण्डा ग्रामवासी ब्र० कूड़ेराम ने सुसाना गाँव में पंचायत की जिसमें हरियाणा भर के हजारों लोग शामिल हुए। आर्य समाज की ओर से पं० गणपति शर्मा शास्त्रार्थ महारथी ने पौराणिकों को शास्त्रार्थ में खुली पंचायत में पराजित किया और हजारों लोगों का वैदिक रीति से यज्ञोपवित संस्कार करवाया। उसके बाद तो गाँव-गांव में आर्य समाज की धूम मच गई। रात को लोग दिन भर काम करने के बाद आर्य समाज और ऋषि दयानन्द की यशोगाथा गाते थे। चौपालों में आल्हा का स्थान वैदिक धर्म के प्रचार ने ले लिया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से पं० ब्रह्मानन्द (स्वामी ब्रह्मानन्द) इस प्रचार के पुरोधा थे। पं० बस्तीराम, चौ० तेजसिंह, स्वामी नित्यानन्द, कुंवर जौहरीसिंह, ईश्वरसिंह गहलोट, चौ० इन्द्रसिंह पेटवाड़, श्रीचन्द आर्य मतलोडा हिसार पं० पतराम आदि ने हरियाणा में आर्य समाज के प्रचार की धूम मचा दी। हिसार आर्य समाज के कारण ही भाई परमानन्द ने उस जमाने में (इस सदी के प्रारम्भ नारनौंद गांव तहसील हांसी) में आर्य समाज की स्थापना की। हिसार आर्य समाज के प्रधान सेठ चन्दूलाल व डा० रामजीलाल घोड़ा गाड़ी में बैठकर भजन मण्डली के साथ हिसार जिले के सैंकड़ों गांव में प्रचारार्थ जाया करते थे। पंजाब के रहबर-ए-आजम सर चौ० छोटूराम स्वयं आर्य समाजी थे। लोहारू नवाब के विरुद्ध चहड़ ग्राम के आर्य समाजियों ने ही प्रतिरोध किया था। जो न स्कूल खुलने देता था न यज्ञ करने देता था। नवाब ने उस गांव को तोप से उड़वा दिया पर आर्य लोग उसके अन्याय के सामने झुके नहीं। लोहारू आर्य समाज के उत्सव पर स्वामी स्वतन्त्रतानन्द, हिसार के डा० रामजीलाल रोहतक से महात्मा भक्त फूलसिंह, आर्य समाज के उपदेशक स्वामी नित्यानन्द, चौ० गाहड़सिंह आदि पर नवाब की पुलिस के अमानवीय आक्रमण की कहानी आर्य समाज लोहारू का रोमांचकारी इतिहास आज भी बता रहा है। आर्य समाज के प्रभाव के कारण प्रायः सभी जैलदार आर्य समाजी हुए हैं हिसार जिले के खाण्डा के जैलदार राजमल, बांस के जैलदार भरत सिंह (चौ० युद्धवीरसिंह भू० पू० एम० पी० के पिता) नारनौंद के कृषि अधिकारी चौ० दिवानसिंह (बीरेन्द्रसिंह बिजली सिंचाई मन्त्री हरियाणा के पिता), स्व० चौ० माडूसिंह शिक्षा मन्त्री, दादा घासीराम आहुलाना फरमाणा के चौ० जुगलाण, सिलाने के जैलदार अमरसिंह, मौड़ी–दादरी के जैलदार शिवलाल, अम्बाला के सदानन्द एडवोकेट, खाण्डा के स्व० चौ० सूरजमल (मन्त्री पंजाब), सरसौद के चौ० धनसिंह तथा उनके सुपुत्र चौ० स्हेलाराम चेयरमैन चौ० माईराम, चौ० कन्हैया, चौ० उदमी, खाण्डा के नेता चौ० स्वरूप सिंह के परदादा श्री मामनसिंह संगरिया (राजस्थान) विद्यालय के प्रथम मुख्यध्यापक, करनाल के श्री बंसगोपाल एडवोकेट आदि हजारों प्रमुख व्यक्ति आर्य समाज से प्रभावित

होकर अपने-अपने समय में प्रसिद्धि को प्राप्त हुए और आर्य समाज के कार्यक्रम में जीवन पर्यन्त भागीदार रहे। सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध इन सबने आर्य समाज को सहयोग दिया। सामाजिक क्रांति में आर्य समाज के कर्णधारों को पारिवारिक कष्ट भी उठाने पड़े। जब पहले-पहल आर्य समाजियों ने अपने कुओं पर हरिजनों को पानी भरने की अनुमति दी तो जाति के बहिष्कृत किया गया। इस प्रकार आज से 80-85 साल पहले आहुलाना के चौ० जुगलाल और पूर्व केन्द्रीय रक्षा राज्यमन्त्री प्रो० शेरसिंह के पिता बाघपुर के चौ० शीशराम आदि इस बहिष्कार का निशाना बने। सामाजिक क्रांति में शुद्धि आन्दोलन का जहाँ तक सम्बन्ध है आर्य समाज उसमें भी पीछे नहीं रहा। (मटिण्डू) के चौ० हरद्वारीसिंह बेटी रायपुर (सोनीपत) के मूले जाट को शुद्ध करके विवाहित की गई। दोदुआ (सोनीपत) के मूले जाटों को शुद्ध करके स्व० चौ० माड़ूसिंह (शिक्षा मन्त्री) ने भापड़ौदे में उनके रिश्ते कराये। बोहले के चौ० इन्दराजसिंह ने अपनी बेटी मूले जाटों में ब्याह कर उन्हें आर्य बनाया। चौ० केहरसिंह सींख निवासी ने पाथरी गांव की माता देवी के ऊपर बकरे आदि कटवाने बन्द करवाये। आर्य समाज हिसार के स्वामी वेधड़क (स्व०) ने और प० मनसाराम वैदिक तोप ने हिसार, सिरसा, भिवानी, राजस्थान, गुगामेंढ़ी के क्षेत्र में मृतक भोज के विरोध में वातावरण तैयार किया और उसमें सफलता प्राप्त की। दहेज प्रथा, बाल विवाह, रिश्वत, मद्य, मांस के विरोध मैं आर्य समाज हमेशा ही आन्दोलन करके जनता को सचेत करता रहा है। हिसार आर्य समाज के महापुरुष डा० रामजोलाल की दैनिक डायरियों में तिथि वार आर्य समाज के प्रचार का वर्णन किया गया हैं जिससे हिसार आर्य समाज के प्रभाव की एक झलक मिलती है। जो इस स्मारिका मे स्थानाभाव के कारण नहीं दिया गया। □

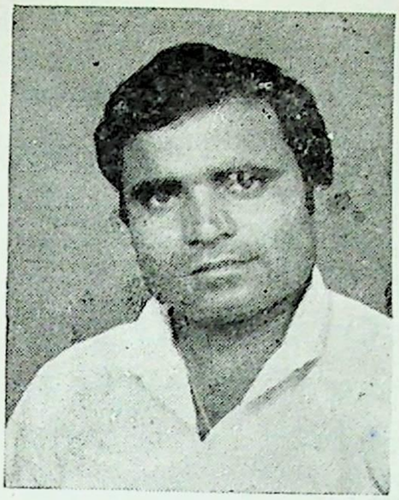
आपस की फूट से कौरव, पाण्डव और यादवों का सत्यानाश हो गया। परन्तु अब तक भी वही रोग पीछे लगा है। न जाने यह भयंकर राक्षस कभी छूटेगा या आर्य्यों को सब सुखों से छुड़ा कर दुःख सागर में डुबा मारेगा ?

(सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास 11)

☐ वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद पढ़ना-पढ़ाना और
सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

☐ संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना ।

॥ ओ३म् ॥



॥ ओ३म् ॥

विश्व शान्ति के मूलाधार आर्य समाज के 10 नियम

लेखक : प्रा० विश्वमित्र शास्त्री
अधिष्ठाता दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय
हिसार।

वर्तमान युग के महान समाज-सुधारक, आदित्य बाल ब्रह्मचारी, ऋषिवर देव दयानन्द सरस्वती ने 7 अप्रैल सन् 1875 को भारत की महानगरी बम्बई में वैदिक धर्म के प्रचारार्थ तथा लोकोपकारार्थ आर्यसमाज की स्थापना की।

आर्यसमाज के उन्होंने 10 नियम बनाये, जो सार्वभौम तथा सर्वमान्य एवँ विश्वशान्ति के मूलाधार हैं।

इन तीन शब्दों का अर्थ समझना आवश्यक है। आर्य शब्द का अर्थ वेद में "आर्यः ईश्वर पुत्रः" कहा गया है, अर्थात् आर्य ईश्वर पुत्र को ही कहते हैं। आर्य श्रेष्ठ, धर्मनिष्ठ, न्यायप्रिय, सदाचारी, शान्तचित्त और उदार चरित्र वाला मनुष्य है।

वसिष्ठ स्मृतिकार ने आर्य शब्द की परिभाषा करते हुए आर्य के गुणों का इस प्रकार वर्णन किया है।

"कर्त्तव्यमाचरण कार्यं, अकर्त्तयमनाचरण।
तिष्ठति प्रकृताचारे, स तु आर्य इति स्मृतः॥"

अर्थात् जो सदैव कर्त्तव्य कर्मों का अनुष्ठान करता है, अकर्त्तव्य का परित्याग करता है। शुभ कर्मों का ग्रहण करने वाला, तथा अशुभ कर्मों का परित्याग करने वाला आर्य पुरुष होता है। जो स्वभाव से चरित्रवान है उसे आर्य कहते हैं। आर्य शब्द का अर्थ पूज्य, श्रेष्ठ, मान्य, उदार चरित्र, शान्त चित्त, न्यायप्रिय, धर्मनिष्ठ, कर्मवीर धीर, तथा परोपकारी होता है। ऋषि दयानन्द जी ने ऐसे श्रेष्ठ महापुरुषों को एकसूत्र

में पिरोहने के उद्देश्य से आर्यसमाज अर्थात् श्रेष्ठ पुरुषों का सँगठन वन या था। समाज शब्द का अर्थ होता है ?

समाज शब्द का अर्थ समूह है जो सम्+आ+अज। अर्थात् मिलकर चारों ओर से प्रगतिशील हो बुराईयों का त्याग करने का प्रयास करें। आर्यों का अर्थात् श्रेष्ठ पुरुषों का समूह संगठन है वह ही आर्यसमाज के नाम से विश्व में सुविख्यात है। आर्य समाज के क्या उद्देश्य हैं जो ऋषि ने आर्यसमाज के 10 नियमों के माध्यम से संसार के सामने प्रस्तुत किये हैं। इसके प्रथम तथा द्वितीय नियम में ईश्वर के गुणों का वर्णन किया गया है। क्योंकि वह ईश्वर सृष्टि का निमित्त मूलकारण है। जिसने सृष्टि की रचना की है। हम सदैव उस निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, अजन्मा, अनादि, अनुपम ईश्वर को उपासना करें। ईश्वर को सर्वव्यापक मानें, एक देशी न मानें, तभी हमारा आत्मिक विकास हो सकता है।

तृतीय नियम में ईश्वरीय ज्ञान वेद को ही पढ़ने पढ़ाने का ऋषि ने हमें उपदेश दिया है, क्योंकि वेद में सत्य विद्या है, और सत्य से ही हमारा कल्याण होगा। सत्य ही ईश्वर है। और ईश्वर ही सत्य है। ऋषि ने सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने का उपदेश चौथे एवँ पांचवें नियम में दिया है। छठे नियम में संसार का उपकार करना आर्यसमाज का उद्देश्य बताया है। सारे प्राणिमात्र एवं सँसार के उपकार हेतु ही ऋषि ने आर्यसमाज की स्थापना की और उसके सार्वभौम नियम बनाये। सातवें नियम में सबसे प्रीतिपूर्वक आचरण करने की शिक्षा दी। प्रेम से ही सुख-शान्ति की प्राप्ति होती है। सबसे प्रमुख दुःख का कारण शास्त्रों में अविद्या को बताया है। जब अविद्या होगी तब मनुष्य दुःखी होंगे। विद्या के प्रकाश से ही मनुष्यों को सुखों की प्राप्ति होती है। इसीलिए ऋषि ने आठवें नियम में अविद्या का नाश एवं विद्या की वृद्धि करने का उपदेश दिया। नवमें नियम में सबकी उन्नति करने का उपदेश है। दशवें नियम में सामाजिक, सर्वहितकारी नियम में परतन्त्र तथा वैयक्तिक हितकारी नियम पालन में परतन्त्र बताकर समाज, राष्ट्र एवं सर्वहित को ऋषि ने बहुत अधिक महत्व दिया है। ऋषि दयानन्द द्वारा संस्थापित आर्यसमाज के नियम विश्व में ईश्वर, वेद, सत्य, धर्म, संसारोपकार, प्रीति, न्याय, विद्या, सर्व-उन्नति तथा समाज उन्नति का यथार्थं मार्ग दर्शाने वाले तथा विश्व में शान्ति बनाए रखने के 10 स्वर्णिम नियम हैं। वे नियम ये निम्नलिखित हैं।

1 सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

2 परमेश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निरविकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टि करता है। उसी को उपासना करनी योग्य है।

3 वेद सब सत्य विधाओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

4 सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

5 सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार कर करने चाहिए।

6 संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। अर्थात् शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नति करना।

7 सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिए।

8 अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

9 प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिए। किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

10 सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए, और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें। □

● वेद ईश्वरीय ज्ञान है, जो सृष्टि के आदि में ऋषियों के माध्यम से प्राप्त हुआ था।



युग-प्रवर्त्तक स्वामी दयानन्द

□

स्व० श्रीमती इन्दिरा गांधी
भूतपूर्व प्रधानमन्त्री, भारत सरकार

अनंत और परिमित काल का जब सगम होता है, कहा जाता है कि तब महापुरुषों का जन्म होता है।

हमारा सौभाग्य है कि भारत ने बहुत से ऐसे महापुरुषों को जन्म दिया, जिन्होंने समय पर अपनी अमिट छाप छोड़ी और जिनका संदेश अमर है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती तेजस्वी और आध्यात्मिक तो थे ही, साथ ही वे एक युग-प्रवर्तक और समाज सुधारक भी थे।

श्री अरविन्द ने उनके बारे में कहा कि उनकी आत्मा में ईश्वर था, उनके नेत्रों में दूर-दृष्टि और उनके हाथों में शक्ति थी। वे प्रकाश के अग्रदूत और मानव शिल्पी थे।

स्वामी दयानन्द राजनीतिक तथा मानसिक गुलामी के विरुद्ध थे। उनका संदेश था स्वतन्त्रता-न केवल राजनीतिक स्वतन्त्रता बल्कि अंधविश्वास, रूढ़िवाद तथा वर्गभेद से स्वतन्त्रता। उन्होंने कहा : 'संसार अंधविश्वास और अज्ञान की बेड़ियों में जकड़ा हुआ है। मैं उन्हीं बेड़ियों को तोड़ने और लोगों को दासता से मुक्ति दिलाने के लिए आया हूँ। लोगों को स्वाधीनता से वंचित रखना मेरे उद्देश्य के सर्वथा विपरीत है।'

मनुष्य की समानता में उनका गहरा विश्वास था। उन्होंने कहा : 'सभी मनुष्य जन्म से और प्रभु की दृष्टि में समान हैं। इस समानता में रंग और देश से कोई अंतर नहीं पड़ता।'

स्वामी जी का ध्यान हमेशा उन लोगों की ओर लगा रहता था, जो दुःख-दरिद्र्य और अन्धकार से घिरे थे। उन्होंने अपने लिए मुक्ति नहीं चाही। वे कहते थे 'यदि मैं अकेला ही मोक्ष प्राप्त कर लूं तो क्या लाभ है ? मेरी हार्दिक इच्छा है कि सारी मनुष्य जाति मुक्ति प्राप्त करे।'

भारत के लोगों से उनका आग्रह था कि जाति-पांति के अभिशाप से छुटकारा पायें श्रौर अस्पृश्यता छोड़ें।

महात्मा गाँधी के विचार में स्वामी जी द्वारा छूआछूत का विरोध और निन्दा उनकी महान् विरासत है।

उन्होंने स्त्रियों की समानता तथा शिक्षा व सामाजिक उत्तरदायित्वों के अधिकार के लिए भी संघर्ष किया।

फ्रांसीसी विद्वान रोम्या रोलां ने उन्हें 'कर्मचिंतक' कहा है। उनका जीवन शंकराचार्य के इस सूत्र का एक दृष्टान्त है कि कर्म के बिना ज्ञान निरर्थक है।

कभी-कभी यह गलत समझा जाता है कि स्वामो दयानन्द ने केवल हिन्दू धर्म के बारे में सोचा। उन्होंने हिन्दू धम को अन्धविश्वास के चुंगल से अवश्य निकालना चाहा, लेकिन किसी दूसरे धर्म के प्रति अनुदारता नहीं दिखाई।

उनका एक उत्तम विचार है : यदि आप भगवान् में विश्वास करते हैं तो सभी आस्तिक व्यक्ति परमात्मा के परिवार के अंग हैं। यदि आप उस परम तत्व में विश्वास करते हैं तो प्रत्येक मानव में उसो परम तत्व को ज्योति आलोकित हो रही है।

स्वामी दयानन्द के निधन पर सर सैयद अहमद खां ने कहा : 'यह मुनासिब ही था कि सभी धर्मों के लोग उनकी इज्जत करते थे।'

स्वामी जी के हृदय में एक आग थो, लेकिन वह दाहक नहीं, पावक थी। महापुरुष सदा उन सब सँस्थाओं से महान होते हैं जिनका वे निर्माण करते हैं, या जो उनकी स्मृति में उनके पंथ और संदेश के प्रचार के लिए स्थापित होतो हैं।

महापुरुषों के ऊंचे विचारों और उद्देश्यों की व्यापकता को अधिकांश लोग हमेशा पूरी तरह समझ नहों पाते और व्यक्ति और विचार दोनों को सीमित बना देते

हैं। इसको ध्यान में रखते हुए यदि हम विश्वास और नम्रता से स्वामी दयानन्द के स्वप्नों और कर्मों की दिशा में चलने को कोशिश करेंगे तो हम ठीक मार्ग पर होंगे।

आर्य समाज सौ साल से स्वामी जी के उपदेशों को आगे बढ़ने के प्रयत्न में लगा है। इसके दो पहलू हैं: पहला आध्यात्मिक और दूसरा सामाजिक। शताब्दी समारोह के अवसर पर मैं आर्य समाज को बधाई देती हूँ तथा विशेषकर उसके शिक्षा और समाज सेवा के कार्यक्रमों की सफलता की कामना करती हूँ।

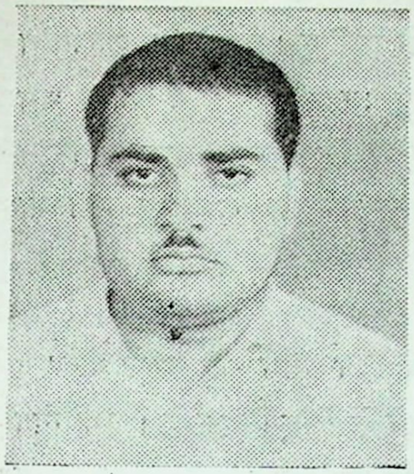
रानाडे ने एक बार कहा था कि आप धर्म में रूढ़िवादी और राजनीति में पुरोगामी नहीं हो सकते। यदि आप मनुष्य की एकता में विश्वास करते हैं तो सभी धर्मों का सम्मान करना आवश्यक है। मनुष्य की सेवा स्वयं एक धर्म है। मुझे आशा है कि आर्य समाज इसी भावना से शिक्षा, समाज और अध्यात्म के क्षेत्रों में अपना कार्यक्रम जारी रखकर हमारे राष्ट्र की नींव मजबूत करेगा। □

□□

स्वदेश भक्ति और आर्य सभ्यता

भला जब आर्यावर्त्त में उत्पन्न हुए हैं और इसी देश का अन्न जल खाया पिया और अब भी खाते पीते हैं, अपने माता-पिता और पितामहादि के मार्ग को छोड़ कर विदेशी मतों पर अधिक झुक जाना ...... इंगलिश भाषा पढ़ के पण्डिताभिमानी होकर झटिति एक मत चलाने में प्रवृत्त होना मनुष्यों का स्थिर और वृद्धि कारक काम क्यों कर हो सकता है।

(स० प्र० स० 11)



॥ ओ३म् ॥

गृह्य सूत्रों के परिप्रेक्ष्य में संस्कारों का महत्त्व

लेखक : डा० रविदत्त शास्त्री एम ए. पी-एच.डी.
जगन्नाथ आर्य कन्या उच्च विद्यालय, हिसार

शरीर के अवयवों को सुदृढ़ तथा योग्य बनाने और उनको धर्मानुकूल प्रयुक्त करने का मुख्य साधन संस्कार है। संस्कारों से न केवल शरीर का ही विकास होता है अपितु मानसिक वाचिक तथा आत्मिक उन्नति का भी एक मात्र साधन संस्कार ही है। इसलिए हिन्दू समाज में संस्कारों को इतना महत्त्व दिया गया है।

संस्कार शब्द "सम्" उपसर्ग और "कृ" धातु से मिलकर बना है। इसका अर्थ "शुद्ध करना" या "उन्नत करना" है। अब देखना यह है कि संस्कारों की आवश्यकता कहां पड़ती है बच्चा भले और बुरे प्रभावों को लेकर अपने नए जीवन में प्रवेश करता है। उसके पालन पोषण का भार समाज पर पड़ता है। अतः समाज के नियम इस प्रकार के होने चाहिए कि पूर्व जन्म के कुप्रभावों का शनैः-शनैः तिरोभाव होता जाए और अच्छे संस्कार उन्नत दशा को प्राप्त होते जाएं। समाज ऐसा करने के लिए जिन नियमों का पालन करता है। उनको ही संस्कार कहते हैं।

सर्वप्रथम संस्कार गर्भाधान संस्कार हैं। आने वाले जीवात्मा की चेष्ठा के लिए आधार तैयार करने का नाम ही गर्भाधान संस्कार है। अतः जिस प्रकार कि सन्तान की ईच्छा हो उसी प्रकार को तैयारी माता-पिता को करनी होगी। स्त्री-पुरुष का सम्भोग होना इस संस्कार की प्रथम क्रिया हैं, दूसरे शब्दों में कहना चाहिए कि जिस प्रकार उत्तम खेती पैदा करने के लिए चुने हुए उत्तम बीजों का होना आवश्यक हैं उसी प्रकार स्त्री-पुरुषों को चाहिए कि वे अपने शरीर एवं मन को निरोग, पुष्ट तथा सन्तुष्ट एवं प्रसन्न रखकर ही इस संस्कार को करें, क्योंकि यही समय भावी सन्तान के

जीवन की आधार शिला रखने का होता है। गर्भाधान संस्कार के समय स्त्री-पुरुष की आयु न्यून से न्यून 16 वर्ष और 25 वर्ष की अवश्य होनी चाहिए। गर्भाधान की तिथि से लेकर सन्तानोत्पत्ति होने और उसके बाद स्त्री के पुनः स्वस्थ होने में कम से कम 2 वर्ष लगते हैं। अतः प्राचीन ऋषि-मुनियों की सलाह है कि इतना समय बीतने से पूर्व दोबारा यह संस्कार नहीं करना चाहिए। धीरकाल सौन्दर्य के लिए मर्यादित सम्भोग ही सर्वोत्तम है।

गृहस्थ की अवधि अधिक से अधिक 25 वर्ष है। इसमें भी पुरुष को ऋतु कालाभिगामी होकर संयम से गार्हस्थ्य धर्म का पालन करने के लिए निर्देश है। मर्यादित नियमानुकूल गृहस्थी ब्रह्मचारी कहलाने का पात्र हैं। क्योंकि उनके मन शरीर और आत्मा सदा स्वस्थ सुसंस्कृत रहते हैं गर्भाधान का समय रजोदर्शक के दिन से चार रात्रि छोड़ कर 16वीं रात्रि तक हैं। गर्भाधान संस्कार तभी करना चाहिए जब दोनों का मन अतीव प्रसन्न और शरीर पूर्णतः स्वस्थ हो।

जब गर्भ की स्थिति का समयक् ज्ञान हो जावे अर्थात् गर्भ के तीसरे चौथे मास में गर्भ की रक्षा के लिए "पुंसवन संस्कार" करना चाहिए इस सस्कार के द्वारा स्त्री–पुरुष प्रतिज्ञा करते हैं कि वे अब से ऐसा कार्य नहीं करें जिससे गर्भ गिरने का भय हो या आशंका हो। इस स्त्री–पुरुष अलग रहें तथा स्त्री के मानसिक बल को उत्साहित करना चाहिए, क्योंकि गर्भाधान काल में सन्तान की उत्तमता के लिए स्त्री को प्रसन्न रखना आवश्यक है।

गर्भ से चौथे मास में सीमन्तोनयन-संस्कार का समय है। इस सस्कार के माध्यम से गर्भ संवर्धन की प्रार्थना की जाती हैं। यह संस्कार गर्भ काल का है। इस संस्कार का मुख्योददेश्य गर्भ स्थित शिशु की निरोगता तथा मानसिक शक्तियों का बिकाम करना है. क्योंकि यह माता के गर्भ में होता है, इसलिए माता का निरोग, प्रसन्न, सन्तुष्ट पवित्र विचारों वाली रखना आवश्यक है। गर्भिणी के खानपान को नियमवद्ध किया जावे. जिस प्रकार की सन्तान की ईच्छा हो उसके अनुकूल उसका आहार विहार. आचार-विचार, पठन-पाठन, और व्यवहार कर दिया जावे उसे कभी भी भयभीत न होने दिया जावे उसे सदा प्रफुल्लित किया जावे। और उत्साहित रखा जावे।

बालक या बालिका के उत्पन्न होने के बाद, नाड़ी छेदन, स्नान, स्वच्छ वस्त्र धारण करा के सोने की शलाका से शिशु की जिह्वा पर शहद से "ओ३म्" लिखा जाता है और कान में "वेदोऽसि" शब्द उच्चारित किया जाता है। नवजात शिशु को शतायु होने का आशीर्वाद दिया जाता है। जातकर्म संस्कार द्वारा सर्वत्र बलवान, विद्वान्, धर्मपरायण, दीर्घायु, वर्चस्वी एवं तेजस्वी होने की प्रार्थनाएं की गई हैं।

जन्म के ग्यारहवें, एक सौ एकवें दिन अथवा दूसरे वर्ष के प्रारम्भ में नामकरण-संस्कार किया जाता है। इस संस्कार से बच्चे का सुन्दर, मधुर तथा सार्थक नाम रखा जाता है। नाम का मनुष्य जीवन में बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। भारतीय विचारधारा में बालक के बुद्धिपूर्वक निर्माण में बहुत जोर दिया गया है। सब पूर्व माता-पिता अपनी सन्तान को जिस गुण-कर्म-स्वभाव वाला बनाना चाहें वैसा ही संकल्प करके सन्तानोत्पादन करना चाहिए जिससे सन्तानोत्पादन के पश्चात् उन्हीं गुण-कर्म-स्वभावों का परिचायक नाम रखना चाहिए। नाम सदा पूरा और सार्थक रखना चाहिए तथा उसी से बच्चे को सम्बोधित करना चाहिए।

निष्क्रमण-संस्कार चौथे मास में उस तिथि को जिसमें बालक का जन्म हुआ हो किया जाता है। सर्वप्रथम शिशु को घर से बाहर शुद्ध-वायु में भ्रमणार्थ ले जाना इस संस्कार का मुख्योद्देश्य है। इस क्रिया से बालक को हृष्ट-पुष्ट बनाना एवं सृष्टि के अवलोकन का शिक्षण देना है।

बालक के जन्मोपरान्त छटे या आठवें मास में अन्नप्राशन संस्कार का विधान है। इस संस्कार से बालक को प्रथम बार अन्न खिलाया जाता है। इससे बच्चे को शनैः-शनैः अन्न खिलाकर शारीरिक शक्ति तथा दांत निकालने की स्थिति में पाचन-क्रिया को परिपुष्ट करना है। बच्चे के माता-पिता सात्विक आहार दें जिससे उसका मन और शरीर दोनों उत्तम बने।

तदुपरान्त सातवें मास में दांत निकालने की प्रक्रिया प्रारम्भ होकर तीसरे वर्ष समाप्त होती है एतदर्थ बालक को चर्म रोग एवं गर्मी से होने वाली बीमारियों से बचाने हेतु चूड़ाकर्म-संस्कार किया जाता है इसे मुण्डन-संस्कार भी कहा जाता है। यह संस्कार साल भर पश्चात् या तीसरे वर्ष किया जाता है इस संस्कार से बालक केश प्रथम बार मुड़वाये जाते हैं। इस संस्कार से बालक सुबुद्धि वाला तथा सुन्दर केशों वाला बनता है।

पश्चात् कर्णवेध संस्कार जन्म से तीसरे या पांचवें वर्ष में होता है इस संस्कार से बालक एवं बालिका का कान तथा नासिका बीन्धते हैं। बच्चे को कई रोगों से बचाने के लिए इस संस्कार का विधान है।

इसके बाद उपनयन-संस्कार पाँचवें वर्ष से लेकर बारहवें वर्ष की अवस्था में किया जाता है। इस संस्कार के द्वारा आचार्य वेद मन्त्रों से सत्यव्रत का उपदेश देकर इसे वाम स्कन्ध से ले जाकर दक्षिण बाहु के नोचे पहिना देता है। यह यज्ञोपवीत होता है, इसे जनेऊ नाम से भी कहा जाता है। यज्ञोपवीत धारण करने बाद आचार्य कुल में बालक को द्विज बनाया जाता है। "द्विज" का अर्थ दो जन्म वाला होता है। अतः बालक का पहला जन्म माता–पिता से होता है और दूसरा जन्म आचार्य से जो विद्या दानार्थ पुयवत् ग्रहण कर उसे विद्या से विभूषित और उत्तम अनुष्ठान से सदाचारी एवं उत्तम नागरिक बनाता है। यज्ञोपवीत विद्या का चिन्ह माना गया है। उपनयन-संस्कार ऋषि-देव-पित ऋणों से उभरण होना होता है। इस प्रकार बालक यज्ञोपवीत धारण कर द्विज बनता है।

इस संस्कार के पश्चात् एक वर्ष के भीतर वेदारम्भ-संस्कार होता है। उत्तम शिक्षण-संस्थाओं में गायत्री-मन्त्र से लेकर साङ्गोपाङ्ग चारों वदों के अध्ययन करने और ब्रह्मचर्य पूर्वक रहकर नियम धारण करने के लिए यह संस्कार करवाया जाता है।

पूर्णतया विद्या अध्ययन करने के उपरान्त लड़के या लड़की का वापिस पितृ-गृह को लौटना समावर्तन-संस्कार कहलाता है। जब ब्रह्मचर्यव्रत सम्पूर्ण हो तथा वेद विद्या एवं उत्तम शिक्षा और विज्ञान को पूर्ण रीति से प्राप्त होकर गृहस्थाश्रम ग्रहण करने के लिए अपने माता-पिता के घर ब्रह्मचारी वापिस जाता है उस समय समावर्तन-संस्कार किया जाता है।

विद्या समाप्ति के बाद जब लड़का अथवा लड़की अपने घर आवे तब संतति परम्परा को कायम रखने के लिए अर्थात् गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करके उत्तम और बलवती संतान की उत्पत्ति के लिए और गृहस्थ आश्रम के कर्तव्यों का पालन करने के लिए विवाह संस्कार किया जाता है। विवाह आयु लड़की के लिए 16 वर्ष से 24 वर्ष श्रौर लड़के को 25 से 48 वर्ष को मानी गई है। स्त्री-पुरुष समान विचारों तथा समुचित गुणकर्म स्वभाव वाले होने चाहिए जिससे उनका गृहस्थ जीवन प्रेम-पूर्वक व्यतीत हो सके विवाह में माता की आज्ञा सलाह गुरुजन एवं ईष्ट मित्र तथा महाजनों

की सहमति और कन्या एवं पुरुष की परस्पर स्वीकृति इत्यादि स्त्री-पुरुष का विवाह में सामाजिक जीवन दृढ़ बनाए रखने के लिए होती है। वे अपने व्यक्तित्व की समाप्ति करके समाज निर्माण के अंग बन जाते हैं। यह सँस्कार बड़े महत्व का है।

विवाह से उत्तम वोर्यवान सन्तान उत्पन्न करके जब ज्येष्ठ पुत्र के यहाँ प्रथम सन्तान उत्पन्न हो जावे तो गृहस्थ छोड़कर वानप्रस्थ ग्रहण करे जिसे वानप्रस्थ संस्कार कहते हैं। वानप्रस्थ नागरिक जीवन से हटकर उपरथ जोवन बिताना परिवार से सम्बन्ध न रखकर बनस्थ हो अपनी मनः प्रवृतियों को अन्तरमुखी बनाने की साधना करे तथा वैराग्य का अभ्यास करे।

तीनों प्रकार की एषणाओं के रहित होकर परोपकार हेतू परिव्राट होने का नाम से संन्यास संस्कार है। संन्यासी सांसारिक वस्तुओं के मोह को छोड़ देता है अतः वह मृत्यु के समय भी सर्वथा निश्चिन्त होता है।

मृत्यु के पश्च त् प्राणरहित शरीर (शव) को अग्नि में विधिपूर्वक दाह करने को अन्त्येष्टि संस्कार कहते हैं मनुष्य शरीर का ये अन्तिम संस्कार है। इसके पश्चात् मृतक के लिए कुछ और कर्त्तव्य कर्म शेष नहीं रह जाता है। इस संस्कार को नरमेध, पुरुष मेध, नर याग, पुरुषयाग भी कहते हैं।

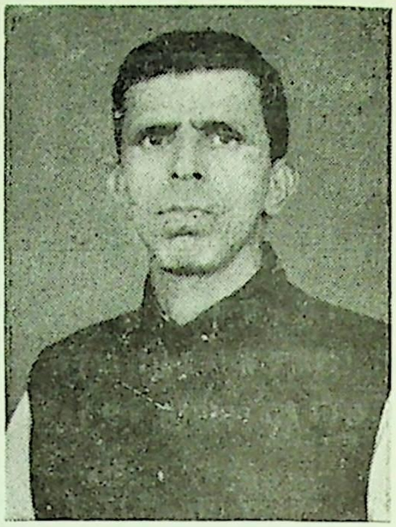
मृत्यु के पश्चात् मृत देह का दाह करना ही वैज्ञानिक पद्धति है। दबा देना या गाढ़ देना ठीक नहीं है।

इस प्रकार सँस्कारों द्वारा मानव का सार्वजनिक निर्माण होता है। अतः षोडश संस्कारों को कर्त्तव्य मान कर करने चाहिए। □

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥

हे अर्जुन! इस आत्मा को शस्त्र काट नहीं सकते, अग्नि इसे जला नहीं सकती, पानी इसे गला नहीं सकता और वायु इसे सुखा नहीं सकती।

हम कौन थे............



लेखक : **आचार्य दयानन्द,** एम.ए. शास्त्री
साहित्य-व्याकरण-वेदाचार्य,
प्राध्यापक, दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार

सामान्यतः आर्य समाज के उद्भव या प्रारम्भिक काल से लेकर जब तक आर्य समाज की गति-विधियों की गति लगभग एक समान रही तब के काल को आर्य समाज का "कौन थे" काल कहा जा सकता है। जिस युग में आर्य समाज के प्रवर्तक-महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती व उनके प्रमुख शिष्यों तथा उनके उपदेशामृत से प्रभावित आर्य समाज के दीवाने आर्य विद्वानों और कार्य-कर्ताओं ने कार्य किया वह आर्य समाज का प्रारम्भिक काल है। इस प्रारम्भिक युग में जहाँ एक ओर स्वयं महर्षि दयानन्द ने अपने सात-आठ वर्षीय अल्प कार्य-काल में इतने विशाल एवं व्यापक रूप में सामाजिक कुरीतियों का निवारण, अंध विश्वासों का नाश, अछूतोद्धार, अनमेल विवाह-बाल विवाह और वृद्ध विवाह का निषेध, वेदविरूद्ध मत-मतांतरों का खण्डन, स्त्री शिक्षा का प्रचार, जन्म-जाति प्रथा का उन्मूलन, आर्य शिक्षा का प्रबन्ध, एक निराकार ईश्वरवाद एवं वैदिक धर्म का प्रचार, शास्त्रार्थ तथा वेद भाष्य व अन्यान्य अनेक ग्रंथों की रचना के दुरुह कार्य किये वहां दूसरी ओर उनके समकालीन श्री पं. लेखराम आर्य पाथिक, श्री पं. गुरुदत्त विद्यार्थी एम. ए., श्री श्यामकृष्ण वर्मा और श्री स्वामी श्रद्धानन्द महात्मा हंसराज प्रभृति उद्भट विद्वानों तथा कार्यकर्ताओं ने उसी उत्साह. निर्भीकता और त्याग की भावना से कार्य किया जिसका ज्वलन्त उदाहरण स्वयं महाराज स्वामी दयानन्द सरस्वती थे। महर्षि यदि घर-बार, माता-पिता आदि का मोह त्याग, जीवन भर अनेकानेक कष्ट झेलते एवं कई बार विष-पान कर वैदिक धर्म के प्रचार व प्रसार में प्राणाहुति दे अन्त में परमानन्द को प्राप्त हुए तो श्री पं. लेखराम प्रभृति अनेक आर्यवीर असाधारण लेखन-कार्य के साथ-साथ दिन-रात वैदिक धर्म का प्रचार करते और विधर्मियों से लोहा लेने में संलग्न रहे और अन्त में बलिदान हो गये। इसी प्रकार सहस्रों आर्य विद्वान्, उपदेशक व प्रचारक उसी एक मात्र

प्रचार की भावना और लगन में कार्य करते रहे। उनके लिये आर्य समाज की सेवा का कार्य मुख्य था और पैसा गौण। कहीं-कहीं पर तो ऐसे अवसर आ पड़ते थे कि जब उपदेशक या प्रचारक अपना सामान स्वयं अपने कंधों या सिर पर लादे चल पड़ते और प्रचार करके ही लौटते थे। न केवल आर्य उपदेशक या प्रचारक ही अपनी धुन के पक्के थे प्रत्युत तत्कालीन आर्य समाज के कार्यकर्ता भी निःस्वार्थ भाव से आर्य समाज की अधिक से अधिक सेवा करना अपना परम कर्तव्य समझते थे।

क्या हो गये हैं.........

पूर्व काल में आर्य समाज में पदों के लिए लड़ाई-झगड़े या संघर्ष नहीं होते थे और न पदों की भीख मांगी जाती थी अपितु सच्चे कार्यकर्ताओं को बरबस पद सौंपे जाते थे। किन्तु आज का आर्य समाजी अधिकांशतः अपने किसी स्वार्थ का प्रतिष्ठा के लिए ही आर्य समाज के कार्यों में भाग लेने या पदाधिकारी बनने को लालायित रहता है। उस काल में आर्य समाज का सदस्य बनना या अपने को आर्य समाजी कहना बड़ी टेढी खीर थी। परिवार, रिश्तेदार और बिरादरी वालों के तिरस्कार, बहिष्कार और कोप का भोजन बनना पड़ता था। किन्तु आज की परिस्थिति यह है कि यदि पतिदेव आर्य समाज मन्दिर में जाते हैं तो श्रीमती जी मूर्ति पूजक हैं और सुपुत्र जी पूरे नास्तिक। उन्हें न संध्या-हवन और स्वाध्याय से गरज और न चोटी जनेऊ से प्रेम। आज का आर्य समाजी चाहे सन्ध्या-हवन करे या ना करे, स्वाध्याय शील हो या न हो अथवा घर वालों की कौन कहे चाहे वह स्वयं भी आर्य समाज के सिद्धान्तों को मानता और तदनुकुल आचरण करता हो या न करता हो किन्तु यदि वह चार आने से लेकर दो, चार रुपये तक मासिक चन्दा दे सकता हो तो वह आर्य समाज का सभासद या पदाधिकारी बना रहेगा। महर्षि ने आर्य समाज के उपनियमों में आर्य समाज के साधारण सदस्य से आर्य सभासद और आर्य सभासद से पदाधिकारी बनने के लिये जो क्रमशः दो-दो वर्ष की अवधि बंधन रूप में रखी थी वह आज शिथिल है और कोई भी व्यक्ति जो अधिक चन्दा देता है या अन्य किसी प्रकार से अपना प्रभाव जमा लेता है वह सीधे आर्य समाज का पदाधिकारी बन जाता है।

स्वाध्याय करने की रूचि एवं प्रवृत्ति भी नहीं रह गई। कैसी भी स्वाध्याय योग्य पुस्तक प्रकाशित हो आज का आर्य समाजी पढ़ना और खरीदना नहीं चाहता। आज के आर्य समाजियों में परस्पर में सौहार्द, प्रेम और अपनापन नहीं रह गया। पहले यदि किसी ने 'नमस्ते' किया तो मानों अपना सगा-सम्बन्धी मिल गया। दोनों ओर प्रेम और अपनत्व की धारा प्रवाहित होने लगती थी वे आपस में जीवन भर के लिये एक-दूसरे के सच्चे मित्र, सहायक और हितैषी बन जाते थे।

आज का आर्य समाजी न स्वयं किसी से नमस्ते करना चाहता है और न उसका परिचय प्राप्त करना चाहता है। यदि 'नमस्ते', 'नमस्ते' हो भी गई तो आगे बात करना और परिचय प्राप्त करना मानों बड़प्पन के विरुद्ध है।

और क्या होंगे.........

आर्य समाज एक बुद्धि व तर्कसंगत आन्दोलन एवं संगठन है। इसका प्रत्येक सिद्धान्त व नियम सत्य पर आधारित है। इसकी प्रत्येक बात बुद्धि व तर्क की कसौटी पर कसी जाकर खरी उतरी है। 'बुद्धि पूर्वावाक्याकृतिर्वेद' के अनुसार जब तक वेद बुद्धिपूर्वक अर्थात सत्य हैं तो वेदों की अनुगामिनी संस्था आर्य समाज की बातें भी तदनुकूल ही होनी चाहिए व हैं अतएव आर्य समाज देश-विदेश के अनेकानेक विद्वानों के मतानुसार बुद्धिमानों और सत्यान्वेषियों के बीच में ही विकसित हुआ, हो रहा है और आगे भी होगा। अंध विश्वासियों, अंध श्रद्धालुओं, ढोंगियों और 'खुदा के काम में अकल का दखल नहीं' ऐसा मानने वालों को आर्य समाज की बातें नहीं पट सकती। अस्तु ज्यों-ज्यों वेद ज्ञान का प्रसार होता जाएगा त्यों-त्यों आर्य समाज सत्यमेव विकसित होता जाएगा। आशावादी होकर निराशा तो लानी ही नहीं चाहिये। किन्तु मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज के बिना नहीं रह सकता! अतएव आर्य या सभ्य समाज वालों का आचरण एवं पारस्परिक व्यवहार भी सत्य होना चाहिये। सिद्धान्त चाहे कितने ही सत्य या सुनहले क्यों न हों किन्तु यदि आचरण कुछ और है और सिद्धात कुछ और हैं तो ऐसे समाज का अस्तित्व स्थायी नहीं रह सकता।

अतः यदि हम आर्य समाजी चाहते हैं कि आर्य समाज का भविष्य भी उज्ज्वल रहे तो हमें अपने आचरण और व्यवहार को पवित्र एवं सत्य बनाना होगा अर्थात् जब तक हमारी कथनी और करनी एक न होगी तब तक आर्य समाज का भविष्य अंधकारमय बना रहेगा।

'आर्य समाज का तीसरा नियम'

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद को पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है।

ऋषि दयानन्द का सच्चा अनुयायी हरयाणा

वरिष्ठ पत्रकार कपिलदेव शास्त्री
(पूर्व चेयरमैन हैफेड)

ऋषि दयानन्द ने भारत वर्ष को जो क्रान्तिकारी दृष्टिकोण दिया उसका सबसे अधिक प्रभाव हरयाणा राज्य पर हुआ। ऋषि दयानन्द हरयाणा में केवल मात्र दो स्थानों पर आये। परन्तु हजारों वर्ष से हरयाणा में अपनी जो विशेषताएं रही हैं वे सब वैदिक मान्यताओं के निकट हैं। इसी लिए इस राज्य के निवासियों ने उन मान्यताओं को खुले हृदय से स्वीकार किया।

जैसा कि कई हजार वर्ष से इस राष्ट्र पर ब्राह्मण वर्ग का वर्चस्व रहा है और उन्होंने ब्रह्मणेत्तर जातियों को हेय नगण्य तिरस्कृत और द्वितीय दर्जे का समझा उसके कुपरिणाम इस राष्ट्र को पिछले एक हजार वर्ष निरन्तर भोगने पड़े हैं। जहां पहले यहां के वैदिक धर्मानुयायी, ऋषि-मुनि, संसार के विभिन्न देशों में जाकर भारत-वर्ष को ध्वजा फहराते थे। जिसके प्रमाण रूप में आज वे जावा, सुमात्रा, चीन, लंका, जापान, बोरनियो, थाइलैंड, लाओस, कम्बोडिया आदि देशों में भारतवर्ष से गये हुए भ्रमों का प्रचार और प्रसार है। इन्डोनेशिया में रामायण और महाभारत के नाटक, कथानक, थियेटरों में सारी-सारी रात चलते हैं। चीन, लंका, जापान, ब्रह्मा, लाओस, थाइलेंड आदि देश आज भी भारतवर्ष से गये हुए बौद्ध धर्म के अनुयायी हैं। भारतीय संस्कृति के सन्देश वाहक बनकर रोमा जिप्सी आज भी योरोपयी देशों के घुमन्तु परिव्राजक हजारों की संख्या में घूम रहे हैं। हजारों वर्ष पूर्व भारतीय योद्धाओं ने ईरान, ईराक, अरब, मैसोकोटोनिया, कुन्सतुनतुनिया, मंगोलिया, मनचूरिया आदि देशों में अपना डंका बजाया और उनकी सन्तानें हरावल दस्तों के रूप में जिन ठिकानों पर गई। वहां की निवासी बन गई।

एक हजार वर्ष पूर्व उल्टा चक्र चला और भारतवर्ष पर मंगोल, तातार, मुगल, पठान आदि आतताई और लुटेरा जातियों के आक्रमण शुरु हुए। और महान् भारतीय सभ्यता उनके घोड़ों के टापों तले रोंद दी गई। यहां के मन्दिर भ्रष्ट कर दिये गये। ललनायें भ्रष्ट की गई और हजारों व्यक्तियों का धर्म परिवर्तन किया गया। ऐसी दीनहीन दशा में ऋषि दयानन्द ने भारत-वासियों को प्राचीन वैदिक संस्कृति की चेतना

दी और उनका उद्घोष सुनकर सोया हुआ भारत राष्ट्र जाग उठा। ऋषि ने जिन मान्यताओं का प्रतिपादन किया उनका इतना अधिक प्रभाव हुआ कि जो लोग "स्त्री-शूद्रौ नाधियाताम्" का नारा लगाते थे आज वे शुद्धि आन्दोलन चला रहे हैं। स्थान-2 पर कन्या पाठशालाएं स्थापित कर रहे हैं। मुसलमानों ने कुरान की आयतों के अर्थ बदल दिए। ईसाइयों ने बाइबिल की व्यवस्था नये ढंग से करनी आरम्भ की। पौराणिकों ने पुराणों के अर्थ बदल दिये। उनके क्रान्तिकारी दृष्टिकोण को सभी ने स्वीकार किया और उसका प्रभाव यह हुआ कि भारतवर्ष ने गुलामी का जुआं उतार फेंकने का निर्णय लिया। क्रान्ति में विश्वास रखने वाली शक्तियाँ और अहिंसक शक्तियाँ दोनों ही ऋषि दयानन्द को विचारधारा से प्रभावित थो। पिछले एक सौ वर्ष से भारतवर्ष ने शिक्षा, समाज सेवा, राजनीति और धार्मिक क्षेत्र में जितनी अद्भुत प्रतिभाओं को उत्पन्न किया वैसा संसार के किसो देश मे शायद ही कभी हुआ हो। सारे राष्ट्र के हित चिन्तक भारतवर्ष के सर्वांगीण विकास के लिए एक जुट होकर जुट गये। यह सब ऋषि की कृपा का फल था और उसी के कारण आज भारतवर्ष स्वतन्त्र राष्ट्रों की पहली पंक्ति में खड़ा है।

ऊपर मैंने राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्थितियों का थोड़ा सार वर्णन किया। अब हरियाणा पर ऋषि दयानन्द की विचारधारा का जो प्रभाव हुआ उसे भी संक्षेप में बताना चाहता हूँ। हरयाणा निवासियों ने 1857 के स्वतन्त्रता संघर्ष में महत्वपूर्ण भाग लिया। दिल्ली के चारों ओर सौ-सौ मील तक एक प्रकार से अंग्रेजी साम्राज्य समाप्त हो गया था। जब ब्रिटिश हुकुमत का सिकंजा दूसरी बार अच्छी तरह कस गया तब उन्होंने हरयाणा की बीसियों टुकड़ों में बिखेर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि हरयाणा निवासियों ने एक रूप में सोचना छोड़ दिया। परन्तु अब ऋषि दयानन्द ने वैदिक धर्म का पुनरुद्धार किया। ऋषि द्वारा प्रतिपादित वैदिक मान्यताओं को हरयाणा निवासियों ने अपने सबसे निकट पाया। ऋषि से पहले इस देश में हजारों हिन्दु विधवाएं विलाप करती थीं। और यौवन की उद्दाम तरंगों को रोक न पाने के कारण विधर्मियों के चन्गुल में फंस जाती थीं। ऋषि दयानन्द ने विधवा विवाह का नारा लगाया। हरयाणा निवासी ब्राह्मणेत्तर जातियों में विधवाओं के साथ करेपे की प्रथा (पति की मृत्यु के बाद उसके भाई या पति के चाचा, ताऊ के लड़कों से उसका रिश्ता कर दिया जाता था) सदियों से चली आती थो। इसीलिए उन्हें ऋषि दयानन्द की बात बहुत मन भाई। ऋषि दयानन्द ने दलितों के उद्धार की बात कही।

हरयाणा में कृषि प्रधान वर्ग बसता है। इसलिए स्थान-स्थान पर उन्होंने प्रीतिभोज करके दलितों को अपने निकट लगाया और उनके लिए कूएं खोल दिए। पंचायतों में स्त्रियों को बैठने का अधिकार नहीं था। ऋषि दयानन्द ने स्त्रियों को समान

अधिकार दिया। यह हरयाणा निवासियों को बहुत भाया, क्योंकि ये लोग स्त्रियों की सलाह के बिना घर का कोई भी कार्य नहीं करते और आज सारे देश में स्त्रियों को जो समान दर्जा मिला है, वह ऋषि की कृपा का ही फल है। ऋषि दयानन्द ने 'सगच्छध्वम्, संवदध्वम्'' का सन्देश दिया।

हरयाणा निवासी हजारों वर्ष से इसके अनुयायी थे। अतः ऋषि दयानन्द की बात को स्वीकार करते हुए उन्हें जरा भी देर नहीं लगी। ऋषि दयानन्द ने आहार शुद्धि पर सबसे अधिक जोर दिया। हरियाणा निवासी कई हजार वर्षों से निरामिष भोजी रहे हैं। दो हजार वर्ष पहले रोहतक के निकट अस्थल बोहर ग्राम में विख्यात नाथ सम्प्रदाय का मठ है वह पहले बौद्ध विहार था। बौद्ध धर्मावलम्बी सामान्य तौर से अहिंसा के उपासक होने के कारण निरामिष भोजी थे और हरयाणा निवासियों ने महात्मा बुद्ध के धर्म को स्वीकार किया था। अतः वे घी, दूध के लिए गाय, भैंस के उपासक बन गये और उसके बाद से यह कहावत प्रसिद्ध हो गई कि देशों में देश हरयाणा, जहां दूध, दही का खाना। ऋषि दयानन्द ने गौकरुणानिधि नामक पुस्तक लिखकर गौ आदि पशुओं का जो महत्व प्रकट किया। वह हरियाणा वालों की मन लगती बात थी और इसीलिए यहां गौ का महत्व दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है।

ऋषि दयानन्द जी ने हिन्दू धर्म को छोड़कर परधर्म स्वीकार करने वाले जाति बहिस्कृत व्यक्तियों को समाज में वापिस लाने का निश्चय किया। हरयाणा निवासियों ने उसे मुक्त हृदय से स्वीकार किया। पलवल के इलाके के मुस्लिम राजपूतों को शुद्ध करने की बात चली। भक्त फूलसिंह जी महाराज ने पलवल में व्रत किया और स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के प्रयत्नों से बड़ी सँख्या में शुद्धि हुई। रोहतक जिले के मूले जाट हिन्दू बनना चाहते थे। उनके रिश्ते नाते खोले गये और सबसे पहले मटिण्डू के चौ० हरद्वारीसिंह जी ने अपनी कन्या रायपुर के एक युवक को ब्याही। उस विवाह की सारी व्यवस्थाएं भक्त फूलसिंह जी महाराज ने की। उसके बाद भी दोदुआ, मौजनपुर आदि के मूले जाट हिन्दू जाट बन गए। यही कारण है कि हरियाणा में ऋषि दयानन्द की कृपा से अन्य मतालम्बी बड़ी संख्या में प्राचीन वैदिक धर्म के अनुयायी बन गये। ऋषि दयानन्द ने स्वर्गवास से पूर्व अपने शिष्यों से कहा— द्वार खोल दो। हरयाणा निवासियों ने सभी प्रकार से उनके कार्यों के लिए अपने द्वार खोल दिये। जनता का धर्म राजधर्म होता है। हरयाणा की जनता का धर्म वैदिक धर्म है। इसीलिए यहां के राजनैतिक, धार्मिक, साँस्कृतिक, सामाजिक, शैक्षणिक और आर्थिक क्षेत्र में यहां का नेतृत्व ऋषि दयानन्द के अनुयायी वैदिक धर्मियों के हाथ में है। हरयाणा में गाँव-गाँव में आर्य समाज बनी हुई। इसीलिए वे सारे राज्य पर कण्ट्रोल करती है। सारी स्थितियों पर विचार करने के बाद हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि वास्तविक रूप में ऋषि दयानन्द का सच्चा अनुयायी हरियाणा राज्य है जो इस भारतवर्ष में आर्य राज्य का प्रत्यक्ष नमूना है। यहां विकास की गति सारे भारतवर्ष के लिए उदाहरण के रूप में है। □

आर्य समाज और भारतीय नारी

लेखिका पुनम आर्या
पुत्रवधू श्री रामधारी आर्य
प्रधान आर्य समाज, हिसार

प्राचीन काल से ही स्त्रियों का हमारे देश में महत्त्व रहा हैं। इतिहास इस ब त का साक्षी है। वैदिक काल में हम देखते हैं कि यज्ञ आदि के समय यदि स्त्री साथ में नहीं है तो यज्ञ अधूरा मानते थे। परन्तु क्या उन परिस्थितियों की स्त्रियाँ केवल घरों की चारदीवारी तक ही सीमित थो ? पुरुष का कार्य व्यवसाय करना था और स्त्री का कार्य गृहस्थ का पालन करना। परन्तु वैदिक युग की नारी अशिक्षित नहीं थी। वह आवश्यकता पड़ने पर युद्ध में भी सक्रिय थी, शासन चलाने में तथा समाज व राष्ट्र के अन्य कार्यों में सहायता करने में स्वतन्त्र थी।

महर्षि दयानन्द के आर्य समाज स्थापित करने से पूर्व भारतीयों पर अत्याचार होते थे उसे पढ़ने लिखने के अधिकार से वंचित कर रखा था। उसे पांव की जूती समझा जाता था। वेद मन्त्र सुनने का उसे कोई अधिकार न था। तुलसीदास के शब्दौ की व्याख्या गलत ढंग से करके आज भारतीय नारी पर अत्याचार, शोषण, अन्याय के बादल मडराने का खतरा पैदा करने में कुछ लोग प्रयास करता अच्छा मानते हैं।

"ढोल गंवार शुद्र पशु नारो।
ये सब ताड़न के अधिकारी॥"

अर्थात् ढोल को पीटने से संगीत सजता है यह ठीक है। गंवार शुद्र जो शुद्र वर्ण का व्यक्ति गंवार है मूर्ख है सिखलाने का प्रयास करने पर भो नहीं सीखता, नहीं समझता उस मूर्ख शुद्र को पीटना ताड़ना चाहिए सभी शुद्र वर्ण वालों को नहीं। पशु नारी का अभिप्राय: तुलसीदास का यह नहीं है अपने घर के पशुओं पीटते रहो अर्थात् वह नारी जो पशु जैसी है पशु को बड़ा होने पर कोई ज्ञान नहीं की यह गाय तेरी माता है या यह तेरी बहिन है जो नारी अपने चरित्र से पतित होकर वेश्यावृत्ति जैसा दुष्कर्म करके पशु संस्कृति फंलाती हैं उन्हें पीटने के लिए तुलसीदास ने संकेत किया ताकि वे गलत कुमार्ग से सुमार्ग पर आ जाएं।

आर्य समाज से पूर्व भारतीय नारी के विषय में पौराणिक सम्प्रदाय वालों का दृष्टिकोण निःसन्देह गलत था। ऋषि दयानन्द ने कहा –'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' जहां नारी की पूजा होती थी है वहां देवता निवास करते हैं आर्य समाज ने नारी को स्त्री शिक्षा, वेद पढ़ने सुनने काअधिकार दिया। जो पौराणिक यह कहते थे कि यदि स्त्री जाति के कान में वेद मन्त्र या गायत्री मन्त्र की आवाज भी पहुँच जाए तो उसके कान में रांग या शीशा आग में पिघलाकर डाल दो उन धूर्तों के मुंह पर चपत मारने का कार्य एक मात्र आर्य समाज ने करके दिखाया। सबसे पहले जालन्धर में आर्य कन्या महाविद्यालय खोला जहां से देश भक्त नारियों का निर्माण हुआ। आर्य समाज के प्रचार व प्रसार के कारण आज भारतीय नारी हर क्षेत्र में पुरुष के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चल रही हैं। ऊंचे से ऊंचे पदों तक वह पहुचो है अनेक राष्ट्रों की नारी प्रधानमन्त्री बनी और आज भी शोभायमान है। स्व० इन्दिरा गांधी, कस्तूरबा, श्रीमती भण्डार नायके, श्रीमती बेनजीर भुट्टो के नामों से कौन भारतीय परिचित नहीं है ?

वेचारी भारतीय नारी को आर्य समाज से पूर्व यह भी बताने वाला कोई न था कि भारतीय महिलाओं ने भी समय-समय पर अपनी साधना और तपश्चर्या द्वारा राष्ट्र के गौरवमय इतिहास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उदाहरण के लिए गार्गी, लोपमुद्रा, भारती, लोलावती मीरा अहिल्या बाई कितने ही नाम लिये जा सकते हैं। आर्य समाज के प्रभाव से भारत में नारी जागरण के प्रयत्न हुए और हिन्दू अरूणा का मुसलमान अ सफ अली के साथ विवाह हुआ। बंगाली सुचेता का सिंधी कृपलानी के साथ विवाह हुआ। उत्तर प्रदेश की विजयालक्ष्मी का महाराष्ट्रीय पण्डित के साथ विवाह हुआ, बगाली सरोजनी नायडू का तेलगू नायडू के साथ विवाह हुआ। इलाहाबाद को इन्दिरा का बम्बई के पारसी फिरोज गाँधी के साथ विवाह हुआ या यूं कहिए प्रणय सूत्र में बंधी जिस फिरोज गांधी के सुपुत्र राजीव गाँधी आज भारत के प्रधानमंत्री हैं। स्वयं कस्तूरबा गांधी अपने लड़के के लिए बहू देखने तमिलनाडू गई और बहू को ले आईं। राजगोपालाचार्य और गाँधी जो सगे समधी थे। सरोजनी नायडू सन् 1925 में प्रथम गवर्नर बनी थी। दुर्गाबाई देशमुख, डा० सुशीला नागर, राजकुमारी अमृतकौर, दुर्गा भाभी (क्रांतिकारी) आजाद हिन्द फौज की लक्ष्मी सहगल आदि ललनाओं ने जाति धर्म के वन्धन तोडकर अपनी गृहस्थियाँ बसाई थी।

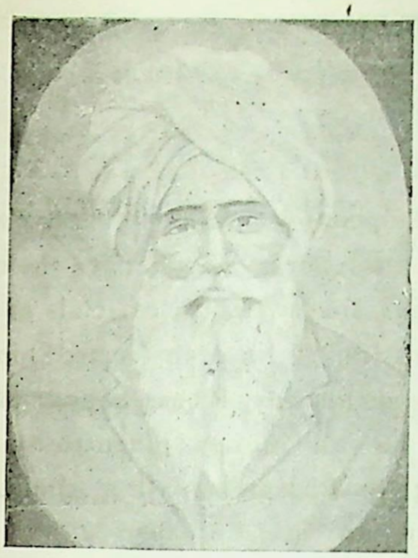
आज भारतीय नारी शिक्षित होकर आधुनिकता के नाम पर अपनी मर्यादा से अधिक बढ़ चली है और उसने स्वयं अशोभनीय, भद्दे चलचित्रों, नाटकों, सिनेमा,

टी० वी०, फिल्मों, विज्ञापनों के माध्यम से भारतीय नारी के गौरव को पतित किया है। उसने कभी इन बातों के विरुद्ध आन्दोलन का प्रयास नहीं किया। दहेज प्रथा जैसो सामाजिक बुराई को प्रोत्साहन भी नारी जाति ही दे रही है। दहेज प्रथा नि:सन्देह कुप्रथा है किन्तु भारतीय नारो ने दहेज प्रथा के विरुद्ध क्या कभी कोई राष्ट्रव्यापी आन्दोलन का प्रयास किया। क्या दहेज लेने व देने वालों का सामाजिक बहिष्कार करने की महिला संगठनों ने आवाज उठाई, नहीं! दहेज का यह दानव जब अनेक युवतियों की बलि ले लेता है तब यह समाज चिल्लाता है हम भारतीय नागरिक अपने बेटे के विवाह में दहेज लेने की इच्छा रखते हैं अधिक से अधिक दहेज की मांग करते हैं लेते हैं किन्तु जब हम अपनी बेटी का विवाह करते हैं तो इच्छा करते हैं दहेज न देना पड़े। इस चिन्तन को बदलना होगा। हमें प्रतिज्ञा करनी होगी दहेज लेना जितना बुरा है दहेज देना भी उतना ही बुरा है। आर्य समाज ने सामाजिक कुप्रथाओं का सदा विरोध किया है। भारतीय नारी वैदिक शिक्षा के अभाव में आज भी भटक रही है। कहीं सती प्रथा के नाम पर, कहीं सन्तोषी माँ के नाम पर, कही शेरांवाली के नाम पर, कहीं जय माता दी के नाम पर, कहीं राधा स्वामी सम्प्रदाय के नाम पर, कहीं गुंगे, पीर, पैगम्बर के नाम पर, कहीं जगराता के नाम पर कहीं विष्णोदेवी के नाम पर बेचारी भारतीय नारी को अन्ध विश्वास और पाखण्ड का चश्मा चढ़ाने पर यह समाज विवश करता है।

भारतीय नारी से मैं कहना चाहती हूं उसके अधिकारों का एकमात्र रक्षक आर्य समाज है। उसे सही दिशा निर्देश करने का एकमात्र क्रांतिकारी संगठन भी आर्य समाज है। ☐

नेताओं की मित्रता कागज की नाव के समान होती है। तू अपने को उसमें न न बहा, तुझे तो आगे बढ़ना है, अतः शक्ति का संचय कर। राजनीति की लहर तो स्वार्थ के समीर से युक्त होती है अतः उसमें न बह।

—मिर्जा आफिज



स्वर्गीय डा. रामजी लाल जी की डायरी के परिप्रेक्ष्य में आर्य समाज नागोरी गेट कार्य क्षेत्र के रूप में

कर्णसिंह, हिन्दी अफसर
सिंडीकेट बैंक, मण्डल कार्यालय
90 कैनाल रोड़ रामदास पेठ,
नागपुर (महाराष्ट्र)

अकाल पीड़ित सहायतार्थ कार्य :-

सांघी गाँव में प्लेग फैल जाने के कारण आप बच्चों को लेकर रोहतक में रहने लग गये। कुछ समय रोहतक में रहने के पश्चात् आपने 11-3-1908 से हिसार में रहना प्रारम्भ किया तथा डा. धनीराम के साथ मिलकर अपनी प्राईवेट प्रैक्टिस शुरु कर दी। उन्हीं दिनों हिसार में आर्य की वर्षगांठ का उत्सव मनाया गया था। उत्सव के अवसर पर ला. लाजपतराय भी हिसार आए थे। 1908 में उत्तरप्रदेश में भीषण सूखा पड़ा था। अकाल के कारण लोग भूख से मर रहे थे तथा हजारों की संख्या में बेघर हो गये थे। उत्सव के समय ला. लाजपतराय से विचार विमर्श कर उत्तारप्रदेश के सर्वाधिक प्रभावित क्षेत्र गोंडा तथा अवध में जाकर अकाल पीड़ितों की सहायता करने की योजना बनाई। आपकी योजनानुसार आपने गोंडा जाकर एक अनाथालय खोलना था जिसमें असहाय लोगो को शरण दी जा सके तथा उनको पेट भर अनाज उपलब्ध कराया जा सके। लाला लाजपतराय ने अपने कुछ जानकार लोगों के नाम कुछेक पत्र डा. साहब को दिये ताकि वहाँ पर वे लोग आपकी इस शुभ काम में सहायता कर सकें या जिस भी चीज की आपको आवश्यकता हो, वे उपलब्ध करा सकें। उन पत्रों में से दो पत्र हम नीचे दे रहे हैं।

लाला गोवर्धनदास को लिखा गया ला. लाजपतराय का पत्र—

My dear L. Goverdhan Das,

I have great pleasure in introducing my friend, Dr. Ramji Lal, Asst. Surgeon and M. Amir Chand to you. They are going to Gonda for famine relief duty. Please give them all the information required and all the help needed. Please let me know who is working where so as to enable to Correspond with them.

Yours sincerely,
Lajpat Rai

बाबू गंगाप्रसाद वर्मा वकील (लखनऊ) के नाम लिखा गया पत्र—

My dear Baboo Sahib,

My friend, Dr. Ramji Lal, Asst. Surgeon is going to Tulsipur (Gonda) for famine relief work. He will open a temporary orphanage there. Please give him such introductory letters for your local friends, officials and non officials as may help him in his noble mission. I have instructed him to send for money from Lucknow, whenever he wants any. Please honour all orders sent by him. I hold myself responsible for all money given to him. Another batch under M. Amir Chand is going to Bharaich with a similar object. Please introduce my friends to L. Goverdhan Das and others.

Yours sincerely,
Lajpat Rai
1-4-1908

हिसार से मास्टर अमीरचन्द तथा 2 अन्य व्यक्तियों को साथ लेकर आप 1-4-1908 को उत्तर प्रदेश के लिए रवाना हो गये। 3-4-1908 को आप कानपुर पहुँचे तथा अगले दिन लखनऊ जाकर आर्य समाज मन्दिर में ठहरे। लखनऊ में ला. लाजपतराय द्वारा बताए लोगों से सम्पर्क स्थापित किया। 5 अप्रैल को आप तुलसीपुर पहुँच गये और वहां जाकर ला मूलचन्द से सम्पर्क किया और उसी दिन कुछ भूखे लोगो में पैसे बांटे। तुलसीपुर पहुँचकर बलरामपुर रियासत के तहसीलदार से भेंट करनी चाही लेकिन मिल न सके। अगले दिन जब तहसीलदार महोदय से भेंट हुई तो पाया कि साहब आर्य समाजियों के कट्टर विरोधी थे। तहसीलदार साहब के अनुसार आर्य समाजी लोग सरकार के विरुद्ध कार्य कर रहे थे। उन्हीं से पता चला कि सरकार अनाथालय खोलने तथा निर्धनों की सहायता करने की आज्ञा नहीं देती।

तुलसीपुर में आपके ठहरने तथा खाने-पीने का कोई प्रबन्ध न हो सका। सारा दिन भूखे प्यासे रहकर, स्वं बेसहारा होते हुए अन्य निर्धन तथा अनाथों की सेवा करते रहते थे। कई दिन बाद आपको वहां एक पाठशाला में छोटा सा कमरा मिल गया। पाठशाला का पंडित काफी सज्जन पुरुष था। 7-4-1908 को आपको खाना खाए बिना ही रहना पड़ा लेकिन उस दिन भी आपने 40 भूखे लोगों में चने बांटे। अनाथ बच्चे आपके पास आते तथा आप इन्हें प्यार से खाना खिलाते और कुछ आर्थिक सहायता देते थे। लेकिन सरकार इन अनाथ बच्चों को अनाथालय में जाने की आज्ञा नहीं देती थी। 8-4-1908 को 60 गरीबों में चने बांटे। 9-4-1908 को आपको खाना नहीं मिला लेकिन सारा दिन घूम-2 कर 115 गरीबों को चने दिये। 11 ता. को 157 व्यक्तियों

को अनाज दिया गया। इस समय तक कुछ अन्य अनाथ बालक आपके पास रहने लगे। तथा इस राहत कार्य में आपका हाथ बंटाने लगे। आस-पास के अनेकों गाँव जैसे सितलापुर सीतलापुर खुर्द, मोतीपुर, चैनपुर, गोपालपुर, परसपुर, बसन्तपुर इत्यादि में काफी दिन घूम-2 कर राहत कार्य किया। 12 ता. को 160 लोगों में चने बांटे। ला. लाजपतराय भी उन दिनों गोंडा आए हुये थे। उन्होंने बाबू नित्यानन्द को भेजकर आपको गोंडा बुला लिया। वहां ला. लाजपतराय के साथ विचार विमर्श कर गोंडा में एक अनाथालय की स्थापना कर दी तथा यह भी निर्णय किया गया कि चाहे सरकार जितना विरोध करे क्षेत्र भर के अनाथों को अनाथालय में लाया जाए।

जब आप 15-4-1908 को गोंडा से तुलसीपुर वापिस पहुँचे तो पता चला पीछे से पुलिस ने आपके विषय में काफी पूछताछ की है। उस समय जितने भी अनाथ आपके पास रह रहे थे उन सब को पुलिस ने पीटा। उस दिन आपने 200 व्यक्तियों में अनाज बांटा। तभी वहां एक पुलिस इन्सपैक्टर तथा पुलिस के कई सिपाही आ गये। आपको आदेश दिया गया कि किसी भी व्यक्ति को अनाथालय न भेजा जाये। लेकिन पुलिस के आदेश को तनिक भी परवाह न करते हुए आप शान्त भाव से निर्धनों की यथा सम्भव सहायता करते रहे। अनेकों बार पुलिस ने पकड़ा धमकियां दी लेकिन आर्य समाज हिसार का यह महान व्यक्ति अपने पथ से नहीं हटा। लेकिन घरेलु परिस्थियां बिगड़ने के कारण आपको कुछ समय पश्चात विवश हो वापिस हिसार आना पड़ा।

❋

सहनशील होना अच्छी बात है। परन्तु अन्याय का
विरोध करना उससे भी उत्तम है।

—जयशंकर प्रसाद

बिना आध्यात्मिक पतन हुए किसी राष्ट्र का किसी भी
दृष्टि से पतन नहीं हो सकता।

—रामतीर्थ

□□

नमस्ते और नमस्कार

लेखक : प्रो० सत्यकाम आचार्य
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
दयानन्द कालेज, हिसार

संसार के सभी देशों में एवं सभी धर्मों में अभिवादन का अपना-अपना ढंग है। हमारे देश में अनेक जाति एवं धर्म से सम्बन्धित लोग रहते हैं, अतः अभिवादन का प्रकार भी एक जैसा नहीं है। किन्तु आर्य (हिन्दू) परम्परा में अभिवादन के लिए 'नमः' शब्द का प्रयोग होता है। 'नमः' एक अव्यय पद है, जो "णम् प्रह्वत्वे शब्दे च" (नम्) धातु से निष्पन्न है। नम् धातु का अर्थ झुकना तथा बोलना है। 'नमः' का शाब्दिक अर्थ है, 'प्रणाम' शब्द भो नम धातु से हो बनता है। इनका अर्थ भी अभिवादन करना हो है।

आजकल अभिवादन के लिए अधिकतर 'नमस्ते' अथवा 'नमस्कार' का प्रयोग करते हैं। नमस्ते एवं नमस्कार के अर्थ में कोई भी मिलता नहीं है। नमः+ते=नमस्ते अर्थात् तुझे नम । नमः+कार+नमस्कार अर्थ स्पष्ट है। दोनों शब्दों में 'नमः' शब्द का लौकिक एवं वैदिक भाषा में भी प्रयोग हुआ है। लौकिक संस्कृत में इसका अर्थ नमन अथवा अभिवादन है किन्तु वैदिक भाषा में 'नमः' के अर्थ अन्न, वज्र तथा नमस्कार है।

आर्य समाज में अभिवादन के लिए 'नमस्ते' शब्द का प्रयोग किया जाता है। ऋषि दयानन्द ने 'व्यवहारभानु पुस्तक की भूमिका में' किसी के पास जाकर अपनी योग्यता के अनुसार 'नमस्ते' आदि नम्रतापूर्वक करके......" लिखकर नमस्ते करने का आदेश दिया है। ऋषि ने 'सत्यार्थ प्रकाश' के द्वितीय समुल्लास में भो 'नमस्ते' करने के लिए कहा है "बड़ों को मान दें उनके सा ने उठकर जाकर उच्चासन पर बैठावे, प्रथम 'नमस्ते' करें। लिखा है। ऋषि के इन शब्दों का सम्मान करते हुए प्रायः लोग 'नमस्कार' भी कर लेते हैं। जो लोग नमस्ते के पक्षधर हैं बेटा 'नमस्कार' करने वाले पर इस प्रकार बरस पड़ते हैं कि अपना सारा होश गंवा बैठते हैं। यहाँ तक कि उसे 'आर्य समाजी' नहीं है, यह ऋषि दयानन्द के मत का विरोधी है आदि-आदि कहकर हतप्रभ कर देते हैं। ऐसे बन्धुओं को आप क्या कह सकते है। लेकिन पाठकों की जानकारी के लिए मैं यह बताना चाहता हूँ कि ऋषि दयानन्द ने अपने ग्रन्थों में अनेक बार 'नमस्कार' करने को कहा है तथा स्वयं अनेक बार 'नमस्कार' शब्द का प्रयोग भो किया है। 'सत्यार्थ प्रकाश' की

भूमिका में सर्वप्रथम "ओ३म् सच्चिदानन्देवराय नमो नमः" लिखकर 'नमः' को उच्च स्थान दिया है। 'सत्यार्थ प्रकाश' के प्रथम समुल्लास में नमो ब्राह्मणे नमस्ते' इस उपनिषद वाक्य का अर्थ ऋषि ने इस प्रकार किया है—"सबसे बड़ा अनन्त बलयुक्त परमात्मा है, उस ब्रह्म को हम नमस्कार करते हैं"। एकादश समुल्लास में 'नमस्ते रुद्र मन्यवे' इस मन्त्र खण्ड का अर्थ लिखते हैं—जजो मंगलकारी सब संसार का अत्यन्त कल्याण करने वाला हैं, उस परमात्मा को नमस्कार करना चाहिए।

'ऋग्वेदादिभास्य भूमिका' मैं ऋषि ने 'ईश्वर प्रार्थना विषयः' में अथवा वेद के 'यो भूतं च भव्यं च...।' आदि चार मन्त्रों के अन्त में प्रयुक्त 'नमः' शब्द का अर्थ लिखा है।

1. जिसको लेश मात्र भी दुःख नहीं होता उस आनन्दघन परमेश्वर को हमारा नमस्कार हो।
2. उस परब्रह्म को हमारा अत्यन्त नमस्कार हो।
3. उस ब्रह्म को हम लोगों का नमस्कार हो।
4. उस ब्रह्म को निरन्तर हमारा नमस्कार हो।

ऋग्वेदादिभास्य भूमिका के उपासना विषय में नमस्ते अस्तु पश्यत पश्य मा पश्यत अथर्व वेद 13-4-48 का अर्थ करते हुए ऋषि ने 'नमः' का अर्थ लिखा है—"इसलिए हम लोग आपको सदा नमस्कार करते हैं"।

इसी ग्रन्थ के 'पंचमहायज्ञ विषय' में 'नमो व=पितरो रसाय...इत्यादि यजुर्वेद 2—32वें मन्त्र में 'नमः' का अर्थ करते लिखते है—1. "हम लोग आपको नमस्कार करते हैं"। 2. "इसलिए हम आपको नमस्कार करते हैं"। 3. "हम आपको नमस्कार करते हैं"। 4. "हम आप लोगों को बार-बार नमस्कार इसलिए करते हैं कि गृहाश्रम आदि करने के लिए जो-जो विद्या अवश्य हैं, सो-सो सब आप लोग हमको दे दें"।

इसी प्रकरण में "पितृभ्यः स्वाधिणभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः—...। यजुर्वेद 19—36 मंत्र में 'नमः' का ग्रर्थ लिखते है—"जो चौबीस वर्ष व्रह्मचर्याश्रम से विद्या पढ़ के सबको पढ़ाते हैं, उन पितरों को हमारा नमस्कार है"

इसी प्रकरण के अन्त में "स्वयमेनमभ्युदेत्य ब्रूयाद्" ...... अथर्व वेद 15-11-2 मन्त्र के प्रथम भाग का अर्थ ऋषि इस प्रकार लिखते हैं—"गृहस्थ लोग ऐसे पुरुष को आते देखकर, बड़े प्रेम से उठ कर नमस्कार करके, उत्तम आसन पर बैठावे"।

संस्कार विधि में भी ऋषि दयानन्द ने अनेक बार 'नमस्कार' शब्द का प्रयोग किया तथा 'नमस्कार' करके विदा करने के लिए कहा है : सामान्य प्रकरण के अन्त में ऋषि लिखते हैं "यह वामदेव्यमान होने के पश्चात् गृहस्थ स्त्री पुरुष कार्यकर्ता सद् धर्मी लोकप्रिय परोपकारी सज्जन विद्वान वा त्यागी पक्षपात रहित संन्यासी जो सदा विद्या की वृद्धि और सबके कल्याण बर्तने वाले हों, उनको नमस्कार, आसन, अन्न, जल, वस्त्र, पात्र, धन आदि दान से उत्तम प्रकार से यथा सामर्थ्य सत्कार करें। पश्चात् जो कोई देखने ही के लिए आयें हों, उनको भी सत्कार पूर्वक विदा करें"।

इसी ग्रन्थ के 'वेदारम्भ विधि' में पठन वादन विधि प्रकरण से पूर्व ऋषि जी ब्रह्मचारी के लिए लिखते है "ब्रह्मचारी को चाहिए कि आचार्य, माता, पिता, अतिथि, महात्मा आदि अपने बड़ों को नित्य नमस्कार और सेवन किया करें" 'पंचमहायज्ञ विधि' ग्रन्थ में ऋषि दयानन्द, मनसा परिक्रमा मन्त्रों में प्रयुक्त तेभ्यो नमः……इत्यादि मन्त्रों में 'नमः' का अर्थ करते हैं "उन सब गुणों के अधिपति ईश्वर के गुणों को हम लोग बार-बार नमस्कार करते हैं।

इसी पुस्तक में समर्पण के बाद ऋषि लिखते हैं "इसके पीछे ईश्वर को नमस्कार करें"। बाद में ओ३म् नमः शम्भवाय च—…। "इत्यादि मन्त्र में 'नमः' का अर्थ करते हैं——उसको हमारा बारम्बार नमस्कार हो"। 'आर्याभिविनय' पुस्तक में भी है। उक्त मन्त्र इसी पुस्तक के 'अतिथियज्ञ' में स्वयमेनमभ्युदेत्य……अथर्व 15-11-2 मन्त्रार्थ की प्रथम पंक्ति में ऋषि लिखते हैं—"तब उसको गृहस्थ अत्यन्त प्रेम से उठकर नमस्कार करके उत्तम आसन पर बैठाकर……"।

यजुर्वेदभाष्य में ऋषि दयानन्द 'नमः' के कई अर्थ किये हैं। उनमें एक नमस्कार भी है। उदाहरणार्थ "पुष्टानां पतये नमः" यजुर्वेद 16-18 मन्त्र का अर्थ ऋषि लिखते हैं। निरोगी पुरुषों की रक्षा करने हारे के लिये नमस्कार प्राप्त हो। 'त्विषीयते नमः यजुर्वेद 16-17 मन्त्राँश का अर्थ 'बहुत न्याय के प्रकाशों से युक्त तेरे लिए नमस्कार और अन्न हो" लिखा है। 'भूमिष्णं ते नम उक्ति विधेम' यजुर्वेद 5-36 का अर्थ "हम लोग आपकी अत्यन्त नमस्कार रुप वाणी को कहते हैं"।

ये कुछ ही उदाहरण हैं ऋषि के सभी ग्रन्थों का अवगाहन करने पर और भी उदाहरण 'नमस्कार' के पक्ष में उपलब्ध हो सकते हैं किन्तु उपलब्ध उदाहरणों से सिद्ध

होता है कि ऋषि दयानन्द जी 'नमस्ते' या 'नमस्कार शब्दों में से किसी एक के ही प्रबल पक्षपाती नहीं थे। 'नमस्ते' तथा 'नमस्कार' में वे विरोध भी नहीं मानते थे। यदि वे केवल 'नमस्ते' ही के पोषक होते तो सभी जगह 'नमस्ते' ही करने को कहते तथा लिखते भी।

जो भाई 'नमस्कार' करने वाले पर कटाक्ष करते हैं उन्हें उपरिलिखित उदाहरणों से बोध अवश्य हो जाएगा कि 'नमस्कार' करने वाला व्यक्ति 'नमस्कार' करके अपराध नहीं कर रहा है प्रत्युत्त विनम्र अभिवादन कर रहा है। 'नमस्कार' के उत्तर में 'नमस्ते' के अभिवादन में भी निहित है जो नमस्कार' में है।

व्यक्ति को रूढ़िवादी बनकर कूपमण्डूप नहीं बनना चाहिए किन्तु स्वाध्याय के द्वारा विषय की गहराई तक जाना चाहिए। □

कवि या साहित्य में अनुभूति को जितनी तीव्रता होती है, उसकी रचना उतनी हो आकर्षक और ऊंचे दर्जे की होती है।

—प्रेमचन्द

धन से धर्म की रक्षा की जाती है, योग अर्थात् अभ्यास से विद्या की रक्षा होती है, कोमतला से राजा को रक्षा होती है और श्रेष्ठ स्त्री द्वारा घर की रक्षा होती है।

—चाणक्य नीति

ब्राह्मण जन्म या जाति से नहीं, श्रेष्ठ कर्म करने से होता है।

—महर्षि दयानन्द



आर्य समाज के प्रवक्ता

लेखक—**सुखदेव शास्त्री**
महोपदेशक
पोर्टलूई (मौरीशस)

प्रश्न—ओ३म् किसे कहते हैं ।

उत्तर—सृष्टि रचाने वाले को ओ३म् कहते हैं ।

प्रश्न - वह कहां रहता है ?

उत्तर—वह सब जगह रहता है, जैसे दूध में घी, काठ में अग्नि, समुद्र में क्षार (नमक) इत्यादि । जिस वस्तु में रूप नहीं होता, वह दिखाई नहीं देतो, किन्तु उसकी सत्ता होती है । जैसे—सुख-दुःख का ज्ञान सबको प्रत्यक्ष होता है, परन्तु ये दिखाई नहीं देते, इसी प्रकार ईश्वर में रूप आदि गुणों के न होने से वह इन्द्रियों के द्वारा ग्रहण नहीं किया जा सकता, ईश्वर के गुणों को तो जीवात्मा ही स्वयं प्रत्यक्ष कर सकता है ।

प्रश्न—जब ईश्वर सब जगह पर है तो और चीजें किस जगह पर हैं, क्योंकि जगह तो सारी ईश्वर ने घेर ली, कोई स्थान उससे खाली न रहा, तो और जो चीजें हैं, वह बिना स्थान के ही रहती हैं ?

उत्तर—मेरे कहने का यह अभिप्राय नहीं, मैंने तो यह कहा है कि कोई स्थान ईश्वर से खाली नही है इससे मेरा तात्पर्य यह है कि उसकी सत्ता सब स्थानों में है ।

ईश्वर की सत्ता जगह को नहीं घेरती, जगह को घेरने वाले पदार्थ प्राकृतिक होते हैं । पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु तथा उनके परमाणु ये सबके सब जगह को घेरते हैं । ईश्वर तो इन समस्त पदार्थों में व्यापक है । इसलिए कहा जाता है कि ईश्वर सब जगह पर है ।

प्रश्न—अच्छा, ईश्वर सब जगह पर है तो दीखता क्यों नहीं ?

उत्तर—तो क्या जो चीज दिखाई नहीं देती वह होती नहीं ? मैं आपसे पहले हो कह चुका हूँ कि वह सर्वव्यापक है, उसे इन्द्रियों के द्वारा नहीं देख सकते। वह तो निराकार है। परन्तु जो रूप वाली वस्तु है उनके न देखने के भी कई कारण हो जाते हैं। संसार में बहुत सी चीजें ऐसी हैं जो अत्यन्त पास में होने के कारण दिखाई नहीं देती, जैसे आंख में लगा हुआ सुरमा, बहुत सी चीजें हैं जो अत्यन्त सूक्ष्म होने के कारण नहीं दीखती, जैसे—परमाणु, कीटाणु, जो खुर्दबीन द्वारा हो देखे जा सकते हैं। इसी प्रकार बहुत सी चीजें हैं जो पर्दे (आवरण) के कारण दिखाई नहीं देती, जैसे काई से जल, दीवार से दीवार, मैल से शीशा आदि। बहुत सी चीजें समान गुण वाले होने से दिखाई नहीं देती, जैसे—दूध में पानो, क्योंकि दोनों ही बहने वाले पदार्थ हैं। बहुत सी चीजें ऐसी हैं जो आंख में दोष होने के कारण दिखाई नहीं देती, इसोलिए यह कहना भूल है कि जो चीज दिखाई नहीं देती वह होती ही नहीं।

प्रश्न--बिना देखे मुझे तो विश्वास नहीं होता।

उत्तर—बहुत सी चीजें जो आंखों से नहीं दिखाई देती वे होती हैं उनका विश्वास करना ही पड़ता है। अच्छा, बताओ ? जो मैं बोल रहा हूँ, उसे तुम सुन रहे हो या नहीं ? और जो कुछ शब्द मैं बोल रहा हूँ वे हैं भी या नहीं ? तो आप कहेंगे कि मैं सुन भी रहा हूँ और वें शब्द भो हैं। तो मैं पूछता हूं कि फिर इन्हें तुम आंखों से क्यों नहीं देखते ? आप कहेंगे कि यह तो दीखता नहीं यह तो सुनता है। मैं फिर पूछता हूं— किससे सुनता है, आप कहेंगे कि कानों से, फिर मैं आपसे पूछता हूं कि रात में आपने दूध पीया था उसमें मोठा डाला था या नहीं, आप कहेंगे कि डाला था, मैं फिर पूछता हूँ कि उसका ज्ञान कैसे हुआ तो आप कहेंगे कि जीभ से, अब मैं पूछता हूं कि शब्द का ज्ञान कानों से, मीठे का ज्ञान रसना (जीभ) से, तो शब्द का ज्ञान जीभ से तथा मीठे का ज्ञान कानों से क्यों नहीं प्राप्त किया ? शब्द और मिठास के होते हुए भी आँखों ने देखा क्यों नहीं ?

प्रश्न—जिन इन्द्रियों का जो विषय था उसका ज्ञान प्राप्त किया, ईश्वर तो किसी भोतिक इन्द्रिय से नहीं जाना जाता, उसे कसे मान लें कि वह है ?

प्रश्न—जिन इन्द्रियों से न जानने के कारण तुम ईश्वर को नहीं मानते हो, तो इन इन्द्रियों को कैसे जानते हो, यदि कहो कि इन्द्रियों को इन्द्रियों से ही जाना जाता है

तो यह आत्याश्रय दोष है क्योंकि कोई भी द्रष्टा स्वयं दृश्य नहीं हो सकता। इन्द्रियां इन्द्रियों को जान भी कैसे सकती हैं, जबकि उनके भिन्न-भिन्न विषय हैं—आंख का रूप, कान का शब्द, नाक का गन्ध, जीभ का रस और त्वचा का स्पर्श विषय है। नाक आँख को नहीं जान सकते, जीभ कानों को नहीं जान सकती।

प्रश्न—वाह! वाह! जान क्यों सकती, जब मैं दर्पण (शीशा) हाथ में लेता हूं तो आंख, कान, नाक, मुख, जीभ आदि सभी इन्द्रियां दिखाई देती हैं। आंख तो वह इन्द्रिय है जो सभी इन्द्रियों का ज्ञान करा देती है।

उत्तर—यह तुम्हारी भूल है। ग्रांख से जो भी कुछ देखते हो वह रूप ही देखते हो, अन्य इन्द्रियों तथा उनके विषयों को नहीं। शीशे के द्वारा इन्द्रियाँ कहां दिखाई देती हैं? इन्द्रियों के गोलक अर्थात् स्थान दिखाई देते हैं, जो रूप वाले हैं। इन्द्रियां उन स्थानों में शक्ति रूप में विद्यमान हैं। आंख समस्त इन्द्रियों का ज्ञान क्या कराएगी, आंख स्वयं अपने को भी नहीं देख सकती। और यदि तुम्हारी यही धारणा है कि शीशे से आंख दिखाई देती है, तो लो मैं तुमसे एक बात पूछता हूं बताओ? मेरे हांथ में क्या है? आप कहोगे कि शीशा है, फिर मैं पूछता हूं कि आपने शीशे को देखा आप कहेंगे कि आँखों से। अच्छा, आँखों ने शीशे को देखा है, तो शीशा देखने के पहले आँखों का ज्ञान था, इसका अभिप्राय यह हुआ कि यदि आंख न होती तो शीशे को देख नहीं सकते थे। ग्रब बोलो, शीशे का ज्ञान आंखों से होता है। यदि शीशे से आंखों का ज्ञान होता तो आँखों के फूट जाने पर यह शीशा फूटी आंखों का ज्ञान अवश्य करा देता। आँखों के चले जाने पर शीशा आँखों का तो क्या स्वयं अपना भी ज्ञान नहीं करा सकता। और थोड़ी सी गहराई से सोचेंगे तो पता चलेगा कि आंख जो भी कुछ देखती है साधनों की सहायता से देखती है स्वतन्त्र रूप से नहीं। यह बात तो ठीक है कि रूप ज्ञान बिना ग्रांखों के नहीं हो सकता, किन्तु रुप का ज्ञान भी आंखें अपने आप नहीं कर सकती।

प्रश्न—आखों को किन साधनों की आवश्यकता है? आंखें तो स्वतन्त्र रूप से ही देखती हैं, आँखों का तो विषय ही देखना है। अच्छा, बताओ कि आंखें स्वतन्त्र रूप से क्यों नहीं देखती?

उत्तर—मैं इस समय सारी चीजों को देख रहा हूं। यदि इस समय घोर अन्धकार हो जाए, तो मैं ये सारी चीजें या वस्तुएं देख सकूंगा या नहीं? आप कहेंगे 'नहीं'। तो पता चला कि देखने के लिए न केवल आंखें ही चाहिए बल्कि प्रकाश भी।

प्रकाश के न होने पर आंखें दोनों ही विद्यमान हैं तो भी मैं नहीं देख सकता। यदि देखने वाली वस्तु एक निश्चित स्थान पर नहीं। देखो यह एक किताब या पुस्तक है। यदि मैं इसके अन्दर के अक्षर एक फर्लांग की दूरी से देखना चाहूं तो नहीं देख सकता और यदि बिल्कुल आंखों पर ही पुस्तक को लगाऊं, तो भी इसके अक्षर नहीं पढ़ सकता। अक्षरों को देखने के लिए एक निश्चित स्थान चाहिए, तब उन्हें देखा और पढ़ा जा सकता है। और देखो, यदि प्रकाश तथा निश्चित स्थान भी हो तो भी मैं नहीं देख सकता, यदि मन का सम्बन्ध आँखों से न हो। यदि मन किसी कार्य में लगा हो तो आँखों के सामने से वस्तु निकल जाएगी किन्तु तुम देख न सकोगे। और ऐसा होता भी है कि सामने से कोई वस्तु निकल गई, किसी ने पूछा-आपने अमुक वस्तु को देखा तो उत्तर मिलेगा कि मैंने ख्याल नहीं किया। अब तुम समझ गए होगे कि देखने के लिए कितने साधन चाहिये। इसलिए ईश्वर को इन्द्रियों से नहीं देख सकता, फिर भी इन्द्रियों को मानना पड़ता है। फिर ईश्वर के मानने में शंका क्यों ?

प्रश्न—तो ईश्वर कैसे माना जाता है ?

उत्तर—ईश्वर को जीवात्मा अनुभव द्वारा प्राप्त करता है।

प्रश्न—यह अनुभव कैसे होता है ?

उत्तर—जब मन के तीन प्रकार के दोष-मल, विक्षेप तथा आवरण दूर हो जाते हैं।

प्रश्न—इनकी परिभाषा क्या है ?

उत्तर—मन में दूसरों को हानि पहुंचाने का विचार तथा पापों के आत्मा पर जो संस्कार हैं उनका नाम 'मल' है।

लगातार विषयों का चिन्तन करने तथा मन के स्थिर न रहने का नाम 'विक्षेप' है।

संसार के नाशवान पदार्थों के अभिमान का मन पर पर्दा पड़े रहने का नाम 'आवरण' है।

प्रश्न—इन तीनों को कैसे दूर किया जा सकता है ?

उत्तर—इनके दूर करने के तीन साधन हैं—ज्ञान, कर्म और उपासना।

जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही समझना, जड़ को जड़, चेतन को चेतन, नित्य को नित्य तथा अनित्य को अनित्य जानना 'ज्ञान' है।

शरीर, समाज, आत्मा इनकी उन्नति के लिए उन पदार्थों को प्राप्त करना 'कर्म' कहलाता है।

तथा उन पदार्थों के पास जाकर उनके गुणों से अपने दोषों को सुधारने का नाम 'उपासना' है।

कल्पना करो एक मनुष्य सर्दी से पीड़ित है। यदि वह सर्दी दूर करने के लिए जल के समीप जाता है तो यह उसका अज्ञान है ज्ञान नहीं। सर्दी तो तभी दूर हो सकती है जब पहले उसे अग्नि का 'ज्ञान' हो। फिर सर्दी शान्त करने के लिए और अग्नि की प्राप्ति के लिए 'कर्म' करे तथा फिर अग्नि के समीप जाकर शीत (सर्दी) रूपी दोष को अग्नि के गुण गर्मी से दूर करे।

तात्पर्य यह है कि ज्ञान से मल, कर्म से विक्षेप और उपासना से आवरण दोष दूर होता है। तब कहीं परमात्मा का अनुभव होता है।

प्रश्न—इसे थोड़ा सा और स्पष्ट करो कि ज्ञान से मल, कर्म से विक्षेप और उपासना से आवरण दोष कैसे दूर होते हैं !

उत्तर—ज्ञान के द्वारा समझ लेना कि संसार के सब प्राणी और सब पदार्थ नाशवान् हैं इसलिए दूसरों के अधिकारों को छीनने का भाव न रखना ही मल दोष दूर होना है। किसी के मन में विक्षेप अर्थात् चचलता तब उत्पन्न होती है जब वह संसार के पदार्थों को जीवन का उद्देश्य समझ कर उसका प्रयोग करता है। संसार के पदार्थ वास्तव में साधन तो हैं परन्तु साध्य अर्थात् जीवन का उद्देश्य नहीं है। यह सिद्धान्त समझ कर जो कर्म किया जाता है वह मनुष्यों को जल में कमल की भांति संसार की ममता में लिप्त नहीं होने देता। (न कर्मलिप्यते नरे, यजु. 40/2) बस, यही कर्म से विक्षेप दोष दूर होना है।

मनुष्य के मन पर अहंकार या अभिमान का जो एक पर्दा होता है यह परमात्मा प्रदत्त वस्तुओं को अपनी समझता है। मेरा धन, मेरी स्त्री, मेरा बल, मेरा राज्य आदि-आदि। अभिमान में वह दूसरों को सताता है, वह समझता है कि मुझसे बड़ा कोई नहीं,

परन्तु जब यह ज्ञानपूर्वक कर्म करता है और मन तथा इन्द्रियों को बाहर के विषयों से हटाकर उनकी शक्तियों को हृदय में एकाग्र करता है और समझता है कि मेरे निकट परमात्मा है और मैं परमात्मा के निकट हूं, बस यही उपासना से अहंकार अर्थात् आवरण दोष दूर होना है। इस प्रकार तीनों दोषों को तीनों साधनों से दूर करने का निरन्तर अभ्यास परमात्मा का अनुभव करा देता है और मनुष्य परमात्मा को हृदय में जानकर सब पापों से दूर हो जाता है। उसका जीवन लक्ष्य पूरा हो जाता है।

प्रश्न—यह ओ३म् किस रूप से रहता है ?

उत्तर—वह सूक्ष्म रूप में रहता है, किन्तु उसकी सत्ता सब जगह दिखाई दे रही है।

प्रश्न—ओ३म् एक है या अनेक ?

उत्तर—ओ३म् एक है अनेक नहीं।

प्रश्न—उसके अनेक नाम क्यों लेते हैं ?

उत्तर—उसके नाम असंख्य है। नाम तीन प्रकार के होते हैं—1 स्वाभाविक, 2 गौणिक, 3 कार्मिक। इसलिए ओ३म् नाम स्वाभाविक तथा मुख्य है तथा शेष नाम गौणिक और कार्मिक हैं।

ओ३म् का लक्षण क्या है ?

उत्तर—ओ३म् का लक्षण जो सब क्लेशों से मुक्त है और कलायुक्त है उसे ओ३म् कहते हैं। (देखो प्रमाण-ऋग वेदादि०, ईश्वर विषय पृष्ठ संख्या 188 में)।

प्रश्न—सोलह कला कौन-कौन सी हैं ?

उत्तर—1 (ईक्षण) यथार्थ विचार, 2 (प्राण) जो सारे विश्व का धारण कर्त्ता है 3 (श्रद्धा) सत्य में विश्वास, 4 (आकाश) पोल, 5 (वायु) हवा, 6 (अग्नि) 7 (जल) 8 (पृथ्वी) 9 (इन्द्रिय) 10 (मन) ज्ञान, 11 (अन्न) 12 (वीर्य) अर्थात् बल और पराक्रम, 13 (तप) धर्मानुष्ठान सत्याचार, 14 (मन्त्र) वेद विद्या, 15 (कर्म) सब चेष्टा, 16 (नाम) दृश्य और अदृश्य पदार्थों की संज्ञा।

ये ही सोलह कला कहलाती हैं। पूर्ण कला ईश्वर में है इसलिए इसको षोडसी कहते हैं। इन सोलह कलाओं का प्रतिपादन प्रश्नोपनिषद् के छठे प्रश्न में किया गया है। (त्राणि ज्योतिषि सचते स षोडसी) वेद

उत्तर—ईश्वर का स्वरूप सच्चिदानन्द है। इसमें तीन पद हैं—सत्, चित्, आनन्द। सत् का अर्थ है भूत भविष्यत् वर्तमान, इन तीनों कालों में एक रस रहने वाला। (सर्वयश्चाधितिष्ठति) वेद दूसरे शब्दों में जिसमें कभी किसी प्रकार का परिवर्तन न हो सके वह 'सत्' है।

और तीनों कालों में दुःख के नितान्त अभाव का नाम 'आनन्द' है। ईश्वर सच्चिदानन्द इसलिए है कि उसमें परिवर्तन कभी नहीं होता। उसका ज्ञान कभी नष्ट नहीं होता और न कभी उसमें दुःख व्याप्त होता है। संसार में जितने भी साकार पदार्थ हैं, उन सब में परिवर्तन होता है इसलिए वे चित् नहीं। चित् तो केवल जीवात्मा अथवा परमात्मा ही हैं। इसलिए सच्चिदानन्द उसका स्वरूप है।

प्रश्न—ओ३म् की सूक्ष्मता कितनी है?

उत्तर—उसकी सूक्ष्मता का कोई वर्णन नहीं कर सकता। ऐसी कोई जगह या स्थान नहीं जहां वह समा नहीं सकता। देखो, वह सूक्ष्म से सूक्ष्म स्थल से स्थल योनियों के गर्भ में कारीगरी दिखा रहा है और इस सारे जगत में विचित्र से विचित्र कारीगरी और खेल दिखाई दे रहे हैं। हर एक त्रसरेणु के अन्दर विद्यमान है। जिस पदार्थ में आकार और रूप नहीं, उसकी सूक्ष्मता का अनुमान भी नहीं लगाया जाता और न ही स्थूलता का।

प्रश्न—ईश्वर अवतार आदि धारण करता है या नहीं?

उत्तर—नहीं। वह निराकार, निर्विकार है। अनादि, अनुपम, सर्वाधार है। वह अजन्मा, सर्वशक्तिमान, सच्चिदानन्द स्वरूप, न्यायकारी, दयालु, अनन्त, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तिर्यायी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र, परम् आत्मा और सृष्टिकर्त्ता है। वह पूर्ण ज्ञान और पूर्ण शक्ति युक्त है। उसको अवतार धारण करने की कोई आवश्यकता नहीं। जैसे यजुर्वेद में – स पर्यगाच्छुक्रयकायम्० (अ० 40, मं० 8)
न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम यद्द्यशः (वेद)

प्रश्न - क्या राम कृष्ण आदि ईश्वर के अवतार नहीं थे?

उत्तर—नहीं। अवतार शब्द का अर्थ है तैरने की जगह घाट आदि और तैरना। राम कृष्ण आदि ईश्वर नहीं थे। वे लोग धर्मात्मा, बलवान, और साहसी थे, वे संसार से तैरने वाले थे। उनके गुणों को दृष्टान्त द्वारा ग्रहण करके अपने जीवन के पथ को

सफल बनाना चाहिए। उन्हें ईश्वर समझ कर, उनकी मूर्ति बना कर नहीं पूजना चाहिए। उन लोगों में कलाओं की शक्ति थी और कलाओं की शक्ति कर्म के अनुसार ही परमात्मा जीव को प्रदान करता है। इसलिए उसी की उपासना करनी चाहिए।

प्रश्न – इस जगत को परमात्मा कैसे बनाता है? जबकि उसके शरीर ही नही। क्योंकि बिना शरीर के न तो क्रिया हो सकती है और न ही कार्य हो सकते हैं।

उत्तर—यह तुम्हारी भूल है। चेतन पदार्थ जहां पर भी उपस्थित होगा, वहां वह क्रिया कर सकेगा। जहां पर उपस्थित नही होगा वहां पर शरीर आदि साधनों की आवश्यकता पड़ेगी। देखो, मैंने यह वस्तु उठाई, बताओ किससे उठाई? आप कहेंगे हाथ से, तो मैं पूछता हूं, यदि हाथ न होता तो मैं वस्तु को उठा सकता था? तो भी आप कहेंगे कि नहीं। अच्छा, हाथ ने तो वस्तु को उठाया, अब बताओ हाथ को किसने उठाया? तो भी उत्तर मिलेगा कि हाथ को शक्ति ने उठाया। तो बताओ इसको क्रिया किसने दी? पता चला कि चेतन और उसकी शक्ति जहां-जहां विद्यमान हैं, वहाँ-वहां उसे शरीर की आवश्यकता ही नहीं। जीवात्मा शरीर के अन्दर होने के कारण सारे शरीर को क्रिया देता है, क्योंकि शरीर के बाहर के पदार्थों को शरीर से क्रिया देता है, क्योंकि वहां वह उपस्थित नही है। परमात्मा बाहर भीतर सर्वत्र विद्यमान है इसलिए उसे शरीर की आवश्यकता नहीं पड़ती। वह सारे संसार में व्यापक होने क कारण सारे संसार को क्रिया देता है।

प्रश्न—मैं देखता हूं कि शक्ल वाला ही शक्ल वाले पदार्थ को बनाता है। जैसे-सुनार, कुम्हार, लुहार आदि। निराकार परमात्मा जगत को कैसे बना सकता है?

उत्तर—जितने शक्ल वाले कर्त्ता हैं, वे अपने से बाहर की चीजों को बनाते है अपने भीतर की वस्तुओं को नहीं। बाहरी चीजों के लिए हाथ पैरों की आवश्यकता है, भीतर के लिए नहीं। परमात्मा से कोई भी चीज बाहर नहीं इसलिए उसे शरीर की आवश्यकता नहीं।

प्रश्न—परमात्मा सब में व्यापक हो और सबको बनाता भी हो भला यह कैसे हो सकता है? और बिना हाथ पैरों के चीजें बन कैसे जाती है? ये बातें समझ में नहीं आती?

उत्तर—यदि यह मान लिया जाए कि हर एक चीज हाथ पैरों से ही बनती हैं, तो जो हाथ पैर चीज को बनाते, वे हाथ पैर किससे बने? आखिर हाथ पैर भी तो बने

हुए ही हैं। जब हाथ पैर बिना हाथ पैरों के बन सकते हैं तो सृष्टि के अन्य पदार्थ बिना हाथ पैरों के क्यों नहीं बन सकते ? माता के पेट में जो बच्चा बन रहा है क्या वह हाथ पैरों से बन रहा है ? पृथ्वो पर नाना प्रकार के अंकुर उत्पन्न होकर वृक्ष का रूप धारण कर रहे हैं, क्या उन्हें हाथ पैरों से बनाया जा रहा है ? इन समस्त पदार्थों को नियम पूर्वक बनाने वाला सर्वव्यापक परमात्मा ही है।

प्रश्न—अच्छा, सृष्टि तो ईश्वर ने बनाई और ईश्वर को किसने बनाया ?

उत्तर—बने हुए पदार्थ कार्य होते हैं। उनको उत्पादन कारण और कर्त्ता की आवश्यकता होती है। ईश्वर बना हुआ पदार्थ नहीं है। वह स्वयंभू, अनादि और सनातन है। जो स्वयं ही कर्त्ता है उसका कर्ता क्या ? यदि कर्त्ता का कर्त्ता हो, तो कर्त्ता, कर्त्ता नहीं रहता, कारण बन जाता है। कर्त्ता वह है जो स्वतन्त्र हो। (स्वतन्त्रः कर्त्ता· पाणिनि) जो बने हुए पदार्थ हैं वे कर्त्ता नहीं होते। मनुष्य आदि प्राणो जो कर्त्ता कहाते हैं उनका शरीर कर्त्ता नहीं है, साधन है। कर्त्ता आत्मा है। इसलिए उसी की भक्ति और ध्यान करना चाहिए।

प्रश्न—जब ईश्वर निराकार है तो उसका ध्यान कैसे हो ?

उत्तर—ध्यान दो प्रकार का होता है। एक तो संसार के प्राणियों और संसार के पदार्थों का ध्यान। दूसरा सर्वव्यापक, सर्व नियन्ता, इन्द्रियों से परे, परम प्रभू का ध्यान। संसार से सम्बन्धित वस्तुओं का ध्यान तो उन्हें देखकर अथवा उसके वियोग होने पर होता है। जैसे मेरा एक मित्र है जिससे मेरा अत्यन्त प्रेम है, कहीं बाहर भ्रमण करने चला गया, अब मुझे उसका बार-बार ध्यान आता है कि न जाने इस समय वह कहां होगा। जब तक हम दोनों एक दूसरे को देखते रहते थे तब तक ध्यान का कोई सम्बन्ध ही नहीं था, क्योंकि जो चीज सामने है उसका ध्यान कैसा ? जब वियोग हुआ तब उसका ध्यान आने लगा। यह तो रही सांसारिक वस्तुओं के ध्यान की बात। ईश्वर के ध्यान की बात इससे सर्वथा भिन्न है। ईश्वर के ध्यान का अर्थ है-मन को निर्विषय करना अर्थात् मन और इन्द्रियों में फैली हुई आत्मा की शक्तियों को आत्मा में एकत्र करना। जब तक मन और इन्द्रियां संसार के विषयों में लगी हुई हैं तब तक वह ईश्वर का ध्यान नहीं कहला सकता। ईश्वर के ध्यान के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि मन और इन्द्रियों को अभ्यास पूर्वक विषयों से रोका जाए "ध्यानंनिर्विषयं मन (6-25)। यह याद रखना चाहिए कि ध्यान योग के आठ अंगों में सातवा अंग है। पहले यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, इन छः अंगों का पालन करना आवश्यक है, तब कहीं जा कर मनुष्य ध्यान का अधिकारी बनेगा। जब नियमानुसार छः अंगों का पालन हो जाएगा तो ध्यान तो अपने आप ही लगेगा। जब ध्यान छः अंगों के पश्चात् है मूर्ति के द्वारा पहले ही कैसे हो जाएगा। □

☐ संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना ।

☐ संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना ।

॥ ओ३म् ॥

ईश्वर सच्चिदानन्द-स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करने योग्य है।

सत्यार्थ-प्रकाश का ऐतिहासिक महत्त्व

हरिसिंह सैनी
(राज्य मन्त्री, हरियाणा सरकार)

[सत्यार्थ-प्रकाश के सम्बन्ध में राज्य मंत्री हरिसिंह सैनी हरियाणा सरकार से पत्रकार प्रतापसिंह शास्त्री ने साक्षात्कार करके ही निम्नलिखित विचारों को निबन्ध का रूप दिया है विचार राज्य मन्त्री के हैं तथा भाषा पत्रकार की है] —सम्पादक

अंधेरे में सोये हुए लोगों को जगाने की आवश्यकता है, इससे पहले कि वह सूर्य के प्रकाश को देख सके। भूले हुए पथिक को सीधे मार्ग में चलाने से पहले आवश्यक है कि उच्च स्वर में बतलाया जाये कि तू उल्टे मार्ग पर जा रहा है, वहाँ से लौटकर इधर सीधे मार्ग पर चला आ। "सत्याथप्रकाश" अविद्या अज्ञान में सोए हुए मनुष्यों को वेदसूर्य के दर्शन के लिए संकेत करता है। इस ग्रन्थ की रचना करके ऋषि ने मानव जाति पर अवर्णनीय उपकार किया है। सत्य का ग्रहण कराना और असत्य का परित्याग कराना सत्यार्थप्रकाश का मुख्य उद्देश्य है, यही सब सुधारों का मूल मन्त्र है। सत्यार्थ-प्रकाश को पढ़कर अनेक व्यक्तियों ने अपने जीवन का कायाकल्प किया है। आर्यसमाज के महापुरुष युवा विद्वान् पं० गुरुदत्त विद्यार्थी एम. ए. जो अत्यन्त मेधावी थे, वे लिखते हैं—सत्यार्थप्रकाश को मैंने सतरह बार पढ़ा, जब-जब मैं इस ग्रन्थ को पढ़ता हूँ तब-तब मुझे नई-नई बात ही मिलती हैं। यदि इस ग्रन्थ का मूल्य हजारों रुपये भी होता तो भी मैं इसे अवश्य पढ़ता और अपनी समस्त सम्पत्ति बेचकर भी इसे खरीदता।

वास्तव में सत्यार्थप्रकाश के अध्ययन से प० गुरुदत्त के समान अमूल्य रत्न प्राप्त किए जा सकते हैं। आर्य समाज के नेता "सम्राट" समाचार पत्र के सम्पादक व संचालक स्व० पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती के भाषण ता आधे से अधिक अक्षरक्षः सत्यार्थप्रकाश का मूलपाठ ही होते थे, उनका सत्यार्थप्रकाश पर गहन अध्ययन था। अपने जीवन में अनेक समस्याओं का समाधान उन्होंने सत्यार्थप्रकाश के अध्ययन से किया।

सत्यार्थप्रकाश में ब्रह्मा से लेकर जैमिनि पर्यन्त ऋषि मुनियों के वेद प्रतिपादित सारभूत विचारों का संग्रह है। वेदादि सत्य शास्त्रों के अध्ययन बिना सत्य ज्ञान की प्राप्ति सम्भव नहीं है। उनको समझने के लिए सत्यार्थप्रकाश कुंजी (गाइड) का कार्य करता है। जन्म से मृत्युपर्यन्त मानव जीवन की सभी प्रकार की लौकिक और पारलौकिक

समस्याओं को सुलझाने के लिए सत्यार्थप्रकाश रामबाण दवा है। महाभारत के समय नष्ट हुए विज्ञान को महर्षि दयानन्द ने इस अमर ग्रन्थ में प्रकट किया है जिससे पाश्चात्य वैज्ञानिकों का मिथ्या अभिमान झुठलाया जा सकता है और भारतीयों में स्वाभिमान की भावनाएं पैदा की जा सकती हैं। सत्यार्थप्रकाश को पढ़े बिना कोई भो व्यक्ति ऋषि दयानन्द और ग्रार्यसमाज की विचारधारा को, कार्यक्रम को भली प्रकार से नहीं समझ सकता तथा अन्य विविध मतमतान्तर वाले विद्वानों के उपदेशों में, पुस्तकों में, प्रतिपादित मिथ्या सिद्धान्तों की पहचान नहीं कर सकता।

आर्यसभाज के मन्तव्यों पर जितनी भी शंकाएं किसी को हो सकती हैं वे सब सत्यार्थप्रकाश का निष्पक्ष रूप से अध्यनन कर लेने पर स्वतः ही समूल नष्ट हो जाती हैं। ऋषि दयानन्दकृत सभी ग्रन्थों का सारांश सत्यांर्थप्रकाश में मिलता है। यही कारण है कि वैदिक धर्म का प्रचार करने के लिए सत्यार्थप्रकाश पर स्वामी वेदानन्द जी जैसे आर्यसमाज के उच्च कोटि के संन्यासियों ने भाष्य-टीकाएं लिखी हैं, जिन्हें पढ़ने से सत्यार्थप्रकाश के कठिन व दार्शनिक स्थल सरलता से समझे जा सकते हैं। सत्यार्थप्रकाश के कारण हो आर्यसमाज एक आन्दोलन प्रतीत होता है। आजादी से पूर्व सत्यार्थप्रकाश को पढ़ने मात्र से अनेक युवक स्वतन्त्रता के दीवाने बने। कांग्रेस की स्थापना से कई वर्ष सन् 1875 में ही सत्यार्थप्रकाश का सन्देश दिया। इस ग्रन्थ को विद्रोही पुस्तक समझा जाता रहा और आज भी समझा जाता है। स्वतन्त्र भारत के रेडियो, आकाशवाणी, टी.वी. आदि के माध्यम से गीता, कुरान के संदेश का प्रसारण हो सकता है किन्तु सत्यार्थप्रकाश के अक्षरशः शब्दों का प्रसारण करते ही आपको साम्प्रदायिक घोषित किए जाने का डर आज भो सम्भव है।

समाचार पत्रों में आपने पढ़ा होगा कि रामकुमार भारद्वाज को सऊदी अरब को सरकार ने केवल मात्र इसलिए जेल में डाल दिया क्योंकि वह सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन कर रहा था। घबराइए नहीं। सत्यार्थ प्रकाश वैचारिक क्रान्ति का स्रोत है, इस ग्रन्थ पर ऋषि दयानन्द के जीते जी किसी को हिम्मत न हुई कि प्रहार कर सके। किन्तु ऋषि के बलिदान के बाद विधर्मियों, विविध मतमतान्तर वालों ने सोचा अब सेनापति नहीं रहा, सेनापति के अभाव में सैनिकों के पांव उखड़ जाएंगे और इन आर्यसमाजियों के प्रमुख ग्रन्थ पर पाबन्दी लगवाकर हम इन्हें आसानी से जीत लेंगे। किन्तु आर्यों ने ऋषि की भांति ग्रनेक मोर्चों पर युद्ध स्तर पर कार्य प्रारम्भ कर दिए। आर्यों के बढ़ते कदम देखकर सन् 1902 में सबसे पहले राजनैतिक प्रहार राजनैतिक

उद्देश्य से किया गया। एक हिन्दू संन्यासी आलाराम सागर ने संन्यास धर्म को बदनाम करते हुए एक संन्यासी द्वारा ही लिखित सत्यार्थप्रकाश पर प्रतिबन्ध लगवाने की मांग की।

इस आलाराम सन्यासी ने, धर्म के प्रचारक ने स्वयं सत्यार्थप्रकाश के कुछ उदाहरण देकर यह सिद्ध करना चाहा कि आर्यसमाज एक षड्यन्त्रकारी राजद्रोही संस्था है। इसी संन्यासी ने सत्यार्थप्रकाश व आर्यसमाज के विरुद्ध एक पुस्तिका भी लिखी, परन्तु अपनी इच्छा पूर्ति में असफल रहा। वैसे इलाहाबाद के जिला मजिस्ट्रेट मि. पी. हैरिसन की अदालत में मुकद्दमा चला। न्यायधीश महोदय ने निर्णय दिया—"जो उदाहरण संन्यासी आलाराम सागर ने दिये हैं उनमें राजद्रोह को कोई गन्ध नहीं है। केवल इस बात पर दुःख प्रकट किया गया है कि कुछ धार्मिक व अन्य कारणों से भारतवासी पराधीन हुए हैं। स्वामी दयानन्द ने हथियार उठाने या बगावत करने के लिए लेख नहीं लिखे। मुकदमा खारिज हुआ और संन्यासी आलाराम सागर से जमानत मांगी गई।

सत्यार्थप्रकाश एक ही व्यक्ति के दो हाथ :

आर्य मुसाफिर पं० लेखराम ने कहा था—सत्यार्थप्रकाश उस मनुष्य के समान है जो एक हाथ में औषधि की बोतल और दूसरे हाथ में रोगी के लिए आरोग्यदायक भोजन लिए खड़ा हो। यदि उत्तरार्ध भाग औषधि है तो पूर्वार्द्ध वेद रूपी स्वास्थ्य का मडन कर रहा है। मंडन रूपी भोजन स्वस्थों के लिए है परन्तु खण्डनरूपी औषधि और मण्डनरुपी आहार रोगियों के लिए आवश्यक है।

ब्रिटिश सरकार का संदेह :

कुछ वर्षों के बाद पार्लियामेन्ट के सदस्य सर वेलेण्टाइन चिरोल ने भी आर्य-समाज तथा सत्यार्थप्रकाश को राजद्रोह की प्रेरणा देने वाला कहकर संदेह प्रकट किया। चिरोल स्वयं लेखक व पत्रकार थे, पार्लियामेन्ट के सदस्य भी थे। सांसद, पत्रकार व लेखक के नाते इनकी बात में वजन था किन्तु यह प्रहार भी अमर ग्रन्थ का कुछ न बिगाड़ सका केवल पार्लियामेन्ट तथा समाचार पत्रों में प्रकट होकर नक्कारखाने में तूती की आवाज बनकर रह गया।

रियासत के शासकों द्वारा प्रहार :

सन् 1909 ई० में पटियाला रियासत की सरकार ने वहां के 76 आर्यसमाजियों के विरुद्ध षड्यन्त्र का एक संगीन मुकदमा बनाया। इस मुकदमे में सत्यार्थप्रकाश को

राजद्रोह का प्रचार करने की प्रमुख पुस्तक बताया और इसे जब्त करने की मांग की किन्तु रियासत की सरकार पावन्दी नहीं लगा सकी। आर्यसमाज ने इस सरकार का मुकाबला किया। अदालत में केस चला, न्यायालय ने सत्यार्थप्रकाश को राजद्रोह की पुस्तक मानने से इन्कार कर दिया। पर विरोधी भी चैन से नहीं बैठे। इसी प्रकार की योजनाएं बनाते रहे।

मुसलमानों द्वारा सत्यार्थप्रकाश का विरोध :

पंजाब में सर फजल हुसन, सर सिकन्दर हयात खां, सर छोटूराम जैसे महात्मा हंसराज के शिष्य युनियनिष्ट पार्टी की सरकार के संचालक थे। सन् 1926 में पंजाब के मुसलमानों ने 14वें समुल्लास को दिखाकर सत्यार्थप्रकाश पर आरोप लगाया कि इस ग्रन्थ में इस्लाम की आलोचना की गई है अतः प्रतिबन्ध लगाया जाए। बड़ा विवाद खड़ा हो गया। इस पर हजारों आर्यसमाजियों ने हस्ताक्षर करके पंजाब सरकार को लिखा कि हम सत्यार्थप्रकाश की रक्षा के लिए हर प्रकार का बलिदान देने को तैयार हैं। पंजाब की सरकार साम्प्रदायिक सद्भाव कायम रखना चाहती थी अतः वह मुस्लिम लोगों के दबाव में नही आई और मुसलमानों का यह प्रयत्न भी असफल रहा।

सिन्ध सरकार द्वारा प्रहार :

26 जून 1943 ई. में इस अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश पर मुस्लिम सम्प्रदाय ने पुनः प्रहार किया। सिन्ध में मुस्लिम मंत्रिमंडल था। मन्त्रिमण्डल ने सिन्ध सरकार को विज्ञप्ति में कहा कि सत्यार्थसरकार पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए सरकार विचार कर रही है। यह सुनकर साम्प्रदायिकता के गढ़ समझे जाने वाले विशाल पंजाब में जो लाहौर और रावलपिण्डी तक फैला हुआ था, सर्वत्र आर्यजगत् में खलबली मच गई। सिन्ध सरकार को 8 जुलाई 1943 को घोषणा करने पर विवश होना पड़ा—"सिन्ध सरकार सत्यार्थप्रकाश के विरुद्ध कोई भी कार्यवाही नहीं करना चाहती।"

मुस्लिम लीग द्वारा विरोध :

लार्ड कर्जन की चटगांव व ढाका डिवीजन की बंगाल से अलग करने की नीति व कोहाट व जम्मू के दंगों से आर्यजगत् को काफी ठेस पहुंची थी। लार्ड मिन्टों के संकेत पर सन् 1906 में मुस्लिम लीग स्थापित हो चुकी थी। आर्यसमाज व आर्यसमाजी नेता सर छोटूराम के प्रभाव से अब तक साम्प्रदायिक नेता मि. जिन्ना पंजाब में आता हुआ घबराता था किन्तु सन् 1943 के अगस्त मास में मुस्लिम लीग ने लाहौर में एक मीटिंग की। मीटिंग में पुनः 14वें समुल्लास पर प्रतिबन्ध लगाने हेतु विचार विमर्श किया गया। प्रस्ताव पंजाब सरकार को भेज दिया गया। किन्तु इस बार भी असफलता ही हाथ लगी अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश पर कोई आंच न आई। □

आर्य समाज की हिन्दी को देन

डा० रघुवर दयाल वार्ष्णेय

दासता की लम्बी अवधि ने भारतीयों की आत्मा को सुप्तप्राय कर दिया था, यहां की सामाजिक दशा हीन और गर्हित हो गई थी, नारी बेचारी मूक कंठ से अपनी दयनीय दशा पर अविरल अश्रु प्रवाहित कर रही थी, दलित वर्ग शान्त भाव से या तो कथित उच्च वर्ग का अत्याचार सहन कर रहा था अथवा धर्म-परिवर्तन में लीन था, आर्थिक अवस्था पूर्णत छिन्न-भिन्न हो गई थी, शिक्षा स्वरूप तो इतना दयनीय और परालम्बी हो चला था कि भारतीय अपसी इच्छा से विषय-चयन या भाषा-चयन कर ही नहीं सकता था, वह तो उसे ग्रहण करता था जिसे विदेशी चाहते थे। ऐसी स्थिति में राजनैतिक जागृति का तो प्रश्न ही नहीं उठता है। हिन्दी उस समय पूर्णतः मिटाई जा रही थी, उर्दू और आंग्ल भाषा का प्रचार हो रहा था। अतः बिना विरोध के भारतीय भी इन्हीं दोनों भाषाओं में होता था। परिणामतः रोजी–रोटी के लिए चाहते-अनचाहते इन भाषाओं को पढ़ना पड़ता था। इस समय ऐसे क्रांतिकारी व्यक्ति की आवश्यकता थी जो सोये हुए सिंहों को ललकार कर उनको उनकी शक्ति का स्मरण करा सके। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने यही किया। परिणामतः समाज, धर्म, शिक्षा और राजनीति के क्षेत्रों में बहुमुखी क्रान्ति का श्रीगणेश हुआ।

हिन्दी के लिए भी महर्षि दयानन्द की एक अविस्मरणीय देन है। हिन्दी भाषा और साहित्य सदा उनका ऋणी रहेगा। यद्यपि पहले उन्होंने अपना प्रचार कार्य संस्कृत से ही आरम्भ किया, किन्तु शीघ्र ही कलकत्ते मे केशव चन्द्र सेन के परामर्श से उन्होंने हिन्दी को अपने कार्यों का माध्यम स्वीकार कर लिया। सत्यार्थ प्रकाश' को हिन्दी में लिखना इसी प्रेरणा का परिणाम था। उन्होंने राष्ट्र भाषा के रूप में हिन्दी का पक्ष लेते हुए एक भाषा और एक लिपि की आवाज को बुलन्द किया और अपने अनुयायियों के लिए हिन्दी का पठन-पाठन अनिवार्य कर दिया। बम्बई में 10 अप्रैल सन् 1857 ई० को आर्य समाज की स्थापना के साथ-साथ अट्ठाईस नियमों का निर्माण किया गया, जिसका पांचवा नियम था, "प्रधान समाज में वेदोक्तानुकूल संस्कृत और आर्य भाषा (हिन्दी) में नाना प्रकार के सदुपदेशों की पुस्तक होगी और एक 'आर्य प्रकाश' पत्र यथानुकूल आठ आठ दिन में निकलेगा। यह सब समाजों में प्रवृत्त किये जायेंगे।" स्पष्ट है कि स्वामी जी का आर्य भाषा (हिन्दी) की ओर विशेष झुकाव था। उन्होंने यह कहा कि प्रधान समाजों में आर्य भाषा में वेदानुकूल पूर्व उपदेशपूर्ण पुस्तकों का संग्रह आवश्यक है।

आर्य समाज की स्थापना का प्रमुख उद्देश्य हिन्दू धर्माडम्बरों, अनाचारों और सम्प्रदायवाद का मूलोच्छेदन करके राष्ट्र जागरण एवं देशोद्धार करना था। उनकी यह हार्दिक इच्छा थी कि सम्पूर्ण राष्ट्र एक कड़ी में आबद्ध हो जाय। इस कार्य की सम्पूर्ति के लिए उन्होंने हिन्दी को चुना। किन्तु इन दिनों हिन्दी बहुत ही कंटकाकीर्ण पथ से गुजर रही थी। अनेक विरोधी शक्तियां इसका गल दब रही थी। मुसलमानों के सतत प्रयास से न्यायालयों एष कार्यालयों की भाषा हिन्दी के स्थान पर उर्दू हो गई थी। उन्होंने इसे मूर्तिपूजकों की भाषां कहकर मुसलमानों और ईसाईयों के नितान्त प्रतिकूल बतलाया और इसका मजाक उड़ाना प्रारम्भ कर दिया। गार्सा-ए-तासी जैसे फ्राँसीसी विद्वान भी इसका खुलकर विरोध कर रहे थे। इसी समय भारत सरकार ने एक सूचना निकाली जिसने हिन्दी के पथ को पूर्ण रूप से अवरूद्ध कर दिया।[1] संयुक्त प्रदेश के शिक्षा विभाग के तत्कालीन अध्यक्ष श्री एम० एस० हैवेल साहब ने कहा—'यह अधिक अच्छा होता यदि हिन्दू बच्चों को उर्दू सिखाई जाती न कि एक ऐसी बोली में विचार प्रकट करने का अभ्यास कराया जाता जिसे अन्त में एक दिन उर्दू के सामने सिर झुकाना पड़ेगा।"[2]

ऐसी विरोधात्मक स्थिति में स्वामी जी ने हिन्दी के प्रचार और प्रसार का बीड़ा उठाया और अनेक विरोधों के उपरान्त भी वे लगातार हिन्दी में ही अपने विचार व्यक्त करते रहे। उन्होंने राजस्थान आदि के राजा-महाराजाओं को यह उपदेश दिया कि महाराज कुमार के संस्कार सब वेदोक्त कराइये। पच्चीस वर्ष तक ब्रह्मचारी रखकर पहले देवनागरी भाषा और पुनः संस्कृत विद्या जिनमें सनातन आर्य ग्रन्थ हैं इन्हें पढ़ाइये। पश्चात् यदि समय हो तो अंग्रेज़ी जिसमें कि ग्रामर और फिलोसफी के ग्रन्थ हैं पढ़ाने चाहियें।[3] इसी से प्रेरित होकर उन्होंने वेदों का भाष्य भी हिन्दी में ही किता। वास्तव

---

1. ऐसी भाषा का जानना सब विद्यार्थियों के लिए आवश्यक ठहराना जो मुल्क की सरकारी और दफ्तरी जबान नहीं हैं, हमारी राय में ठीक नहीं है, इसके सिवाय मुसलमान विद्यार्थी जिनकी संख्या देहली कालेज में बड़ी है, इसे अच्छी नजर से ही देखेंगे। (आचार्य शुक्ल-हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ० 433)

2. वही पृष्ठ 444।

3. ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन, सम्पा भगवद् दत्त, पृ० 464।

में यह उनका बहुत साहसिक कदम था। उनके इस कार्य से प्रभावित होकर लाला लाजपतराय ने लिखा है "उत्तरी भारत की लोकभाषा हिन्दी में वेदों का अनुवाद अभूतपूर्व और उच्चतम साहस का कार्य था। यह तथ्य उनकी सत्यता और शुद्ध हृदयता का उत्तम प्रमाण है।"[1]

स्वामी जी ने भाषा के सरल और व्यवहृत रूप को अपनाया। खण्डन मण्डन को शैली के कारण उनकी इस स्वाभाविक भाषा में व्यंग्य और वक्रता का सहज समावेश पाया जाता है। फिर पता नही क्यों उनके साहित्य को हिन्दी साहित्य में स्थान नहीं दिया गया, जबकि वास्तविक यह है कि उन्होंने हिन्दी को प्रौढ और प्रांज्जल बनाने में पूर्ण सहयोग दिया। एक सुधारक, सत्य प्रतिपादक एवं मानव हितैषी से यह आशा भी कैसे की जा सकती थी कि वह पूर्ण साहित्यिक भाषा का प्रयोग करे। समय और विषय के आधार पर उनकी शैली के कई रूप हमें देखने को मिलते हैं, जिनमें से मुख्य निम्न-लिखित हैं :—

(1) **तार्किक शैली :—**इस शैली का प्रयोग उन्होंने दार्शनिक विषय-प्रतिपादन के समय किया है, यथा ईश्वर की निराकारोपासना, जीव का स्वरूप, जगत का स्वरूप आदि।

(2) **करुणायुक्त तार्किक शैली :—**भारतीयों की दयनीय दशा दिखाने के लिए उन्होंने इस शैली का प्रयोग किया है। किस प्रकार विदेशियों ने हमारे धर्माडम्बर और रूढ़िवादिता से लाभ उठाकर हमें पद दलित किया। बाल विवाह, नारी अशिक्षा, अनमेल विवाह, दहेज प्रथा आदि के कारण हमारी कैसी दयनीय स्थिति हो गई है, आदि।

(3) **इति वृत्तात्मक शैली :—**जब स्वामी जी देश दशा में सुधार करने की ओर प्रवृत्त होते थे, तब उनकी शैली इतिवृत्तात्मक, हो जाती थी, यथा-स्त्रीदशा किस प्रकार सुधर सकती है, शिक्षा का रूप किन-किन उपायों से परिवर्तित हो सकता है, धार्मिक रूप किस तरह वैज्ञानिक हो सकता है, आदि।

---

1. It was the boldest work of his life to have issued a translation of Vedas in Hindi, The vernacular of North India, since this translation had Never been attempted before. This fact should be the best proof of the transparancy and the honesty of his motives.

The Arya Samaj, page 106

(4) हास्य व्यंग्यात्मक शैली :— किसी विषय, धर्म या धार्मिक ग्रन्थ पर जब वे कटाक्ष करते थे तब उनकी शैली व्यंग्यात्मक हो जाती थी। इसके अन्तर्गत उन्होंने सभी धर्मों पर कटाक्ष किये हैं और उनमें निहित सभी अविश्वसनीय तथा अवैज्ञानिक बातों की खिल्ली उड़ाई है।

(5) आक्रामक शैली :— जब उन्हें किसी अन्धविश्वास पर क्रोध आ जाता था, तब उनका वही व्यंग्य आक्रमण में बदल जाता था। उन्होंने भागवत् की कथाओं में विनीता से पक्षी, कद्रू से सूर्य, सरमा से कुत्ता, स्यार एवं अन्य स्त्रियों से हाथी, घोड़ा, ऊंट, वृक्षादि की उत्पत्ति आदि पर कटाक्ष करते हुए इसी शैली की शरण ली है।

समाज और धर्म की जहाँ ऐसी दयनीय स्थिति हो, उस समय तो जागरूक लेखक का ध्यान इन सुधारों की ओर जाएगा, भाषा तो उसके लिए माध्यम मात्र ही रहेगी। भाषा का सुष्ठु रूप तो तभी सम्भव है, जबकि भाषा स्थिर होकर सम्पन्न हो गई हो। किन्तु उस समय तो स्वयं भाषा ही डगमगा रही थी। ऐसे दूषित वातावरण में उन्होंने जो किया वह आशा से कहीं अधिक था, फिर भी पता नहीं क्यों हिन्दी विद्वानों ने उनके साहित्य को केवल प्रोपेगण्डा कहकर उसकी अवहेलना की है। वास्तविकता यह है कि स्वामी जी को तो जो बातें अनुचित प्रतीत हुई, जो धारणाएं सारहीन लगी उनका उन्होंने जमकर विरोध किया, चाहे वे सिद्धान्त और मान्यताएं किसी भी धर्म की हों। खण्डन के लिए उन्होंने कभी अन्योक्ति का सहारा नहीं लिया। अभिधात्मक भाषा में सीधे उस पर टूट पड़े और अपनी गम्भीर और तर्कपूर्ण शैली में उसकी धज्जियां उड़ा दीं। भाषा के सौष्ठव की ओर कभी उनका ध्यान ही नहीं गया। उन्हें तो अपने विचार रखने थे, सो जनभाषा या आर्य भाषा में रख दिये, यही उनका क्रान्तिकारी कदम था।

हिन्दी को सर्वव्यापी बनाने के लिए उन्होंने अनेक स्थानों पर विभिन्न प्रकार के संगठन और संस्थाओं का निर्माण किया। सार्वदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा (स्थापना 31 अगस्त सन् 1909 ई० दिल्ली में) के प्रमुख उद्देश्यों में एक उददेश्य यह था कि हर सम्भव उपाय से हिन्दी को व्यापक रूप दिया जाये। इसीलिए इस सभा ने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रुप से हिन्दी का प्रचार किया। पुस्तकों का प्रकाशन करना, हिन्दी समाचार पत्रों का प्रचलन करना, हिन्दी के प्रसारार्थ सम्मेलनादि की आयोजना करना प्रत्यक्ष साधन थे एवं समय-समय पर महोत्सव मनाना, आन्दोलन करना और प्रचार कार्य के लिए लघु पुस्तिकाएं प्रसारित करना परोक्ष साधन थे। 'आर्य प्रतिनिधि सभा' पंजाब के तत्वा-

वधान में अनेक बौद्धिक सेख हिन्दी में प्रसारित किये गये, यथा वानर और राक्षस मनुष्य थे ?' तथा 'ऋषि दयानन्द के उपकारादि'। पंजाब की स्थिति यह थी कि वहां के सभी निवासी उर्दू ही पढ़ते थे, यहां तक कि बहुत समय तक तो इस सभा का रजिस्टर भी उर्दू में ही लिखा गया था। किन्तु डॉ० चिरंजाव भारद्वाज ने सन् 1908 ई० से सभा का समस्त कार्य हिन्दी में प्रारम्भ कर दिया, जिसकी पूर्ति के लिए उन्होंने पारिभाषिक शब्दावली भी अपनी बनाई, यथा नोनवोटिंग के लिए असंगत्, बैनामा के लिए व्ययनामा, प्रतिनिधि के लिए स्थानापन्न जिम्मेदारी के लिए अनुयोगाधोनता, निरीक्षण के लिए अधीक्षक इस वर्ष के लिए वर्तमानाब्द, सम्मेलन के लिए सवाद, संमति के लिए मति, नियुक्ति के लिए निर्यात आदि। इसी प्रकार की अन्य सभाएं भी स्थापित की, जिन्होंने किसी न किसी प्रकार हिन्दी प्रचार में सहयोग किया। उनमें से कुछ प्रमुख सभाएं निम्न हैं :—

	संस्था	स्थान	स्थापना
1.	आर्य प्रतिनिधि सभा	उत्तर प्रदेश	29 दिसम्बर, सन् 1886 ई०
2.	आर्य प्रतिनिधि सभा	राजस्थान व मालवा	सन् 1888 ई०
3.	आर्य प्रतिनिधि सभा	बिहार	सन् 1899 ई०
4.	आर्य प्रतिनिधि सभा	मध्य प्रदेश व विदर्भ	27 दिसम्बर सन् 1899 ई०
5.	आर्य प्रतिनिधि सभा	बम्बई	30 दिसम्बर सन् 1902 ई०
6.	आर्य प्रतिनिधि सभा	बंगाल व आसाम	15 मार्च सन् 1930 ई०
7.	आर्य प्रतिनिधि सभा	हैंदराबाद	4 अप्रैल सन् 1931 ई०
8.	आर्य प्रतिनिधि सभा	सिन्ध	सन् 1919 ई०
9.	आर्य प्रतिनिधि सभा	पंजाब, सिन्ध, बिलोचिस्तान	1 जून, सन् 1882 ई०
10.	श्रीमती परोपकारिणी सभा	अजमेर	27 फरवरी सन् 1983 1883 ई०
11.	भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद्	—	सन् 1909 ई० ई०

इनके साथ-साथ आर्य समाज ने शिक्षण संस्थाओं द्वारा भी हिन्दी प्रचार कार्य किया। गुरुकुल संस्थाएं उनके ऐसे ही साधन थे। इनकी शिक्षा का माध्यम हिन्दी था। गुरुकुल कांगड़ी ने हिन्दी की चार प्रकार से सेवा की— (1) स्नातकोत्तर अध्यापकों

द्वारा साहित्य सृजन (2) अन्तर्गत संस्थाओं द्वारा हिन्दी कार्य (3) पुस्तक प्रकाशन द्वारा एवं (4) पत्र-पत्रिकाओं द्वारा।

निम्नलिखित संस्थाओं ने भी बहुमुखी हिन्दी का प्रचार किया :—

1. गुरुकुल वृन्दावन
2. गुरुकुल विद्यालय, ज्वालापुर
3. श्रीमद् दयानन्द विद्यापीठ
4. दयानन्द ऐंग्लो वर्नाक्यूलर स्कूल्स एवं कालिजिज
5. कन्या महाविद्यालय, जालन्धर
6. कन्या गुरुकुल, देहरादून
7. आर्य कन्या महाविद्यालय, बड़ौदा
8. कन्या गुरुकुल, सासनी (अलीगढ़)

इन संस्थाओं के लिए लाला देवराज ने हिन्दी में पाठ्य पुस्तकें लिख कर बड़ा उपकार किया। वास्तव में हिन्दी में पाठ्य पुस्तकों का बड़ा अभाव था। इनके द्वारा लिखी गई अनेक पाठ्य पुस्तकें पंजाब व उत्तर प्रदेश के अनेक विद्यालयों में लगाई गई। पाठशाला का कन्या, पहली पाठावली, दूसरी पाठावली, सुबोध कन्या अक्षर दीपिका, शब्दावली, बालविनय, पत्र कौमदी, कन्यानिधि, बालोद्यान-सगीत, सन्तवाणी, ऐतिहासिक दृश्यावली, दानमीमांसा, मायाधारी आदि उनकी प्रसिद्ध पुस्तकें हैं। वैसे इन्होंने कुल मिलाकर चार दर्जन पुस्तकें लिखीं। सन् 1904 ई० में पंजाब सरकार ने इन्हें बाल साहित्य पर दो सौ रुपये का पुरस्कार दिया।

पत्र-पत्रिकाओं द्वारा भी आर्य समाज ने हिन्दी का बहुत प्रचार किया। यद्यपि भारतेन्दु जी पहले ही हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं का प्रचार व प्रसार कर चुके थे, किन्तु उन्हें उतनी लोकप्रियता न मिल सकी जितनी कि आर्य समाज के पत्रों को। इनके पत्र केवल पढ़े लिखे लोगों तक सीमित न रहे, बल्कि ग्रामीण, अनपढ़ जनता भी उनको पढ़ने के लिए हिन्दी सीखने की ओर अग्रसर हुई। वास्तव में खडी बोली के साथ आर्य समाज का यह बहुत बड़ा उपकार है, जिसको विस्मृत नहीं किया जा सकता। श्री आर० आर० भटनागर ने लिखा है, "उत्तर काल (सन् 1867—83) में ही हरिश्चन्द्र और उनके लेखकों की प्रतिभा और व्यक्तित्व के कारण पत्रकारिता अन्तिम रूप में स्थापित हुई। इन नेताओं द्वारा रचित हिन्दी साहित्य ने निन्दकों का मुख बन्द कर दिया। परन्तु उर्दू के मध्य में हिन्दी की नींव दृढ़ करने वाली इससे भी अधिक एक महत्त्वपूर्ण शक्ति थी,

वह थी आर्य समाज (स्थापित 1875 ई०)। मासिक और अन्य समाचार पत्रों के प्रकाशन द्वारा प्रचार कार्य इसके मुख्य उद्देश्यों में से था। आर्य समाज की दृढ़ राष्ट्रीय और वैदिक विचारधारा ने इसे हिन्दी का प्रभावशाली पृष्ठ पोषक बना दिया।" आर्य समाज ने अनेक प्रमुख पत्रों को समय-समय पर निकाल कर हिन्दी प्रचार में सहायता की :— (विशेष के लिये देखें पृ० 131 तथा 132 पर तालिका)।

इनमें से कुछ पत्रिकाओं का तो मूल उद्देश्य ही देवनागरी लिपि और हिन्दी का प्रचार व प्रसार करना था। 'सद्धर्म प्रचारक' ने आर्य सिद्धान्तों के साथ-साथ हिन्दी को उन्नत करने एवं राष्ट्रभाषा बनाने के लिए अथक प्रयत्न किया। 18 अक्तूबर सन् 1907 ई० के अंक में एक लेख 'मातृ भाषा और देवनागरी लिपि' प्रकाशित हुआ जिसमें लेखक ने स्पष्ट रूप से घोषित किया कि यदि समस्त संसार में नहीं तो भारतवर्ष में अवश्य ही हिन्दी भाषा और नागरी लिपि का प्रचार होना चाहिए। इसी प्रकार 29 फरवरी सन् 1908 ई० के अंक में सम्पादकीय टिप्पणी के अन्तर्गत 'चिराग तले अन्धेरा' शीर्षक में आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब से हिन्दी प्रयोग की प्रार्थना की गयी। इसमें सम्पादक ने लिखा, "आर्य भाषा का प्रचार स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज के सभासदों के मुख्य कर्त्तव्यों में से एक बताया था, फिर न मालूम सभा के अधिकारी क्यों अपने ऊपर आक्षेप कराते हैं...यह कोई उत्तर नहीं है कि क्लर्क बदलने पड़ेंगे। यदि बदलने पड़े तो क्या हानि है? आर्य भाषा जानने वाले क्लर्क मेरी सम्मति में सस्ते मिल सकेंगे...। यदि यह कहा जाये कि पंजाब में उर्दू भाषा का अधिक प्रसार है, इसलिए सभा का कार्य उर्दू में होना चाहिए तो क्या पंजाब में मुसलमानी का अधिक प्रचार होने से आर्यों को अपने भी वैसे ही आचार विचार कर लेने चाहियें। ? जब आर्य समाज के सभासदों को ज्ञात हो जाएगा कि उर्दू में उत्तर ही न मिलेगा तो स्वयं आर्य भाषा सीखेंगे। गुरुकुल कार्यालय का पत्र व्यवहार आर्य भाषा में होने का प्रभाव यह पड़ा है कि बहुत से भाइयों ने आर्य भाषा का पढ़ना लिखना सीख लिया है...।"[1] इसी अंक में नरसिंह लाल ने 'प्रतिनिधि सभा और देवनागरी' नामक लेख लिखा, जिसमें लेखक ने प्रतिनिधि सभाओं में हिन्दी में कार्य करने की प्रार्थना की। 17 नवम्बर सन् 1909 ई० के अंक में ब्रह्मचारी हरिश्चन्द्र ने 'ऋषि दयानन्द और आर्य भाषा' लेख प्रकाशित कराया। 15 दिसम्बर सन् 1909 ई० के अंक में 'एक भाषा एक लिपि' भी ऐसे ही आशय का लेख था। वायसराय की कौंसिल

1. डॉ० अम्बिका प्रसाद बाजपेयी—समाचार पत्रों का इतिहास, पृष्ठ 237।

क्र.सं.	पत्रिका	सन्	स्थान	सम्पादक	रूप
1.	आर्य दर्पण	1870 ई०	शाहजहांपुर	मुन्शी बख्तावरसिंह	मासिक
2.	आर्य भूषण	1570 ई०	शाहजहांपुर	मुन्शी बख्तावरसिंह	मासिक
3.	भारत सुदर्शन प्रवर्त्तक	1879 ई०	फर्रुखाबाद	पं० गणेश प्रसाद शर्मा	साप्ताहिक
4.	वेद प्रकाश	1884 ई०	कानपुर	हीरालाल	साप्ताहिक
5.	आर्य पत्र	1885 ई०	बरेली	(अनाथालय)	साप्ताहिक
6.	आर्य समाचार	1885 ई०	मेरठ	गंगासहाय व घासीराम	साप्ताहिक
7.	आर्य विनय	1885 ई०	मुरादाबाद	पं० रुद्रदत्त	मासिक
8.	आर्य सिद्धान्त	1887 ई०	प्रयाग	पं० भीमसेन शर्मा पं० ज्वालादत्त	मासिक
9.	आर्यावर्तं	1887 ई०	कलकत्ता	पं० क्षेत्रपाल शर्मा	साप्ताहिक
10.	भारत भामिनी	1888 ई०	कलकत्ता	महादेवी जी	साप्ताहिक
11.	राजस्थान समाचार	1889 ई०	अजमेर	मुँ० समर्थदान	साप्ताहिक
12.	परोपकारी	1890 ई०	आगरा अजमेर –	पं० पद्मसिंह शर्मा	मासिक
13.	तिमिर नाशक	1890 ई०	—	पं० कृष्णराम जी	मासिक
14.	ब्रह्मवर्त	1890 ई०	खीरी	पं० कृपाराम जी	मासिक
15.	आर्यमित्र	1897 ई०	खीरी	असेक प्रसिद्ध सम्पादक	मासिक
16.	पांचाल पण्डित	1897 ई०	जालन्धर	लाला देवराज, बाद में लाला बद्री प्रसाद	मासिक
17.	सद्धर्म प्रचारक	1889 ई०	जालन्धर	महात्मा मुन्शीराम	मासिक
18.	आर्य सेवक	1990 ई०	नरसिंहपुर	पं० गणेश प्रसाद शर्मा	पाक्षिक
19.	दयानन्द पत्रिका	1907 ई०	मेरठ	पं० मुसद्दीराम	मासिक
20.	भारतोदय	1909 ई०	ज्वालापुर महाविद्यालय	पं० पद्मसिंह शर्मा पं० नरदेव शास्त्री	मासिक
21.	नवजीवन	1910 ई०	आर्यकुमार परिषद्	डा० केशवदेव शास्त्री का पत्र	मासिक
22.	आर्य	1014 ई०	लाहौर	पं० चमूपति	मासिक
23.	आर्यकुमार	1919 ई०	फतेहपुर	डॉ० केशवदेव शास्त्री	साप्ताहिक
24.	श्रद्धा	1920 ई०	गुरुकुल काँगड़ी	स्वामी श्रद्धानन्द	—

25. हिन्दी	1922 ई०	दक्षिणी अफ्रीका-श्री भवानीप्रसाद सन्यासी के नाटाल प्रान्त के डरबन नगर से	डॉ० मातबदल	अंग्रेजी विभाग विशाल (हिन्दी)
26. जलविद्-सखा	1922 ई०	जालन्धर महाविद्यालय	लाला देवराजजी	—
27. अर्जुन	1923 ई०	जालन्धर	इन्द्रवाचस्पति	दैनिक
28. गुरुकुल पत्रिका	1936 ई०	गुरुकुल कांगड़ी		—
29. गुरुकुल पत्रिका	1948 ई०	गुरुकुल कांगड़ी	श्रीरामलाल कपूर ट्रस्ट, ब्रह्मदत्त	—
30. वेदवाणी	—	बनारस		मासिक
31. वेदपथ	1949 ई०	ज्वालापुर	स्वामी वेदानन्द	मासिक
32. मानवपथ	1952 ई०	दिल्ली	ब्रह्मचारी उषबुंध	—

के सदस्यों की हिन्दी विरोधी नीति से दुःखी होकर 27 मार्च सन् 1915 ई० के अंक में 'मातृभाषा की आह' नाम से एक लेख छपा था। 15 श्रावण सम्वत् 1973 के अंक में 'मातृभाषा को धर्म समझो' नामक एक टिप्पणी निकली, जिस का प्रमुख आशय यह था कि भारतीय जितना समय और परिश्रम अंग्रेजी के समझने और लिखने में लगाते हैं यदि उसका एक तिहाई समय हिन्दी के लिए दें तो वे अच्छे विद्वान और लेखक बन सकते हैं। 25 नवम्बर सन् 1916 ई० के सम्पादकीय में "हिन्दू यूनिवर्सिटी में आर्यभाषा" शीर्षक से एक टिप्पणी निकली, जिसमें हिन्दू विश्वविद्यालय बनारस में उच्च शिक्षा का माध्यम हिन्दी न होने पर शोक प्रकट किया गया। इसी आधार पर 3 मई सन् 1913 ई० के अंक में इसी पत्र ने महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय का विरोध किया, क्योंकि उन्होंने काशी विश्वविद्यालय की स्वीकृति प्राप्ति के हेतु हिन्दी द्वारा उच्च शिक्षा का विचार स्थगित कर दिया ?

'भारतोदय' में पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी तथा पं० नाथूराम शर्मा 'शंकर' के साहित्यिक लेख एवं कविताएं प्रकाशित होती रहती थीं। 'श्रद्धा' के प्रकाशन का ही प्रथम उद्देश्य देवनागरी लिपि को प्राथमिकता देना था, इसीलिए सम्पादक महोदय ने लिखा था—"मैं देवनागरी लिपि को संसार की सब लिपियों का स्रोत और स्वाभाविक समझता हूं। इसलिए 'श्रद्धा' के साप्ताहिक दूत को उसी लिपि द्वारा यात्रा पर भेजा करूंगा। प्रश्न हो सकता है कि समाज की भाषा अंग्रेजी होने के कारण तुम्हारा साप्ताहिक सन्देश देश

के बड़े विचारकों तक न पहुँच सकेगा। परन्तु मेरा मन साक्षी देता है कि यदि मेरे पास कुछ वास्तविक सन्देश नहीं तो अंग्रेजी द्वारा भी कोई न सुनेगा और यदि कोई सन्देश है तो अंग्रेजी वर्णों को उसे समझने के लिए बाधित होना पड़ेगा।"[1] इसी पत्र में 16 जुलाई 1920 ई० के अंक में एक लेख 'हिन्दी पर अंग्रेजी की कलम मत लगाओ' प्रकाशित हुआ। इसमें लेखक ने हिन्दी पत्र के सम्पादकों एवं अन्य लेखकों से यह प्रार्थना की थी कि वे हिन्दी में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग न करें—"अन्त में, हम अपने भावों को फिर स्पष्ट कर देना चाहते हैं। हम यह नहीं कहते कि अंग्रेजी से हिन्दी में कोई शब्द न लिया जावे, क्योंकि उन्नति के लिए शब्द-परिवर्तन भी आवश्यक है। परन्तु इसका यह अभिप्राय भी नहीं कि अपनी भाषा में उचित और उत्तम शब्दों के होते हुए भी हम हिन्दी पर अंग्रेजी की कलम चढ़ावें जैसा कि आजकल हमारे सामयिक साहित्य में हो रहा है। यह प्रवृत्ति बहुत भयंकर है, जिसके लिए हमें अभी से सावधान हो जाना चाहिए. . .।"

'हिन्दी' नामक पत्रिका में सन् 1934 ई० के अंक में एक लेख सम्मेलन पत्रिका से उद्धृत किया गया जिसमें पंजाब के डाक विभाग द्वारा हिन्दी की अवहेलना का खुलकर विरोध किया गया। सन् 1934 ई० के ही अंक में 'जय जननी' शीर्षक से पं० चेतराम शर्मा की एक कविता प्रकाशित हुई। 'गुरुकुल में 25 जुलाई सन् 1936 ई० के अंक में पंजाब के आर्य समाजों से हिन्दी पढ़ने और उसके प्रचार की मांग की गई। 7 मई सन् 1937 ई० के अंक में 'भाषा की प्रगति' पर एक लेख निकला तथा 4 मई सन् 1937 ई० के अंक में 'हिन्दी पर कुठाराघात' नाम से एक लेख प्रकाशित हुआ। इसमें लेखक ने बीकानेर के नये दीवान के उस आज्ञापत्र का विरोध किया जिसमें उन्होंने राजकीय कार्यालयों और न्यायालय की भाषा अंग्रेजी घोषित की थी। इसी प्रकार 20 अगस्त सन् 1937 ई० के अंक के लिए श्री चन्द्रगुप्त वेदालंकार ने 'संस्कृतनिष्ठ हिन्दी ही राष्ट्रभाषा हो सकती है' लिखा। 27 दिसम्बर सन् 1937 ई० के सम्पादकीय में सम्पादक ने गुरुकुल द्वारा हिन्दी सेवाओं का वर्णन विस्तार से किया। इस प्रकार हिन्दी सम्बन्धी अनेक लेख इस पत्रिका में समय-समय पर प्रकाशित होते रहे। 'हिन्दी की अनिवार्यता', 'हिन्दी भाषा के प्रयोग', 'तुलसीदास', 'राष्ट्रभाषा', 'स्वर्गीय महावीर प्रसाद द्विवेदी' आदि ऐसे ही लेख हैं। 'गुरुकुल' पत्रिका में भी हिन्दी सम्बन्धी लेखों को प्राथमिकता दी जाती रही। 'जीव विज्ञान के हिन्दी शब्द', लेखक श्री चम्पतस्वरूपजी, 'हमारे देश की वैज्ञानिक शब्दावली आंग्ल हो

---

1. श्रद्धा—23 अप्रैल सन् 1920 ई०।

या भारतीय', लेखज डॉ० रघुवीर, 'राष्ट्रभाषा का प्रश्न', लेखक श्री सत्यकाम जी, 'राष्ट्रभाषा के विवाद में साम्प्रदायिकता का घातक दृष्टिकोण', लेखक डॉ. रघुवीर आदि इसके जीते जागते उदाहरण हैं। इसी प्रकार अन्य पत्रिकाएं विभिन्न विषयों पर हिन्दी में लेख प्रकाशित करके नागरी लिपि और हिन्दी की सेवाएं करती रहीं।

आर्यसमाज की सद्प्रेरणा से गद्य तो वास्तव में बहुत प्रौढ़ हुआ। विभिन्न विद्वानों ने अनेक प्रकार की रचनाएं कर हिन्दी गद्य की जो सेवाएं की हैं वे वास्तव में अमूल्य हैं। कुछ महत्त्वशाली ग्रन्थ निम्नलिखित हैं :—

1. **खण्डनमंडनात्मक साहित्य** :—गंगा माहात्म्य, मूर्ति पूजा, अवतारवाद, श्राद्ध, वर्ण-व्यवस्था, बालविवाह खंडन, विधवा विवाह मण्डन आदि।

2. **अनुवाद ग्रन्थ** :—दर्शन, उपनिषद्, एवं ब्राह्मण ग्रन्थों का अनुवाद।

3. **मौलिक ग्रन्थ** :—ईश्वर की सत्ता, जीवात्मा, मृत्यु और परलोक, पुनर्जन्म, वर्ण-व्यवस्था, संस्कार, आदि।

4. **जीवन चरित्र सम्बन्धी ग्रन्थ** :—कल्याण मार्ग का पथिक, महात्मा नारायण स्वामी की आत्मकथा, स्वामी सत्यानन्द कृत दयानन्द चरित्र, पं० घासीराम कृत बृहद् जीवन-चरित्र आदि।

5. **कहानी, उपन्यास और नाटक** :—आर्य समाज का प्रमुख उद्देश्य सामाजिक और धार्मिक सुधार करके अपने सिद्धान्तों का प्रचार करना था। उनका यह उद्देश्य कथात्मक साहित्य से पूर्ण नहीं हो सकता था। नाटक रचना का विरोध तो स्वयं दयानन्द सरस्वती ने ही किया। उनका कहना था—"विदित हो कि तुम आर्य पत्र में नाटक का विषय मत छापो। यह अनुचित बात है। यह आर्यों का समाज है। भड़ुआ समाज नहीं। जो तुम नाटक का विषय छापते हो ऐसा करना भड़ुआपन है। इसलिए ऐसा बर्तना उचित नहीं।"[1] इसी प्रकार उन्होंने दूसरे पत्र में लिखा, "अब 'भारत सुदशा प्रवर्तक' पं० लक्ष्मीदत्त जी से लिखाना चाहिए। वे संस्कृत युक्त अच्छा विषय लिखेंगे। और नाटक का विषय तो नाम मात्र भी नहीं आना चाहिए। जो अच्छा विषय भी हो वह प्रश्नोत्तर

---

1. ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन, पृष्ठ 366।

व अन्य प्रकार से लिखा जावे। नाटक (नाम) तमाशे का है। क्योंकि तुम्हारे नाटक को देखकर लखनऊ समाज में नाटक का व्याख्यान ही होने लगा। जब हमने मना किया तो कहने लगे कि अपने फर्रुखाबाद समाज के पत्र में नाटक क्यों छपता है। यह नाटक से बिगाड़ का उदाहरण है।"[1] इसीलिए आर्य समाजी साहित्य में कथा साहित्य का अभाव सा हो रहा है। यत्र तत्र ही कोई रचना दिखाई दे जाती है, यथा, श्री चाँदनारायण शारदा का 'कालेज होस्टल' नामक एक सामाजिक उपन्यास। आजकल के उपन्यासों और कहानी लेखकों में पं० सुदर्शन, पं० चन्द्रगुप्त विद्यालंकार आदि विद्वानों ने भी इस अभाव की पूर्ति की है। वैसे प्रेमचन्द पर भी आर्य समाजी सुधारों की स्पष्ट छाप दिखाई देती है। आर्य समाजी विद्वानों ने प्रहसनों की रचना अभिनय के उद्देश्य से न करके धर्म प्रचारार्थ ही की है। किन्तु ये हैं बहुत ही मनोरंजक। इन प्रहसन लेखकों में पं० रुद्रदत्त जी बहुत प्रसिद्ध हैं। स्वर्ग में सब्जेक्ट कमेटी, स्वर्ग से महासभा, पाखण्डमूर्ति, आर्य मत मार्तण्ड, कण्डी जनेऊ का विवाह आदि इनकी प्रमुख रचनाएं हैं।

इनके अतिरिक्त धर्म प्रचार के लिए आर्य समाज ने लघु पुस्तिकाएं भी लिखीं। स्वयं स्वामी जी ने ऐसी अनेक पुस्तकें वितरित कीं। इस क्षेत्र में आर्य प्रतिनिधि सभा और पं० गंगा प्रसाद जी उपाध्याय ने स्तुत्य कार्य किया। इनके द्वारा लिखित और वितरित प्रमुख लघु पुस्तिकाएं बहुत हैं। पं० तुलसीराम स्वामो कृत संध्योपासना, बाबू श्याम सुन्दरलाल कृत मानव धर्म, पं० गणेश प्रसाद कृत ईश्वर सत्ता, मुंशी ज्योतिस्वरूप कृत ईसाई मत परीक्षा, पं० गणेश प्रसाद कृत ईश्वर भक्त, पं० ललित प्रसाद कृत सत्य प्रकाश, पं० ब्रजनाथ जो कृत आर्य समाज क्या है? आदि लघु पुस्तिकाओं के द्वारा आर्य समाज के सिद्धान्तों के साथ-साथ हिन्दी का भी खुलकर प्रचार हुआ। 'तुम्हारी भाषा क्या है?' नामक लघु पुस्तिका में पं० गंगा प्रसाद जो उपाध्याय ने हिन्दी भाषा, साम्प्रदायिकता और प्रान्तीयता के बारे में लिखा है—यदि समस्त भारत के हिन्दू एक स्वर में कहें कि हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी है तो इनकी बहुत सी उलझनें दूर हो सकती हैं। परन्तु इनको भारतवर्ष के बचाने की इतनी चिन्ता नहीं जितनी प्रान्तीयता के बचाने को है। यह है एक टेढ़ी समस्या जिसका समाधान केवल बुद्धिमान हिन्दुओं के हाथ में है। आत्म सम्मान, घर का अभिमान, प्रान्त का अभिमान, अपनी-अपनी छोटी-छोटी भाषाओं का अभिमान यह सब उत्तम चीजें हैं। परन्तु यदि सभी अपना स्वार्थ साधेंगे तो देश का

---

1. वही, पृष्ठ 376।

हित कौन सोचेगा ? हम यह नहीं कह सकते कि अपने-अपने प्रान्त की भाषाओं की उन्नति न करो। हम कहते यहीं है कि राष्ट्रभाषा हिन्दी अपनाओ और एक स्वर से कह दो कि हमारी भाषा हिन्दी है। इससे तुम संगठित हो जाओगे। विदेशी यह नहीं कहेंगे कि भारतवर्ष की इतनी भाषाएं हैं कि अंग्रेजी बिना एकता हो ही नहीं सकती। एक बात मुसलमान भाइयों को भी समझ लेनी चाहिए, हिन्दी या हिन्दुस्तानी जिसको हम आर्य भाषा कहते हैं न तो श्रीकृष्ण या रामचन्द्र की भाषा है, न मुहम्मद साहब या खलीफों की। इस भाषा को बनाने में हिन्दू कवि तुलसीदास, सूरदास तथा उर्दू कवि मीर आदि। सभी का भाग है। हम दोनों के बुजुर्गों ने इस शुभ काम में भाग लिया है।"[1]

उपर्युक्त रचनाओं के साथ-साथ वैदिक साहित्य भी इन विद्वानों ने खूब लिखा है—वैदिक विनय (देवेन्द्र शर्मा अभय विद्यालंकार), स्वाध्यायसुमन (स्वामी वेदानन्द जी), वरुण की नौका (पं० प्रियव्रत वेद वाचस्पति), आर्य सिद्धान्त (निबन्ध संग्रह), वैदिक साहित्य (नारायण स्वामी), वैदिक वाङ्मय का इतिहास (पं० भगवद्दत्त), यजुर्वेद अनुभाष (पं० ब्रह्मदत्त 'जिज्ञासु'), वैदिक साहित्य (पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर) वैदिक सम्पत्ति (पं० रघुनन्दन शर्मा), आत्मदर्शन एवं कर्मरहस्य (श्रीनारायण स्वामी), आस्तिक-वाद, जीवात्मा तथा अद्वैतवाद (पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय), पुरुषार्थ प्रकाश (स्वामी नित्यानन्द), उरुज्योति (डा० वासुदेवशरण अग्रवाल), प्रथमजा डा० (मुन्शीराम शर्मा), पुरुषार्थ प्रकाश (स्वामी विश्वेश्वरानन्द), आर्य समाज का इतिहास (पं० नरदेव), आर्य समाज का इतिहास (पं० इन्द्र), आर्य समाज (पं० गया प्रसाद उपाध्याय) एवं आर्यसमाज का इतिहास (पं० हरिश्चन्द्र विद्यालंकार)।

इस प्रकार आर्य समाज के अथक प्रयत्नों से ही हिन्दी आज की स्थिति में है। वास्तव में गद्य साहित्य को प्रौढ़ और शुद्ध करने में जहां अन्य विद्वानों का सहयोग है, वहां आर्य समाज का भी कम हाथ नहीं है। पद्य क्षेत्र में भी इन्होने एक क्रान्तिकारी कदम उठाया। काव्य में बुद्धितत्व को प्रमुखता देना इन्हीं का काम है। यही कारण है कि हरिओध जी का 'प्रिय प्रवास' तथा मैथिलीशरण गुप्त का 'साकेत' आज हमें इस रूप में दिखाई दे रहे हैं। इस क्षेत्र में आर्य समाज की सबसे बड़ी देन है लोक भाषा में रचना करने वाले भजनीकों की। यद्यपि भारतेन्दु बाबू हरिशचन्द्र ने भी लोक गीतों को अपनाया था, किन्तु वे साहित्यिक होने के कारण जन प्रचलित न हो सके, जबकि आर्य समाजियों

1. तुम्हारी भाषा क्या है, ट्रेक्ट सं० 63, 1950 ई०।

के ये भजन जन-साधारण में इतने लोकप्रिय और प्रचलित हुए कि बच्चे-बच्चे की जिह्वा पर नाचने लगे। यद्यपि इनका काव्य स्तर निम्न ही था फिर भी उनमें जागृति उत्पन्न करने की बहुत बड़ी शक्ति थी। ये आर्य समाजी भजनीक बड़े ही उत्साही, कर्मशील एवं जीवट वाले व्यक्ति थे। विरोधों के बवन्डर से तो यह सदा जूझते ही रहे। जनभाषा में जन छन्दों द्वारा जन मानस तक अपने विचारों को पहुंचाना कितना हितकर सिद्ध हो सकता है, वे यह जानते थे; इसीलिए इन्हें अपने उद्देश्य में पूर्ण सफलता मिली। प्रेमचन्द के समान ही इन भजनीकों ने समाज की पहले दयनीय दशा का यथार्थ चित्रण किया है, फिर उसके सुधार के उपाय बताये हैं। अतः हम इनके इस चित्रण को प्रेमचन्द के आदर्शोन्मुख यथार्थवाद के निकट रखें तो अतिशयोक्ति न होगी। उदाहरण के लिए बालविवाह का यथार्थ रूप देखिये –

दुखदाई बालविवाह से भारत कैसे सुधरेगा ?
जिसके यह समझ न आई, किस मतलब से हुई सगाई
वधू वही बालिका बनाई, कच्चे नाह से।
क्या जीवन प्रेम पनपेगा ।। भारत कैसे ।।
यदि वे दम्पत्ति आपु लहेंगे, तो रोगी बलहीन रहेंगे
नाना संकट शोक सहेंगे, वह जोड़ा किस राह से।
फिर दुःख सागर उतरेगा ।। भारत कैसे० ।।
मित्र बन्धु मतिमन्द विचारे, रह न सके तनु भार संभारे
यदि प्रीतम परलोक सिधारे, तो विधवा की आह से।
कुल कैसे तीर उतरेगा ।। भारत कैसे० ।।

इसके बाद कवि अपनी ओर से सुझाव देता है कि उपर्युक्त विपत्तियों से किस प्रकार छुटकारा पाया जा सकता है, यही आदर्श प्रियता है;

अब तो बालविवाह बिसारो, वेदों की आज्ञा सिर धारो
रामनरेश स्वदेश सुधारों, इस कुरीति के दाह से।
सुख गौरव ज्ञान जगेगा ।। भारत कैसे ।।[2]

स्त्रियों के अधिकारों की रक्षा के लिए भी इन भजनीकों ने पूरा जोर लगाया है। तथ्य यह है कि उस समय नारी बेचारी बुरी तरह पद दलित हो रही थी। हर दृष्टि से

1. भजन भास्कर सम्पादक पं० हरिशंकर शर्मा, पृ० 255।

उसे हीन और दास समझा जाता था। इसी दीनदशा से द्रवित होकर भजनोक श्री वासुदेव ने स्त्रियों के अधिकारों की रक्षा इन शब्दों में की है :—

देखिए बहनों यह पहले कैसी नारी तुममें थी।
वेद की ज्ञाता, विवेकी, धर्मधारी तुममें थी॥
लोपामुद्रा और गार्गी उर्वशी सो हो चुकी।
किये शास्त्रार्थ पुरुषों से ऐसी नारी तुम में थीं।
शोक है बहनो कि तुम तो सौ भी गिनना न जानतीं।
यहां कभी लीलावती सीता सी नारी तुम में थीं॥[1]

अगर आप शिष्ट व्यंग्य, बुद्धिवादी सबलतर्क, अलंकार का सुष्ठु प्रयोग, संगीतात्मकता और भाषा प्रवाह कहीं देखना नहीं चाहते हैं तो निराकारोपासना का यह गीत देखिए :—

अजब हैरान हूं भगवान तुझे क्यों कर रिझाऊं मैं।
कोई वस्तु नहीं ऐसी जिसे सेवा में लाऊं मैं॥
करूं किस तरह आवाहान कि तुम मौजूद हो हरजा।
निरादर है बुलाने को अगर घण्टों बजाऊं मैं॥
तुम्हीं हो मूर्ति में भी तुम्ही व्यापक हो फूलों में
भला भगवान को भगवान पर कैसे चढ़ाऊं मैं॥
लगाना भोग कुछ तुमको यह इक अपमान करना है।
खिलाता है जो जब जग को उसे कैसे खिलाऊं मैं॥
तुम्हारी ज्योति से रोशन है सूरज चांद और तारे।
यहां अन्धेर है तुमको अगर दीपक दिखाऊं मैं॥
भुजायें हैं न सीना है, न गर्दन है न पेशानी।
तू है निर्लेप नारायण कहां चन्दन लगाऊं मैं॥[2]

'शुद्धि आन्दोलन' और आर्य समाज का बहुत बड़ा कदम था। इसके द्वारा इन्होंने उन दयनीय व्यक्तियों की रक्षा की जो हिन्दू धर्म में नीच जाति होने के कारण खप नहीं सकते थे। परिणामतः उन्होंने चुपचाप ईसाई या मुसलमान धर्म मानना स्वीकार कर

1. रसश रंजन, पृ० 62
2. पुष्पांजलि—राजपाल एण्ड सन्स, पृ० 30

लिया। सभी प्रचारकों ने इस बात पर बल देना आरम्भ कर दिया कि ईसाई या मुसलमानों से मिले भाइयों को शुद्ध करके पुनः हिन्दू धर्म में सम्मिलित कर लिया जाय। इस उद्देश्य की आपूर्ति के लिए सुधारकों ने भजन गाना प्रारम्भ कर दिया। इस तरह की रचनाओं को निम्न स्तर को कहकर ठुकराया नहीं जा सकता। यथार्थ में ये लोक गीतों के समान जनता में प्रिय हो रही थीं। हिन्दी को इतना व्यापक बनाने का कार्य इन्हीं भजनीकों का है।

इन लोक कवियों के समान ही आर्य समाज में साहित्यिक कवियों का भी अभाव नहीं है। लेकिन ये कवि जनसाधारण को प्रभावित न कर सके। इनके भी विषय भजन कों के समान सामाजिक और धार्मिक सुधार पर ही आधारित थे। इन विषयों के लिए मुक्तक रचनाएं ही सफलता से की जा सकती थी। इसलिए इन का ध्यान प्रबन्ध काव्य की ओर कम हो गया। हां, स्वामी दयानन्द के जीवन पर कुछ कवियों ने प्रबन्ध काव्य अवश्य लिखे थे, किन्तु ये बहुत कम हैं। इसका प्रमुख कारण यह था कि इनके पास प्रबन्ध रचना के लिए विषयों का भी अभाव था, क्योंकि स्वामी दयानन्द का जीवन चमत्कारिक घटनाओं से आबद्ध न हो सका और न ऐसा सम्भव ही था। वे स्वयं इन चमत्कारों के विराधी रहे हैं और आज भी हैं। फिर भी कविराज जयगोपाल जी ने 'दयानन्द चरितामृत (अप्राप्य) रामायण के ढंग पर ब्रजभाषा में लिखा। ठाकुर गदाधरसिंह कृत 'दयानन्दायन' भी इसी अभाव की पूर्ति करता है। यह रचना भी दोहा-चौपाई शैली में अवधी और ब्रजभाषा मिश्रित भाषा में रची गई है। इसकी क्रियायें खड़ी बोली होने के कारण कुछ विद्वानों ने इसे खड़ी बोली की रचना भी माना है। इसी प्रकार 'सत्यार्थ-प्रकाश' का 'सत्य सागर' के नाम से पद्यानुवाद पं० गदाधर प्रसाद लखनऊ निवासी ने दोहा चौपाई छन्दों में किया है। डॉ० मुंशीराम शर्मा ने वेदमंत्रों का पद्यानुवाद किया है।

मुक्त रचनाओं में इन कवियों को बहुत सफलता मिली है। आर्य समाज के सबसे प्रसिद्ध कवि थे महाकवि नाथूराम शर्मा 'शंकर'। इनकी प्रसिद्ध रचनाएं हैं—अनुराग रत्न, शंकर सरोज और शंकर सर्वस्व। ईश्वर एक है और सर्वव्यापक हैं, उसकी प्रतिमा बन ही नहीं सकती और न वह अवतार ही ग्रहण करता है, इन सब भावों को 'शंकर' ने इस एक कवित्त में ही एकत्र कर दिया है :—

माने अवतार तो अनंगता की घोषणा है,
अंगहीन सारे अंगियों का सिरमौर है।

पूजें प्रतिमा तो विश्व व्यापकता बोलती है,
नारायण स्वामी का ठिकाना सब ठौर है।
खोजें घने देवता हो सकता निषेध करे
एक महादेव कोई दूसरा न और है।
अन्त को प्रपञ्च ही में पाया शुद्ध 'शंकर' जो
भावना से भिन्न है न श्याम है न गौर है।[1]

भाषा प्रवाह, अलंकर योजना, रस परिपाक और दार्शनिक भाव सब एक ही स्थल पर एकत्र हो गये हैं। अतः आर्य समाज साहित्य पर यह आरोप लगाना कि वह केवल प्रोपेगण्डा मात्र है, उचित नहीं। बात की बात कह दी और किसी को बुरी भी न लगी, इसी को तो कहते हैं एक तीर से दो चिड़ियों का शिकार करना। स्वामी जी की प्रशस्ति में श्रीमती सावित्री देवी 'प्रभाकर' की एक ओजपूर्ण और कवित्वपूर्ण रचना देखिए :—

हुआ चमत्कृत विश्व, अरे यह कौन ? वीरवर सन्यासी ?
जिसकी भीषण हुंकरों से कांप उठी मथुरा काशी ?
यह किसका गर्जन तर्जन है, कौन उगलता ज्वाला है ?
किसकी वाणी में से निकली आज धधकती ज्वाला है ?[2]

'सत्यार्थ प्रकाश' ने भारतीय जीवन में उथल पुथल उपस्थित कर दी। वास्तव में यह धर्मान्धता और रूढ़िवादिता पर एक करारी चोट थी, जिसने एक क्रान्ति ही उत्पन्न कर दी, परिणामतः विरोधियों ने 'सत्यार्थ प्रकाश' की धज्जी उड़ाने का प्रयास किया। किसी ने इस ग्रन्थ को जब्त करने को सरकार से प्रार्थना की, किसी ने इसमें सुधार करने का प्रयास किया, किन्तु इन सब विरोधों का सामना करते हुए भी वह अपने उद्देश्य में रत रहा। बहकते हुए भारतीयों को उचित पथ पर लाना, आडम्बरों को तोड़कर सादा जीवन प्रदान करना, ऋषि पथ से सरल पथ प्रशस्त करना और हिन्दी का भरपूर उपकार करना आदि ही इस ग्रन्थ का प्रमुख कार्य था, जिसमें उसे पूर्ण सफलता मिली। बहुत से कवियों ने इसके इन्हीं गुणों को देखकर इसे गीत तक कह दिया है :—

---

1. शंकर सर्वस्व—पृ० 43
2. नारायण अभिनन्दन ग्रन्थ—पृ० 299

इस भूतल की धवल धारा में, यश फैला है आज महान् ।
जिस ऋषि ने विपदायें सहकर, सदा दिया जीवन का दान ।।
श्री कृष्ण कीं पावन गीता, लाती जीवन में नव आशा ।
उसी तरह पावन स्मृति को है फैलाता सत्यार्थ प्रकाश ।।[1]

हिन्दी के प्रचारार्थ आर्य समाजियों ने विभिन्न विषयों पर रचनाएं करके हिन्दी साहित्य को हर प्रकार से उपकृत किया। उनकी इन सेबाओं को विस्मृत नहीं किया जा सकता। उनमें से प्रमुख रचनाएं निम्न हैं :—

1. डॉ० धीरेन्द्र वर्मा—हिन्दी भाषा का इतिहास, ब्रजभाषा विचारधारा
2. डॉ० बाबूराम सक्सेना—सामान्य भाषा विज्ञान
3. डॉ० मंगलदेव—भाषा विज्ञान
4. डॉ० सरयूप्रसाद अग्रवाल—प्राकृत विमर्श, अकबरी दरवार के हिन्दो कवि
5. पं० हरिशंकर शर्मा—रस रत्नाकर
6. डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल—पद्मावत भाष्य
7. पं० पद्मसिह शर्मा—विहारी सतसई का भाष्य, पद्म पराग, हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानो
8. डॉ० मुंशीराम शर्मा—भारतीय साधना और सूर साहित्य, सूर सौरभ

आर्य समाज ने भारत के साथ-साथ विदेशों में भी हिन्दी का खुल कर प्रचार किया। इनके प्रचार के प्रमुख केन्द्र थे दक्षिणो अफ्रोका, पूर्वी अफ्रीका, केनिया, युगाण्डा, टंगानिया, मौरिशस, फोजी, डच गायना, ब्रिटिश गायना, ट्रिनिडाड, लन्दन। इन स्थानों पर इन्होंने हिन्दी प्रचार के लिए विभिन्न साधनों का प्रयोग किया। कही पर शैक्षणिक संस्थाएं खोलीं, कहीं पर आर्य समाज की स्थापना की, कहीं विद्वानों के अनुवचन कराये, कहीं पर पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन किया। दक्षिणी अफ्रीका में हिन्दी प्रचार का प्रमुख कार्य भाई परमानन्द, स्वामी शंकरानन्द और भवानी दयाल जी ने किया। इन्हीं के सद्प्रयत्नों से 'धर्मवीर' और 'हिन्दी' नामक पत्रिकाएँ निकाली। आर्य प्रतिनिधि सभा नेटाल, हिन्दी सम्मेलन और हिन्दो संघ की स्थपना की गई। श्री भवानी दयाल जो सन्यासी ने अपने प्रयासों की एक झलक इस प्रकार प्रस्तुत की है—"पांच साल तक मैंने

1. सार्वदेशिक, मई 1945 ई० लेखक नथमल शर्मा—पृ० 48

नेटाल और ट्रांसवाल में लगातार हिन्दी प्रचार का काम किया। इस दरम्यान में जर्मिस्टन, न्यू कांसिल डेन हाउजर, हार्टिंग स्पुट, ग्लकों, वर्नसाइड, लेडी स्मिथ, विनेन जेकब्स आदि शहरों और कस्बों में हिन्दी प्रचारिणी सभाएं और हिन्दी पाठशालाएं खुल गई। इन सभाओं को एक केन्द्रीय मण्डल के अन्तर्गत संगठित करने के विचार से दक्षिणी अफ्रीका हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की स्थापना की, जिसका पहला वार्षिकाधिवेशन लेडी स्मिथ में और दूसरा पीटर मेरित्सवर्ग में बड़ी धूमधाम से हुआ।"[1] इसी प्रकार स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी ने लिखा है, "आर्य सिद्धान्तों के साथ-साथ मुझे कुछ बातों का विशेष रूप से प्रचार करना पड़ा, जैसे आर्यभाषा (हिन्दी) का। जब मैं 1914 में मौरिशस गया था, उस समय आर्य समाजों में हिन्दी पाठशालाएं खोली थीं। उस समय उनका अभिप्राय यह था कि आर्य सत्यार्थ प्रकाश पुस्तक को पढ़ सकें। इसके पश्चात् सनातन धर्मियों ने भी पाठशालाएँ खोली इसका फल यह हुआ कि भारतीयों को हिन्दी आ गई।"[2]

इस प्रकार आर्य समाज ने हिन्दी के प्रत्येक क्षेत्र को बहुत ही प्रौढ़ और किया। जहां हिन्दी साहित्य इन्हें पाकर धन्य हुआ वहाँ, हिन्दी भाषा और नागरी लिपि इनका स्पर्श पाकर पुष्पित हो उठी। यदि यह आन्दोलन इस समय न हुआ होता तो यह सम्भावना हो सकती थी कि हिन्दू धर्म और हिन्दी गर्त में जा गिरती, किन्तु उत्साही आर्य समाजियों ने इसकी पूर्ण रूप से सुरक्षा की जो वास्तव में प्रशंसनीय थी, और सदा रहेगी।

प्राध्यापक, हिन्दी-विभाग
देशबन्धु कॉलेज, नई दिल्ली

अविश्वास भी डर की निशानी है। —महात्मा गाँधी

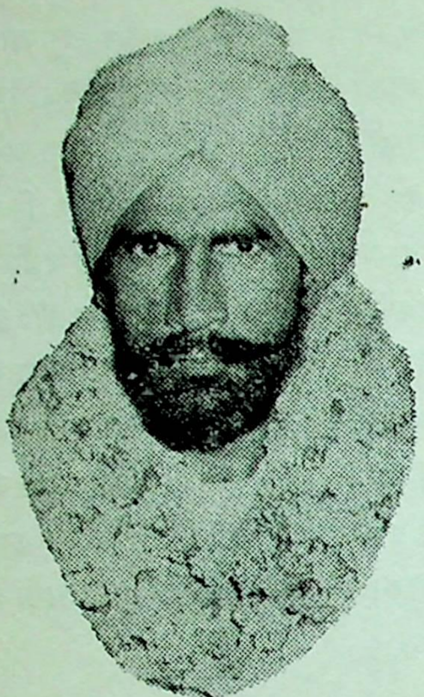
मैं मृत्यु से भी उतना नहीं डरता जितना झूठ से डरता हूँ। —वेदव्यास

जो गिरना नहीं चाहता उसे कोई गिरा नहीं सकता। —सूर्यकान्त त्रिपाठी

झूठ की सूरत देखने में कैसी चिकनी-चुपड़ी होती है। —भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

---

1. भवानी दयाल सन्यासी—प्रवासी की आत्मकथा - पृ० 525
2. विदेश में एक स्थल—पृ० 89



आर्य समाज के तीन सूत्री कार्यक्रम के परिप्रेक्ष्य में

□

शराब से सर्वनाश

लेखक :
श्री अतरसिंह आर्य "क्रांतिकारी"
प्रधान आर्य समाज
कवारी (हिसार)

[श्री क्रांतिकारी जी आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता एवं आर्य वीर हैं आर्य समाज को ऐसे युवकों पर गर्व है। प्रस्तुत लेख उनकी कथनी और करनी में एक रूपता का द्योतक है। उन्होंने हिसार जिले में आर्य समाजों के माध्यम से शराब बन्दी आन्दोलनों का नेतृत्व किया है। लेखकी भाषा चाहे साहित्यिक न हो किन्तु भ वनाएं हृदय से व्यक्त की गई है]
—सम्पादक

सम्राट अश्वपति जी ने गर्व से घोषणा की थी। "न स्तेनों जनपदे न कदर्यो न मद्यपः "मेरे राज्य में एक भी मद्य (शराब) का सेवन करने वाला, अनाचारी तथा चोर नहीं है।

बड़ा खेद का विषय है कि आज उसी भारत में शराब का सेवन दूध के समान किया जा रहा है। शराव सव पापों की जड़ है, मनुष्य के पास बुद्धि है बुद्धि के कारण ही मनुष्य बुद्धिमान कहलाता है। बुद्धि एवं शरीर का एक सोकन की तरह बैर है किसी विद्वान् ने कहा है—शराव अन्दर अकल बाहर !

महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने भी कहा है कि शराब महा विनाशकारी है। तथा मदिरा मनुष्य को राक्षस बनाती है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी ने भी कहा है "कि मैं मद्यपान को चोरी यहाँ तक कि वेश्यावृति से भी अधिक निन्दनीय मानता हूँ।"

इसके अतिरिक्त गांधीजी ने कहा कि "मुझे एक घन्टे के लिए भी राज्य का डिक्टेटर बना दिया जावे तो मैं सर्वप्रथम बगैर मुआवजा दिए शराब की दुकानें बन्द करा दूंगा।" भारतीय संविधान की धारा 47 भी स्वास्थ्य के लिए हानिकारक मादक पेयों और औषधियों के औषधीय प्रयोजनों के अतिरिक्त उपयोग का निषेध करने का प्रयास करेगा। श्री मोरारजी देशाई ने भी कहा है नशाबन्दी एक बुनियादी बात है। चौ० चरणसिह ने भी कहा है कि शराबी को अनेक बुराईयां और रोग घेर लेते हैं।

इतिहास भी साक्षी है। कि योगीराज श्रीकृष्ण जी के वंशज यादवों का नाश शराब से हुआ। मुगलों के साम्राज्य का नाश तथा रोमन साम्राज्य का नाश शराब से ही हुआ। भरतपुर के महाराजा के खानदान का नाश शराब से हुआ। वर्तमान में भी अनेक उदाहरण हैं। जिन किसानों की शराब के कारण जमीन बिकी है तथा कत्ल हुए हैं। भ्रष्टाचार एवं व्यभिचार का नंगा नाच हुआ है। स्थानाभाव से उपरोक्त उदाहरण ही पर्याप्त हैं।

कितनी बड़ी बिडम्बना है। उपरोक्त उदाहरण से न देश के नेता तथा न शराब पीने वाले शराबी ही प्रेरणा ले रहे हैं। बल्कि वर्तमान सामाजिक व्यवस्था में शराब का प्रचलन इतना बढ़ गया है कि सम्पूर्ण समाज ही शराब के सागर में गोते लगाता प्रतीत पड़ रहा है। हर गली, मौहल्ला, शिक्षा संस्थाओं की परिधि ग्रामों एवं शहरों के बस स्टैण्डों के समीप और सिनेमा घरों के समीप सरकार ने शराब के ठेकों की स्थापना कर शराब का प्रचार करने के साथ-साथ नव युवकों, किसानों, बुद्धिजीवियों, छात्रों एवं मजदूरों को इसका सेवन करने के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित भी किया। सरकार का यह दावा कि शराब के ऊपर लगाए गए कर से सरकार को अरबों रुपये की आय होती है। इस धन से देश की बड़ी-बड़ी महत्वपूर्ण परियोजनाएं सम्पन्न होती हैं। सरकार की इस नीति से स्पष्ट झलक मिलती है कि वह आदर्श राष्ट्र निर्माण की चिन्ता न कर घना सेठों की तिजोरी भरने के लिए ज़्यादा चिन्तित है।

इसके अतिरिक्त शराब से शरीर एवं आत्मा का हनन होता है शराब के अन्दर अलकोहल जहर है जो शरीर के अन्दर रोग पैदा करता है, काम की क्षमता घटती है, कारखानों में शराब की लत के कारण उत्पादन कम, व्यक्ति में हिम्मत कम रहती है अध्यापकों के शराब पीने से विद्यार्थियों को हानि, सेना में शराब पीने से लड़ने में धैर्य की कमी, राजनेताओं द्वारा शराब पीने से देश के लिए उत्तम योजना बनाने में असमर्थता

प्रशासकों द्वारा शराब पीने से प्रशासन में ढीलापन व अपराधों को वृद्धि, शराब से रिश्वत की वृद्धि, भ्रष्टाचार एवं चरित्रहीनता की वृद्धि, पूजीपतियों द्वारा शराब पीने से कालेधन को वृद्धि, गरीब किसान मजदूरों द्वारा पीने से शिक्षा पोषण आदि आवश्यक विकास में कमी, वकीलों द्वारा शराब पीने से न्याय न मिलना, नवयुवकों को शराब पीने से पूरा समाज प्रभावित एवं दुःखी, शराब से शराबी की आँखो में विकार, आंतो में सूजन, हार्टफेल, तपेदिक, कैन्सर बहुत जल्दी होते हैं। शराब पीने से मानव दानव बन जाता है. शराबी प्रायः चरित्रहीन पथभ्रष्ट देखे जाते हैं। शराबियों के परिवार में कभी अमन और शान्ति नहीं होती, शराब से मनुष्य में स्वाभिमान व आत्मविश्वास खत्म हो जाता है। शराबी व्यभिचारो, दुराचारी, महापापो होते हैं। शराबो अपनो पत्नी और बच्चों को भूखे मारते देखे जाते हैं, शराब पीने से भूखमरी बढ़ रही है, शराब पीने से ब्रह्मचर्य व्रत नष्ट हो जाता है। शराब शरारत का जहरीला पानी है, जो शराब पोता है वास्तव में अपने बच्चो का खून पीता है, शराब पोने से आज सर्वनाश हो रहा है, शराबखोरी से देश का विकास रुक गया है, शराब से धन और स्वास्थ्य, आयु-बल तेज, बुद्धि विवेक, धर्मकुल सभो नष्ट हो जाते हैं।

देश के राजनेता गांधीजी का नाम लेकर वोट लेते हैं बाद में कुर्सी मिलने पर गांधीजी के सिद्धान्तों की धज्जी उड़ाते हैं एक गुजरात प्रान्त को छोड़कर सारे भारत वर्ष में सब प्रान्तों का बुरा हाल है। शराब बढ़ाओ लोगों को कायर एवं मूर्ख बनाकर मौज करो की होड़ लगी हुई है। हरियाणा प्रान्त इस समय शराब बढ़ावा नीति में सबसे आगे है। शराब के ठेके, मिनी ठेके, अहाते, एवं अवैध शराब की बिक्री की बाढ़ आई हुई है। 2 बोतल की जगह 12 बोतल एक बार खरीद सकता है। कोई रोकने वाला नहीं, पंचायतों को एक रुपया प्रति बोतल तथा नगरपालिका को ढाई रु० प्रति बोतल का लालच देकर शराब को नदो बहा दो है। देहात में महिलाओं एवं सज्जन मनुष्यों का जीना दूभर हो गया है। यह विकास नहीं विनाश है। अतः सभी धार्मिक सामाजिक संगठनों ने पूरे जोर से शराब बन्दी आन्दोलन चलाना चाहिए।

शराब हटाओ देश बचाओ।
शराब हटेगी देश बचेगा ॥ □

अभिव्यक्ति मानव हृदय का स्वाभाविक गुण है। —प्रेमचन्द

अभिमान करना अज्ञानी का लक्षण है। —सूत्रकृतांग

नारी के विकास में आर्य समाज का योगदान

संगृहीता—राजकुमारी आर्य
प्रधान स्त्री आर्यसमाज दयानन्द भवन
डोगरान मौहल्ला, हिसार

किसी समाज में नारी की अवस्थिति उसकी सभ्यता का सच्चा मापदण्ड हुआ करती है। नारी प्राचीन काल से ही, पुरुष की शिक्षक मानी गयी है, तब भी, जबकि वह बच्चा होता है और तब भी जब वह वयस्क हो जाता है।[1] ऐतरेय ब्राह्मण में कहा गया है—'क्योंकि पिता फिर अपनी पत्नी से उत्पन्न होता है (जायते पुनः), इसीलिए वह जाया कहलाती है, वह उसकी दूसरी माता है।[2] गान्धी जी ने नर-नारी को एक-दूसरे का पूरक मानते हुए एक के अभाव में दूसरे का अस्तित्व अविचरणीय बतलाया है। वैदिक काल से लेकर आज तक यदि नारी के क्रमिक उत्थान-पतन पर विचार किया जाय तो हमारे समक्ष प्राचीन संस्कृति की अनेक कड़ियां खुलने लगती हैं। वैदिक काल से यज्ञ, प्रार्थना एवं सन्ध्या की विधि को पूर्ण करने वाली नारी महाकाव्यों के काल तक किसी विशेष दौर्बल्य का शिकार नहीं हुई थी। उन दिनों ब्राह्मण कन्याओं को वेदों की शिक्षा दी जाती थी और क्षत्रिय वर्ण की कन्याओं को धनुष-बाण का प्रयोग सिखाया जाता था।[3] इसके अतिरिक्त घरों तथा आश्रमों में लड़के तथा लड़कियों को साथ-साथ शिक्षा दी जाती थी। भारहुत की मूर्त्तियों में कुशल अश्वारोही स्त्रियों के दर्शन होते हैं। पतंजलि ने भाला चलाने वाली महिलाओं और कौटिल्य ने महिला धनुर्धरों और मेगस्थनीज ने चन्द्रगुप्त की अंगरक्षक अमेजन महिलाओं का बहुत ही सुन्दर वर्णन प्रस्तुत किया है।[4]

परन्तु मध्ययुग तक आते-आते काल ने अपनी चरखी पर नारी के गौरव और उसकी महत्ता को लपेट लिया। मध्ययुग के आस-पास सामान्य लोगों द्वारा अधिकांश रूप में सन्यास ग्रहण करने की प्रवृत्ति ने जहाँ एक ओर जन-मानस को भौतिक जीवन

---

1. डॉ० राधाकृष्णन्, 'धर्म और समाज', पृ० 163
2. ऐतरेय ब्राह्मण 2–7/13
3. ऋग्वेद 1112-10, 10–102-2
4. डॉ० राधाकृष्णन् 'धर्म और समाज', पृ० 164

से उदासीन बनाया, वहां दूसरी ओर नारी को नाना प्रकार के दुर्गुणों और निर्बलताओं में संसिक्त करके भी देखा। प्रव्रज्या को प्रोत्साहन देने के लिये उन दिनों कनक और कामिनी दोनों को दुर्गम घाटी कहा गया।[1] वराह मिहिर (छठी शती) का वह युग समाप्त हो गया था जिसमें धर्म और अर्थ की सिद्धि स्त्रियों पर ही अवलम्बित मानी जाती थी तथा मानवीय प्रगति के लिये उन्हें अनिवार्य समझा जाता था।[2] अब तो नारी का बड़ा भारी विकार मानकर त्यागने की बातें सोची जाती थीं।[3] इस पृष्ठभूमि के रहते हुए आर्य समाज ने संत कवियों की भांति न तो नारी को माया कहा है और न दुर्गम घाटी। स्थान-स्थान पर मुक्त कंठ से नारी के गुणों का गान करके उसकी बिखरती महत्ता को बटोरने की चेष्टा करके आर्यसमाज के उपदेशकों ने अपनी महानता का परिचय दिया है, क्योंकि संसृति में महानता का सेहरा उन्हीं को बांधा जाता है जो दूसरों के अस्तित्व को भी स्वीकार करें, उन्हें भी अपने समान हांड़-माँस का प्राणी समझें। महर्षि दयानन्द ने नारी को उदासीनता के दलदल और क्लेशों की परिखा से बाहर निकाल कर उसमें आत्म-गौरव का इन्द्र धनुषी रंग भरते हुए कहा है—'स्त्री से मनुष्य जन्म लेता है। स्त्री माँ के रूप में शक्ति है।' तभी तो राजस्थान में लोगों के साथ जाते हुए एक बालिका को देखकर महर्षि दयानन्द खड़ हो गये और दोनों हाथ जोड़कर उसका अभिवादन किया। लोगों ने इसका कारण पूछा तो स्वामी जी ने मुक्त कंठ से उत्तर दिया—'मैंने भावी माता अर्थात् इस देश की परम शक्ति को प्रणाम किया है।' युग-युगों वह नारी जिसका कार्यक्षेत्र अभी तक घर की चहार दीवारी तक ही सीमित था महर्षि दयानन्द के आदर्शपरक विचारों में पढ़ने अर्थात् शिक्षा ग्रहण करने की अधिकारिणी समझी गयी। सुतरां स्त्री शिक्षा को लेकर महर्षि के विचारों को क्रियान्वित करने के लिए देश में शिक्षण संस्थाओं की सुदृढ़ परम्परा स्थापित की गयी। महर्षि दयानन्द नारी के विकास हेतु विधवा-विवाह के पक्ष में थे। यह पुरुष का अनाचार और अत्याचार ही कहा जायेगा कि वह स्वयं अनेक विवाह करे और नारी एक से अधिक विवाह न कर

1. एक कनक और कामनी दुर्गम घाटी दोय, अयोध्यासिंह उपाध्याय, कबीर वचनावली, पृ० 141
2. डॉ० राधाकृष्णन् 'धर्म और समाज' पृ० 167
3. नारी तो हमहूँ करी जाना नाहि विचार।
जब जानी तब परिहरी नारी बड़ा विकार। डॉ० राजकुमार वर्मा, 'कबीर का रहस्यवाद, पृ० 187

सके, पति के मरने अथवा उससे परित्यक्त होने के बाद आर्थिक दृष्टि से परतन्त्र होने के कारण या तो जल में कूद कर डूब मरे अथवा अपने सौन्दर्य को बाजार में ऊंची-नीची बोली पर बेचने के लिए विवश हो जाय। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की आक्रोशभरी वाणी तभी तो पुरुष की स्वार्थ वृत्ति पर अपने पूरे वेग से फूट पड़ी है—

अपने लिये सभी सुविधायें,
पहले ही कर बैठे नर। (पंचवटी)

महर्षि दयानन्द ने नारी को ऊँचा उठाने के लिये उसे विद्या ग्रहण करने और वेद पढ़ने का अधिकार दिया। पर्दा प्रथा को, जो उसके जोवन का अभिशाप बन गयी थी, परिसमाप्त करने की भरसक चेष्टा की। नारी के रूप को अधिक सुदृढ़ आधार प्रदान करने के लिए उन्होंने बाल विवाह प्रथा का घोर विरोध करते हुए आश्रम व्यवस्था के परिपालन पर जोर दिया। निश्चय ही महर्षि दयानन्द ने जहां एक ओर नारी को संसृति के विकास की मूल शक्ति माना है, वहां दूसरी ओर उसे तत्कालीन अवगुणों और दोषों की परिखा से बाहर निकालकर हर प्रकार की महिमा और गौरव से मंडित करने की प्रचेष्टा को है। महर्षि दयानन्द ने एक नरेश के यहाँ वेश्या को देखकर 'कुतिया' शब्द का प्रयोग मूलतः उसकी विकृतियों के लिये किया है। यह भी अपने आप में एक दम सच है कि विकृतियों पर कुठाराघात करने के लिये पूरी शक्ति से प्रहार करना होता है महर्षि तो इस बात को जीती जागती तसवोर थे। तभी तो उक्त वेश्या द्वारा उत्प्रेरित अपने रसोइया से काच खाकर समाज को उसकी 'ऊँचाईयों' तक पहुंचाने में उन्होंने अपने प्राणों का उत्सर्ग किया।

महर्षि दयानन्द अपने समय के बहुत बड़े सुधारक और दार्शनिक थे। उन्होंने जोवन की उदारतम रेखाओं में पति-पत्नी के सहयोगपरक जीवन का उल्लेख करते हुए 'यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता' का उद्घोष करके नारी की आशा, उत्साह और प्रेरणा के त्रिकोण में रखकर सदैव के लिये महान बनाने की सफल प्रचेष्टा की। उन्होंने 'अष्ट-वर्षा भवेत गोरी' आदि काल्पनिक वाक्यों का खंडन करके ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्' का उद्बोधन देकर ब्रह्मचर्य व्रत धारण करते हुए कन्या को युवा एवं विद्वान पति को वरण करने का आदेश दिया। उन्होंने 'सत्यार्थ प्रकाश' में 'मातृमान' पितृमान, आचार्यवान् पुरुषो वेद—प्रशस्ता धार्मिकी माता विद्यते यः स मातृमान' आदि वाक्यों को उरेह कर 'मातृत्व' को व्यापक धरातल प्रदान किया और 'ममत्व' को सतरंगी आकर्षक रेखाओं से सम्पृक्त किया। निश्चय हो गार्हस्थिक जीवन के अनेक

अलभ्य चित्र दयानन्द की वाणी में सतरंगी रंगों की झिलमिली उत्पन्न करके पति-पत्नी के तात्कालिक सहयोग परक जीवन का सतही चित्रण न करके उसका पूरी गहराई के साथ अभिचित्रण करते हैं।

महर्षि दयानन्द ने कन्यात्व, पत्नीत्व एवं मातृत्व—नारी जीवन के तीनों प्रमुख अंगों को आदर देकर उन्हें दृढ़ आधार प्रदान किया है। एक स्थान पर अनाचारी और कुविचारी पुरुषों को चेतावनी देते हुए उन्होंने कहा है—ऐ! स्त्री को जूती समझने वालों तुम उनसे सुशील, सुसंस्कृत संतान के स्थान पर जूता ही पा सकोगे।' निश्चय ही जिस स्त्री को 'निर्माता भवति' की उपाधि से विभूषित किया गया था, कालान्तर में उसका इतना ह्रास हो गया यह देखकर महर्षि का अन्तर महान पीड़ा से मथ उठा और उन्होंने भारतीय जन-समुद्र के तल में क्रान्ति मचा कर नारी को पुरुष के समान समझने की आवश्यकता पर बल दिया। आक्रोश के अभ्रभेदी तुंगों में कवि प्रसाद की वाणी मानों ऋषि की वाणी बन गयी—

तुम भूल गये पुरुषत्व मोह में,
कुछ सत्ता है नारी की।
समरसता है सम्बन्ध बनी,
अधिकार और अधिकारी की। (कामायनी)

शायद महर्षि के शब्दों में उपर्युक्त पद और भी अधिक सार्थक हुआ। क्रान्ति के शस्त्रों को अपनाकर महर्षि ने नारी में कुछ ऐसा जीवन फूंका कि वह अपनी शक्तियों और गुणों का सही मूल्यांकन करने लगी।

पश्चिम की नारी का अन्धानुकरण करने में भारतीय नारी ने अपने बीच में जिन अवांछित परिवर्तनों को उद्भूत किया दयानन्द ने उसका विरोध करके उसे बालक की प्राथमिक पाठशाला के सच्चे गुरू के रूप में जमाने की चेष्टा की। महर्षि दयानन्द ने नारी-शिक्षा के जिस स्वर्णिम विहान को अपनी आँखों में दीप्ति के साथ भरा, उनके अनुवर्ती समाज ने उसी विहान को अनेक कन्या पाठशालायें खोलकर सार्थक किया। परिणामतः जालन्धर में आर्य कन्या गुरुकुल, देहरादून में कन्या गुरुकुल, इसी तरह हाथरस (उत्तर प्रदेश) में, गुजरात में, बड़ौदा में, पोरबन्दर में हैदराबाद में, बेगमपेठ आदि में कन्या-गुरुकुलों की स्थापना हुई। आज नारी का समग्र विकास महर्षि दयानन्द के उच्च विचारों की परिणति मात्र है। सही अर्थों में महर्षि दयानन्द अथवा उनका आर्य समाज नारी के विकास का पर्याय कहा जा सकता है। नारी की प्रगति के लिये उसे उसके तत्कालीन अवगुणों से बाहर निकालने के लिये स्वामी जी ने जो कुछ किया वह प्रत्येक दृष्टि से स्तुत्य एवं पूर्ण है। जन क्रान्ति के इस अग्रदूत को इस रूप में युगों-युगों तक याद किया जाता रहेगा। □

आर्य समाज का तीन सूत्री कार्यक्रम

—प्रो० डा० यशः पाल पुनियां
विद्यालंकार, एम०ए०, पी०एच०डी०
महाविद्यालय नांगल (महेन्द्रगढ़)

आर्य समाज शताब्दी समारोह अजमेर के पश्चात् जितने भी सम्मेलन व समारोह हुए उनमें आर्यजनों ने यह आवाज उठाई कि आर्यसमाज को अपने हर 25 वर्ष के बाद कोई न कोई क्रान्तिकारी आन्दोलन करके राष्ट्र की ज्वलन्त समस्याओं के समाधान के लिए, महत्त्वपूर्ण कार्य करने के लिए निश्चित कार्यक्रम बनाना चाहिये। जिससे आर्य नवयुवक आकर्षित होकर वैदिक विचारधारा के दीवाने बनें। लम्बे समय के बाद आर्य नेताओं ने विचार विमर्श करके समाज को तीन सूत्री कार्यक्रम दिया है जो बिल्कुल समयानुकूल है अच्छा होता तीन सूत्री कार्यक्रम में एक सूत्री कार्यक्रम "पंजाब समस्या के समाधान हेतु जेल भरो आन्दोलन" भी जोड़ लिया जाता।

1 अंग्रेजी हटाओ—

आजाद भारत के नेताओं ने यह घोषणा की थी कि देश की राजभाषा हिन्दी होगी। और सविधान निर्मातृ सभा ने भी यह निर्णय लिया था कि सन् 1965 के पश्चात् राष्ट्र के सभी प्रदेशों में, कार्यालयों में सब काम केवल हिन्दी भाषा में होंगे। किन्तु सन् 1963 में राष्ट्र के नेताओं ने दक्षिण भारत के प्रदेशों में हिन्दी का विरोध होने से निर्णय बदल दिया। अंग्रेजी को अतिरिक्त राजभाषा के रूप में स्वीकार किया। हिन्दी को राजभाषा स्वीकार करना प्रान्तों की स्वेच्छा पर छोड़ दिया गया। आज पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति के बढ़ते प्रभाव से भारतीय सभ्यता और संस्कृति को बचाने के लिए, भारतीय भाषाओं हिन्दी-संस्कृत-वैदिक वाङ्मय (वैदिक साहित्य) की सुरक्षा के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने "अंग्रेजी हटाओ" के आन्दोलन का आह्वान किया है। जिसके लिए सभी आर्यजनों को आगे खड़े होकर काम करना होगा।

2 शराब निषेध और उसके ठेके बन्द करने के लिए आंदोलन—

आर्य समाज अपने भजनोपदेशकों के प्रचार द्वारा इस सामाजिक बुराई के लिए जहां गांव-गांव, नगर-नगर में शराब जैसी बुराई के विरुद्ध जन-जागरण अभियान चला

सकता है वहां पंचायतों के प्रस्तावों द्वारा, ठेकों पर धरने देकर, प्रान्तीय सरकारों को लिखकर, आन्दोलन करके शराब के ठेके बन्द करने के लिये विवश कर सकता है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा प्रो० शेरसिंह के नेतृत्व में इस आन्दोलन को पिछले 4 वर्षों से चला रही है। और 70 के लगभग ठेके बन्द करवा चुकी है। आर्य समाज हिसार भी 1 अप्रैल 1989 से अपनी भजन मण्डली के माध्यम से शराब के विरुद्ध जन-जागरण अभियान चला रहा है जिसके लिए समाज के वर्तमान पदाधिकारी रामधारी आर्य व प्रतापसिंह शास्त्री बधाई के पात्र हैं जिन्होंने रामनिवास आर्य की भजन मण्डली को रखकर इस कार्यक्रम को अपना लिया है। सार्वदेशिक सभा इस कार्यक्रम को सारे देश में लागू करने की घोषणा कर चुकी है।

3 गोधन बचाओ—

मैं तो स्वयं कई वर्षों से घर पर गाय रखता हूँ इसलिए मेरा सुझाव है आर्थिक, स्वास्थ्य, कृषि की उन्नति की दृष्टि से गोधन को बचाने का आन्दोलन आर्य समाज को चलाना ही चाहिये। आर्य समाज की तरफ से "गो करुणा निधि" स्वामी दयानन्द जी की पुस्तक सर्वत्र निःशुल्क रूप से जनता में वितरित की जानी चाहिये। यह कार्यक्रम भी सार्वदेशिक सभा ने तीसरे सूत्र के रूप में अपनाया है। आर्य समाज हिसार को अपने वार्षिक उत्सव पर इन तीन सूत्रों के कार्यक्रम की सफलता के लिए ठोस आन्दोलनात्मक घोषणा करनी चाहिये।

संसार में सबसे बड़े अधिकार सेवा और त्याग से मिलते हैं। —प्रेमचन्द

मीठे वचनों से स्वागत ही सच्चा अतिथि सत्कार है। —भास

धन-धान्य के प्रयोग में, विद्या के ग्रहण करने में, आहार व्यवहार में, जो लज्जा त्याग करता है वह सुखी होता है। —अज्ञात

जो ईश्वर पर विश्वास करता है, उसी में आत्मशक्ति है, नास्तिक में आत्मशक्ति नहीं होती। —भगवती चरण वर्मा

दो तरह के मनुष्य मरते समय व्यर्थ ही लालसा करते जाते हैं, एक वह जो धन रखता है और उसने नहीं भोगा, दूसरा जानता था और उसने नहीं किया। —शेख सादी

☐ सब मनुष्यों को सामाजिक, सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

॥ ओ३म् ॥

☐ सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिएं ।

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज के पावन वार्षिकोत्सव तथा स्मारिका प्रकाशन के शुभावसर पर शुभकामनाएं प्रदान करते हैं ।

☐

मैसर्ज हिसार स्टोन कम्पनी

ईलाइट सिनेमा के पीछे, हिसार ।

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज के पावन वार्षिकोत्सव तथा स्मारिका प्रकाशन के शुभावसर पर शुभकामनाएं प्रदान करते हैं ।

☐

मैसर्ज गोस्वामी स्वीट्स

बाजार वकीलान, हिसार ।

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज के पावन वार्षिकोत्सव तथा स्मारिका प्रकाशन के शुभावसर पर शुभकामनाएं प्रदान करते हैं ।

☐

दूरभाष : 2812

मैसर्ज नानकचन्द जमनादास

नई अनाज मण्डी, हिसार ।

□ सबसे प्रीति-पूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य व्यवहार करना चाहिए।

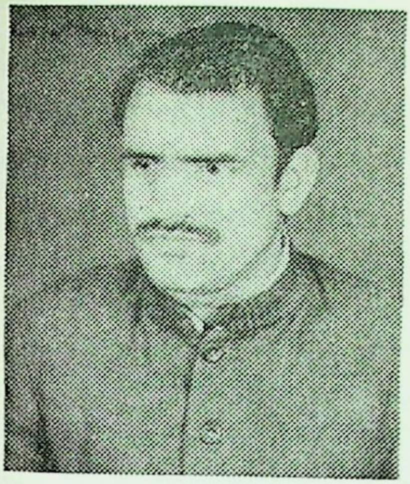
॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज के पावन वार्षिकोत्सव तथा स्मारिका प्रकाशन के शुभावसर पर शुभकामनाएं प्रदान करते हैं।

मैसर्ज गणेश टिम्बर ट्रेडिंग कम्पनी

लोनी रोड़, शाहदरा, दिल्ली।

ईश्वर सच्चिदानन्द-स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करने योग्य है ।



आर्य समाज के इतिहास के परिप्रेक्ष्य में

हरियाणा में शिक्षा का प्रसार कैसे और कब ?

□

लेखक—प्रतापसिंह शास्त्री, पत्रकार

हरियाणा जैसे प्रदेश में, जो सदियों तक पिछड़ा रहा, एक नवम्बर, 1966 को द्विभाषीय राज्य पंजाब के विभाजन के फलस्वरूप हिसार, भिवानी, रोहतक, सोनीपत, गुड़गांव, जींद, करनाल, कुरूक्षेत्र, अम्बाला, महेन्द्रगढ़ को मिलाकर "हरियाणा राज्य" नाम दिया जाने वाले क्षेत्र में शिक्षा का प्रसार कैसे और कब हुआ, यह एक विचारणीय प्रश्न है।

प्रशासनिक व राजनैतिक परिस्थिति :—1857 के स्वतन्त्रता संग्राम के आस-पास अज्ञान अन्धकार से ग्रस्त सारा मानव समुदाय जीवन और आनन्द का सत्य मार्ग छोड़कर भटक रहा था। उन दिनों यह सारा क्षेत्र लाहौर और रावलपिंडी तक फैले विशाल पंजाब प्रदेश में बनी विभिन्न रियासतों में बंटा हुआ था। कहीं जींद की रियासत, कहीं कलानौर की रियासत, कहीं नवाब लोहारू का शासन, कहीं बल्लभगढ़ में राजा नाहर सिंह, रिवाड़ी के आसपास अहीरवार्ता में राव तुलाराम, भरतपुर में जाट राज्य के संस्थापक ठा० बदनसिंह के उत्तराधिकारी शासक, हिमाचल में कांगड़ा की पहाड़ियों में साकेत रियासत, मेवात के इलाके में राव शमशाद खां, झब्बर में नवाब समद खाँ शासन चला रहे थे। अंग्रेजों ने पटियाला, नाभा, जींद रियासत के राजाओं से सहायता लेकर 1857 के विद्रोह में इस सारे क्षेत्र पर नियंत्रण करने में काफी हद तक सफलता प्राप्त की। रिवाड़ी के राव तुलाराम को भागकर ईरान में शरण लेनी पड़ी। नारनौल का इलाका महाराजा पटियाला को दे दिया गया और उसी के नाम पर उसे "महेन्द्रगढ़" जिला बना दिया गया। बल्लभगढ़ फरीदकोट में चला गया, बावल का क्षेत्र नाभा रियासत के शासक को दिया गया, दादरी क्षेत्र जींद में मिला दिया गया। फ़्रान्सनगर

और पटौदी को नई जागीर घोषित कर दिया गया। विद्रोह के बाद इस सारे इलाके को पंजाब का हिस्सा बना दिया गया। दिल्ली मण्डल में दिल्लो करनाल गुड़गांव लगाए गए। हिसार मण्डल में हिसार, रोहतक, झज्जर, सिरसा शामिल किए गए। 1862 में दण्ड प्रक्रिया संहिता लागू करने के बाद न्याय पद्धति कायम कर दी गई। 1765 में लाहौर में मुख्य न्यायालय की स्थापना हुई। 1884 में जिला स्तर पर सिविल जज की नियुक्तियां की गई। इस प्रकार की राजनैतिक प्रशासनिक परिस्थितियों के वातावरण में अंग्रेज यहां की जनता को आर्थिक गुलामी में जकड़ने के साथ-साथ सांस्कृतिक और सामाजिक बन्धनों में भी बांध कर रखना चाहता था। इसके लिए अंग्रेजों ने जहाँ ईसाई मिशनरियों का जाल पूरे भारत में फैला दिया वहां सरकारी शिक्षण संस्थाओं का भी खुलकर उपयोग इसमें कर रहा था। लाई मैकाले ने इसा तरह की अपना सफलता का उल्लेख करते हुए एक पत्र में लिखा था, "वह दिन दूर नहीं जब भारतीय मन और मस्तिष्क दोनों से हमारे षडयन्त्र का शिकार हो चुके होंगे। शरीर से भले ही वह हिन्दुस्तानी लगें पर उनके विचारों और वेषभूषा पर हम पूरी तरह से छा जाएंगे। "स्वामी दयानन्द द्वारा 1875 में स्थापित आर्य समाज ने इस चुनौतो क बड़ी मजबूती से सामना किया और 1883 में स्वामी दयानन्द के निधन के बाद उनकी स्मृति में लाहौर में 1886 में हिन्दू आर्या का पहला डी.ए.वी. स्कूल व महाविद्यालय खोला और पहले पहल यह रिकार्ड टूटा कि कोई हिन्दू भी हैडमास्टर व प्रिंसिपल बनकर उच्च स्तर की प्रशासनिक योग्यता का परिचय दे सकता है। ये योग्य व्यक्ति थे आर्य महापुरुष महात्मा हंसराज जिन्हें डी.ए.वी. आन्दोलन का जन्मदाता कहा जाता है।

अंग्रेजों द्वारा शिक्षा में योगदान :— उस क्षेत्र में जो इस समय हरियाणा कहलाता है में शिक्षा के लिए प्रोत्साहन टामस ने दिया। 1850 में दिल्ली मण्डल में 605 स्कूल थे। देहाती किसान वर्ग की शिक्षा में दिलचस्पी नहीं थी और न ही उनके पास साधन थे। 1858 में दिल्ली में एक जिला स्कूल को स्थापना की गई। फिर झज्जर, रोहतक, करनाल और रिवाड़ी में स्कूल खोले गए। ये संस्थाएं कलकत्ता विश्वविद्यालय से संबद्ध थी। जिला हिसार में केवल दो एंग्लो मिडल स्कूल थे-एक भिवानी में तथा दूसरा हिसार में। कलकत्ता में "जुट किंग" के नाम से प्रसिद्ध हरियाणा के दानवीर सेठ छज्जुराम 1864 में भिवानी जिले की तहसील बवानो खेड़ा के पास स्थित गांव अलखपुरा में एक गरीब किसान के घर पैदा हुए। बवानी खेड़ा के प्राइमरी स्कूल में पांचवी कक्षा पास कर भिवानी मिडल स्कूल में पैदल पढ़ने जाते थे। इन्होंने लगभग 1883-1884 के

आस-पास रिवाड़ी गवर्नमेंट स्कूल में मैट्रिक परीक्षा पास की और व्यापार में कलकत्ता चले गए। इन्होंने बाद में हरियाणा ही नहीं भारत के कोने-कोने में स्थापित संस्थाओं में लाखों रुपए दान दिए। हरियाणा में आजादी से पूर्व की कोई शायद एकाध ही शिक्षा संस्था बची हो जिसमें इन्होंने दान न दिया हो। डा० रामजी लाल हुड्डा उनके सहपाठी, आर्यसमाज के स्तम्भ, हरियाणा में आर्यसमाज को लोकप्रिय बनाने वाले, शिक्षा प्रसारक प्रभावशाली व्यक्तित्व थे। उन्होंने अपनी डायरी में अपनी शिक्षा के सम्बन्ध में जो लिखा है उससे भी प्रकट होता है कहीं-कहीं जो भी स्कूल थे वे अंग्रेजों द्वारा खोले गए सरकारी स्कूल थे, निजी या जाति पर आधारित स्कूल अभी स्थापित नहीं हुए थे। वे लिखते हैं, "1869-1870 में मैं 8 वर्ष का था। मैंने हिन्दी, महाजनी पढ़ना शुरु किया। बाबा बूंटोनाथ हमारे गाँव सौधी (रोहतक) के बोडाण पाने में पढ़ाते थे, फिर एक मुसलमाना बुजुर्ग फरमाना गांव वाले हमें एक कबर की जगह पेड़ के नीचे पढ़ाते थे, गाँव में कोई पाठशाला न थी। फिर एक डाक मुंशी छेदालाल ने मुझे पढ़ाया, मैंने किरीमान, खालिकबारी, गंज फारसी वगैरह की पुस्तकें पढ़ी। जोरों की वर्षा के कारण 1875 में डाक मुंशी का मकान गिर गया, पढाई बंद हो गई। रोहतक जिले में अन्य गांवों का भी यही हाल था शायद ही किसी बड़े गांव में कोई प्राइमरी स्कूल हो। 1876 में रोहतक में सरकारी मिडल स्कूल था इसके मुख्याध्यापक वैद्य जी, सहायक मास्टर निबोदरसिंह थे तथा बाद में लाला लाजपतराय के पिता मुंशी राधाकृष्ण ने भी हमें यहां पढ़ाया। मैं बोर्डिंग हाऊस में रहता था यह बोर्डिंग हाऊस उन दिनों हर सहाय डिप्टी की हवेली मोहल्ला काश्तान में था। ऐन्ट्रेन्स परीक्षा दिल्ली कालेज से उत्तीर्ण की। राजकीय कालेज की स्थापना 1864 में अंग्रेज गवर्नमेंट ने की थी।

आर्य नेताओं ने क्रान्ति की बागडोर थामी :

1877 में दिल्ली में कालेज को लाहौर स्थानान्तरित कर दिया गया। 1882 में दिल्ली में सेंट स्टीफेंस कालेज की स्थापना की गई। 1886 में हरियाणा प्रदेश के सैकड़ों छात्र विभिन्न क्षेत्रों में जाकर डी.ए.वी. कालेज लाहौर, गवर्नमेंट मैडिकल कालेज लाहौर व डिग्री कालेज दिल्ली में प्रविष्ट हुए। 1899 में हिन्दू कालेज की स्थापना हुइ। 1922 में दिल्ली विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। 1877 में स्वामी दयानन्द आर्य-समाज स्थापित कर चुके थे। हरियाणा प्रदेश के जो भी छात्र लाहौर में प्रविष्ट हुए उन पर आर्य समाज का प्रभाव अवश्य पड़ा। डा० रामजीलाल ने लाहौर मैडिकल कालेज से 1886 में प्रवेश लिया और डाक्टरी पास करके 1890 में लाहौर में ही

एसीस्टैंट टू कैमिकल एग्जामीनर लगे । 1892 में हिसार में सिविल अस्पताल में डिप्टी सिविल सर्जन के पद पर कार्य करते हुए हरियाणा में शिक्षा संस्थाओं की स्थापना के प्रयत्नों में सक्रिय रहे । लाला लाजपतराय, महात्मा हंसराज, पं० गुरूदत्त विद्यार्थी एम.ए, भाई परमानन्द, डा० रामजी लाल, हिसार के चूड़ामणि एडवोकेट, स्वामी श्रद्धानन्द, डा० धनीराम, हिसार आदि सभी ने आर्यसमाज के कार्यक्रम अनुसार समाज सुधार के अन्तर्गत शिक्षण संस्थाएं खोली । 1856 में जन्में स्वामी श्रद्धानन्द ने अपनी वकालत छोड़कर सर्वप्रथम 1890 में जालंधर में आर्य कन्या पाठशाला खोली, 1892 में गुरूकुल शिक्षा प्रणाली की स्थापना के लिए 40 हजार रुपया इकट्ठा करके 1900 में गुरूकुल शिक्षा कांगड़ी (हरिद्वार) हरिद्वार का शुभारम्भ किया तथा इसके बाद कन्या गुरूकुल देहरादून, गुरूकुल इन्द्रप्रस्थ दिल्ली, गुरूकुल कुरूक्षेत्र स्वामी श्रद्धानन्द ने खोले । डा० रामजी लाल ने 1899 में भिवानी में अनाथ बच्चों की शिक्षा व्यवस्था के लिए आयसमाज हिसार के सहयोग से आर्य आश्रम अनाथालय भिवानी को स्थापना की । 1916 में आर्य समाज के प्रभाव से हरियाणा (रोहतक) के फूलसिंह नामक पटवारी महात्मा भगतफूलसिंह बन गए, पटवार से त्यागपत्र दे दिया और 23 मार्च, 1920 में भैंसवाल गुरूकुल की स्थापना की । जिसकी आधारशिला स्वामी श्रद्धानन्द ने की । 1942 में गोहाना के समीप कन्या गुरूकुल खानपुर की स्थापना की जिसमें आज प्राथमिक विद्यालय, उच्च विद्यालय, गृह विज्ञान, महाविद्यालय, डिग्री महाविद्यालय, शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय जैसे विभाग हैं तथा सभी विश्वविद्यालय तथा बोर्ड और विभागों से सम्बन्धित हैं । छात्र ओं को संख्या 2100 से अधिक हैं वार्षिक वजट 14 लाख रुपए है । जिसकी प्रबंधक सभा के प्रधान जीवन पर्यन्त स्वर्गीय शिक्षा मन्त्री चौ० माड़ूसिंह मलिक रहे । आज भी यह संस्था देहाती क्षेत्र में उत्तर भारत की सबसे बड़ी कन्याओं की शिक्षण संस्था है ।

हरियाणा में शिक्षा प्रसार की शृंखला में 1915 में चौ० पीरूसिंह ने रोहतक में मतिण्डू गुरूकुल तथा इसी वर्ष पं० विश्वम्भर दत्त ने गुरुकुल झज्जर की स्थापनाएं की ।

सन् 1914 में प्रथम विश्व युद्ध के बाद अंग्रेजों के शासनकाल में शिक्षा प्रसार होने के प्रयत्नों में कुछ तेजी आई । सभी जाति व धर्मों के लोग इस ओर आकर्षित हुए । इस प्रकार हरियाणा में भी नौकरी प्राप्त करने के लिए आर्थिक दृष्टिकोण से होड़ लग गई । इस होड़ में अंग्रेजों ने हिन्दुओं की मदद की । शिक्षा और नौकरी के अभाव को दूर करने के लिए तथा सभी प्रकार के अधिकार मांगने के लिए, कांग्रेस की

शक्ति क्षीण करने के लिए लार्ड मिन्टों के संकेत पर सन् 1906 में मुस्लिम लीग की स्थापना हुई। इसके साथ ही जाति व धर्म के नाम पर अनेक हिन्दू साम्प्रदायिक संस्थाओं का उद्भव और विकास हुआ, जिन्होंने हरियाणा में भी शिक्षा के प्रयत्न किये। सन् 1907 में अखिल भारत वर्षीय जाट महासभा की स्थापना हुई। इसने जगह-जगह स्कूल तथा कालेजों की स्थापना करके साधनहीन किसानों के बच्चों को वैज्ञानिक तकनीकी तथा मानवीकी शिक्षा कम कीमत पर उपलब्ध कराई। शहरों में किसान बालकों के रहने के छात्रावास कायम किए। (आगरा, बुलन्दशहर, मुजफ्फर नगर, जयपुर, जोधपुर नागोर, अजमेर, बीकानेर, संगरिया आदि स्थानों पर जाट छात्रावास इसी संदर्भ में अस्तित्व में आए) जहाँ जाकर हरियाणा के कुछ बड़े किसान घरानों के बच्चों ने शिक्षा प्राप्त की। यथा-सांघी के सब जज चौ० छाजूराम, गांव किलोई के डा० मामचन्द वेटनरी सुपरिन्टैन्डैण्ट, किलोई के चौ० रामधन एम.ए.बी.एस-सी. लायलपुर कृषि कालेज से शिक्षा पाकर सन् 1914 से 1919 तक युवा इंस्टीट्यूट के बोनेनिष्ट के सम्मानित पद पर रहे और सन् 1925 में कृषि कालेज लायलपूर में सिरियेलिस्ट आफिसर बने पंजाब के कृषि वैज्ञानिकों में अनुपम विद्वान थे जिन्होंने गेहूँ की नई-नई किस्मों का आविष्कार किया।

सन् 1881 में जन्मे चौ० छोटूराम ने दानवीर सेठ छाजूराम से छात्रवृति प्राप्तकर लाहौर व दिल्ली के कालेजों से बी.ए.एल.एल बी. पास कर सन् 1914 में रोहतक में वकालत के साथ सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक व राजनैतिक क्षेत्रों में कार्य आरम्भ किया। तात्कालीन पंजाब को राजनीति में तहलका मचाए रखा। देहाती किसान की उन्नति के लिए अनेक सुनहरे कानून बनाकर उसे साहूकार की लूट-खसोट से मुक्त किया तथा प्रदेश में जगह स्कूल, कालेज, नहरें व सड़कों का जाल अपनी यूनिनिस्ट पार्टी की सरकार कायम होने पर बिछाया। मार्च सन् 1913 में डा० रामजी लाल, महात्मा हंसराज के शिष्य चौ. बलदेव सिंह बी.ए.बी.टी., चौ. छोटूराम एडवोकेट, चौ. लाल चन्द एडवोकेट (भालोठ), चौ. लाजपतराय (सिसाय हिसार), रणजीत सिंह बी.ए. (डा. रामजी लाल का सुपुत्र), चौ. मातुराम जेलदार (सांघी), चौ. शेर सिंह (बोहर), चौ. पी६ सिंह (मटिण्डू), चौ. भानीराम बी.ए. (गगाना), लक्ष्मीसिंह बी.ए. (डा. रामजी लाल का भतीजा), चो. मामन सिंह बी.ए. (खाण्डा हिसार), चौ. स्वरुप सिंह भूतपूर्व मन्त्री के दादा), चौ. कृष्ण सिंह (मोखराँ रोहतक), जुगलाल अर्जीनवेश (फरमाना), भाडूराम (गगाना), जोगीराम कथूरा, हर कृष्ण (चोड़ी), चौ. भगवान सिंह तथा चौ.

आंखीराम निदाना, चौ. बंसगोपाल एडवोकेट करनाल, दानवीर छाजूराम आदि अनेक व्यक्तियों ने डेहरी चौपाल रोहतक में विचार विमर्श कर 1 अप्रैल 1913 को जाट एंग्लो-वैदिक हाई स्कूल खोलने की घोषणा कर दी गई। डा. साहब के सुपुत्र रणजोत सिह बी.ए. प्रथम मुख्याध्यापक बने तथा बाद में चौ. मामन सिंह बी ए, खाण्डा व चौ. बलदेव सिंह बी.ए.बी.टी. इन्चार्ज बने। 7 सितम्बर 1913 से जाट एग्लोपैथिक हाई स्कूल खोलने की घोषणा कर दी गई। डा. साहब के सुपुत्र रणजीत सिंह बी.ए. प्रथम मुख्याध्यापक बने तथा बाद में चौ. मामन सिंह बी.ए. खाण्डा व चौ. बलदेव सिंह बी ए. बी.टी इन्चार्ज बने। 7 सितम्बर 1913 को प्रबन्ध कर्तृ सभा का चुनाव हुआ 4 पदाधिकारी तथा 19 कार्यकारिणी के सदस्य चुने गये। प्रधान भोलर सिंह शरगोलीगांव, सैकेट्री चौ. हरि सिंह कुंडल गांव तथा खजाँची मोखर निवासी चौ. कृष्ण सहाय बने।

शिक्षा क्षेत्र में समृद्ध हो चुका है हरियाणा :

11 मार्च 1918 को हिसार आर्य समाज (नागोरी गेट) की सभा में यह निर्णय किया गया कि 30, 31 मार्च को वार्षिक उत्सव मनाया जाएगा तथा आदि श्रेष्ठ लाला चन्दूलाल जी तायल की पुण्य स्मृति में जिनका निधन सन् 1909 में हुआ था। 1 अप्रैल 1918 से सी० ए० वी० हाई स्कूल खोलने की घोषणा की गई। इस अवसर पर डॉ. रामजी लाल, श्री लखपतराय एडवोकेट, सेठ चूड़ामणि, श्री हरिलाल तायल, सेठ जसवन्तराम, सेठ छाजूराम कलकत्ता, लाला महादेव (भू.पू. बलदेव तायल मन्त्री के पिता), राय बहादुर छबिलदास, श्री मूलचन्द बिहारी, लाला साहबराम, डा० धनोराम आदि गणमान्य व्यक्ति थे। 30, 31 मार्च को आर्य समाज का वार्षिक उत्सव हुआ। लाहौर से महात्मा, हंसराज, लाला मेहरचन्द, लाला दूनीचन्द तथा अन्य नेतागण भी पधारे। स्कूल में अपील की गई। कुछ महानुभावों ने बड़ी राशि निम्न प्रकार से दी—लाला साहेबराम 50 हजार रुपये, लाला जसवन्तराम 50 हजार रुपये, दानवीर सेठ छाजूराम ने डा० रामजीलाल की इच्छा पर 50 हजार स्कूल भवन के लिए तथा 67 हजार छात्रावास के लिए 50 हजार छात्रवृत्ति के लिए, 5 हजार कन्या पाठशाला के लिए कुल पोने दो लाख रुपये दान दिये। सेठ हरिलाल स्कूल के लिए भूमि दान दी। डा. साहब ने अपने बी. ए. बी. टी सुपुत्र रणजीत सिंह को इस स्कूल में अवेतनिक रूप से अध्यापनार्थ दान किया। यह दूसरी बात है कि ईश्वर की व्यवस्था अनुसार यह अधिक वर्ष जीवित न रह सका। डा. साहब इस संस्था के जीवन पर्यन्त सन् 1942-43 तक पदाधिकारी रहे और इस संस्था से इस इलाके में शिक्षा का प्रसार हुआ।

रोहतक जाट एंग्लो वैदिक हाई स्कूल की स्थापना और सी. ए. वी. एंग्लो वैदिक हाई स्कूल की स्थापना के बाद ग्रामीण लोगों की मांग को देखते हुए 1918 के बाद ही डा० रामजीलाल ने सेठ छाजूराम, चौ० राजमल (खाण्डा), चौ० लाजपतराय (सिसाय) चौ० सूरजमल (खाण्डा), एवं उस समय के कालेज में बी० ए० के अन्तिम वर्ष में पढ़ने वाले इस इलाके के गणमान्य व्यक्तियों से हिसार में जाट एंग्लो वैदिक हाई स्कूल की स्थापना करने के लिए बातचीत की। डायरी के अनुसार यद्यपि इस विद्यालय की स्थापना सी० ए० वी० हाई स्कूल की स्थापना से पूर्व ही की जाने की योजना थी। किन्तु परिस्थितियां बदलती गई और 1923 में सेठ छाजूराम ने अपने पुत्र की समृद्धि में चार लाख रुपए का सात्विक दान देकर अपनी देख-रेख में भवनों का निर्माण कराया जिसका शिलान्यास करने 16 जुलाई, 1927 को पंजाब में लेफ्टीनैंट गवर्नर शिमला से यहाँ पधारे। जो जाट एंग्लो वैदिक हाई स्कूल 1923 से बिना भवन के एक हवेली में चल रहा था अब वह 1927 में नव निर्मित भवनों में प्रारम्भ हुआ। 1928 में वार्षिक उत्सव पर हरियाणा के नेता चौ० छोटूराम व सेठ छाजूराम पधारे और सेठ छाजूराम जी ने चार लाख रुपए देने के बाद भी घोषणा की कि जितना चन्दा आप सब लोग इकट्ठा करेंगे उतना ही चन्दा में अकेला अपनी ओर से दूंगा। चौ० छोटूराम ने आश्वासन दिया कि विद्यालय के लिए पंजाब सरकार हर सम्भव सहायता देगी। आज यह संस्था जाट एंग्लो वैदिक हाई स्कूल के स्तर से बढ़ता हुआ एक वृहद संस्था के रूप में इस इलाके की सेवा कर रहा है। आज यहां छाजूराम स्मारक डी० डी० कालेज, छाजूराम स्मारक प्रशिक्षण कालेज, जाट वरिष्ठ माध्यमिक स्कूल एवं जाट आदर्श माडल स्कूल के रूप में शिक्षा कार्य हो रहा है लाखो रुपए का यहाँ का वार्षिक बजट है। इस इलाने के अतिरिवित भी हरियाणा के विभिन्न शहरों में समय-समय पर शिक्षण संस्थाओं का निर्माण हुआ। वैश्य कालेज रोहतक, गौड ब्राह्मण कालेज रोहतक, सैनी हाई स्कूल रोहतक, वैश्य कालेज भिवानी, अहीर कालेज रिवाड़ी, सनातन धर्म स्कूल व कालेज, डी ए. वी. स्कूल व कालेज हिसार रोहतक, अम्बाला, गुड़गांव, जीन्द, सिरसा सभी जिलों में स्थापित हुए। स्वतंत्रता के बाद भारत-पाक विभाजन हुआ। आर्य समाज की करोड़ों की सम्पत्ति डी. ए. वी. संस्थाओं जमीन व भवन सब वहीं रह गए और कोई मुआवजा नहीं मिला फिर भी डी. ए. वी. प्रबन्धक सभा ने शिक्षा क्षेत्र में विशेषकर पंजाब, दिल्ली तथा हरियाणा में डी. ए. वी पब्लिक स्कूलें व कालेजों के माध्यम से एक तहलका मचा दिया। स्वतन्त्रता के बाद जिला स्तर पर राजकीय स्कूल व कालेजों की स्थापना हुई। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार, विश्वविद्यालव कुरुक्षेत्र, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक आदि की स्थापना यह प्रमाणित करती है कि हरियाणा प्रदेश आज शिक्षा की दृष्टि से प्रगति पथ पर अग्रसर है। □

अन्तर्राष्ट्रीयता तभी पनप सकती है जब राष्ट्रीयता का सुदृढ़ आधार हो।

—श्यामा प्रसाद मुकर्जी

आर्य समाज हिसार : संस्मरण

—लेखक : मदन मोहन
ठंडी सड़क, हिसार

मेरी नियुक्ति राजकीय दस्तकारी स्कूल हिसार में नवम्बर 1938 में हुई। मैंने जो मकान किराया पर लिया उसके एक भाग में श्री दीनदयाल रहते थे। 1939 में हैदराबाद सत्याग्रह के समय आर्य समाज हिसार में रौनिक देखकर मैं भी अन्दर चला गया। सहन में सत्याग्रहों के वास्ते केसरया रंग में कपड़े रंगे जा रहे थे। मैं भी शामिल हो गया और सारे कपड़े ठीक ढंग से रंगवा दिये।

दूसरे दिन जलूस निकला, रास्ते में स्वागत के वास्ते द्वार बने थे लगभग 100 वीरों के हाथ में लाठी थी जिन पर ग्रोम ध्वज थे। ओम के नारों से फजा गूंज रही थी। बाबू प्रकाश चन्द्र, पं० देवराज, पं० मुरारीलाल ग्रौर श्री बनवारी लाल आजाद प्रबन्ध करने वालों में थे। कई स्थानों पर जलूस पर फूल बरसाए गए. सत्याग्रहयों को महिलाओं ने तिलक लगाए और हार पहनाए। इस प्रकार मुख्य बाजारों से होता हुआ जलूस आर्य समाज में वापिस आया। बा० प्रकाश चन्द और पं० मुरारीलाल जी के प्रचार से 500 के लगभग सत्याग्रही हरियाणा से इस सत्याग्रह में गए थे।

मैं शिक्षा के समय लाहौर की वच्छोवाली आर्य समाज व ग्रनारकली आर्य समाज के उत्सवों में शामिल हुआ करता था। बाद में आर्य समाज फिरोजपुर छावनी, शिकारपुर सिंध, मुलतान जहां-जहां मैं रहा आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संगों में जाया करता था। परन्तु श्री दीनदयाल जी के साथ यहां हिसार आर्य समाज नागोरी गेट में मैं 1941 में गया। हम दोनों को लगभग 2 मास के अन्दर हो अन्तरंग सभा में ले लिया गया। मुझे मन्त्री और श्री दीनदयाल जी को मेरा सहायक बना दिया गया और हम दोनों ने बड़ी लगन से कार्य करना आरम्भ कर दिया।

1942 में नागपुर से एक नवयुवक श्री अन्नू आर्य हिसार आए। मुझे कहने लगे मैं नव युवकों को लाठी चलाना सिखाऊंगा। आप नव युवकों को लाएं। दूसरे दिन प्रातः मैं ग्रौर श्री दीनदयाल तीन-चार और नवयुवकों को लेकर आर्य समाज मन्दिर में पहुंच गए। परन्तु 3-4 बार करने पर आगे दीवार आ गई क्योंकि स्थान छोटा था। अन्नू जी कहने लगे कोई बड़ा स्थान बताओ। उसी शाम मैं उनको आर्य कन्या पाठशाला

के मैदान में ले गया। उसे उन्होंने पसन्द किया और दूसरी सुबह मैं लगभग 20 युवकों को लेकर आर्य कन्या पाठशालय के मैदान में पहुंच गया। इस प्रकार हिसार में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ शुरु हो गया। काम जल्दी ही बढ़ गया मैं और श्री दीनदयाल शिक्षक बन गए। हम प्रातः युवकों को घर से उठाकर वहाँ पहुंच जाते। हम कई युवकों के साथ दिल्ली के बड़े कैम्पों में भी गए। रविवार को विशेष कार्यक्रम गुजरी महल के पास हुआ करते थे।

हमें कठिनाई यह हो गई कि रविवार को हम आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग में विलम्ब से पहुंच पाते। दूसरे कई बार आर्य कन्या पाठशाला के मैदान की शाखा समाप्त होने से पूर्व बच्चियाँ स्कूल में आने लगती थी।

मैंने और दीनदयाल जी ने निश्चय किया कि हम आर्यवीर संघ की शाखा अलग लगाएं। चुनाचि हमने सी. ए. वी. स्कूल में आर्य वीर संघ की शाखा आरम्भ कर दी। दूसरी शाखा बाद में बा. वजीर सिंह जी की कोठी के पीछे जहां हमारा मकान है लगने लगी। मैं एक युवती कुमारी वीराग शर्मा को लाहौर ले गया उसे ट्रेनिंग दिलाई और आर्य कन्या पाठशालय में आर्या वीरांगना संघ भी आरम्भ हो गया।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की शाखा को आर्या कन्या पाठशालय के मैदान से हटाने में हमें बड़ी कठिनाई हुई और बा. प्रकाश चन्द जी का सहयोग प्राप्त करना पड़ा आर्य वीर संघ के मुख्य युवकों पं० देवराज संधीर, श्री त्रिलोक चन्द आर्य, श्री गजानन्द (जो इस समय परोपकारीण सभा के महामन्त्री हैं) स्वर्गीय जयदेव, श्री अमृतभान, श्री नेतराम, पं० सोमनाथ, श्री सूरजभान, श्री घनश्याम दास लोहिया थे।

आर्य समाज के कार्य को इससे बड़ा बल मिला। साप्ताहिक सत्संगों की रौनक बढ़ी। आर्य समाज के उत्सवों और पर्वों में आर्य वीर पानी पिलाते, जूतियों का प्रबन्ध करते और अपनी वेश भूशा में लाठियां लेकर सारा प्रबन्ध करते। छोटे सत्यार्थ प्रकाश झोला य ज्ञोपवति की भाति दाएं कन्धे से होकर सिक्खों की कृपान की भांति लटका होता था जिससे उत्सव या शोभा यात्रा की शान बन जाती थी साप्ताहिक सत्संग के समय हाल और बरामदा भर जाता था। अन्तरंग सभा ने दो-तीन बार ऐसा विचार किया कि हाल के अन्दर चारों ओर ऊपर गैलरी बनाई जावे।

विभाजन के पश्चात् श्री प्रि. ज्ञान चन्द जी यहाँ आ गए उनके कहने अनुसार अन्तरंग सभा में प्रस्ताव आया कि डी. ए. वी. कालेज खोला जावे। परन्तु अन्तरंग सभा

ने यह बोझ उठाने से इन्कार कर दिया। प्रि. ज्ञानचन्द जी ने कहा कि वह अपने पुरुषार्थ से इसे आरम्भ करेंगे इसके वास्ते मुझे व्यक्तिगत सहयोग दिया जावे यह बात सर्वसम्मति से स्वीकार कर ली गई। मैंने सुझाव दिया कि कालेज का नाम डी ए बी न होकर दयानन्द कालेज रखा जावे। इसको प्रिंसिपल ज्ञानचन्द जी ने और सबने स्वीकार कर लिया। प्रि. ज्ञानचन्द जी के तप और त्याग से सी.ए.वी. स्कूल के पीछे कालेज आरम्भ हो गया प्रिंसिपल जी के अनुरोध से प्रतिदिन प्रातः मैं प्रार्थना के समय पहुंच जाता था। कुछ समय पश्चात् Night–College भी आरम्भ हो गया। पहले वर्ष 13 व्यक्तियों ने ग्यारहवीं की परीक्षा दी जिनमें केवल एक व्यक्ति फ़ेल हुआ और आज यह कालेज हरियाणा में अपना एक विशेष स्थान रखता है। 1951 में मेरा स्थानान्तरण (तबादला) होशियारपुर का हो गया। मेरी विदाई पार्टी की गई और फोटो हुआ उस समय मैं सहायक मन्त्री था और श्री दीनदयाल मन्त्री थे। उस फोटो को देखकर होशियारपुर आर्य समाज ने मुझ बहुत आदर दिया। मुझे पहली बैठक में अन्तरंग सभा का सदस्य बनाकर पुस्तकालय मुझे सौंप दिया और मुझे एक मकान अलाट करा दिया। वहाँ मुझे महात्मा देवीचन्द जी प्रधान दयानन्द सालवेशन मिशन, आचार्य डा. विश्वबन्धु संस्थापक विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान साधु आश्रम पं. रलाराम आचार्य डी ए.वी. कालेज, ला. रामदास ला. पृथ्वी नाथ बहल और बहुत से सज्जनों का प्रेम, प्यार और आशीर्वाद मिला।

दो साल पश्चात् जब मैं पुनः यहां आया तो आर्य वीर संघ बन्द हो चुका था और कु. वीना शर्मा के विवाह के पश्चात् वीरांगना संघ भी बन्द हो गया था। मैं फिर आर्य समाज में किसी न किसी पद पर बना रहा। सर्वश्री चेतन दास, देस राज, सीता राम और रामविचार जी के पुरुषार्थ से आर्य वीर दल पुनः आरम्भ हुआ। श्री नन्दलाल जी ने मन्त्री पद को बड़ी लगन और उत्साह से निभाया। □

प्रधान व्यक्ति जैसा-जैसा आचरण करता है वैसा ही वैसा लोग आचरण करते हैं।

—भागवत

आर्य समाज की मान्यताएं

□

रामधारी आर्य, प्रधान
आर्य समाज, हिसार।

आर्य—इस देश का पुराना नाम आर्यावर्त है और यहां के निवासी आर्य हैं महर्षि दयानन्द की परिभाषा में श्रेष्ठ पुरुषों का नाम आर्य है।

ईश्वर—आर्य समाज के दस नियमों में प्रथम, द्वितीय नियम ईश्वर के स्वरूप को स्पष्ट करता है। ईश्वर पाप क्षमा नहीं करता। ईश्वर की स्तुति प्रार्थना उपासना होती है पूजा नहीं होती।

देवता—दान देने वाला, प्रकाश करने वाला, सत्योपदेश करने वाला तथा जिसमें सब निवास करते हैं इस व्याख्या के अनुसार मुख्य देवता परमेश्वर है। ब्रह्मा, विष्णु, महादेव, गणेश आदि ईश्वर के गौणिक नाम हैं तथा ये महापुरुष भी हुए हैं।

राम और कृष्ण—आर्य समाज इन्हें महापुरूष मानता है। ये भगवान नहीं थे। क्योंकि ईश्वर कभी अवतार नहीं लेता।

नवग्रह पूजा—परमेश्वर द्वारा बनाए गए नक्षत्र आदि लोक भौतिक ज्ञान प्राप्ति एवं सदुपयोग करने के लिए हो सकते हैं सृष्टि को अपने मन, वचन, कर्म से अपवित्र न करें यही उसकी पूजा है। नवग्रह पूजा जो पोप पाखन्डी करते कराते हैं आर्य समाज की मान्यता के विरूद्ध है।

गुरूडम—इससे विविध सम्प्रदाय वेद विरूद्ध मतमतान्तर फैलते हैं अज्ञान और अन्धविश्वास में वृद्धि होती है महिलाएं "भेड़िया धसान" की तरह गुरू सेवा में अर्पित हो जाने के बहाने अविद्या में फंस जाती है। यह आर्य समाज की मान्यता के विरुद्ध है। राधास्वामी मत, घीसा पन्थी, कबीर पन्थी, दादू पन्थी, सच्चा सौदा. रजनीश भगवान, ब्रह्माकुमारी, शेरां वाली, जय माता दी, सन्तोषी मां आदि अवैदिक मतमतान्तर गुरूडम का ही परिणाम हैं।

सती प्रथा—इस सामाजिक कुरीति का आर्य समाज हमेशा ही विरोध करता रहा है।

ज्योतिष—आर्य समाज गणित ज्योतिष को ज्ञान की एक शाखा के रूप में मानता है। किन्तु फलित ज्योतिष गंडे-ताविज, जन्म-पत्र आदि को पाखण्ड अन्धविश्वास समझता है और विरोध करता रहा है।

वेद को ईश्वरीय ज्ञान मानता है। ईश्वर जीव प्रकृति तीनों को अनादि मानता है ईश्वर को सत् चित् आनन्द, जीव को सत् चित् और प्रकृति को सत् मानता है।

छः शास्त्रों (छः दर्शन) वेद के छः मुख्य विषयों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए एकमात्र श्रेष्ठ साधन हैं।

गीता, रामायण, महाभारत को धार्मिक ऐतिहासिक ग्रन्थों के रूप में मानता है किन्तु इनमें जो श्लोक बाद में मिलाए गये हैं उन्हें नहीं मानता। अतः वैदिक विद्वानों द्वारा प्रकाशित पुस्तकें ही पढ़े यथा गीता भाष्य पं० बुद्धदेव विद्यालंकार, राम यण, महाभारत आचार्य प्रेम जी भिक्षु द्वारा सम्पादित स्वामी जगदीश्वरानन्द जी द्वारा सम्पादित पढ़ें।

यज्ञ—महर्षि दयानन्द जी ने परिभाषा इस प्रकार को है—"जो अग्निहोत्र से से लेकर अश्वमेध पर्यन्त व जो शिल्प व्यवहार और पदार्थ विज्ञान जो कि जगत के उपकार के लिए किया जाता है "यज्ञ" कहते हैं।

ब्रह्म यज्ञ, देव यज्ञ, पितृ यज्ञ, अतिथि यज्ञ, बलि वैश्व देवयज्ञ मनुष्यों के ये पांच कर्त्तव्य हैं। आर्य समाज की मान्यता है कि प्रत्येक यज्ञ में स्त्री पुरुष को भाग लेने का समान अधिकार है।

आर्य समाज की मान्यता है कि मनुष्यों को योग्य है सब मंगल कार्यों में अपने पराये कल्याण के लिए यज्ञ द्वारा ईश्वरोपासना करें। इसीलिए घी सामग्री सुगन्धित आदि द्रव्यों की आहुति यज्ञ कुण्ड में देवें।

यज्ञोपवित—ऋषि दयानन्द को पाश्चात्य विचारों से प्रभावित होकर जनेऊ की उपेक्षा से बड़ी पोड़ा थी। सत्यार्थ प्रकाश में उन्होंने लिखा—"जो विद्या का चिन्ह यज्ञोपवित और शिखा को छोड़ मुसलमान ईसाईयों के सदृश बनने की इच्छा करते हों तो क्या यज्ञो पवित आदि का कुछ बड़ा भार हो गया था? आर्य समाज अपने सदस्यो, सभासदों और आर्य देवियों को यज्ञोपवित धारण करने को प्रेरणा करता है।

संध्या—प्रातः सायंकाल दो समय प्रत्येक नर-तारी को संध्या करनी चाहिये।

संस्कार—संस्कार विधि में लिखित 16 संस्कारों को आर्य समाज मानता है।

नामस्मरण या कीर्तन—आर्य समाज कीर्तन की उस प्रक्रिया से असहमत है जिसमें दिन-रात हरे राम हरे कष्ण आदि की रट लगाते हैं। नामस्मरण अथवा जप तो एकमात्र ओ३म् या गायत्री मन्त्र का ही उचित है।

आर्य समाज एक आन्दोलन है एक श्रेष्ठ पुरुषों का संगठन है वैदिक धर्म का प्रचारक है कोई सम्प्रदाय नहीं है।

सनातन धर्म—वैदिक धर्म का ही नाम सनातन धर्म है आज आर्य समाज और सनातन धर्म दो अलग-अलग पक्ष माने जाने लगे हैं परन्तु आर्य समाज अपने इस वास्तविक स्वरूप से लोगों को परिचित कराने का पुरुषार्थ करता आ रहा है। सनातन का अर्थ है—जो सदैव से है और नूतन है अतः वैदिक धर्म ही सनातन धर्म है।

आर्य समाज की मान्यता है कि सृष्टि की उत्पत्ति लगभग 2 अरब वर्ष पहले हुई और मनुष्यों की सृष्टि सर्वप्रथम त्रिविष्टप अर्थात् तिब्बत में हुई। अतः आर्य भारत के मूल निवासी हैं।

जात-पांत, छूत-अछूत को आर्य समाज नहीं मानता। आर्य समाज गुण कर्म स्वभाव से वर्णाश्रम व्यवस्था को मानता है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र चार वर्ण और ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थाश्रम तथा सन्यासाश्रम को मानता है। विधवा विवाह का समर्थन करता है अर्न्तजातीय विवाह का समर्थक है। टीका दहेज का जबरदस्त विरोध करता है। मूर्ति पूजा का खण्डन करता है किन्तु महापुरुषों, माता, पिता, गुरु, आचार्य आदि के चित्र घरों में रखने का विरोधी नहीं। गंगा को एक नदी मानता है गंगा स्नान से पाप कटते हैं दुःखों से छुटकारा मिलता है इस प्रकार के अन्धविश्वास पाखण्ड का विरोध करता है।

पुनर्जन्म में विश्वास करता है। मुक्ति से पुनरावृत्ति के सिद्धान्त को मानता है। भूत-प्रेत को नहीं मानता। मृत पितरों का श्राद्ध-तर्पण करने का आर्य समाज खण्डन करता है जीवित माता, पिता, गुरु, आचार्य, अतिथि की श्रद्धा से सेवा करने की प्रेरणा देता है।

अभिवादन का चिन्ह "नमस्ते" को मानता है। आर्य समाज के 10 नियम हैं उनमें सार रुप में आर्य समाज की मान्यताएं निम्न हैं। □

योगीराज श्रीकृष्ण जी : आर्यों के प्रेरणा स्रोत

—राजकुमार आर्य
मैनेजर, जगन्नाथ आर्य कन्या
उच्च विद्यालय, हिसार ।

जब-जब इस संसार में पाप, अत्याचार, दुराचार, अज्ञानता बढ़ी है उस समय इस भूमि पर कोई न कोई महापुरुष पैदा हुआ है उन्हीं महापुरुषों में से एक थे—योगिराज श्रीकृष्ण । द्वापर युग के अन्त में भी भारतवर्ष के भाग्य पर अविद्या एवं अन्धकार की घनघोर घटाएँ छाई हुई थी सामाजिक कार्य बिल्कुल खत्म हो चुका था । हमारा देश छोटे-छोटे रजवाड़ों में बंट चुका था । उन राज्यों के संचालक (राजे-महाराजे) बड़े अत्याचारी साम्राज्यवादी और प्रजा का शोषण करने वाले थे । जैसे कंस अपने पिता उग्रसेन को कारागार में डालकर अपने-आप राजा बन बैठा था । जराशन्ध और शिशुपाल जैसे राजाओं ने अपनी प्रजा का बड़ो बुरी तरह से शोषण किया हुआ था । सारी सृष्टि पर अशान्ति फैली हुई थी । ऐसे समय में एक ऐसे महापुरुष की आवश्यकता थी जो सबका सहायक होकर दुःखी जनता को असुरों के उत्पीड़न, दानवता के पंजे से छुडा सके । उस समय भद्रा कृष्ण अष्टमी वार बुधवार की घोर निशा को चीर कर, अपने आलोक से दिशाओं को आलोकित करते हुए आनन्दकन्द भगवान श्री कृष्णचन्द्र भारतीय रंगमंच पर अवतरित हुए ।

श्रीकृष्ण जी यदुवंशी थे । श्री कृष्ण के पिता का नाम वासुदेव माता का नाम देवकी था । यादवों की राजधानी मथुरा थी आज से लगभग 51 सौ वर्ष पूर्व हमारे चरित नायक ने इस देवोपम परिवार को अपने जन्म से सुशोभित किया ।

पुराणों में श्री कृष्ण के जन्म के विषय में जो भी लिखा है और अटकलें लगाई गई हैं वे बिल्कुल गलत हैं । महाभारत काल में उनका लवलेश भी नहीं है ।

श्री कृष्ण का जन्म मथुरा में हुआ, वहां की प्रजा जो यादव कहलाती थी, वहाँ के राजा कंस के अत्याचारों से बड़ी दुःखी थी । उन्हें अपनी इज्जत धन जन का सदैव भय लगा रहता था । श्री कृष्ण के पिता वासुदेव ने भी योगीराज श्री कृष्ण को कंस के भय से गोकुल ग्राम में अपने मित्र नन्द के यहां भेज दिया । श्री कृष्ण नन्द के घर अपनी बाल्यावस्था को धीरे-धीरे पार करके अपनी बाल्यावस्था व जवानी के बीच की उमर में प्रवेश कर गये ।

जब भगवान कृष्ण बड़े हुए तो इनके पिता श्री वासुदेव ने उनका वैदिक-संस्कारों के मुताबिक यज्ञोपवित संस्कार की तैयारी की। क्योंकि वासुदेव जी बड़े विद्वान थे और वैदिक संस्कारों की महत्ता से पूर्ण परिचित थे। उन्होंने अपने कुल पुरोहित गर्गाचार्य द्वारा वैदिक रीति से अपने बड़े पुत्र बलराम व श्री कृष्ण दोनों का यज्ञोपवित संस्कार कराया।

श्री कृष्ण व बलराम को शिक्षा अध्ययन के लिए गुरुकुल में भेजा गया। जिस गुरुकुल में भेजा गया था वो गोकुल के ही समीप था। यहां उन्होंने विधिपूर्वक शास्त्रों का अध्ययन किया। इनके गुरू कौन थे ? इस बारे में काफी मतभेद है। परन्तु श्री कृष्ण व बलराम उनके पास थोड़े ही समय शिक्षा ग्रहण करने के लिए रहे। इन्होंने सिर्फ उनसे धनुर्विद्या ही सीखी। श्री कृष्ण गुरुकुल में रहते हुए भी ग्रामवासियों को भीषण आपत्तियों से बचाया करते थे। एक बार का वर्णन है एक पागल साँड गांव वालों के लिए मौत बन गया, उसके सींग बहुत नुकीले थे। रास्ते में कोई मनुष्य पशु आदि मिलते उनको मार डालता था। गांव वाले श्री कृष्ण जी को पुकारने लगे। जब कृष्ण जी को पता लगा तो वे वहां पहुंचे और उन्होंने उस सांड की गर्दन अपनी बलशाली भुजाओं में पकड़ कर गीले वस्त्र की तरह मरोड़कर जमीन पर गिरा दिया। उसका एक सींग उखाड़ कर उस पर आघात किया और थोड़ी ही देर में वह मर गया।

श्री कृष्ण जी के पराक्रम और कीर्ति के समाचार जब मथुरा में कंस को मिलने लगे कि नन्द के श्री कृष्ण ने यह कर दिया वह कर दिया तो वह व्याकुल हो गया। पापी का हृदय कांप उठा। उसको यह महसूस होने लगा कि खुल्लम-खुल्ला श्री कृष्ण पर हाथ डालना बड़ा दुष्कर कार्य है। क्योंकि प्रजा के बिगड़ खड़े होने का भय था। कंस ने भगवान श्री कृष्ण को छल के जरिये मरवा डालने का षड्यन्त्र रचा। कंस ने अपनी राजधानी मथुरा में एक धनुष यज्ञ का आयोजन किया और अपने मंत्री को बलराम व श्री कृष्ण को नन्द गाँव से इस धनुष यज्ञ में सम्मिलित होने के लिए निमन्त्रण भेजा। श्री कृष्ण बलराम व बहुत से ग्वाले मथुरा के इस कार्यक्रम में पहुंचे। कंस ने दिखावे के तौर पर कृष्ण के मथुरा आगमन पर आनन्दोत्सव मनाया।

श्री कृष्ण धनुष यज्ञशाला में पहुंचे उन्होंने धनुष को तोड़ दिया। इसके पश्चात् जब आप कंस के दंगल में प्रविष्ट हुए तो आपके ऊपर एक मदमस्त हाथी छोड़ा गया। श्री कृष्ण ने अपनी तरफ उस हाथी को आते देखा और उस हाथी को मार दिया। कंस ने अपनी रक्षा के लिये जरासन्ध की भांति कुछ पहलवान पाल रखे थे चाणुर और मुष्टिक इन दो प्रसिद्ध भीमकाय और मल्लविद्या विशारद पहलवानों को कंस ने पहले

ही सिखा रखा था कि श्रीकृष्ण और बलराम का काम तमाम कर दें। कृष्ण और बलराम अखाड़े में उतरे। कृष्ण ने चाणर को और बलराम ने सुष्टिक को एक दो दाँव में ही पछाड़ कर उनकी मिट्टी ठिकाने लगा दी। यह परिणाम कंस की आशा के बिल्कुल विपरीत था। यह देखकर कंस के गुस्से का ठिकाना न रहा। उसने अपने सिपाहियों को आज्ञा दी कि कृष्ण को तुरन्त देश निर्वासित कर दो। और वासुदेव को कुत्ते की मौत मार डालो। नन्द को पकड़ कर जेल में डाल दो। जब श्री कृष्ण ने यह शब्द सुने तो वह कूद कर कंस के सिंहासन तक जा पहुंचे। उसके बाल पकड़ कर खींच लिये और जमीन पर दे पटका। कंस के प्राण पखेरू उड़ गये। इसका बदला लेने के लिये कंस का भाई सुनामा कृष्ण पर झपटा परन्तु बलराम ने उसे भी यमलोक पहुंचा दिया।

मथुरावासियों की खुशी का ठिकाना न रहा। उन्होंने श्री कृष्ण को राज्य सिंहासन और मुकट सम्भालने के लिए कहा परन्तु श्री कृष्ण ने इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया। और अपने नाना उग्रसेन को कारागार से छुड़ाकर सिंहासन पर बैठाया। कंस विजय श्री कृष्ण के स्नायक होने के पश्चात् यह प्रथम विजय थी जिसमें उन्हें पूर्ण सफलता मिली।

कंस की मृत्यु से मगध के राजा जरासन्ध को बड़ा दुःख हुआ क्योंकि जरासन्ध कंस का श्वसुर था उसने मथुरा पर आक्रमण कर दिया। परन्तु श्री कृष्ण जी के नेतृत्व में यादव सेना ने उसे मार भगाया। जरासन्ध ने मथुरा पर 18 बार आक्रमण किये परन्तु उसे हर बार मुंह की खानी पड़ी।

इन आक्रमणों से मथुरा राज्य हर दृष्टि से कमजोर हो गया था। श्री कृष्ण ने सोचा कि इस टिड्डी-दल सेना के साथ युद्ध करना स्वयं ही अपना नाश करना है अतः उन्होंने समुद्र तट पर द्वारिकापुरी बसाई और एक सुदृढ़ गढ़ बनाकर सबको वहां ले गये। द्वारिका का दुर्ग मथुरावासियों के लिए हर प्रकार से अनुकूल था। वह दुर्ग ऐसा था कि पुरुषों की तो बात क्या स्त्रियां भी शत्रु का मुकाबला कर सकती थी।

संक्षिप्त रूप से पौराणिक लोग श्री कृष्ण जी के बारे में आरोप लगाते हैं कि वे बचपन में माखन चोर थे, उनकी 16 हजार रानियां थीं, राधा के साथ प्रेमालाप की घटनाएं भी वे जोड़ते हैं ये सब बातें कपोल कल्पित हैं। श्री कृष्ण जी का विवाह विदर्भ देश के राजा भीष्मक की पुत्री रुकमणी के साथ हुआ था। राधा श्री कृष्ण जी की मामी लगती थी क्योंकि यह वृषभानु की कन्या थी उसने राधा का सम्बन्ध रायण वैश्य से कर दिया जो कृष्ण की माता यशोदा का भाई था।

इस छोटे से लेख में योगीराज कृष्ण के जीवन की सभी घटनाएं प्रस्तुत करना असम्भव है। श्री कृष्ण में कामदेव जैसी कोमलता और सुन्दरता, आचार्य बृहस्पति जैसी प्रतिभा, जनक जैसा ज्ञान, बुद्ध जैसी अहिंसा और दया, राम जैसा आर्य संस्कृति से प्रेम और सिंह जैसा पराक्रम था। वस्तुतः योगीराज श्री कृष्ण जी आज भी हमारे प्रेरणा स्रोत हैं। □

।। ओ३म् ।।

आर्य समाज, नागोरी गेट, हिसार के प्रधान सेठ रामधारी जी आर्य का आर्य समाज, हिसार के अतिरिक्त अन्य शिक्षण-संस्थाओं में

प्रशंसनीय योगदान

—डा० रविदत्त शास्त्री
एम.ए. पी-एच.डी.

भारत की पावन भूमि पर वह दिन बड़ा ही सौभाग्य का था जिस दिन ऋषि दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ। जिस महर्षि को कृपा से हमने वैदिक मान्यता के अन्तर्गत आर्य-जीवन व्यतीत करना सीखा। इसी श्रृंखला में श्री रामधारी जी आर्य प्रधान आर्य समाज, हिसार भी एक सुदृढ़, कर्त्तव्यनिष्ट, सिद्धान्तप्रिय एवं ऋषिभक्त आर्य हैं। आप पिछले तीन दशकों से विशेष रूप से वैदिक विचारधारा से प्रभावित हैं। आपने अपने परिवार को स्वप्रभाव से वैदिक सिद्धान्तवादी आर्य परिवार बना दिया है। यज्ञ, संध्या, आर्य सत्संग एवं वैदिक ग्रन्थों के प्रवचन तथा वैदिक सस्कार आदि कर्मकाण्ड आपको सर्वथाप्रिय एवं कर्त्तव्यकर्म प्रतिभातित होते हैं। अपनी पारिवारिक निष्ठा के उपरान्त विशेषतया सन् 1981 से आप आर्य समाज, नागोरी गेट, हिसार में अपने श्रेष्ठगुणों और आर्यत्व के नाते प्रधान सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए। आपने अपने प्रधानत्व में आर्य समाज को प्रचार शक्ति को सक्रिय रूप दिया। वार्षिकोत्सव वेद-प्रवचन, ग्रामीण प्रचार, विधवा विवाह, शुद्धि तथा अन्तर्जातीय विवाह आदि कार्य विशेष उल्लेखनीय है। आपने अपने प्रभाव से आर्य समाज की कायाकल्प करने की दृष्टि से मन्दिर में पंखें दानियों से स्वप्रेरणापूर्वक लगवाये और महर्षि सहित स्वामी श्रद्धानन्द जी तथा महात्मा हसराज जी के भव्य चित्र स्वय बनवा श्रद्धापूर्वक आर्य समाज मन्दिर को समर्पित किये। आप दयानन्द कालेज, हिसार के तात्कालिक प्राचार्य श्री एन० डी० ग्रोवर जी से कार्य दक्षता के कारण बड़े प्रभावित थे। आपने उनकी प्रार्थना पर दयानन्द कालेज, हिसार और आर्य समाज, हिसार के लिये दान एकत्रित करने हेतु अहमदाबाद आदि नगरों में गये और वहाँ अपने प्रभाव से मित्रों, रिश्तेदारों, आर्यों और दानवीरों से काफी धनराशि एकत्रित करके लाये, जिसके फलस्वरुप श्री ग्रोवर साहब आज तक भी आपकी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करते हैं।

आप स्वयं एक महान् उद्योगपति हैं परन्तु सादा जीवन और उच्च विचार आप का मौलिक उद्देश्य है जिसके फलस्वरुप आर्य समाज, नागौरी गेट, हिसार के सभासदों ने आपको पुनः सर्वसम्मति से सन् 1987 में आर्य समाज का प्रधान चुना और आज तक आप निरन्तर आर्य समाज नागोरी गेट हिसार तथा पदेन इसकी अन्य शिक्षण संस्थाओं की सेवा कर रहे हैं। इस सन्दर्भ में आप सन् 1981 से दो सत्र तक अर्थात् छः वर्ष पर्यन्त जगन्नाथ आर्य कन्या उच्च विद्यालय, हिसार के प्रबन्धक रहे। इस कार्यकाल में आपने संस्था के स्टाफ को प्रथम बार पूर्ण वेतन प्रदान कर सन्तुष्ट किया। आपके कार्यकाल में इस संस्था ने भी बहुविध उन्नति की। आपके सौम्यस्वभाव, शिक्षाप्रेम गुरुकुलीय शिक्षा प्रसार एवं विद्वानों के प्रति श्रद्धा आदि भावों के कारण आप आर्य जगत् के ध्रुव नक्षत्र सम विख्यात् ही होते जा रहे हैं।

हिसार मण्डल के गुरूकुलों एवं दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, में आप प्रायः स्वेच्छापूर्वक समय-समय पर जाते रहते हैं और अपनी दानवृत्ति से प्रेरित होकर हजारों रुपये राशि दान स्वरुप देकर गुरूकुलों की आर्थिक सहायता करते रहते हैं। 1972-73 में आपने स्व० स्वामी देवानन्द सरस्वती द्वारा संस्थापित गुरुकुल आर्य नगर हिसार में निर्मित यज्ञशाला के लिए काफी आर्थिक सहायता प्रदान की मेरे विचार में ऐसी यज्ञशाला उत्तर भारत में सम्भवतः और नहीं है। आप समय-समय पर गुरुकुल के अन्दर किसी प्रकार की कठिनाई होती है तो उसको अपने हार्दिक इच्छा से पूरी करने का यत्न करते हैं जैसा कि वर्तमान आवश्यकता के अनुसार यज्ञशाला में पंखे लगवाये और आर्य समाज, नागोरी गेट, हिसार से भी गुरुकुल की सहायता करते रहते हैं। इसके अतिरिक्त गुरूकुल धीरणवास को आपने 2100/- रुपये सहायतार्थ प्रदान किये। आपकी दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार के प्रति विशेष आस्था है जिसके फलस्वरुप प्रति दीपावली पर्व पर विद्यालय के ब्रह्मचारियों को मिष्ठान देते रहते हैं तथा बारह पंखे विद्यालय में लगवाये हैं। आपकी धार्मिक सद्वृत्ति के फलस्वरूप वेद मन्दिर तपोभूमि सत्यप्रकाशन मथुरा के लिए बड़ी श्रद्धा है इसीलिए इस वेद मन्दिर तथा प्रकाशन को समय-समय पर अब तक कुल मिलाकर 30 या 35000/- रुपये की राशि दान रुप में सहयोगार्थ प्रदान की है। आपकी उपदेशकों में सदा से ही श्रद्धा है इसलिए तात्कालिक प्रधान श्री बलदेव जी तायल को प्रेरणा देकर श्री पं० प्रभुदयाल जी आर्योपदेशक का भव्य अभिनन्दन करवाया जिसमें 11000/- रुपये आर्य समाज के कोष से तथा 5100/- रुपये अपनी ओर से और 5100/- रुपये सेठ भादरमल मै० सन्तलाल नैनसुख दास अहमदाबाद द्वारा सेठ बद्री प्रसाद जी शेरडे वालों को प्रेरणा

प्रदान कर दिलवाये। ऐसा अभिनन्दन हिसार आर्य समाज के इतिहास में सर्वप्रथम किया गया। आप स्वयं ग्राम खेड़ी श्योराण तहसील हांसी के मूल निवासी हैं इसलिए ग्रामीण जनता के प्रति आपका सेवाभाव बड़ा प्रशंसनीय रहा है इसलिए 2 अक्टूबर 1989 को ग्राम स्वराज संस्थान को गांधी-जयन्ती के उपलक्ष्य में ग्राम वासियों के जागरण एवं कल्याणार्थ 11000/– रुपये की दानराशि की घोषणा की।

आर्य समाज, नागोरी गेट, हिसार के भवन को सुन्दर रूप देने के लिए श्री चौ० मेघराज जी ठेकेदार को प्रेरित करके मन्दिर की उत्तर दिशा में एक सुन्दर एवं भव्य द्वार लगभग 2 लाख रुपये की लागत से बनाने हेतु प्रार्थना की जिसके फलस्वरुप द्वार निर्माण के अन्तिम चरण में पहुंच गया है।

आर्य समाज, नागौरी गेट, हिसार की अन्तरंग सभा और साधारण सभा की प्रार्थना पर करीव सवा दो लाख रुपये को लागत से 9 दुकानों का ब्लाक श्रीमती चन्द्रावती रामधारी आर्य के नाम से अपने सभी पुत्रों के सहयोग से बनाकर समाज को दान रूप में समर्पित करने का संकल्प लेकर कार्य आरम्भ कर दिया है। इस ब्लाक की पूर्णता से करीबन समाज मन्दिर को लगभग 20,000/– रुपये मासिक आय होगी जिससे वेद प्रचार के लिए भजन मण्डलियों और उपदेशकों की व्यवस्था की जायेगी जिसके फलस्वरुप आर्य समाज, नागौरी गेट का पहला स्वरुप उज्ज्वल होगा।

आपका कार्य करने का ढंग अपने आप में निराला है इसी कारण आर्य समाज के सिद्धान्त के विपरीत आप किसी प्रकार का भी समर्थन नहीं करते हैं। दूसरे सम्प्रदायों के युवक जो आर्य समाज में शुद्ध होकर आते हैं उनके प्रति हर दृष्टि से आप का योगदान सदा-सर्वदा से बना हुआ है।

वर्तमान लौकिक परम्पराओं की दृष्टि एवं वर्णव्यवस्था के अनुरूप आप वैश्य होने के नाते अग्रवाल समाज में भी आपकी बड़ी उत्तम प्रतिष्ठा है। अन्य प्रान्तों में भी आपके सम्पर्क बड़े स्नेहप्रिय हैं जिसके फलस्वरुप आपके चचेरे भाईयों ने प्रभावित होकर 22000/- रुपये, 11000/- रुपये श्री गौरीशंकर जी सिंगल हरियाणा रोलर फ्लोर मिल्ज जीन्द वालों ने और 11000/- रुपये श्री फकीरचन्द जी सिंगल सुपर आटो इण्डिया फरीदाबाद वालों ने दयानन्द कालेज के कन्या होस्टल में यज्ञशाला निर्माण कार्य के लिए प्रदान किये।

आपकी लग्न, निष्ठा, सतत प्रयास एवं सद्‌चिन्तन अनुकरणीय है। आप जो दानराशि तात्कालिक प्राचार्य श्री एन० डी० ग्रोवर दयानन्द कालेज हिसार के साथ अहमदाबाद आदि से लाए उसकी सूची जितना मुझे पता है लिख रहा हूँ जिससे दानी महानुभावों को अपनी ये संस्थाएं याद रहें और दूसरों के लिए भी प्रेरणा स्रोत बनें। जैसा मुझे मालुम है इस दानराशि को एकत्रित कराने में दानवीर सेठ बहादरमल मैं० सन्तलाल नैनसुख दास अहमदाबाद वालों का प्रशंसनीय योगदान रहा है मैं० आर्य समाज नागोरी गेट हिसार की तरफ से उनका हार्दिक धन्यवाद करता हूँ। सूची निम्नलिखित है :--

आर्य समाज हिसार के लिए दान :

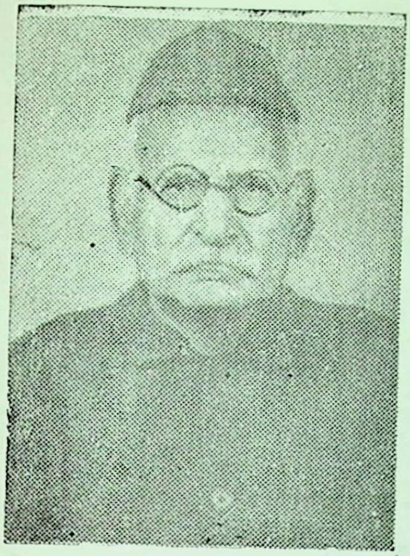
1	दानवीर सेठ त्रिलोकचन्द किरोड़ीमल एण्ड कं० अहमदाबाद	5100-00
2	सेठ नानुराम वृन्दावन प्रोससिंग हाऊस मार्फत सतनारायण प्रवीणकुमार न्यू क्लाथ मार्केट अहमदाबाद	2100-00
3	दानवीर सेठ कशमीरीलाल अहमदाबाद	11000-00
4	मैं० ओंकार टैक्सटाईल अहमदाबाद	1100-00
5	दानवीर सेठ चन्दुलाल जी गुरेरा वाले अहमदाबाद	11000-00
6	मैं० बाबूराम विनोदकुमार अहमदाबाद	1100-00
7	दानवीर सेठ गोविन्दराम जयदेव, हीराबाई मार्केट अहमदाबाद व्यक्तिगत प्रयास से	5100-00
8	दानवीर स्वर्गीय सेठ तिलकराज जी बम्बई वाले	2800+301=3101-00
9	श्री घनश्याम शर्मा मंडी गोबिन्दगढ़ पंजाब	1100-00
10	सेठ चमनलाल जी करनाल वाले	2100-00

प्राचार्य श्री एन. डी. ग्रोवर के समय आपके प्रयास से दयानन्द कालेज हिसार के लिए जो दान आया :

1	मैं० जयभारत फैबरिक्स अहमदाबाद	21000-00
2	मैं० किरोड़ीमल द्वारिका प्रसाद	11000-00
3	दानवीर सेठ भीमसेन C/o T.C.I. अहमदाबाद	11000-00
4	मैं० चतुर्भुज लाजपतराय	21000-00
5	मैं० गुजरात रोलिंग फिलोर मिल्स मैं० वंशी रोलिंग फिलोर मिल्स मैं० अम्बिका रोलिंग फिलोर मिल्स	10200-00
6	मैं० गुजरात मैटल फैक्ट्री अहमदाबाद	2001-00
7	मैं० राजेश टैक्सटाईल्स 216 न्यू क्लाथ मार्केट अहमदाबाद	1100-00
8	मैं० उमाशंकर अहमदाबाद	1100-00
9	चिड़ीपाल टैक्सटाईल्स, 274 न्यू क्लाथ मार्केट अहमदाबाद	1001-00
10	मैं० हाण्डा टैक्सटाईल अहमदाबाद	501-00
11	एन० के० इन्जिनियर अहमदाबाद	501-00

□

॥ ओ३म् ॥



अर्थ-शुचिता का इतना ध्यान

□

बाबु प्यारेलाल जी गुप्त

[एक आर्य परिवार की वास्तविकता का चित्रण आर्य जगत् के मूर्धन्य लेखक प्रो० राजेन्द्र जी जिज्ञासु की कृति "तड़प वाले : तड़पाती जिनकी कहानी" से संगृहीत]

संकलनकर्ता—**डॉ० रविदत्त शास्त्री**
एम०ए०, पी-एच०डी०

हिन्दी के विश्व ख्याति साहित्यकार श्रीयुत विष्णु प्रभाकर अपने परिवार की एक घटना की विशेष चर्चा किया करते हैं। जब विष्णु प्रभाकर जी हिसार रहते थे उन दिनों श्री प्यारेलाल जी गुप्त एक कार्यालय में कार्य करते थे। सरकारी कोष में एक पैसे का लेखा नहीं मिलता था। श्री प्यारे लाल जी एक निष्ठावान् आर्य समाजो थे। वह अपनी कर्मठता व प्रामाणिकता के लिए प्रसिद्ध थे।

बिजली तब थी नहीं। प्यारेलाल जी ने अपने अधीनस्थ छः क्लर्कों को इस पैसे की खोज में लगाया। कई रातें लग गई। जब पैसे का अन्तर पकड़ में आया, तब श्री प्यारेलाल जी ने सुख का साँस लिया।

यह ठीक है कि पैसे की खोज में कुछ आने का तेल फूंका गया। छः व्यक्तियों का कितना श्रम लगा परन्तु अर्थ शुचिता की जो छाप प्यारेलाल जी ने अपने पीछे छोड़ी, उसकी वर्षों तक हिसार में चर्चा होती रही।

श्री प्यारे लाल जी के सुपुत्र श्री सुरेन्द्र जी गुप्त हिसार में आर्यसमाज के एक स्तम्भ रूप कार्यकर्त्ता हैं। उन्होंने भी अपने पिता जी से स्पष्टवादिता, अर्थ-शुचिता व समाज-प्रेम आदि गुण बपौती में पाए हैं। जो लोग कष्ट सहकर भी मर्यादाएं स्थापित करते हैं, वे मर कर भी अमर रहते हैं। महाकवि 'सरशार' ने इन्हीं के लिए लिखा है :—

मरने वाले जी रहें हैं,
जीने वाले हैं कहां ?

□



ऋषि दयानन्द तो अति प्यारे

ऋषि दयानन्द तो अति प्यारे
आर्यों की आँखों के थे अति तारे
दिखा गए मार्ग सच्चाई

छाया था यहाँ घोर अन्धेरा
ऋषि पधारे थे बन के सवेरा
उषा सब के मन को सुहाई.

यज्ञ की खातिर पशु थे कटते
सदाचार से परे थे हटते
पशु बलि दयानन्द ने हटाई

पाखण्डियों की खूब जमी थी
विद्वानों की बड़ी कमी थी
पाखण्ड पोल की धज्जियां उड़ाई

नारी, शूद्र कौ की थी मनाही
वेद पढ़ें तो करते पिटाई
धन्य ऋषि, तूने मुक्ति दिलाई

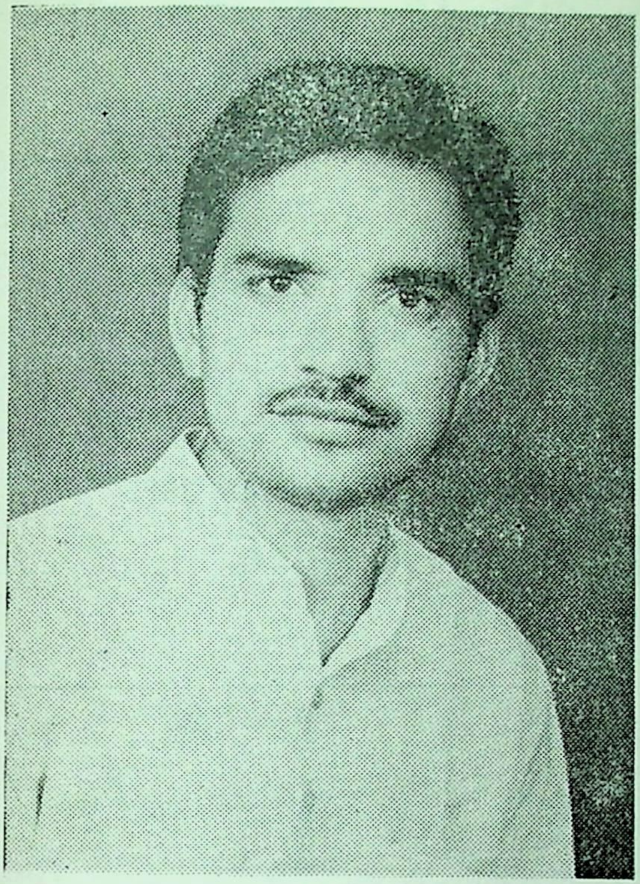
घर - घर वेद पढ़ें नर - नारी
यज्ञ से हो रहे हैं सुखकारी
सबने ऋषि की कृपा पाई

कपटी ने एक स्वाँग रचया
खाने में था जहर मिलाया
विष पीकर भी दया दिखाई

सारे जग को आर्य बनाओ
देश की नैया पार लगाओ
कर जाओ तुम नेक कमाई

'बनी' बनें सब वेद पुजारी
चित्त को छोड़ होवें चरितारी
कर्म सभी तब हों सुखदाई □

बनीसिंह आर्य
टैलिफोन दफ्तर हिसार
(हरियाणा)



भजन

□

रामनिवास आर्य
भजनोपदेशक

चार वेद और मनु के ऊपर जिस - जिस को विश्वास नहीं ।
आज नहीं तो कल - परसों उनके बचने की आस नहीं ।।
बहुत आदमी सोचते होंगे युद्ध से रोब जमा देंगे ।
छोड - छोड़कर अस्त्र-शस्त्र हम अपना देश बचा देंगे ।।
चड़न बम्ब परमाणु बम्ब से जग में विघ्न मचा देंगे ।
अपनी ताकत के द्वारा दुनियां को नाच नचा देंगे ।।
याद रहे जिसके हृदय में सत्यार्थप्रकाश नहीं ।। आज नहीं······(1)

टैंक भी थे विमान भी थे सबसे ज्यादा बलवानी थे ।
मगर वेद के प्रतिकूल हो हारे सब जापानी थे ।।
हिटलर, गौरिङ्ग, कीटल, हेश जो साईंस में लासानी थे ।
उनका पता ना पाया भाई जो बल में अभिमानी थे ।।
अमेरिका लन्दन एशिया को आता सुख का सांस नहीं ।। आज नहीं······(2)

वेदों के अनुकूल जगत में जितने दिन तक राज रहा ।
संध्या हवन का घर - घर अन्दर दोनों समय रिवाज रहा ।।
घी के मटके भरे रहे कोठी कुठलों में नाज रहा ।
खाद्य पदार्थ और कपड़े का कोई नहीं मोहताज रहा ।।
पृथ्वीसिंह बेधड़क कहें जब छोटूराम सुभाष नहीं ।। आज नहीं······(3)

ARYA SAMAJ NAGORI GATE, HISAR

INCOME AND EXPENDITURE ACCOUNT FOR THE YEAR 1988-89

EXPENDITURE		INCOME	
To Stationery.	59-25	By Dan,	4827-70
,, Dan	4233-50	,, Rent.	22380-00
,, Havan-Yaga.	725-75	,, Books.	261-60
,, Entertainment of guest.	341-40	,, Interest from Banks.	9370-35
,, Salary a/c.	5110-00	,, Donation.	180-00
,, Books & Newspapers.	2189-70	,, Saman.	607-00
,, Elect. & Water charges.	1405-10		
,, Postage.	352-25		
,, Travelling exp.	43-00		
,, Function on festivals.	634-00		
,, Donation.	101-00		
,, Saman.	601-60		
,, Audit fee.	300-00		
,, Ved-Parchar.	3606-75		
,, Aid to poor.	1350-00		
,, Grar Ved Parchar.	1000-00		
,, Misc.	1578-50		
,, Excess of income.	13994-85		
	37626-65		37626-65

BALANCE SHEET AS ON 31-3-1989

LIABILITIES			ASSETS		
GENERAL FUND :			Land.		9976-55
Balance on 1-4-88	97842-59		Building.	39234-64	
add : excess of income	13994-85	111837-44	Addition.	35629-31	74854-95
Donation for building.		6770-00	Library.		250-00
Poor relief fund.		61000-00	Loan to C.A.V. School.		50000-00
Arya Dharamarth Hospital.		47903-45	Canara Bank.		73093-00
Arya Kanya School.		5000-00	Union Bank.		28620-40
D.N. Model School.		5000-00	Cash in hand.		715-90
		237510-89			237510-89

Sd/- Cashier Sd/- Secretary Sd/- President

AUDITOR'S REPORT : Audited the above statement of Income and Expenditure Account and the Balance-Sheet of the Arya Samaj, Nagori Gate, Hisar for the year ended 31-3-1989 with the relative books and vouchers and found the same as per records produced & information & explanation supplied subject to the following remarks :—

1 All the Assets & Liabilities should be reflected in the Balance-Sheet.

2 Sufficient details of the transaction should be given on vouchers, receipts and in Cash Book.

3 On receipt books signatures of the tenants should be obtained.

4 It is suggested that expenses incurredduring a year on reading rooms and on library books should be shown separately.

5 Receipt-book register is not maintained properly so far as information about opening balance printed during the year and closing balances of receipts have not been shown as discussed at the time of audit.

6 The original receipt No. 7513 Seems to have been issued while its duplicate is lying vacant.

(TEK RAM GUPTA)
M.A., B.Com., F.S.A.A. (I)
Incorporated Accountant (India)
HISAR

☐ सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उनका सबका आदि मूल परमेश्वर है।

॥ ओ३म् ॥

☐ प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहकर सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।